अजायब बानी

खुशियों का ख़ज़ाना

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

2006

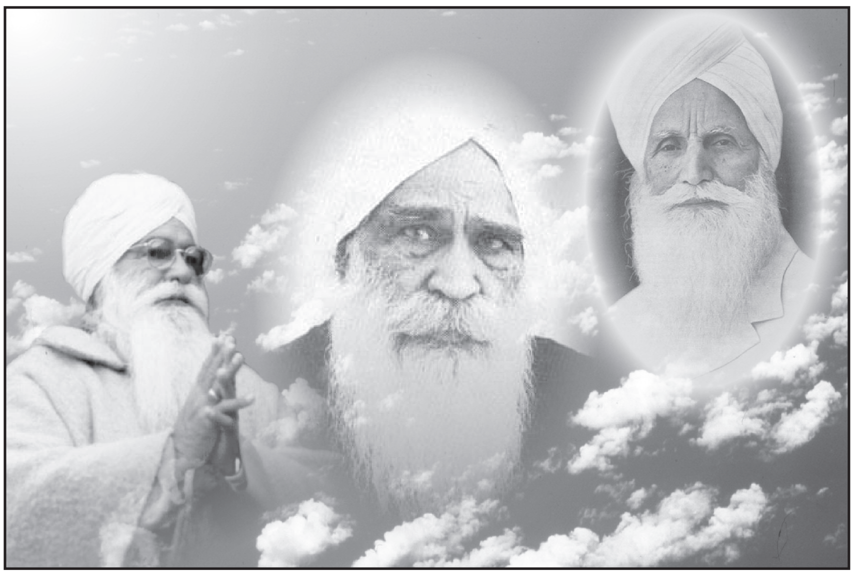

प्रकाशक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा
उप सम्पादक : नंदिनी
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : सुखपाल कौर नौरिया, जयप्रकाश तापड़िया व राजेश कुक्कड़
पहला संस्करण : 11 सितम्बर - 2003
दूसरा संस्करण : 06 फरवरी - 2006
सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335039 जिला श्री गंगानगर (राज.)

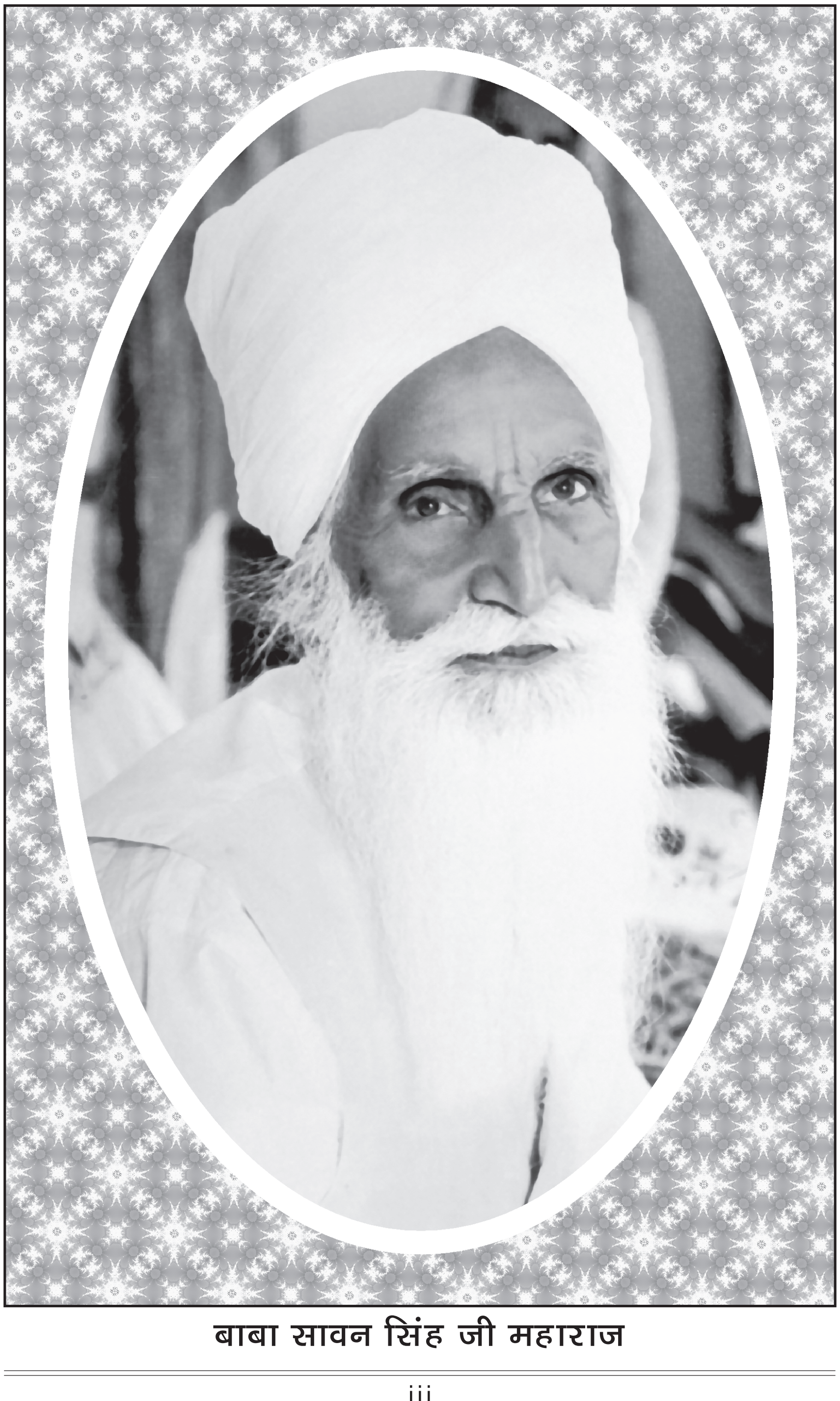

बाबा सावन सिंह जी महाराज

परम सन्त हजूर कृपाल सिंह जी महाराज

शुभ जन्मदिवस - 6 फरवरी

खुशियों का ख़ज़ाना

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया-मेहर से यह अमूल्य ग्रन्थ **'खुशियों का ख़ज़ाना'** आपके महान गुरु परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के शुभ जन्म दिवस 6 फरवरी-2006 पर संगत को भेंट किया जा रहा है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने सन् 1980 में अपना बहुमूल्य समय निकालकर 'गुरु ग्रन्थ साहब' में से गुरु अर्जुनदेव जी की बानी **'सुखमनी साहब'** की व्याख्या का कार्य किया। बाबाजी सदा ही कहा करते थे कि हम इस पर अमल करें और अपने जीवन को सफल बनाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के लफ्जों में: **इस बानी का नाम 'सुखमनी' इसलिए है कि यह मन को सुख देती है। जो इसे मणि की तरह समझता है, यह उसके अंदर प्रकाश कर देती है। 'सुखमनी' में उन कर्मों का ज़िक्र है जो हमारे और परमात्मा के बीच रुकावट हैं।**

प्रेमियों से प्रार्थना है कि इस अमूल्य ग्रन्थ **'खुशियों का ख़ज़ाना'** को पूरा सम्मान दें। गुरुबानी से प्यार करने वाले प्रेमियों के लिए बनाए गए इस अमूल्य ग्रन्थ में बहुत सी कमियाँ व त्रुटियाँ रह गई होंगी, जिसके लिए क्षमा के याचक हैं। आशा करते हैं प्रेमी इस ग्रन्थ से लाभ उठायेंगे।

धन्यवाद

प्रेम प्रकाश छाबड़ा (सम्पादक)
अजायब बानी,
1027, अग्रसेन नगर,
श्री गंगानगर - 335 001 (राज.)
दूरभाष - 0154 - 246 4601 व 094144 80303

कलयुग में गुरुओं का आगमन

	गुरु साहिबान	जीवन काल	सन्तमत की सेवा के समय आयु	चोला छोड़ते समय आयु	कार्यक्षेत्र	धर्म
1	कबीर साहब	1398–1518	....	120	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	मुस्लमान
2	गुरु नानक साहब	1469–1539	....	70	करतारपुर (पंजाब)	हिन्दू
3	गुरु अंगद साहब	1504–1552	34	48	खंडूर साहब (पंजाब)	हिन्दू
4	गुरु अमरदेव	1479–1574	83	95	गोइंदवाल (पंजाब)	हिन्दू
5	गुरु रामदास	1534–1581	40	47	अमृतसर (पंजाब)	हिन्दू
6	गुरु अर्जुनदेव	1563–1606	18	43	अमृतसर (पंजाब)	हिन्दू
7	गुरु हरगोबिन्द	1595–1644	11	49	हरगोबिन्दपुर (पंजाब)	हिन्दू
8	गुरु हरिराय	1630–1661	14	31	हरगोबिन्दपुर (पंजाब)	हिन्दू
9	गुरु हरिकृष्ण	1656–1664	5	8	दिल्ली	हिन्दू
10	गुरु तेग बहादुर	1621–1675	43	54	पटना (बिहार)	हिन्दू
11	गुरु गोविंद सिंह	1666–1708	9	42	आनन्दपुर साहब	सिख
12	सन्त रत्तनाकरराव	....	....	....	पूना (महाराष्ट्र)	हिन्दू
13	तुलसी साहब	1763–1843	....	80	हाथरस (उत्तर प्रदेश)	हिन्दू
14	स्वामी जी महाराज	1818–1878	25	60	आगरा (उत्तर प्रदेश)	हिन्दू
15	बाबा जयमल सिंह	1838–1903	40	65	ब्यास (पंजाब)	सिख
16	बाबा सावन सिंह	1858–1948	45	90	ब्यास (पंजाब)	सिख
17	सन्त कृपाल सिंह	1894–1974	54	80	दिल्ली	सिख
18	सन्त अजायब सिंह	1926–1997	48	71	16 पी.एस. (राजस्थान)	सिख

खुशियों का ख़ज़ाना

विवरण		पृष्ठ संख्या
जीवन परिचय	गुरु अर्जुनदेव जी	1
जीवन परिचय	परम सन्त अजायब सिंह जी	7
अष्टपदी : एक	सिमरन	15
अष्टपदी : दो	हरि का नाम	31
अष्टपदी : तीन	चार पदार्थ	51
अष्टपदी : चार	रेत का घर	69
अष्टपदी : पांच	मिथ्या	87
अष्टपदी : छह	मालिक की कृपा	103
अष्टपदी : सात	साधु की महिमा	113
अष्टपदी : आठ	ब्रह्मज्ञानी	125
अष्टपदी : नौ	भक्त कैसा हो?	135
अष्टपदी : दस	सब कुछ उसके हाथ में	147
अष्टपदी : ग्यारह	वह प्रभु	157

खुशियों का ख़ज़ाना

अष्टपदी : बारह	**अहंकार**	171
अष्टपदी : तेरह	**निन्दा**	189
अष्टपदी : चौदह	**परमात्मा का आसरा**	211
अष्टपदी : पन्द्रह	**साधु–सेवा**	223
अष्टपदी : सौलह	**खुशियों का ख़ज़ाना**	235
अष्टपदी : सतरह	**भरोसा**	247
अष्टपदी : अठारह	**परमात्मा कैसा है?**	263
अष्टपदी : उन्नीस	**नाम का ख़ज़ाना**	275
अष्टपदी : बीस	**दीनता**	289
अष्टपदी : इक्कीस	**बेअन्त**	301
अष्टपदी : बाईस	**रक्षक**	311
अष्टपदी : तेईस	**परमात्मा ही परमात्मा**	325
अष्टपदी : चौबीस	**सुखमनी**	337

खुशियों का खज़ाना

प्रकाशक व सम्पादकः प्रेम प्रकाश छाबड़ा ii
बाबा सावन सिंह जी महाराज iii
शुभ जन्मदिवस - 6 फरवरी iv
गुरु प्यारी साध संगत v
कलयुग में गुरुओं का आगमन vi
विवरण vii
जीवन परिचय - गुरु अर्जुनदेव जी १
जीवन परिचय - परम सन्त अजायब सिंह जी ७
सिमरन १५
हरि का नाम ३१
चार पदार्थ ५१
रेत का घर ६९
मिथ्या ८७
मालिक की कृपा १०३
साधु की महिमा ११३
ब्रह्मज्ञानी १२५
भक्त कैसा हो? १३५
सब कुछ उसके हाथ में १४७
वह प्रभु १५७
अहंकार १७१
निन्दा १८९
परमात्मा का आसरा २११
साधु-सेवा २२३
खुशियों का खज़ाना २३५
भरोसा २४७
परमात्मा कैसा है? २६३
नाम का खज़ाना २७५

दीनता २८९
बेअन्त ३०१
रक्षक ३११
परमात्मा ही परमात्मा ३२५
सुखमनी ३३७

जीवन परिचय - गुरु अर्जुनदेव जी

गुरु अर्जुनदेव जी सुखमनी साहब के रचयिता हैं। आप सिक्खों के दस गुरुओं में से पांचवें गुरु थे। आपका जन्म 15 अप्रैल, सन् 1563 में हुआ। आपके पिता गुरु रामदास जी और माता बीबी भानी थी।

बचपन से ही आपके अंदर परमात्मा से लौ लगाने की प्रबल इच्छा थी। इस संसार में अनेकों प्राणी मालिक के साथ लौ लगाते हैं मगर उनका उद्देश्य सांसारिक भोगों को प्राप्त करना होता है। कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो उस परमात्मा से सच्चा प्यार करते हैं।

गुरु रामदास जी के तीन पुत्र पिरथी, महादेव और अर्जुनदेव थे। गुरु रामदास जी को सन् 1581 में लाहौर के एक निकटतम सम्बंधी सहारीमल के बेटे के विवाह में शामिल होने का निमंत्रण मिला। रामदास जी को उस समय फुर्सत नहीं थी। इसलिए आपने अपने किसी पुत्र को विवाह में भेजने का वायदा कर लिया।

रामदास जी ने पहले अपने बड़े पुत्र पिरथी को बुलाकर कहा, ''वह विवाह में जाए और पन्द्रह दिन वहीं रहे।'' पिरथी ने सोचा कि मैं इतने समय आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित हो जाऊँगा। मुझे ज्ञान-रूपी गद्दी नहीं मिलेगी। उसने कुछ बहाने बनाकर विवाह में जाने से इनकार कर दिया। दूसरे बेटे महादेव को नाम-खुमारी का नशा चढ़ा रहता था। वह दुनियावी कामों को नफरत से देखते थे।

गुरु रामदास जी के पास अपने छोटे पुत्र अर्जुनदेव को लाहौर भेजने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव को बुलाया और आज्ञा दी कि वे लाहौर में

विवाह का काम पूरा होने के बाद वहीं रुककर संगत की सेवा करें। बुलाए जाने पर ही वापिस आएं।

अर्जुनदेव एक पल के लिए भी अपने इष्ट गुरु से अलग नहीं होना चाहते थे। लेकिन आपने अपने गुरु के आगे सिर झुका दिया और लाहौर विवाह समारोह में चले गए।

विवाह के सारे कार्यक्रम पूरे हो गए। कई दिन बीत गए पर अर्जुनदेव को कोई संदेश नहीं मिला तो विरह से आपके प्राण सूखने लगे। आपने सतगुरु को याद दिलाने के लिए यह कविता लिखकर भेजी :

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताईं, बिलप करे चात्रिक की न्याईं।
त्रिखा न उतरै सांत न आवै, बिन दरसन संत प्यारे जीओ।

जब संदेशवाहक पत्र लेकर पहुँचा उस समय गुरु रामदास जी आराम फरमा रहे थे। पिरथी ने कहा, ''मैं यह पत्र उनको दे दूँगा।'' लेकिन पिरथी ने वह पत्र अपने कोट की जेब में रख लिया। इसी तरह समय बीतता गया और अर्जुनदेव को कोई संदेश नहीं मिला। विरह की अग्नि और तेज हो गई तो उन्होंने एक और कविता लिखकर भेजी :

तेरा मुख सुहावा जीओ सहज धुन बाणी।
चिर होआ देखे सारिंगपाणी।

पिरथी ने यह कविता भी छुपा ली। अर्जुनदेव ने तीसरी कविता लिखकर उस पर तीन का अंक लिखकर भेजा।

इक घड़ी न मिलते ता कलजुग होता।
हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुध भगवंता।

इस बार अर्जुनदेव ने संदेशवाहक से कहा कि वह यह पत्र

गुरु साहब के हाथ में ही देकर आए। जब गुरु रामदास जी ने पत्र पढ़ा तो हुक्म दिया कि पहले के पत्र भी खोजो। पिरथी ने कसम खाकर कहा, ''उसे उन पत्रों के बारे में कुछ भी मालूम नहीं।'' रामदास जी ने पिरथी की तलाशी का हुक्म दिया। पिरथी के कोट की जेब में से पहले के दोनों पत्र मिले। तब तक अर्जुनदेव जी को वापिस आने का फरमान मिल चुका था।

रामदास जी ने कहा, ''जो आगे की कविता पूरी करेगा, वही आत्मिक ज्ञान का उत्तराधिकारी होगा।'' अर्जुनदेव ने कविता इस तरह पूरी की :

भाग होआ गुर संत मिलाया, प्रभ अबिनासी घर मह् पाया।
सेव करी पल चसा न विछुड़ां, जन नानक दास तुमारे जीओ।

अर्जुनदेव की निष्ठा देखकर, रामदास जी ने उसे गले लगा लिया। अर्जुनदेव जी अपने गुरु की आज्ञा के अंदर ही रहते थे। उन्होंने अपने मन को गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया था।

गुरु रामदास जी के देह त्याग के बाद अर्जुनदेव को सारी सम्पत्ति, धन और नाम मिला। वह अपने आपको मालिक का नौकर और गुरु के कार्य को आगे बढ़ाने का साधन मानते थे।

आपने अमृतसर में हरि मन्दिर बनवाया, जो आज स्वर्ण मन्दिर कहलाता है। इस मन्दिर की नींव एक मुसलमान धार्मिक आदमी मियाँमीर ने रखी। इस मन्दिर को बनाने में सभी धर्म के लोगों ने योगदान दिया। यहाँ हिन्दू, मुसलमान और अछूत सब मिलकर लंगर खाते थे।

जब आपके बड़े भाई पिरथी ने अपना हक जताया तो आपने सारी सम्पत्ति उसे सौंप दी। आपने अपने ऐशो-आराम, धन-सम्पत्ति त्यागकर गुरु के कार्य को आगे बढ़ाया। आप अमृतसर

छोड़कर गांव-गांव घूमने लगे, प्यार और शान्ति का सन्देश फैलाने लगे।

जो प्राणी जीवों के उद्धार के लिए दुनिया में आता है, मालिक का काम करता है; दुनिया उसके लिए मुश्किलें पैदा करती है। पिरथी की चालों ने अर्जुनदेव को बहुत कष्ट दिए।

अकबर ने आपको अपने दरबार में बुलाया और आप पर धर्म को अपवित्र करने के इल्जाम लगाए। इल्जाम की सुनवाई के बाद अकबर ने महसूस किया कि गुरु अर्जुनदेव एक पवित्र आत्मा हैं। अकबर ने आपसे माफी माँगी। गुरु अर्जुनदेव ने अकबर को समझाया, ''राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने ऐशो-आराम त्यागकर प्रजा के हितों का ख्याल रखे।'' अकबर ने अपने जीवन काल में ऐसा ही किया। अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर ने सिंहासन हथिया लिया।

जहाँगीर ने फिर से गुरु अर्जुनदेव को दरबार में बुलवाया और उन पर झूठे लाँछन लगाए। गुरु अर्जुनदेव को होनी के बारे में ज्ञान था, इसलिए आपने दरबार में जाने से पहले अपने पुत्र हरगोविंद को गद्दी का वारिस घोषित कर दिया। आपने अपने परिवार के लोगों से और शिष्यों से कहा :

''जो पैदा होता है वह नष्ट होता है, यह कुदरत का नियम है। मगर आत्मा नष्ट नहीं होती। इस देह से प्यार मत करो। अपने आपको उस परमात्मा के साथ जोड़ो जो अमर है।''

गुरु अर्जुनदेव जी को जेल में बन्द कर दिया गया। यातनाएं दी गई। आपके ऊपर उबलता हुआ पानी डाला गया। आपके सिर पर गर्म रेत डाली गई। आप यह सब परमात्मा की मौज़ मानकर चुपचाप सहते रहे। आपके दर्शन करने और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए बहुत से लोग आने लगे। एक धार्मिक व्यक्ति

आपको बचाने के लिए, भगाकर ले जाने के लिए भी आया। मगर आपने ऐसा करने से इनकार करते हुए उससे कहाः

''धैर्य की परीक्षा दुःख में ही हो सकती है। मैं उस मालिक का एक छोटा सा नौकर हूँ। मैं उसकी मौज छोड़कर क्यों कहीं जाऊँ? मेरी इस हालत को देखकर और लोग भी इससे शिक्षा लेंगे। दुःख की घड़ी में उन्हें साहस मिलेगा।''

शरीर छोड़ने से एक दिन पहले आपको अपने शिष्यों से मिलने की इजाजत दी गई। बेशक आपका शरीर घावों से भरा हुआ था, परन्तु आपका चेहरा एक नूर से चमक रहा था। आपने अपने शिष्यों से कहा :

''मेरा दुनियावी जीवन समाप्त हो रहा है। मेरे बाद हरगोविंद इस कार्य को आगे बढ़ाते रहेंगे। अब जुल्म बहुत बढ़ गया है। अत्याचारी मुसलमानों से लोहा लेने की आवश्यकता है इसलिए अब हरगोविंद एक सिपाही के रूप में कार्य करेंगे और हिन्दुस्तान की प्रजा को अत्याचारी मुगल बादशाहों से बचाएंगे।''

यह कहकर आप वापिस जेल में लौट गए। अंत में अत्याचारों को सहते सहते आप 30 मई सन् 1606 को ज्योति में समा गए। आप उस समय 43 वर्ष के थे।

गुरु अर्जुनदेव जी ने अपना सारा जीवन परमात्मा की भक्ति में लगाया। आपने परमात्मा की याद में कई विरह और दर्द भरे दोहे लिखे। आपने अपने से पहले चार गुरुओं और कई पवित्र सन्तों के दोहों को भी इकट्ठा करके एक ग्रन्थ तैयार किया, जिसका नाम गुरुग्रन्थ साहब रखा गया।

गुरुग्रन्थ साहब पंजाबी भाषा में है। इस ग्रन्थ में हिन्दू-मुसलमान व सिख गुरुओं की बानियाँ हैं। सुखमनी साहब, गुरुग्रन्थ साहब का एक बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

❖ ❖ ❖

जीवन परिचय - परम सन्त अजायब सिंह जी

कुदरत का कानून है कि जीव जब परमात्मा से प्रार्थना करता है तो परमात्मा सन्त-रूप में मनुष्य का चोला धारण करके इस दुनिया में हमारी मदद के लिए आते हैं। सन्तों की महिमा को समझना हम जीवों के बस की बात नहीं। सन्त शारीरिक तौर पर तो दुनिया में रहते हैं, परन्तु उनकी लिव सदा उस परमात्मा के साथ लगी रहती है। हम दुनियावी लोग ज्यादा से ज्यादा उनके जीवन की कुछ असाधारण घटनाओं को ही बयान कर सकते हैं।

परम सन्त अजायब सिंह जी ने सन् 1979-80 में अपना बहुमूल्य समय निकालकर संगत की सेवा के लिए **सुखमनी साहब** की व्याख्या का कार्य किया।

सन्त अजायब सिंह जी का जन्म 11 सितम्बर सन् 1926 को मेहना गांव जिला बठिंडा (पंजाब) के एक सिक्ख परिवार में हुआ। आपके माता-पिता ने आपका नाम सरदारा सिंह रखा। परन्तु आपके पहले गुरु बाबा बिशनदास ने, जो बहुत पढ़े लिखे थे, शाही परिवार को छोड़कर फकीर बने थे और ब्रह्म के ज्ञाता थे, आपका नाम बदलकर अजायब सिंह रख दिया।

बचपन में ही आपके माता-पिता का देहान्त हो गया। आपका पालन-पोषण आपके मामा-मामी द्वारा हुआ। आप उन्हें ही अपना माँ-बाप कहते थे। आपकी स्कूली शिक्षा बहुत कम थी। आपने धार्मिक ग्रन्थों का बहुत अध्ययन किया। आपमें प्रभु से मिलने की बहुत लगन थी, जिसे आप उस परमात्मा की कृपा मानते हैं।

बचपन में आपके बुजुर्गों ने आपको बताया कि गुरुग्रन्थ साहब ही आपके गुरु हैं। भोलेपन के कारण आप दिन रात

गुरुग्रन्थ साहब का पाठ करते रहते। गुरुग्रन्थ साहब के प्रति आपकी निष्ठा इतनी प्रबल हो गई कि आपको सपनों में भी गुरुग्रन्थ साहब ही नजर आते मगर शान्ति न मिली। गुरुग्रन्थ साहब को पढ़कर परमात्मा से मिलने की तड़प बढ़ती चली गई। आप परमात्मा को तलाशने की कोशिश में लग गए।

आपने ऐशो-आराम, धन-दौलत से मुँह मोड़ लिया। परमात्मा से मिलने का रास्ता बहुत कठिन है, इसमें धोखे भी बहुत हैं। आप थोड़े से बड़े हुए तो आपने बहुत से लोगों से परमात्मा के मिलाप की चर्चा की। कई लोगों ने आपको परमात्मा दिखाने की कोशिश भी की। इसी तरह कई साल तक कई गुरुओं की सेवा करके बहुत कष्ट पाकर भी आपको वह वस्तु प्राप्त नहीं हुई जिसकी आपको तलाश थी।

आखिर सन् 1940 में आपकी मुलाकात बाबा बिशनदास जी से हुई। बाबा बिशनदास के पास 'दो शब्द' का भेद था। उन्होंने आपको रूहानी रास्ता बताया। वह आपके साथ बहुत सख्ती से पेश आया करते थे, कभी-कभी आपको थप्पड़ भी मार दिया करते। आप धुन के पक्के थे। आप जान चुके थे कि इस साधु के पास कुछ असली धन है। आप उनके पीछे लगे रहे।

कुछ समय बाद आप फौज में चले गए। अपनी आदत के अनुसार भक्ति में लगे रहे और देश की सेवा करते हुए एक फौजी का फर्ज भी निभाते रहे। जब भी मौका मिलता आप छुट्टी लेकर बाबा बिशनदास के दर्शन करने जाते।

एक बार आपकी यूनिट ब्यास (पंजाब) में थी। तब आपको महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों का मौका मिला। महाराज सावन के चेहरे पर ऐसा नूर था जिसे देखकर आपको ऐसा लगा कि आप परमात्मा को देख रहे हैं। आपने उनसे 'नामदान' माँगा।

सावन सिंह जी ने कहा, ''जिसने तुम्हें 'नामदान' देना है वह खुद चलकर तुम्हारे घर आएगा।'' आपने महसूस किया कि पूरा सन्त मिल गया है। आप बाबा बिशनदास को लेकर ब्यास गए। बाबा बिशनदास ने भी सावन सिंह जी से नामदान के लिए प्रार्थना की लेकिन उन्होंने कहा, ''आपकी आयु ज्यादा हो चुकी है। इसलिए आपको नामदान नहीं दिया जा सकता।'' उन्होंने आश्वासन दिया कि आपकी संभाल की जाएगी।

सन् 1950 में आपने फौज की नौकरी छोड़ दी। आप अपना पारिवारिक धन-दौलत, जमीन-जायदाद त्यागकर खेती करने लगे। आप एक बार खेतों में काम कर रहे थे तो बाबा बिशनदास जी आपके पास आए और कहने लगे, ''अजायब! मैं तुझसे बहुत खुश हूँ और तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।'' इसके साथ ही उन्होंने अपनी आँखों द्वारा रूहानियत की शक्ति आपकी आँखों में डाल दी और कहा, ''तुम्हें इन शक्तियों को और बढ़ाना है। कोई और ताकत तुम्हें खुद ही आकर मिलेगी।'' उसके अगले ही दिन बाबा बिशनदास ने देह त्याग दी।

आपको अन्तर में ही बाबा बिशनदास ने अपने पैतृक खेत छोड़कर खूनी चक्क - राजस्थान में आश्रम बनाने का हुक्म दिया। राजस्थान में खूनी चक्क गांव वह जगह है जहाँ पर बेहद गर्मी पड़ती थी। पानी के लिए मीलों मील जाना पड़ता था। जब वहाँ पर आश्रम बनकर तैयार हुआ तो पानी का इन्तजाम भी हो गया। खेती भी अच्छी होने लगी, जिससे लंगर चलने लगा। आप वहाँ बैठकर अभ्यास करते रहे। थोड़े समय में ही यह बात दूर-दूर तक फैल गई कि यहाँ कोई सन्त रहते हैं। जिनको प्रभु की तलाश थी वे लोग आपके पास आने लगे। आप वहाँ 'सन्त जी' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

आपका आत्मिक ज्ञान बढ़ता गया। अन्तर में आपको स्वामी

शिवदयाल जी के दर्शन होने लगे। धीरे-धीरे वह स्वरूप किसी और सन्त के स्वरूप में बदल गया। सन् 1967 में महाराज कृपाल सिंह जी आपके आश्रम में आए, आपको 'नामदान' दिया। इस तरह बाबा सावन सिंह जी की भविष्यवाणी सच साबित हुई।

हजूर कृपाल ने आपको खूनी चक्क आश्रम छोड़कर 16 पी. एस. जाने का हुक्म दिया। एक बार तो आपका दिल घबराया कि इतनी मुश्किलों से यह आश्रम बनाया है! अब यह छोड़ना पड़ेगा? लेकिन गुरु के हुक्म पर अटूट विश्वास होने के कारण आप सब कुछ छोड़कर आश्रम से बाहर हो गए।

आप अपने पुराने साथी रतन सिंह (लाला जी) के गांव 16 पी. एस. चले गए। आप वहाँ एक गुफा बनवाकर उसमें लकड़ी के तख्त पर बैठकर लगातार पाँच-छह साल भजन अभ्यास करते रहे। एक ऐसा समय आया कि आप तीन दिन तक गुफा से बाहर नहीं निकले। हजूर कृपाल वहाँ पहुँचे। आपका सेवक जो बाहर आपकी सेवा के लिए रहता था, उसने हजूर कृपाल को रोते हुए सब हाल बताया। हजूर गुफा की सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए यह बोले :

चलो नी सईयों रण वेखन चलिए,
जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोलां,
मौतों मूल ना डरदे॥

हजूर कृपाल ने आपको गुफा से बाहर लाकर आपकी सुरत को नीचे खींचा और कहा, ''एक तो पास हुआ।''

हजूर कृपाल समय समय पर आपसे मिलने राजस्थान आया करते थे। हजूर ने आपको यह आदेश दिया हुआ था, ''मैं जब

भी मुनासिब समझूँगा तुमसे मिलने राजस्थान आऊँगा। तुम्हें दिल्ली नहीं आना।''

सन् 1972 में हजूर कृपाल ने राजस्थान की आखिरी यात्रा की। उस समय 'नामदान' का आयोजन किया गया। इस आयोजन में हजूर ने प्रेमियों को आपसे 'नामदान' दिलवाया। आपने इसका विरोध भी किया मगर हजूर के आगे कोई जोर न चला। यह हजूर के जीवन काल की एक असाधारण घटना थी।

कुछ ही क्षणों बाद हजूर ने आपको अपने पास बुलाया और आपकी आँखों में देखकर कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ; मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।'' जैसे जैसे महाराज कृपाल बोल रहे थे, आपको लग रहा था कि कोई ताकत आँखों के द्वारा आपके शरीर में प्रवेश कर रही है। लगभग 22 साल पहले बाबा बिशनदास ने भी आपको इसी तरह कहा था।

अगस्त 1974 में आप प्रेमियों को दर्शन देने के लिए 77 आर.बी. पहुँचे तो आपको पता चला कि आपके प्यारे गुरु महाराज कृपाल चोला छोड़ चुके हैं। आप गुरु के दुःख में रोते रोते सावन आश्रम दिल्ली पहुँचे। सावन आश्रम वालों ने आपको वापिस जाने के लिए कहा। जैसा कि आमतौर पर गुरु के जाने के बाद गुरु की सम्पत्ति और गद्दी के लिए झगड़े हुआ करते हैं वहाँ भी इसी किस्म के झगड़े हो रहे थे।

जब आप दिल्ली से वापिस चले तो आपके दिल दिमाग पर गुरु के जाने का बहुत सदमा था। आप किसी से मिलना नहीं चाहते थे। किसी से कोई बातचीत नहीं करना चाहते थे। आप रास्ते में ही एक छोटे से गांव - किल्लेयाँवाली में छिपकर रोते रहे, भक्ति करते रहे। उस गांव में आपको कोई भी नहीं जानता था। जिस तरह आप अपने गुरु के वियोग में दुःखी थे उसी तरह

आपके प्रेमी शिष्य आपके बिछोड़े में दुःखी और परेशान थे।

आखिर सरदार गुरदेव सिंह (पाठी जी) आपकी तलाश में 77 आर.बी. से अपना घर छोड़कर आपको ढूँढने निकल पड़े। पाठी जी इस इरादे से निकले कि आपको ढूँढकर ही घर वापिस आऐंगे। प्रभु की दया से उनकी मेहनत सफल हुई और उन्होंने आपको ढूँढ ही लिया। उन्होंने आपके आगे प्रार्थनाएं की और आपको वापिस 77 आर.बी. ले आए।

सन् 1980-81 में आप अपने गुरु के आन्तरिक आदेश पर 16 पी.एस. आए जहाँ पर गुफा में बैठकर आपने भजन अभ्यास किया और उसी जगह को आश्रम का रूप दे दिया।

आपके बाकी जीवन की कहानी तपस्या, त्याग और भक्ति की कहानी है। आप यहाँ पर अपनी सारी जिंदगी भजन अभ्यास और गुरु की याद में बिता सकते थे। मगर आपने अपने गुरु के आदेश के अनुसार दुनिया का भला करने के लिए सतसंग व 'नामदान' का कार्यक्रम जारी रखा।

देश-विदेश के हर कोने से प्रेमी आपके पास पहुँचकर फायदा उठाने लगे। आपने देश और विदेशों में सतसंगों का, 'नामदान' का कार्यक्रम रखा। आपने अपने जीवन काल में बहुत बार पूरी दुनिया (अमेरिका, कॅनेडा, कोलम्बिया, मेक्सिको, फ्राँस, इंग्लैंड, जर्मनी, स्विटजरलैंड, इटली, घाना, साउथ अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि) में जाकर अपने गुरु कृपाल का यश गाया और तड़पती आत्माओं को प्यार बख्शा।

पश्चिमी देशों में जहाँ जहाँ पर हजूर कृपाल ने आश्रम बनवाए थे, आपने वहाँ पर उनकी मैनेजिंग कमेटियाँ बनवाकर वहाँ के प्रेमियों को उन आश्रमों का कार्यभार संभलाया। वहाँ

आज भी उसी तरह परमात्मा कृपाल का यशगान हो रहा है और प्रेमी फायदा उठा रहे हैं।

आपने अपना जीवन बहुत ही साधारण तरीके से व्यतीत किया। आपने हजूर कृपाल के ज्योति जोत समाने के बाद 23 साल तक खेती-बाड़ी करके अपना पेट पाला और उसी आमदनी में से खुले दिल से संगत की, दुखियों और दर्दमंदों की सेवा की। जो आपके पास श्रद्धा और प्यार से आया आपने उसे अपनी 'नाम' की कमाई में से 'नामदान' बख्शा।

वे जीव बहुत भाग्यशाली थे जो आपके चरणों में पहुँचे और आपकी दया मेहर को प्राप्त कर सके।

अन्त में आप संगत की सेवा करते हुए और अपने गुरु कृपाल का यश गाते हुए 71 वर्ष की आयु में 6 जुलाई 1997 को अपने गुरु कृपाल की गोद में चले गए।

आज भी आपके आश्रम 16 पी.एस. में उसी तरह आपकी याद मनाई जाती है और संगत आपके प्यार को पा रही है।

❖ ❖ ❖

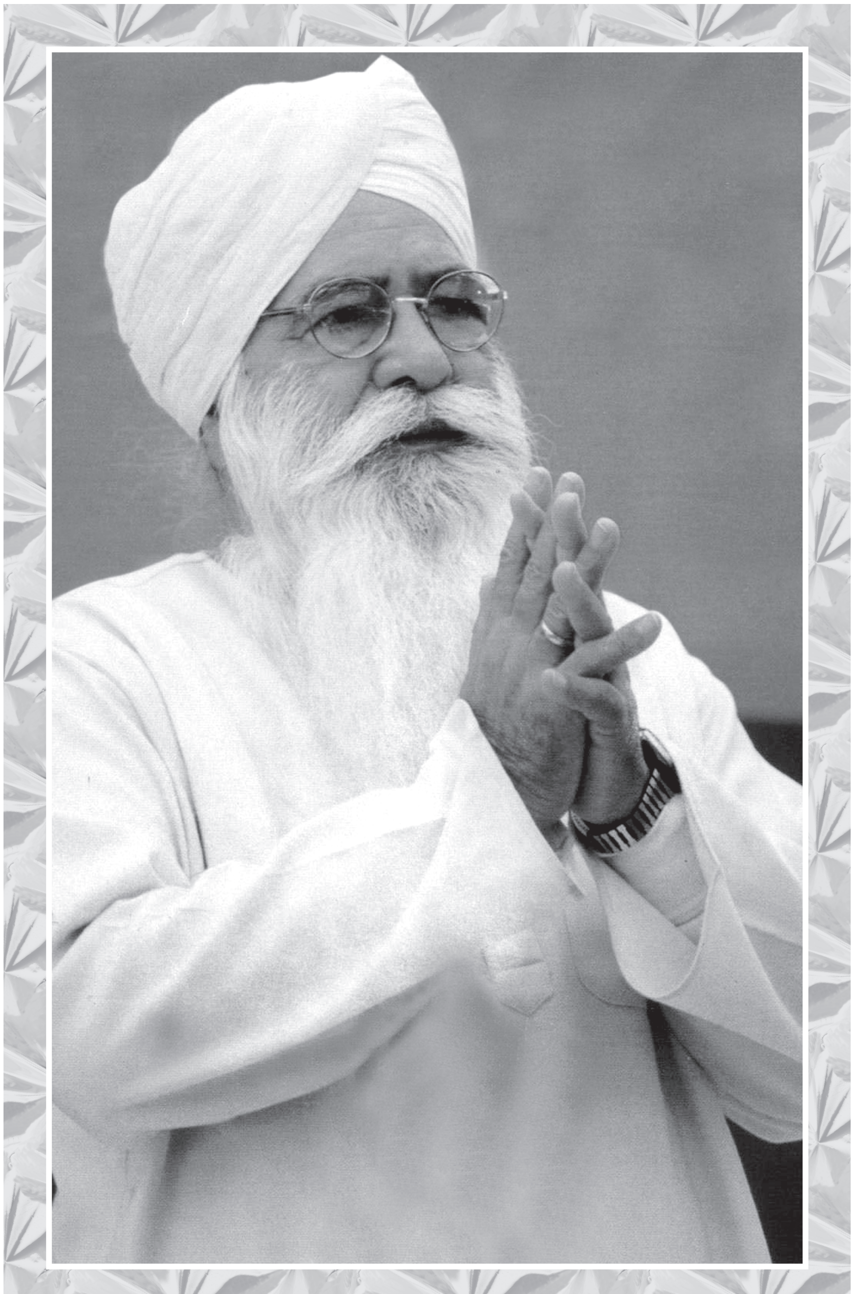

सिमरन

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥
सतिगुरए नमह ॥ श्री गुरदेवए नमह ॥

श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज सबसे पहले उस अनामी पुरुष स्वामी को नमस्कार करते हुए कहते हैं कि युगादि गुरु यानि सतपुरुष को, शब्द गुरु को और प्रत्यक्ष गुरु को मेरा नमस्कार है।

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥

श्री गुरु अर्जुनदेव जी **सिमरन** पर जोर देते हैं कि पुराने समय में जीवों को पहले सिमरन दिया जाता था। सिमरन पका लेने के बाद धुन दी जाती थी। अब सन्तों ने हम पर भारी दया की है। सन्त हमें सिमरन और धुन दोनों इकट्ठी ही दे देते हैं।

पुराने समय में, कई बार ऐसा होता था कि **सिमरन** पकाने से पहले गुरु चोला छोड़ जाता था या सेवक चोला छोड़ जाता था; जिससे सेवक का काम अधूरा रह जाता था। **सिमरन** धुनात्मक नाम से जुड़ने का एक जरिया है। लेकिन सतसंगी सिमरन पर ज्यादा जोर नहीं देते; क्योंकि इन्हें सिमरन की अहमियत का पता नहीं है।

हमें सिमरन पर बहुत जोर देना चाहिए। जब तक हम अपने फैले हुए ख्यालों को **सिमरन** के जरिए आँखों के पीछे इकट्ठा नहीं करते, शब्द हमें कितना भी जबरदस्त क्यों न

सुनाई दे वह हमें ऊपर नहीं खींचेगा। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''**सिमरन** करो। **सिमरन** करने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जो आपके शरीर में क्लेश कर रहे हैं आप इनसे बहुत आसानी से छुटकारा पा सकेंगे।''

सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥

अब आप बहुत प्यार से समझाते हैं कि हम सभी अपने अपने काम का सिमरन करते हैं। जैसे दुकानदार अपनी दुकान का सिमरन करता है। क्लर्क अपने दफ्तर का **सिमरन** करता है। ये सब दुनिया के सिमरन हैं। इनके करने से हमें बार बार इस संसार में आना पड़ता है। आपको उस प्रभु का सिमरन करना है। प्रभु के सिमरन से अनेकों लोग तर गए हैं।

बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमने सत्ताईस स्मृतियाँ, अठारह पुराण और चारों वेदों का अच्छी तरह अध्ययन करके देखा है। ये सभी ग्रन्थ सिमरन पर जोर देते हैं।''

बहु शास्त्र बहु स्मृति, पेखे सरब ढ़ढोल।
पूजस नांहि हर हरे, नानक नाम अमोल॥

किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥

आप कहते हैं, ''अगर किसी ने थोड़ा भी **सिमरन** किया है तो उसकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। गुरु गोविंदसिंह जी कहते हैं :

एक चित्त जो ईक छिन ध्यावे। काल फाँस के विच नहीं आवे॥

महाराज सावन सिंह जी का लुधियाना में एक सेवक पेशे से स्कूल-मास्टर था। वह एक दिन सुबह सैर करने निकला तो **सिमरन** करते करते उसे यह भी ख्याल नहीं रहा कि वह लुधियाना से 13 मील दूर आ गया है। जब उसने वहाँ पहुँचकर लोगों से पूछा तब उसे पता लगा कि वह इतनी दूर आ गया है। वहाँ के लोगों ने उसकी वापिसी के इन्तजाम की पेशकश की। उसने कहा, ''जो ताकत मुझे यहाँ लाई है, वही ताकत मुझे वापिस भी ले जाएगी।'' इसलिए **सिमरन** करते समय हमें अपने तन की भी खबर नहीं रहनी चाहिए।

कांखी एकै दरस तुहारो॥
नानक उन संगि मोहि उधारो॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा! मुझे उन लोगों की संगत बख्शो जिनके अंदर तुमसे मिलने की इच्छा है। मुझे भी उनके पीछे पार लगाओ।'' जिस तरह काठ की संगत करके लोहा भी तर जाता है; उसी तरह जिनके अंदर प्रभु सत्ता काम कर रही है, हम भी उनकी संगत करके तर जाते हैं।

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु॥
भगत जना कै मनि बिस्राम॥

यह बानी मन को सुख देने वाली है। मन को सुख 'नाम' के जरिए ही आता है। 'नाम' का विश्राम भक्तों के अंदर ही है।

प्रभ कै सिमरनि गरभि ना बसै॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै॥

अब आप **सिमरन** की महिमा बयान करते हुए कहते हैं कि अगर हम सिमरन करते हैं तो हमें बार बार माता के पेट में आकर जन्म नहीं लेना पड़ता। **सिमरन** में इतनी शक्ति है कि

यम हमारे नजदीक नहीं आ सकते। सिमरन के जरिए ही हम दुनिया के दुःखों से बच सकते हैं।

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

अगर हम **सिमरन** करते हैं तो काल हमारे नज़दीक नहीं आ सकता। सिमरन में बहुत ताकत होती है, क्योंकि सिमरन के पीछे सन्तों की ताकत काम करती है। सन्त सुना-सुनाया सिमरन नहीं देते। उनका सिमरन कमाया हुआ होता है। अगर हम सिमरन करते हैं तो हमारा दुश्मन भी हमसे टल जाता है। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारा मन है जो हिरन की तरह इधर-उधर भटकता रहता है। सिमरन करने से यह स्थिर हो जाता है, हमारे काबू में आ जाता है। गुरु नानक जी कहते हैंः

राम नाम मन बेध्या, अवर कि करि विचार।

प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

अगर हम लगातार **सिमरन** करते हैं तो हमारे किसी भी काम में विघ्न नहीं पड़ता। शरीर को भी कोई दुःख नहीं आता। अगर हम सिमरन में जाग जाते हैं तो दुनिया की तरफ से सो जाते हैं। अगर हम 'नाम' में जाग जाएं तो बेशक हम चार रातें क्यों न जागे हों, सवाल ही पैदा नहीं होता कि नींद हम पर हमला करे। नींद सतसंगी पर हमला करती है। आप यहाँ सतसंग में देख लो! कि हम नींद के वश होकर कभी इधर गिरते हैं तो कभी उधर गिरते हैं।

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

सिमरन के जरिए हमारी ग्रहण शक्ति बढ़ जाती है। दुनिया का डर खत्म हो जाता है। फिर हम मालिक को बड़ा और दुनिया को छोटा समझते हैं। दुनिया का डर इन्सान को तब तक ही रहता है जब तक वह पाप और जुल्म करता है। पापी का मन हमेशा ही अंदर से डरा रहता है। अगर हम सच्चाई को अपने अंदर प्रगट कर लें तो दुनिया का क्या डर?

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि॥
सरब निधान नानक हरि रंगि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''आप यह **सिमरन** अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। अगर आप किसी कमाई वाले साधु से मिलेंगे, वह दया करके आपको अपना कमाया हुआ सिमरन देगा। सिमरन सारे सुखों और सारी **खुशियों का खज़ाना** है।'' कबीर साहब कहते हैं :

कबीरा संगत साध की, साहिब आवे याद।
लेखे में सोई घड़ी, बाकी के दिन बाद॥

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि॥

अब आप प्यार से समझाते हैं कि अगर हम सिमरन करते हैं तो हमारे अंदर ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ जाग जाती हैं; लेकिन सतसंगी को कभी भी इनका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। सिमरन के जरिए हमारे अंदर प्रभु प्राप्ति का ज्ञान पैदा हो जाता है, शब्द चलना शुरू हो जाता है।

प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा॥

अगर हम लगातार **सिमरन** करते हैं तो हमें हर तरह के पूजा-पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। जब हमारा **सिमरन** पक जाता है, हमारे अंदर से द्वैत-भाव खत्म हो जाता है। फिर हम सभी में उस परमात्मा को देखते हैं। गुरु नानक जी कहते हैं:

दूजा होए सो अवरो कहिए।

प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी॥

हिन्दुस्तान में आमतौर पर लोग पापों की मैल उतारने के लिए तीर्थों पर जाते हैं। दुनियादारों को यह निश्चय बँधवाया हुआ है कि उस पानी में नहाने से आप पापों से मुक्त हो जाएंगे। गुरु नानक कहते हैं, ''तीर्थ साधु की चरणधूलि के लिए तरसते हैं।'' लेकिन तीर्थ कहते हैं कि लोग हमारे अंदर पापों की मैल छोड़ जाते हैं। यह मैल साधु की धूलि ही खत्म कर सकती है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो लोग प्रभु का **सिमरन** करते हैं उन्हें घर बैठे ही सभी तीर्थों का फल प्राप्त हो जाता है। प्रभु दरगाह में उन्हें मान-इज्जत देता है।''

प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला॥

प्रभु का **सिमरन** करने से हमारा भला ही भला होता है। प्रभु हमें **सिमरन** करने का अच्छा फल देता है।

से सिमरहि जिन आपि सिमराए॥
नानक ता कै लागउ पाए॥

जब हमें यह पता लगता है कि **सिमरन** में इतनी खूबियाँ हैं तो हम सभी का दिल करता है कि हम भी सिमरन करें। गुरु

साहब कहते हैं कि यह हमारे बस का खेल नहीं। प्रभु ने यह काम अपने हाथ में रखा हुआ है। वही जानता है कि किससे सिमरन करवाना है। किसे फिर दुनिया में चक्कर लगवाने हैं। अगर वह दया करे तभी हम सिमरन कर सकते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हे परमात्मा! जो दिन-रात, उठते-बैठते तेरा **सिमरन** करने में लगे हुए हैं, मैं उनके पैर छूने को तैयार हूँ।''

हजूर महाराज कहा करते थे, ''अन्धे की यह ताकत नहीं कि वह सुजाखे को पकड़ ले; जब तक सुजाखा खुद अपनी अँगुली अन्धे को न पकड़ा दे।'' परमात्मा जिन पर दया-मेहर करता है उन्हें उस महात्मा के पास भेजता है जिसके अंदर परमात्मा खुद काम कर रहा होता है। जब वह महात्मा **सिमरन** देता है और मालिक दया करता है, हम तब ही **सिमरन** कर सकते हैं।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा॥
प्रभ के सिमरनि उधरे मूचा॥

जो प्रभु का **सिमरन** करते हैं वे सबसे ऊँची जगह *सच्चखंड* पहुँच जाते हैं। **सिमरन** के जरिए अनेकों को वहाँ पहुँचा देते हैं।

प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै॥

तृष्णा इन्सान को पागल कुत्ते की तरह इधर-उधर भगाती फिरती है। **सिमरन** करने से तृष्णा दूर हो जाती है। इन्सान में शान्ति व सन्तोष आ जाता है। प्रभु का **सिमरन** करने से परमात्मा का ज्ञान हो जाता है।

प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा॥

जब हम प्रभु का **सिमरन** करते हैं तो यम हमें दुःख नहीं दे सकते; हमारा रास्ता नहीं रोक सकते। **सिमरन** करने से प्रभु हमारी आशाएं पूरी करता है।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ॥

प्रभु का **सिमरन** करने से हमारे मन पर जन्म-जन्मांतरों से चढ़ी हुई मैल उतर जाती है। हमारा मन साफ हो जाता है। **सिमरन** करने से हमारी आत्मा अमर हो जाती है।

प्रभ जी बसहि साध की रसना॥
नानक जन का दासनि दसना॥

अगर प्रभु मन्दिरों में बसता होता तो पुजारियों को मिल जाता। गुरद्वारों में बसता होता तो भाइयों को मिल जाता। गिरजों में बसता होता तो पादरियों को मिल जाता। दुनिया में शान्ति फैल जाती। मजहबों के चक्कर न होते। दुनिया एक-दूसरे से नफरत न करती। आप कहते हैं, ''वह प्रभु साधु की रसना पर बसता है। मैं उन साधुओं का दास हूँ।'' कबीर साहब कहते हैं :

मन मेरा पंछी भया, उड़कर चढ़या आकास।
स्वर्ग लोक खाली पड़या, साहिब सन्तन पास॥

मैं उन साधुओं का दास हूँ जिन्होंने अपने मन को काबू में कर लिया है। वह मालिक जब भी जीवों को तारने के लिए आता है; किसी कामिल महात्मा का तन धारण करके आता है।

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''इस संसार में धनवान

और पतिवान वही हैं जो प्रभु का **सिमरन** करते हैं। इस दुनिया की धन-दौलत और इज्जत किसी के साथ नहीं जाती।''

प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान॥

जो प्रभु को सिमरते हैं दिन-रात उस प्रभु की याद बनाए बैठे हैं वे उस प्रभु को प्यारे हैं। प्रभु उन्हें ही अपने दरबार में जगह देता है।

प्रभ कउ सिमरहि से बेमुहताजे॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे॥

जो प्रभु को सिमरते हैं वे दुनिया में किसी के मुहताज नहीं रहते। वे दुनिया के सच्चे राजा होते हैं, सबके दिलों पर राज करते हैं।

प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी॥

जो प्रभु को सिमरते हैं उनका कभी नाश नहीं होता। गुरु नानक साहब कहते हैं :

सतगुरु मेरा सदा सदा, न आवे न जाए।
वो अविनाशी पुरुष है, हरि जेहा रहा समाए॥

सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला॥
नानक जन की मंगै रवाला॥

आप कहते हैं, ''जो दिन-रात **सिमरन** कर रहे हैं, मैं उनके चरणों की धूल माँगता हूँ।''

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी॥

प्रभु के **सिमरन** के अंदर इतनी शक्ति है कि **सिमरन** करने वाला परोपकारी हो जाता है। हम उन महात्माओं पर बलिहार जाते हैं, जो परमात्मा को सिमरकर परमात्मा रूप हो चुके हैं।

हजूर महाराज आमतौर पर यह मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिस तरह एक जेलखाने में बहुत से कैदी हैं। एक परोपकारी यह परोपकार करता है कि कैदियों को अच्छा खाना नहीं मिलता। वह कुछ रुपये खर्च करके उनके लिए अच्छे खाने का प्रबन्ध करवा देता है। दूसरा परोपकारी यह परोपकार करता है कि सर्दी की ऋतु आ गई है। वह कुछ रुपये खर्च करके उनके लिए गर्म कपड़ों का प्रबन्ध करवा देता है। तीसरा परोपकारी यह परोपकार करता है कि गर्मी की ऋतु आ गई है। वह कुछ रुपये खर्च करके पंखे इत्यादि लगवा देता है। कैदियों की हालत सुधरती तो गई मगर वे कैदी ही रहे। चौथे परोपकारी के पास जेलखाने की चाबी है। वह उस चाबी से जेलखाना खोलकर सबको आजाद कर देता है। सबसे बड़ा परोपकार उस चाबी वाले का है।

इसी तरह यह संसार काल का बहुत बड़ा जेलखाना है। सबसे बड़ा परोपकार महात्मा का है, जो चाबी लेकर इस संसार मंडल में आते हैं। वे चाबी लगाकर कहते हैं कि मैंने तुम्हें आजाद किया। अब तुम अपने घर *सच्चखंड* वापिस जा सकते हो।'' कबीर साहब कहते हैं :

तरवर, सरवर, सन्त-जन, चौथे बरसे मेह।
पर स्वार्थ के कारणें, चारो धारे देह॥

प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै॥

परमात्मा के दरबार में वही मुख उज्जवल हैं जो प्रभु का **सिमरन** करते हैं।

प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

आप कहते हैं कि **सिमरन** में इतनी ताकत है कि जब हम अपने फैले हुए ख्यालों को **सिमरन** के जरिए इकट्ठा करते हैं तो पहले हमारे पाँव सुन्न होते हैं। धीरे धीरे सारे शरीर की चेतना आँखों के पीछे आ जाती है। **सिमरन** के जरिए हम सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर जाते हैं। आगे गुरु स्वरूप आ जाता है। यहाँ तक सेवक की ड्यूटी है; आगे गुरु जाने और गुरु का काम। गुरु कहता है, ''पकड़ धुन और चल ऊपर।''

अगर हम प्रभु के **सिमरन** के जरिए अपने मन को जीत लेते हैं तो जग के बनाने वाले को अपना बना लेते हैं। गुरु साहब कहते हैं :

मन जीते जग जीत।

प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

दुनिया में ख़ुशी या आनन्द उन्हीं को प्राप्त है जो प्रभु का **सिमरन** करते हैं। प्रभु उन्हीं के नजदीक बसता है।

एक बादशाह की बहुत सी रानियाँ थी। रानियाँ बादशाह को बहुत प्यार से स्नान करवा रही थी। एक रानी बादशाह को कपड़े पहना रही थी। वह रोये जा रही थी। जब उसकी आँख का गर्म पानी बादशाह के जिस्म पर पड़ा तो बादशाह ने उससे पूछा, ''तुम क्यों रो रही हो?'' उस रानी ने कहा, ''मेरे भाई का पत्र आया है कि वह साधु बनने जा रहा है।'' बादशाह ने कहा, ''वह साधु बन ही नहीं सकता। जिनके अंदर बैराग होता है वे किसी को बताया नहीं करते। चुप-चाप बैराग में मस्त हो जाते हैं।''

रानियाँ पूछने लगी कि बैराग क्या होता है? बादशाह ने जवाब दिया, ''जब हम 'नाम' पा लेते हैं, 'नाम' पाकर दुनिया की तरफ से उचाट हो जाते हैं। यही बैराग है।''

जब बादशाह नें रानियों की तरफ काम-वासना की नजर से नहीं देखा तो रानियों को बहुत आश्चर्य हुआ। रानियों ने बादशाह से कहा कि आपने दुनिया के सब सुख छोड़ दिए हैं। काम-वासना में ही सब सुख हैं। उसने कहा, ''लड़कियाँ गुड्डी-पटोलों* से तब तक ही खेलती हैं, जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है तब लड़की का मन अपने पति के चरणों में लग जाता है।''

हम विषय-विकारों को तब तक ही अच्छा समझते हैं जब तक हम उस शब्द से बिछुड़े हुए हैं। जिस इन्सान के अंदर वह शब्द प्रगट हो जाता है फिर चाहे आप उसे सारी दुनिया की दौलत पेश कर दें; वह कुछ भी नहीं चाहेगा।

जब बादशाह ने रानियों का कहना नहीं माना तो रानियों ने कहा कि आप बगुले की तरह बहुत पछताओगे।

समुद्र के किनारे हंस रहते थे। देखने में बगुले भी हंस की तरह ही होते हैं। हंस समुद्र के मोती और बगुले मछली खाते हैं। हंस नारियलों में से दूध निकालकर पी रहे थे। यह देखकर बगुले ने बगुली से कहा, ''हम तो ऐसे ही मछलियों के काँटों से अपना गला फड़वाते रहे; खाने की चीज तो यह है।'' बगुली ने कहा, ''हम यह नहीं खा सकते। देखने में तो ये हंस हमारे जैसे हैं पर इनकी चोंच इतनी मजबूत है कि यह नारियल को तोड़कर दूध और पानी अलग कर लेते हैं।''

बगुला हर रोज वहाँ जाया करता था। वह उन हंसों का बचा हुआ थोड़ा बहुत दूध पी लेता था। कुछ दिन बाद हंस वहाँ से

*खिलौने

चले गए। बगुले ने बगुली से कहा, ''हम भी नारियल तोड़कर दूध निकाल लेते हैं।'' बगुली ने उसे समझाया कि अपनी चोंच कच्ची है। हम नारियल तोड़ेंगे तो हमारी चोंच टूट जाएगी। फिर हम मछली भी नहीं खा सकेंगे। लेकिन बगुला नहीं माना। जैसे ही उसने नारियल में चोंच फँसाई उसकी चोंच बीच में ही टूट गई। गुरु नानक साहब कहते हैं :

हँसा देख तरन्दयाँ, बगला आया चाव।
डुब मोऐ बग-बपड़े, सिर तल ऊपर पाँव॥

बगुला चोंच के दुःख में समुद्र के अन्दर गिर गया। मरने पर उसके पैर ऊपर और चोंच नीचे की तरफ हो गई। हम लोग सन्त-महात्माओं की नकल करते हैं कि वे किस तरह संसार-समुद्र में रहते हुए पार हो गए। वे हंस की तरह और हम बगुले की तरह हैं। हमारी यह हालत है कि जब हममें कोई काम वासना पैदा होती है तो हम काम की नदी में बह जाते हैं।

जब हम महात्माओं की बानी सुनते हैं, दिल में विचार आता है कि हम भी इन्हीं की तरह हैं। क्यों न हम नाम-अमृत को पिएं? मगर जब दुनिया का सामना करना पड़ता है तो हम शब्द-नाम को भूल जाते हैं। विषय-विकारों में बह जाते हैं।

संत क्रिपा ते अनदिनु जागि॥
नानक सिमरनु पूरै भागि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''अगर हमारे पूरे भाग्य हों हमारी सन्तों के साथ संगत हो जाए! हम सन्तों के वचन मानकर 'नाम' जपने के लिए रात में भी जागें और दिन में भी जागें। वही जागना अच्छा है जो 'नाम' में जागा जाए।''

जागना, जागना, जागना हर कीर्तन में जागना।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥

आप प्यार से समझाते हैं कि अगर हम परमात्मा का **सिमरन** करते हैं तो हमारे सब काम अपने आप ही पूर्ण होते चले जाते हैं। प्रभु की भक्ति करने वाला आज तक नहीं पछताया।

भक्त नामदेव जी के जीवन की एक घटना आती है। आप और आपके भाई कपड़ा बेचने जाया करते थे। आप **सिमरन** में लगे रहते थे, इसलिए ज्यादा कपड़ा नहीं बेच पाते थे। आपके भाई सारा कपड़ा बेच आते थे। जब आप घर वापिस आते तो आपके माता-पिता आपसे बहुत नाराज होते। आपकी पत्नी आपसे झगड़ा करती कि आप पूरा कपड़ा बेचकर क्यों नहीं आते?

नामदेव जी कहते, ''मैं बहुत कोशिश करता हूँ।'' आपकी पत्नी कहती, ''चाहे उधार ही बेच आओ!'' आपने कहा, ''अगर उधार ही बेचना है तो मैं अभी उधार देकर आ सकता हूँ।'' वह कहने लगी, ''दे आओ।'' आप बाहर गए, रात का समय था। उस समय ग्राहक कहाँ से मिलने थे? आपने सारे कपड़े पत्थरों पर डाल दिए और एक छोटा सा पत्थर उठाकर घर ले आए। घरवालों ने पूछा, ''आप इतनी जल्दी कैसे वापिस आ गए?'' आपने कहा, ''उधार लेने वाले बहुत थे। मैं उधार देकर यह जमानत ले आया हूँ।''

नामदेव जी भजन पर बैठ गए। एक सप्ताह तक मालिक से जुड़े रहे। एक सप्ताह बाद आप जब भजन से उठे, घरवालों ने कहा कि जाकर पैसे ले आओ। आपने कहा, ''मेरे पास जमानत है।'' जब देखा तो वह पत्थर सोना बन चुका था। आपने घरवालों से कहा, ''आपके कपड़े जितने के थे आप इसमें से उतना ले

लो। बाकी पड़ा रहने दो।'' भक्त नामदेव जी प्रभु की भक्ति करते थे; इसलिए उनका पत्थर सोने में बदल गया।

प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी॥

अगर हम प्रभु का सिमरन करते हैं, प्रभु की भक्ति करते हैं तो हमारी वाणी मीठी हो जाती है। लोगों को तारने वाली बन जाती है। हर किसी के दिल को अच्छी लगती है। हमें स्वाभाविक ही सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है।

प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु॥

प्रभु का **सिमरन** करने से हमें *सच्चखंड* प्राप्त हो जाता है। प्रभु का **सिमरन** करने से हमारा कमल खिल जाता है। सुख-शान्ति हो जाती है।

प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार॥

सिमरन शरीर को खाली करने का एक जरिया है। मुक्ति धुनात्मक-शब्द में है। कोई **सिमरन** का अन्त नहीं समझ सकता। **सिमरन** की कीमत उन्हें ही मालूम है जो सिमरन करते हैं।

सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ॥
नानक तिन जन सरनी पइआ॥

वही **सिमरन** कर सकते हैं जिन पर प्रभु दयालु हों। जो दिन-रात **सिमरन** में लगे हुए हैं; मैं उनके चरणों की धूल माँगता हूँ।

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि दुनिया में भक्त **सिमरन** के जरिए ही प्रगट हुए। जब कबीर साहब इस संसार-मंडल पर थे; उस समय लोदी सिकन्दर बहुत शक्तिशाली बादशाह था। सिकन्दर ने कबीर साहब को बहुत कष्ट दिए। उन्हें मरवाने के यत्न भी किए। आज सिकन्दर को कौन जानता है? लेकिन कबीर साहब को हम बड़ी इज्जत और प्यार के साथ याद करते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी, जिनकी यह बानी है उनको उस वक्त के बादशाह जहाँगीर ने गर्म लोहे पर बिठाया, सिर में गर्म रेत डलवाई। आज जहाँगीर को कौन जानता है? गुरु अर्जुनदेव जी को सब प्यार से याद करते हैं। उनकी बानी गाते हैं।

हरि सिमरनि भए सिध जती दाते॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते॥

आप कहते हैं, ''जती, दाता, सिद्ध सबने सिमरन किया। जिन नीचों को कोई नहीं जानता था, चाहे वे कितनी भी छोटी जातियों में पैदा हुए, सिमरन के जरिए दुनिया में पूजे गए।''

हरि सिमरनि धारी सभ धरना॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना॥
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ॥

❖ ❖ ❖

हरि का नाम

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ॥
सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ॥

गुरु अर्जुनदेव जी मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं, ''हे प्रभु! तू गरीबों का, अनाथों का दाता है। मैं तेरी शरण में आया हूँ। बेशक तू मेरे अंदर है। हर वक्त मेरे साथ है। तू दुःखियों की मदद करने वाला और पापों का नाश करने वाला है। धरती के अंदर पानी है लेकिन प्यास उन्हीं की बुझती है जो पानी को कुएं या नल के जरिये निकाल लेते हैं।''

वह परिपूर्ण परमात्मा हम सबके अंदर है। उसके रहते हुए हमने अनेकों जन्म पाए। कई बार कीड़े, पतंगे, हाथी, घोड़े बने। जब तक हमें सतगुरु नहीं मिले और उन्होंने हमें 'नाम' नहीं दिया हम छुटकारा नहीं पा सके।

जह मात पिता सुत मीत न भाई॥
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज उस वक्त का जिक्र करते हैं, जो हम सबके ऊपर आता है; वह मौत है। जब हम यह शरीर छोड़ते हैं उस समय माता-पिता, बहन-भाई, धन-दौलत कोई भी हमारे साथ नहीं जाता। न ही कोई हुक्म, हुकूमत और फौज ही हमारी मदद कर सकती है। उस दुःखी समय में हमारा सच्चा मित्र सतगुरु है जिसने हमें 'नाम' दिया है। वही हमारी मदद करने वाला है।

जिस समय पटियाला के राजा भूपेन्द्र सिंह की मृत्यु हुई, उस समय हमारी बहुत सी फौज पहरे पर खड़ी थी। हर आधे घंटे बाद सिपाही नम्बर बोलता था कि हम इतने आदमी महल के चारों तरफ खड़े हैं। लेकिन मौत के फरिश्ते के सामने किसी का कोई हथियार काम नहीं आया। क्योंकि लोगों को यही नहीं मालूम कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहाँ गया? जो लोग ज्यादा से ज्यादा प्यार करते हैं वे रो ही सकते हैं। हजरत बाहु कहते हैंः

ईक विछोड़ा माँ पियों भाईयाँ दूजा अजाब कबर दा हूँ।

जब इन्सान शरीर छोड़ता है, उस समय यार-दोस्त, सम्बन्धियों को देखकर उसके दिल में गम आता है कि मैं इनसे बिछुड़ रहा हूँ। वे भी कहते हैं कि तुम हमारा साथ छोड़कर जा रहे हो। इन्सान अपने रहने के लिए बड़े बड़े मकान बनवाता है उनमें बड़ा अच्छा फर्नीचर लगवाता है। लेकिन कब्र के दुःख से डरता है कि मैं वहाँ हिल-डुल भी नहीं सकूँगा।

जह महा भइआन दूत जम दलै॥
तह केवल नामु संगि तेरै चलै॥

मौत के समय बेसतसंगियों की ऐसी हालत होती है कि धर्मराज के दूतों का भयानक रूप देखकर बहुत से लोगों का टट्टी-पेशाब निकल जाता है। आप कहते हैं, ''जहाँ पर तुझे कष्ट दिया जाएगा वहाँ तेरी मदद 'नाम' करेगा। साथ जाने वाली वस्तु सिर्फ 'नाम' है। इस दुनिया का कोई भी सामान तेरे साथ नहीं जाएगा।''

जह मुसकल होवै अति भारी॥
हरि को नामु खिन माहि उधारी॥

अगर आपको इस दुनिया में भी कोई मुश्किल है तो गुरु-पॉवर आपकी मदद करती है। वह संसार, जिसको हम नहीं जानते, वहाँ भी गुरु-पॉवर हमारी मदद करती है। गुरु सतसंगी की मौत के समय एक क्षण से पहले हाजिर हो जाता है। अगर सन्तों की ताकत देखनी है तो सतसंगी की मौत के समय देखो! किस तरह गुरु आकर उसकी रखवाली करते हैं। जब मौत आती है, उस समय आप बेसतसंगियों को एक तरफ करके उस नामवाले से पूछो, ''क्या तुझे स्वरूप नजर आ रहा है? सिमरन याद है?'' वह जरूर बताकर जाएगा कि सतगुरु आ गए हैं और मैं जा रहा हूँ।

अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥

अब गुरु अर्जुनदेव महाराज कहते हैं कि आप कितना भी दान-पुण्य करो, जप-तप करो लेकिन संसार-समुद्र से पार नहीं हो सकते। अगर आप 'नाम' की कमाई करते हैं तो आत्मा वापिस अपने घर *सच्चखंड* पहुँच सकती है। मेरा यह मतलब नहीं कि दान-पुण्य से कुछ प्राप्त नहीं होता। अगर हम दान-पुण्य और जप-तप करते हैं तो सेठ-साहूकार या लीडर बनकर इस संसार में आ जाते हैं। हाथ से झाड़ू निकल जाता है और किसी मुल्क की बागडोर हाथ में आ जाती है। लेकिन हम इस संसार में कैदी के कैदी ही रहते हैं।

गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥
नानक पावहु सूख घनेरे ॥

अगर आप सच्चा सुख और शान्ति चाहते हैं तो गुरमुखों से 'नाम' लें। उस 'नाम' की कमाई करें।

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ॥

आप कहते हैं कि चाहे सारी सृष्टि का बादशाह हो, वह भी शान्त नहीं, तृप्त नहीं। आप देख सकते हैं; आजकल राजा, महाराजाओं की क्या हालत है। किस तरह रात में उन्हें नींद नहीं आती! डाक्टर उन्हें इन्जैक्शन देकर सुलाते हैं। उनका सारा दिन सोच-फिक्र में बीत जाता है। अगर वे भी 'नाम' की कमाई करें तो उन्हें सच्चा-सुख, सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है।

जैसा कि तजुर्बे में आता है कि रात ही रात में पार्टी बदल जाती है। दूसरी पार्टी वाले गोलियों का शिकार बना देते हैं। रात में सोए हुओं को कैद कर लिया जाता है। बादशाही में भी सुख-चैन नहीं है। अगर सुख है तो वह 'नाम' में है। यह संसार जन्म और मृत्यु का है इसमें सुख नहीं है। *सच्चखंड* ही ऐसा देश है जिसमें सुख और शान्ति है।

लाख करोरी बंधु न परै॥
हरि का नामु जपत निसतरै॥

चाहे इस जीव को करोड़ों बन्धन हों, अगर यह 'नाम' की कमाई करे तो सारे बन्धन टूट जाते हैं। अगर यम इसे बाँध लेते हैं और यह जीव साधु की शरण को याद करता है तो वह साधु आकर इसे जरूर छुड़वाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं :

साधा शरणी जो पवे सो छूटे बधा।

अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै॥
हरि का नामु जपत आघावै॥

मेरे पास अनेकों माया-धारी लोग आते हैं मगर किसी ने यह नहीं कहा कि मेरे मन को सुख-शान्ति है। वे ओर माँग रहे

होते हैं। कहते हैं, ''बाबा जी दया करो।'' मैं उन्हें बड़े प्यार से समझाता हूँ, ''आप पर बहुत दया-मेहर है। मैं तो समझता था कि आप सुखी होंगे?'' मगर माया सुख देने की बजाए ओर दुःखी करती है। इससे तृष्णा ओर भड़कती है।

लाहौर में एक अच्छी कमाई वाला छज्जू भगत था। उनका मकान अच्छा बना हुआ नहीं था। कुछ अमीर लोग आमतौर पर उनके नामलेवा को ताना मारा करते थे, ''आप वहाँ क्या लेने जाते हो? उनसे तो अच्छे हमारे महल हैं। अगर वह सन्त ज्यादा कमाई वाला है तो अच्छे महल क्यों नहीं बनवा लेता?'' प्रेमी तो जानते हैं कि सन्त जो चाहे कर सकते हैं। प्रेमी हँसकर कहते :

जो सुख छज्जू दे चौबारे, सो बलख ना बुखारे।

प्रेमियों ने झोपड़ी को एक बड़ा चौबारा बयान किया है कि जो सुख उस झोपड़ी में है; वह सुख बलख बुखारे की बादशाही में भी नहीं। क्योंकि उस झोपड़ी में बैठकर 'नाम' जपा जाता है।

जिह मारगि इहु जात इकेला॥
तह हरि नामु संगि होत सुहेला॥

अब आप समझाते हैं कि जिस रास्ते से हमारी आत्मा अकेले ही जाने वाली है, वहाँ हमारा सच्चा मित्र 'नाम' है। दुनिया के सब साथी-संगी यहीं रह जाएंगे। जिस शरीर का हम इतना मान करते रहे हैं, उस शरीर को आग में जला दिया जाएगा या मिट्टी में दबा दिया जाएगा।

ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब 'नाम' ही हमारी रक्षा करने वाला है तो हमें 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। परम गति जब भी मिलेगी, 'नाम' की कमाई से ही मिलेगी।''

छूटत नही कोटि लख बाही॥
नामु जपत तह पारि पराही॥

आप कहते हैं, ''हमारे दो ही बाजू हैं। अगर हमारे लाखों करोड़ों बाजू भी हो जाएं तब भी हमारा बल उस यम के आगे कुछ नहीं कर सकता। अगर हम 'नाम' की कमाई करें तो ही इस संसार-समुद्र से पार हो सकते हैं।''

अनिक बिघन जह आइ संघारै॥
हरि का नामु ततकाल उधारै॥

काल इस जीव को कई किस्म के विघ्नों में डालता है। कई बार काल मौत के समय सन्तों का रूप धारण करके भी आ जाता है। आवाज भी लगा देता है कि इस तरफ आ जा। उस समय आत्मा घबराई हुई होती है। वह आवाज सुनकर उसी तरफ चली जाती है। लेकिन सन्त हमें बड़े प्यार से समझाते हैं कि आप उस समय उन *पाँच पवित्र* शब्दों का सिमरन करो। गुरु होगा तो रुका रहेगा। काल होगा तो गायब हो जाएगा। आप कहते हैं, ''काल चाहे कितने भी विघ्न डाले, अगर जीव को 'नाम' याद है तो रास्ता साफ हो जाता है।''

अनिक जोनि जनमै मरि जाम॥
नामु जपत पावै बिस्राम॥

सन्त जीव को बादशाह या कोई ताकत समझकर 'नाम' नहीं देते। जिस तरह एक कुत्ता द्वार द्वार भटकता फिरता है। कोई साहूकार उसके आगे रोटी डालकर उस पर दया करता है कि इस बेचारे का कौन है? इसी तरह जीव कभी कुत्ता, कभी बिल्ला, कभी गधा, कभी घोड़ा बनता है। कभी कहीं जन्म लेता है तो कभी कहीं। जब फिरता फिरता सन्तों के द्वारे पर पहुंच

जाता है, सन्त सोचते हैं कि यह भी एक गरीब जानवर की तरह ही है। इसका कोई ठिकाना नहीं। सन्त दया-मेहर करके इसे जिन्दगी की रोटी 'नाम' बख्श देते हैं। फिर यह इस दुःखी संसार में नहीं आता *सच्चखंड* पहुँच जाता है।

वेद व्यास के बेटे सुखदेव मुनि को माता के पेट में ही ज्ञान था। जब उसने जन्म लिया वह तभी से उदास होकर भक्ति करने लगा। उसके माता-पिता ने कहा कि भक्ति करने का हमारा हक है। सुखदेव मुनि ने कहा, "पिता जी! इस समय मुझ पर माया का कोई असर नहीं है। मुझे सौ जन्मों का ज्ञान है। एक जन्म तो मैंने ऐसा पाया था कि जब मुझे उस जन्म की याद आती है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं गधे की योनि में एक धोबी के पास था। धोबी मेरे ऊपर गीले कपड़े लादकर खुद भी मेरे ऊपर बैठ जाता था। मुझे घाट पर जाकर छोड़ दिया करता था। मुझे वहाँ पर घास वगैरह कुछ भी खाने के लिए नहीं मिलता था।

एक समय ऐसा आया कि मेरे जिस्म पर जख्म हो गए। कुत्ते मेरे जिस्म को खाने लगे। मैं बुरी तरह थककर एक नदी में गिर गया। धोबी को मुझ पर तरस नहीं आया। मुझे डन्डे मारे और अपने कपड़े उठाकर चला गया। वहाँ से निकलने वालों में से भी किसी को मुझ पर तरस नहीं आया कि यह बेचारा जानवर पानी में पड़ा दुःखी हो रहा है। लोगों ने मुझसे पुल का काम लिया। मेरे ऊपर पैर रखकर आगे की तरफ निकलने लगे। जब मुझे उस जन्म की याद आती है तो मैं रोता हूँ कि अगर मैंने इन्सानी जामें में आकर भक्ति न की तो कहीं पहले जैसा जामा फिर मिल गया तो मेरी क्या हालत होगी?"

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥

अब आप कहते हैं, ''इस जीव को जन्मों-जन्मों से होमैं की मैल लगी हुई है। हम दिन-रात सोचते हैं कि मैं आलम-फाजल हूँ, मैं गुणी-ज्ञानी हूँ। मेरे जैसा कौन है? ये सारी लाइलाज बीमारियाँ हैं। अगर जीव 'नाम' की कमाई करता है तो होमैं से छुटकारा पा सकता है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

होमैं दीर्घ रोग है, दारू भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी, गुरु का शब्द कमाहे॥

ऐसा नामु जपहु मन रंगि॥
नानक पाईऐ साध कै संगि॥

आप कहते हैं, ''सूर्य, चन्द्रमा, सितारे और धरती के खंड-ब्रह्मांड 'नाम' के आधार पर चल रहे हैं। 'नाम' हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। नाम कोई अक्षर नहीं है।'' हजूर महाराज कहा करते थे, ''नाम तवज्जो है। अगर नाम अक्षर होता तो यह 'नाम' पाँच साल की लड़की भी बता सकती थी। साधुओं के पास जाने की क्या जरूरत थी? 'नाम' साधुओं की जायदाद है।''

आप कहते हैं कि हमारा कारोबार लेन-देन सन्तों के साथ है। हम सन्तों की शरण में हैं। सन्तों ने 'नाम' दिया तो जन्मों से धोखा देने वाला मन धोखा देने से हट गया।

मैं कई बार सुन्दर दास की कहानी सुनाया करता हूँ। वह काफी समय मेरे पास रहा। वह महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था, बड़ा श्रद्धालु था। महाराज सावन सिंह जी ने उसे पहले ही बता दिया था कि सुन्दर दास तेरी घरवाली मर जाएगी, तेरा लड़का और लड़की भी मर जाएंगे। तेरा दिमाग हिल जाएगा, ऐसी हालत में तुझसे कत्ल हो जाएगा। मगर तुझे सच बोलना होगा। तुझे बीस साल की सजा होगी लेकिन तुम छह साल ही सजा काटोगे! मैं खुद तुम्हारी संभाल करूँगा।

यह सब कुछ ही सुन्दर दास के साथ बीता। उसके घरवाले उसे छुड़वाने के लिए गए और उससे कहा कि तुम यह कह दो कि मेरा दिमाग खराब है। सुन्दर दास ने शिकायत की, कि ये लोग मुझसे झूठ बुलवाने की कोशिश कर रहे हैं। एक मुसलमान ने कहा, ''सुन्दर दास तुम कह दो कि तुम्हारा दिमाग खराब है।'' उसने थानेदार से कहा, ''यह मुसलमान मुझसे झूठ बोलने के लिए कह रहा है। मैं झूठ क्यों बोलूँ?'' फरीदकोट के राजा के साथ सुन्दर दास का बहुत प्यार था। राजा ने सोचा कि बाबे का बहुत नुकसान हो चुका है, इसे छुड़वाया जाए।

जब सुन्दरदास जज के सामने पेश हुआ तो जज ने कहा, ''बाबा तेरे दिमाग में नुख्स है?'' सुन्दर दास ने कहा, ''नहीं! मैं जपजी साहब पढ़ता हूँ तुम नुख्स निकालना या तुम जपजी साहब पढ़ो मैं नुख्स निकालूँगा। मेरे दिमाग में नुख्स नहीं, नुख्स तुम्हारे दिमाग में है। जब मैंने कत्ल किया है तो तुम मुझे सजा क्यों नहीं देते?'' इस पर जज ने उसके बयान के अनुसार बीस साल की सजा लिख दी। जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय सुन्दर दास के छह साल पूरे हो गए थे। इस तरह वह छह साल पूरे करके रिहा हो गया। उसने कहा, ''सतगुरु ने मुझे पहले ही बता दिया था।''

उसके बाद वह बहुत समय मेरे पास रहा। अपनी जिन्दगी का आखिरी समय उसने मेरे पास बिताया। जब उसका अन्त समय आया उसके कुछ समय पहले ही उसने मुझसे कहा, ''मेरे अन्त समय के कपड़े अभी बनवा दो अगर किसी को कुछ अन्न-पानी खिलाना हो तो वह भी खिलवा दो।''

हमने माहवारी सतसंग में संगत को अच्छा भोजन दिया। सुन्दर दास ने मुझे बताया कि मालिक खुश है। मैं उसके पास

बैठ गया। उसकी एक बूढ़ी बहन थी। वह दुःखी रहती थी। वह भी उसके पास बैठी थी। सुन्दर दास ने कहा, ''मैं विनती करता हूँ कि इस समय दरबार खुला है। यह भी मेरे साथ चले।'' मैंने कहा, ''इससे पूछो।'' जब उसकी बहन ने यह बात सुनी तो वह उठकर बाहर चली गई। सुन्दर दास ने शरीर छोड़ने से पहले बताया कि बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल उसे लेने के लिए आए हैं। यह कहकर उसने शरीर छोड़ दिया।

सुन्दर दास के भरोसे के अनुसार उसका अन्त उसी तरह हुआ। हमने उसे प्यार से स्नान करवाया और कपड़े पहनाकर बिठा दिया। जिन लोगों ने महाराज सावन के दर्शन किए हुए थे, उन लोगों ने बताया कि सुन्दर दास की शक्ल महाराज सावन की तरह लग रही थी। सुन्दर दास की नाक भी महाराज सावन जी की तरह ही थी, वह दिखने में भी उनके जितना लम्बा था।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''नाम साधुओं के अंदर प्रगट है। 'नाम' साधुओं से मिलता है। साधु हमारी रक्षा करते हैं; इसलिए हमें भी चाहिए कि हम ऐसे 'नाम' की कमाई करें।''

जिह मारग के गने जाहि न कोसा॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा॥

जब हमें दुनियादारी का कोई सफर तय करना होता है तब हम खाना बनाकर साथ रखते हैं और रास्ते में खर्च के लिए पैसे भी रखते हैं। हम जानते हैं कि हमें इस संसार को छोड़ देना है लेकिन हमें यह नहीं मालूम कि वह रास्ता कितना लम्बा है? खर्चे की वहाँ भी जरूरत है। शरीर, धन-दौलत सब कुछ यहाँ छोड़ जाना है। हमारे साथ जाने वाली वस्तु 'शब्द-नाम' है।

जिह पैडै महा अंध गुबारा॥
हरि का नामु संगि उजीआरा॥

अब आप कहते हैं, ''मौत के बाद हमने जो सफर तय करना है वहाँ बहुत अंधेरा है। वहाँ हमारी रोशनी काम नहीं करती। अगर हमारे पास 'नाम' है तो वह 'नाम' रोशनी का काम करता है।''

जहा पंथि तेरा को न सिञानू॥
हरि का नामु तह नालि पछानू॥

हम जानते हैं कि जब हमें अमेरिका से यहाँ आना हो तो हम पहले ही अपने रिश्तेदारों को संदेश भेज देते हैं कि हम इस फ्लाइट से आ रहे हैं। मगर गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिस जगह आपको जाना है वहाँ पहले से आपकी किसी के साथ जान पहचान नहीं है। वहाँ 'नाम' ही आपकी पहचान करवा सकता है। 'नाम' *सच्चखंड* में दाखिल होने का वीजा है। जैसे वीजा एक खास आदमी ही दे सकता है। उसी तरह परमात्मा के घर में दाखिल होने के लिए वह वीजा हमें सन्तजन देते हैं।'' पल्टू साहब कहते हैं :

राम के घर में काम सब सन्ते करते।

जह महा भइआन तपति बहु घाम॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम॥

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि काल ने ऐसे ऐसे खम्भे तपाये हुए हैं कि अगर एक भी खम्भा इस दुनिया में आ जाए तो यह दुनिया जलकर राख हो जाए। जो औरतें, मर्द अपने कायदे-कानून में नहीं रहते, उन्हें उन तपते हुए खम्भों के साथ चिपकाया जाता है। जीव खुश होकर यहाँ जुल्म करता है;

वहाँ यम उसे मारते हैं। वहाँ गर्मी है, प्यास लगती है और कुछ नहीं मिलता। अगर हमारे पास 'नाम' है तो 'नाम' जीव को यमों के हवाले होने ही नहीं देता। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो 'नाम' हम पर छाया रखेगा।

जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै॥
तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै॥

आप कहते हैं, ''यमदूत मारते हैं कि तुमने जुल्म किए हैं अब इन जुल्मों का हरजाना भुगतो। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो हमारे लिए अमृत बरसता है। आत्मा उस अमृत का स्वाद लेती है।'' कबीर साहब कहते हैं :

कबीरा गागर जल भरी, आज काल जाए है फूट।
गुरु जे न चेतिया आपना, आध मांझ लीजेंगे लूट॥

हमारी देह पानी की कच्ची गागर है यह टूट जाने वाली है। जिन्होंने गुरु के नाम की कमाई नहीं की, वे बेचारे बीच में ही लुट जाएंगे। जब इसे मार पड़ती है और प्यास लगती है, यह पानी माँगता है तो यमदूत इसे कहते हैं कि हम तुझे पानी तो दे देते हैं लेकिन तुम पहले हमें फलां अच्छा कर्म दे दो। क्योंकि कोई हमारे पाप नहीं लेता। जब तक यह धर्मराज के पास पहुँचता है तब तक इसके पास कुछ नहीं बचता। धर्मराज कर्मों के अनुसार सजा देता है। वहाँ जन्म दे देता है जिस जगह जाकर यह जीव अपने कर्म अच्छी तरह भोग सके।

भगत जना की बरतनि नामु॥
संत जना कै मनि बिस्रामु॥

सन्तों महात्माओं का इस संसार में 'नाम' का ही बरतावा है। गुरु नानक साहब कहते हैं :

उठत बैठत सोवत नाम, कहो नानक जिनके सब काम।

हरि का नामु दास की ओट॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि॥

दुनिया में आकर बच्चा अपने माता-पिता का सहारा ढूंढ़ता है। कई माता-पिता अपने बच्चों का सहारा ढूँढते हैं कि ये हमारा पालन-पोषण करेंगे। कोई रिश्तेदारों का सहारा ढूँढता है लेकिन सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे, 'नाम' को ही सहारा समझते हैं। सिर्फ सन्त ही इस 'नाम' से नहीं तरते बल्कि सन्त जिनको अपना 'नाम' बख्श देते हैं वे भी तर जाते हैं। कइयों का उद्धार हो चुका है और हो रहा है। कबीर साहब कहते हैं :

जैसी लौ पहले लगी, तैसी निबहे ओड।
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़॥

हरि जसु करत संत दिनु राति॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति॥

आप प्यार से समझाते हैं कि सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सोते हुए, जागते हुए, दिन-रात परमात्मा के यश में लगे हुए हैं। वे 'नाम' को ही सब बीमारियों की सबसे ऊँची दवाई समझते हैं।

हरि जन कै हरि नामु निधानु॥
पारब्रहमि जन कीनो दान॥

आप समझाते हैं, ''सन्तों के पास 'नाम' के ख़ज़ाने हैं। सन्तों को यह 'नाम' उनके सतगुरु ने दान दिया होता है।''

मन तन रंगि रते रंग एकै॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै॥

आप कहते हैं कि सन्तों का तन, मन, 'नाम' में रंगा होता है। आमतौर पर दुनिया के दिलों में यह ख्याल होता है कि शायद किसी खास रंग के कपड़े पहनकर, माला हाथ में पकड़कर परमात्मा मिल सकता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं :

भेख दिखाए जगत को, लोगन को बस कीन।
अन्त काल काती कटियो, वास नरक मो लीन॥

जब हमारे अंदर भक्ति नहीं, प्रेम नहीं तो चाहे हम किसी भी किस्म के कपड़े पहन लें, हममें 'नाम' प्रगट हो ही नहीं सकता। लोग भेष पर रीझते हैं। काल उन्हें इस तरह काटता है जिस तरह हम कैंची से कागज काटते हैं और हमें काटकर नरक में डाल देता है।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति॥

हम दुनियादार लोग मुक्ति के लिए जप-तप, पूजा-पाठ और बहुत से कर्म करते हैं। अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''मालिक के प्यारे 'नाम' में ही मुक्ति समझते हैं। 'नाम' की युक्ति उनके पास होती है।''

हरि का नामु जन का रूप रंगु॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु॥

आप कहते हैं, ''सन्तों का रूप रंग 'नाम' ही है। 'नाम' जपने वाले को कोई विघ्न नहीं पड़ता। 'नाम' जपने वाले का कोई रास्ता नहीं रोक सकता।''

हरि का नामु जन की वडिआई॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई॥

मैं देखता रहा हूँ, बहुत से लोग महाराज जी के गले में हार डालना चाहते थे लेकिन आप ऐसा नहीं करने देते थे। एक बार महाराज जी गंगानगर आए तो कई अफसर लोग महाराज जी से मिलने आए। उन्होंने महाराज जी के गले में हार डालना चाहा तो महाराज जी ने वही हार उनके गले में डाल दिया। सन्त इस दुनिया की बड़ाई लेकर खुश नहीं होते। अगर हम उनकी बड़ाई करना चाहते हैं तो हमें 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। उनकी बड़ाई 'नाम' में है। 'नाम' की वजह से ही उन्होंने सच्चे-दरबार, परमात्मा के घर में शोभा प्राप्त की होती है।

दुनियादार लोग बड़ाई देते समय और छीनते समय आगे-पीछे नहीं देखते। कभी हम मन के पीछे लगकर लोगों की बहुत बड़ाई करते हैं, अखबारों में उनकी फोटो छापते हैं। जब हमारा मन हमें बहका देता है और हम दूसरी पार्टी में जा मिलते हैं तब हम उनकी निन्दा करनी शुरू कर देते हैं।

हरि का नामु जन कउ भोग जोग॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिस तरह दुनिया भोगों में फँसी हुई है भोगों से ऊपर कुछ नहीं समझती। उसी तरह सन्तों का भोग या जोग 'नाम' के साथ जुड़ना है। वे हमेशा ही 'नाम' के साथ जुड़े रहते हैं।''

जनु राता हरि नाम की सेवा॥
नानक पूजै हरि हरि देवा॥

आप कहते हैं, ''जो महात्मा उठते-बैठते, सोते-जागते 'नाम' से जुड़ गया, 'नाम' में मिल गया। 'नाम' और वह एक हो गए। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तैंतीस करोड़ देवता उस महात्मा की पूजा में

लगे हुए हैं। देवता उसकी बड़ाई कर रहे हैं, उसे झुक-झुककर सलाम कर रहे हैं।''

जगत पास से लेते दान, गोविंद भगत को करे सलाम।

हरि हरि जन कै मालु खजीना॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना॥

सन्तों के पास 'नाम' का सच्चा ख़ज़ाना है। परमात्मा ने दया करके उन्हें 'नाम' का ख़ज़ाना दिया हुआ है जो कभी ख़त्म नहीं हो सकता। चाहे वह दुनिया में कितना ही 'नाम' बाँट दें।

हरि हरि जन कै ओट सताणी॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी॥

आप प्यार से समझाते हैं कि सन्तों को परमात्मा की ओट है। वह परमात्मा के सिवाय और किसी का आसरा नहीं देखते।

ओति पोति जन हरि रसि राते॥
सुंन समाधि नाम रस माते॥

जिस तरह ताने और पेटे में वही सूत है। उसी तरह सन्त परमात्मा में, ताने-पेटे की तरह रमे हुए होते हैं।

आठ पहर जनु हरि हरि जपै॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो आठों पहर 'नाम' जपता है आठों पहर 'नाम' में रम गया है वह प्रगट होता है। किसी के छिपाने से नहीं छिपता।'' आप जानते हैं कि जब सूर्य निकलता है तो पूरी दुनिया को रोशनी देता है लेकिन उल्लू-चमगादड़ सूर्य की रोशनी को नहीं मानते। विचार करके देखो! इसमें सूर्य का क्या दोष है? इसी तरह महात्मा 'शब्द-

नाम' की कमाई करके दिन-रात 'शब्द-नाम' का होका देते हैं। लेकिन ऐसे भी मनमुख होते हैं जो उन्हें समझ नहीं सकते।

हरि की भगति मुकति बहु करे॥
नानक जन संगि केते तरे॥

आप कहते हैं, ''मालिक के प्यारे हरि की भक्ति करते हैं। वे आप तर जाते हैं और गिनती नहीं कितने ही उनका पल्ला पकड़कर तर जाते हैं।''

पारजातु इहु हरि को नाम॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम॥

आप कहते हैं, ''स्वर्ग में एक पारजात वृक्ष है जिसके नीचे जाने से सब इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। कामधेनु गाय भी सब इच्छाएं पूरी करती है। अगर हम 'नाम' की कमाई करते हैं तो सब फल 'नाम' की कमाई में आ जाते हैं।''

सभ ते ऊतम हरि की कथा॥
नामु सुनत दरद दुख लथा॥

सारी कथाओं और पढ़ाइयों से हरि की कथा सबसे ऊँची है।

नाम की महिमा संत रिद वसै॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै॥

'नाम' की महिमा और बड़ाई के बारे में सन्त ही जानते हैं। सन्तों के प्रताप की वजह से यम हमारे नजदीक नहीं आता और हम बेखौफ हो जाते हैं।

संत का संगु वडभागी पाईऐ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि महात्मा की संगत बहुत भाग्य वाले ही पा सकते हैं। जब हम सन्तों की सेवा में लग जाते हैं तो सन्त हमें कहते हैं कि ''नाम जपो''। हम उनकी संगत-सोहबत से यह फायदा उठाते हैं कि 'नाम-शब्द' की कमाई में लग जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं :

इन्द्र दी ईक घड़ी, कुआँ बारह मास।
सतसंग दी ईक घड़ी, सिमरन बरस पचास॥

रहट बारह मास में भी उतना पानी नहीं निकाल सकता जितना इन्द्र देवता एक घड़ी में बरसा सकते हैं। इसी तरह कमाई वाले महात्मा की संगत में एक घड़ी बैठना, घर में बैठकर किए गए पचास सालों के सिमरन से ज्यादा लेखे में है।

नाम तुलि कछु अवरु न होइ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज आखिर में फिर कहते हैं कि 'नाम' के बराबर न जप है न तप है न पूजा-पाठ है। यह 'नाम' हमें सन्त-महात्माओं से मिलता है। 'नाम' हमें किसी मन्दिर, मस्जिद या पोथियों से नहीं मिलता।

लाहौर में बुल्लेशाह मस्जिद के काजी थे। उनसे पहले उनके पिता वहाँ काजी थे। बुल्लेशाह बहुत पढ़े-लिखे आलम-फाजल थे। वह रोजाना मुसलमानों के कर्म किया करते थे।

लाहौर के नजदीक शाह इनायत जमींदारी का काम किया करते थे। बुल्लेशाह का मिलाप शाह इनायत के एक सतसंगी से हुआ। उस सतसंगी ने बुल्लेशाह से कहा कि तुम शाह इनायत के पास जाओ, वह तुम्हारे कान खोलेगा। बुल्लेशाह ने शाह इनायत के पास जाकर कहा, ''महाराज! मैं कलमा लेने के

लिए आया हूँ। रब को पाने के लिए आया हूँ; आप मुझे परमात्मा को पाने का तरीका बताओ।''

शाह इनायत पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने सोचा ''अगर मैंने इसे पोथियों के हवाले दिए तो कोई फायदा नहीं क्योंकि यह पहले ही बहुत पोथियाँ पढ़ चुका है।'' आप उस समय बूटे लगा रहे थे। आपने कहा :

देख बुल्लया रब दां की पावना, इधरों पुटना ते ओधर लावना।

दुनिया की तरफ से मन हटाकर परमात्मा की तरफ लगाना है।

मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि प्रेमी रूह का गुरु के पास जाना इस तरह है जिस तरह खुश्क बारूद का आग के पास जाना। महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''परमार्थ सीखने के लिए एम.ए. पास को पाँच साल के बच्चे जैसा बनना पड़ता है।''

बुल्लेशाह को 'नाम' का रंग चढ़ गया। बुल्लेशाह सैय्यद जाति के थे, मुसलमानों में लोग सैय्यदों को पूजते हैं। बुल्लेशाह के गुरु अराई थे। अराइयों को लोग छोटी जाति का समझते थे। जब बुल्ले ने छोटी जाति वाले को गुरु धारण कर लिया तो लोगों ने बुल्लेशाह की निन्दा करनी शुरू कर दी। कहने लगे, ''देखो! सैय्यद होकर इसने एक अराई को गुरु धारण किया है।'' लोग निन्दा करते रहे पर बुल्लेशाह चुप रहे। बुल्लेशाह ने कहा, ''ठीक है, इन्हें निन्दा करने दो।''

जब लोग साधु की निन्दा करते हैं साधु अंदर से पक्का हो जाता है। लोग निन्दा करके उसके पाप को हल्का कर देते हैं। साधु कहता है, ''निन्दा करो, निन्दा करो मुझे तो मालिक से मिलने का शौक है।'' बुल्ले ने गधियाँ ले ली और उन्हें चराना शुरू कर दिया। इससे लोगों में खलबली मच गई कि सैय्यदों का लड़का गधियाँ चरा रहा है।

एक पठान किसी गरीब की औरत को उठाकर ले गया था। उस गरीब को किसी ने बताया कि बुल्लेशाह बड़ी कमाई वाला फकीर है तुम उसके पास जाओ। वह बुल्लेशाह के पास गया तो बुल्लेशाह ने कहा, ''देखो! कहीं कोई नाच-गाना तो नहीं कर रहे?'' जब उसने बताया कि फलां जगह लोग नाच रहे हैं। बुल्लेशाह वहाँ जाकर उनमें नाचने लग गए और नाचते नाचते उन्होंने आवाज लगाई :

अम्बीयां वाली गली सुणीदी, खज्जी वाला बाग।
खोतियां वाला साध बुलौन्दा, सुत्ती एं ते जाग॥
चीणा ईंज छिड़ींदा यार ....

जब बुल्लेशाह ने तवज्जो दी तो वह औरत खिंची हुई आ गई। बुल्लेशाह ने उस गरीब आदमी से कहा, ''इसे ले जाओ।'' लोगों ने जाकर बुल्लेशाह के पिता से कहा, ''देखो! आपका बेटा आपका कितना नाम कर रहा है! पहले तो बुल्ले ने गधियाँ ले ली। अब मरासियों में जाकर नाचने भी लगा है।'' जब उसके पिता ने यह सुना, वह माला हाथ में पकड़े हुए छड़ी के सहारे गिरते-पड़ते बुल्लेशाह के पास पहुँचा। बुल्ले ने सोचा कि आज बापू भी सूखा न जाए। उसकी तरफ तवज्जो देकर बोला :

लोका दे हथ मालियां, बाबे दे हथ माल।
सारी उमर जपेंदिया, खुथ ना सका बाल॥
चीणा ईंज छिड़ींदा यार ....

अब लाहौर के दोनों काजी वहाँ पर नाच रहे हैं। बूढ़ा पिता लोक-लाज भूल गया। वह भी बोला :

पुत्र जिन्हादे रंग रंगीले, मां-पियों लैन्दे तार।
चीणा ईंज छिड़ींदा यार ....

❖ ❖ ❖

चार पदार्थ

बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि॥
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल॥

यह बानी श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की है। आप बहुत प्यार से समझाते हैं कि परमात्मा वेद-शास्त्रों से नहीं मिलता। आप कहते हैं, ''हमने सारे वेद, स्मृतियाँ और पुराण पढ़े हैं। इनके पढ़ने से शान्ति नहीं मिली। तसल्ली नहीं हुई। 'नाम' के बराबर कोई भी पढ़-पढ़ाई नहीं है। 'नाम' अमोलक वस्तु है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

वेद कतेब संसार हबाहूँ बाहिरा, नानक का पातशाह दिसे जाहिरा।

वेदों-शास्त्रों को पढ़कर हम बेफिक्र नहीं हो सकते कि हम परमात्मा के पास पहुँच जाएंगे या यम हमें कुछ नहीं कहेंगे। तुलसी साहब कहते हैं:

चार अठारह नौ पढ़े, खट पढ़ खोया मूल।
सुरत शब्द चीन्हें बिना, ज्यूं पँछी चंडूल॥

एक बार एक पंडित कबीर साहब के साथ बहस करने के लिए गया। कबीर साहब घर पर नहीं थे। उनकी लड़की कमाली घर पर थी। पंडित ने पूछा, ''क्या कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहा :

कबीर का घर आसमान पे, जहाँ सिलहली गैल।
पाँव ना टिके पपील का, पंडित लादे बैल॥

बड़े अफसोस की बात है! क्या तू कबीर साहब को इन्सान

समझता है? जहाँ कबीर साहब का घर है, वही *सच्चखंड* है। वहाँ तो चींटी का पाँव भी नहीं टिक सकता। तूने जो इतने ग्रंथ बैलों पर लादे हुए हैं, इन्हें लेकर वहाँ कैसे पहुँचेगा? उनके साथ कैसे गोष्ठी करेगा?

ऋषियों, मुनियों, गुरुओं, पीरों ने कमाई की। पिंड को छोड़ा, ब्रह्मांड पर चढ़े। मालिक के साथ मिलाप किया। उन्होंने अंदर जो जो नज़ारे देखे और उन्हें जो जो रुकावटें पेश आईं वह उन्होंने हमारे फायदे के लिए धर्म पुस्तकों में दर्ज कर दी। हम उन धर्म पुस्तकों को पढ़कर न कोई घाटी पार कर सकते हैं और न ही अंदर कोई नज़ारा देख सकते हैं।

इसी तरह अगर हम दिन-रात धर्म पुस्तकों को पढ़ते रहें तो हमारा मसला कभी भी हल नहीं होगा। अगर हम धर्म पुस्तकों में लिखी हिदायतों के मुताबिक अभ्यास करें तो ही हम अपनी मंजिल पर पहुँच सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम दूसरों की शादी के तो गीत गाते हैं लेकिन अपनी शादी कराई नहीं।'' इसी तरह हम, लोगों की कमाई का तो जिक्र करते हैं कि अमुक महात्मा ने बड़ी अच्छी किताब लिखी है। लेकिन कभी यह भी सोचा कि हमने अपना जीवन उस महात्मा के कहे अनुसार बनाया? जहाँ तक वह महात्मा पहुँचा है, क्या हमने वहाँ तक पहुँचने की कोशिश की? महात्मा पढ़ने को बुरा नहीं कहते। वे कहते हैं, ''आप जो पढ़ते हैं उस पर अमल करें।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

पढ़ याँ शान्त ना आवई, पूछो ज्ञानियाँ जाऐ।

जाप ताप गिआन सभि धिआन॥

खट सासत्र सिम्रिति वखिआन॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''कोई भी जप तप करो, कोई भी पढ़-पढ़ाई करो, लेकिन 'नाम' के बराबर कोई भी कर्म नहीं है।''

जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''चाहे कोई योगाभ्यास करे, चाहे घर बार छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में फिरे। कितने ही कठिन साधन क्यों न करे।''

अनिक प्रकार कीए बहु जतना॥
पुंन दान होमे बहु रतना॥

अब आप प्यार से समझाते हैं कि चाहे कोई किसी तरह के यत्न करे, चाहे कोई रत्न-हीरे दान करे। 'नाम' के बराबर कोई भी कर्म कारगर नहीं।

सरीरु कटाइ होमै करि राती॥
वरत नेम करै बहु भाती॥

चाहे कोई रत्ती रत्ती करके अपना शरीर अग्नि में होम कर दे, चाहे कोई कितने ही व्रत क्यों न रख ले।

नही तुलि राम नाम बीचार॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार॥

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''नाम के बराबर कोई भी कर्म कारगर नहीं है। आपको 'नाम' जपना चाहिए। किसी भी अन्य योनि में 'नाम' नहीं जपा जा सकता। सिर्फ इन्सानी जामा ही एक मौका है, जिसमें 'नाम' जपा जा सकता है।'' कबीर साहब कहते हैं :

चार पैर गुंग मुख, तब कैसे गुण गाइये।
उठत बैठत ठेंगा पड़हे, तब कित मूँड लुकाइये॥

नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै॥
महा उदासु तपीसरु थीवै॥

गुरु अर्जुनदेव जी अब उन लोगों का जिक्र करते हैं, जो पृथ्वी की परिक्रमा करने या पुरानी यादगारें देखने को भक्ति समझते हैं। उनके दिल में यह इच्छा होती है कि हम फलाना समाज, मन्दिर या किला देखें। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''चाहे वे नौ खंडों पर घूमते रहे। ऐसा नहीं कि उन्हें ज्यादा जगहों पर घूमने से परमात्मा मिल जाएगा। हम जितना भी बाहर जाएंगे, दुनिया से मेल मिलाप करेंगे, हमारा उतना ही ख्याल दुनिया में फैलेगा और हम परमात्मा से दूर हो जाएंगे।''

अगनि माहि होमत परान॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान॥

निउली करम करै बहु आसन॥
जैन मारग संजम अति साधन॥

आप कहते हैं, ''चाहे कोई नेती, धौति या योगियों के जितने भी कर्म हैं सारे ही क्यों न कर लें। चाहे जैनियों के कठिन साधन भी क्यों न कर ले।''

निमख निमख करि सरीरु कटावै॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै॥

गुरु साहब कहते हैं कि चाहे कोई रत्ती रत्ती करके अपना शरीर भी क्यों न कटवा ले और कहे कि मैं भक्त हूँ, मैं गुरु पीर को नहीं मानता। हमारे मन पर जो हौमें (अहंकार) की मैल लगी हुई है वो फिर भी दूर नहीं होती।

हरि के नाम समसरि कछु नाहि॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि॥

'नाम' की कमाई की तुलना हम किसी भी चीज से नहीं कर सकते। जो 'नाम' की कमाई करता है वह परमगति को प्राप्त होता है।

मन कामना तीरथ देह छुटै॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै॥

पुराने जमाने में हिन्दुस्तान में रिवाज था कि लोग ये आशाएं रखकर तीर्थों पर जाया करते थे कि बुढ़ापे में हमारी देह तीर्थों पर छूटेगी तो हम स्वर्गों में जाएंगे। लेकिन सन्त-महात्मा हमें बड़े प्यार से समझाते हैं कि आप चाहे तीर्थों पर जाकर भी अपने शरीर को क्यों ना छुड़ा लो लेकिन आपके अंदर से अहंकार की बीमारी कभी भी नहीं जाएगी। कबीर साहब कहते हैं:

गंगा तीर्थ जे घर करे, पीवे निर्मल नीर।
बिन हर भक्त न मुक्त होवे, ऐहो कथ रहे कबीर॥

चाहे गंगा के किनारे घर बनाकर रह लो, चाहे रोज गंगा का पानी पिओ। लेकिन 'शब्द-नाम' की कमाई के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

सोच करै दिनसु अरु राति॥
मन की मैलु न तन ते जाति॥

चाहे आप दिन-रात स्नान कर लो। तन की मैल जरूर उतार लोगे, लेकिन मन की मैल पानी से धोकर दूर नहीं होगी।

इसु देही कउ बहु साधना करै॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै॥

आप कहते हैं, ''इस देह को बाहर से आप चाहे जितना भी शुद्ध कर लो। मन पर जो पापों की मैल है उसको बाहर की कोई भी साधना नहीं उतार सकती।''

जन्म जन्म की इस मन को मल लगी, काला होया सुआओ।
धोती खंनली न उजली होय, चाहे सौ धोवन पाओ॥

जलि धोवै बहु देह अनीति॥
सुध कहा होइ काची भीति॥

कई लोगों का ख्याल होता है कि सुबह उठकर नहा लो; प्रभु की भक्ति हो गई। आप चाहे जितना मर्जी नहा लो, यह कच्ची दीवार को लीपने जैसा है, जो कभी साफ नहीं होती।

मन हरि के नाम की महिमा ऊच॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच॥

आप कहते हैं, ''नाम की महिमा बहुत ऊँची है। जो 'नाम' के बीच में पहुंच जाते हैं, उन्हें मालूम है कि 'नाम' की क्या महिमा है। 'नाम' की कमाई करके बड़े बड़े पापी तर गए हैं।''

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै॥
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै॥

अब आप प्यार से समझाते हैं कि चाहे कोई कितना भी समझदार क्यों ना हो, उसे मौत का डर लगा ही रहता है। बाहरी तौर पर हम चाहे कितने भी यत्न कर लें, लेकिन तृष्णा से छुटकारा नहीं पा सकते। जब तक हम तृष्णा पर काबू नहीं पा लेते, तब तक हम अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकते।

एक आदमी ने महात्मा की बहुत सेवा की। महात्मा उससे बहुत खुश हुए। महात्मा ने उसे चार बत्तियाँ देकर कहा, ''एक बत्ती एक दिशा में ले जानी है। जहाँ बत्ती बुझ जाए वहाँ पर

धरती खोदनी है। वहाँ से जो मिल जाए उस पर सब्र करना है।''

वह एक दिशा में गया। जहाँ बत्ती बुझी, उसने धरती खोदी। वहाँ से उसे रुपये मिले। उसके दिल में ख्याल आया कि दूसरी बत्ती भी जलाई जाए। तब दूसरी बत्ती जलाकर दूसरी दिशा में गया। जहाँ वह बत्ती बुझी, उस जगह उसने धरती खोदी। उसे वहाँ से मोहरें मिली।

फिर उसके दिल में ख्याल आया कि अब तीसरी बत्ती भी जलाई जाए। तब वह तीसरी बत्ती लेकर तीसरी दिशा में गया। जहाँ वह बत्ती बुझी, उसने खुदाई की। वहाँ से उसे हीरे-मोती मिले। उसकी तृष्णा और भड़क उठी। वह चौथी बत्ती लेकर चौथी दिशा में गया। जहाँ पर वह बत्ती बुझी, उसने उस जगह खुदाई की। वहाँ उसे बना बनाया मकान मिला, जिसमें एक दरवाजा था। वह दरवाजे में से मकान के अंदर गया। वहाँ उसे एक इन्सान मिला जिसके सिर पर छत का वजन था और वह इन्सान बहुत घबराया हुआ था। इसने उस इन्सान से पूछा, ''क्या कुबेर का धन यहीं पर है?'' उस इन्सान ने कहा, ''हाँ! तू अपना सिर मेरी जगह दे। मैं फारिग होकर तुझे बता सकता हूँ।'' जब इसने अपना सिर छत के नीचे दे दिया तो उस इन्सान ने कहा, ''मैं भी तेरी तरह ज्यादा तृष्णा के कारण ही यहाँ फँसा था। अब तेरे जैसा कोई और तृष्णालु आएगा वह तुझे यहाँ से निकालेगा। तब तक तुम यहीं इन्तजार करो।'' नानक साहब कहते हैं :

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे परे को होड़े रे।

इन्सान की ख्वाहिशें ही इन्सान को कंगाल बनाए रखती हैं।

भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

गुरु अर्जुनदेव जी बताते हैं कि हिन्दुस्तान में आम रिवाज

है कि कई लोग भेष बना लेते हैं। सोचते हैं कि इस तरह करने से परमात्मा मिलेगा। इससे मन में और आग भड़क उठती है।

बरमी मारी सप न मुए, ता निगुरे कर्म कमाए।

साँप के रहने की जगह को बरमी कहते हैं। जब साँप वहाँ से चला जाता है, चाहे उस बरमी को खत्म कर दें तो भी साँप नहीं मरता। जब तक गुरु नहीं मिलता, वह 'नाम' नहीं देता, हम परमात्मा से नहीं मिल सकते।

छूटसि नाही ऊभ पइआलि॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि॥

आप कहते हैं, ''चाहे कोई पाताल में चला जाए, चाहे आकाश में अपना घर बना ले। लेकिन इन्सान के मरने तक कुछ न कुछ काम अधूरे रह जाते हैं। जो काम अधूरे रह जाते हैं, यह उनके लिए सोचता है, जिसे संकल्प कहते हैं। जिन अधूरे कामों का संकल्प उठता है, उन्हें पूरा करने के लिए इसे फिर संसार में आना पड़ता है।''

जहाँ आसा तहाँ वासा।

अवर करतूति सगली जमु डानै॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै॥

'नाम' के अलावा इन्सान जितने भी कर्म करता है, मालिक के दरबार में उन कर्मों की कोई मान्यता नहीं है। 'शब्द-नाम' की कमाई के बिना काल जीव को बहुत सख्त दंड देता है।

हरि का नामु जपत दुखु जाइ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ॥

आप प्यार से समझाते हैं कि 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं।

गुरु बिना 'नाम' नहीं मिलता। सतसंग के बिना ज्ञान नहीं होता। जीव जब भी 'शब्द-नाम' की कमाई पर बैठता है, अगर थोड़ा सा भी सिमरन करता है तो मालिक के दरबार में उसकी हाजिरी परवान है।

सगल सृष्टि का राजा दुखिया, हर का नाम जपत होइ सुखिया।

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥

दुनिया में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष **चार पदार्थ** माने जाते हैं। अगर स्वर्ग में पहुँचे तो वहाँ भी ये चारों पदार्थ मिल सकते हैं। जिसके पास ये चारों पदार्थ हों, उसे दुनिया में किसी चीज की कमी नहीं होती। लेकिन गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''अगर आपको कोई पूरा साधु मिल जाए, आप उसकी सेवा में लग जाओ। और उसके कहे मुताबिक 'नाम' जपो तो आपको कहीं और जाने की जरूरत नहीं है। इन चारों पदार्थों का फल आपको 'नाम' की कमाई के साथ ही मिल जाता है।''

जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥

सबसे ज्यादा दुःख जन्म और मरण का है। दुनिया में और भी दुःख हैं। गृहस्थ में सुख की सांस लेना बहुत मुश्किल है। अगर आप शान्ति चाहते हैं, जन्म मरण के दुःखों से ऊपर उठना चाहते हैं तो 'नाम' की कमाई करो। तुलसी साहब कहते हैं :

कोई तो तन मन दुखी, कोई नित उदास।
एक एक दुख सबन को, सुखी सन्त का दास॥

जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥

दुनिया में लोग अपनी मान बड़ाई की खातिर अपने कीमती असूल भी कुर्बान कर देते हैं। लेकिन आप बड़े प्यार के साथ समझाते हैं कि दुनिया की मान बड़ाई साथ नहीं जाएगी। सच्ची शोभा मालिक के दरबार में ही मिलती है। वह एक बार मिल जाए तो मालिक उसे वापिस नहीं लेता। अगर आप वह शोभा प्राप्त करना चाहते हैं तो महात्मा की सोहबत संगत में रहकर अहंकार को छोड़ दें; क्योंकि यह अहंकार ही हमारे और परमात्मा के बीच में एक रुकावट है।

जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥

दुनिया में अगर जन्म-मरण की कोई दवाई है तो वह 'नाम' है। इसे हम साधु की सोहबत में रहकर ही प्राप्त कर सकते हैं।

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥

अगर स्वप्न में भी किसी के मुँह से उस परमात्मा का नाम निकलता है तो चाहे उसके पैरों के लिए मेरे तन के चमड़े की जूती बना लो। मैं फिर भी खुश हूँ। क्योंकि उसने अपने मुँह से प्रभु का नाम तो लिया! प्यार तो जताया! गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

हों बलिहारे तांके जाऊँ, कलियुग में जिन पाया नाम।

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥

आप फरमाते हैं, ''जो अपने आपको छोटा समझता है असल में वही इन्सान सबसे ऊँचा होता है। प्रभु उसी पर दया करता है।'' कबीर साहब कहते हैं :

कंचन तजना सहज है, सहज तिरिआ का चाउ।
मान वडियाई ईर्ष्या, ओ न तजिया जाउ॥

सोने का त्याग सहज है। नम्रता यह नहीं कि हम दुनिया को धोखा देने के लिए ऊपर से कहते रहें कि हम तो कुछ भी नहीं हैं। यह नम्रता सिर्फ दुनिया को धोखा देने के लिए होती है। सच्ची नम्रता हो तो ही मालिक दरवाजा खोलता है।

दिल साडा नीवां होवे, मत साडी ऊँची होवे।

जा का मनु होइ सगल की रीना॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना॥

गुरु साहब कहते हैं, ''जो अपने आपको छोटा समझता है परमात्मा उसके अंदर ही प्रगट है। जिसके अंदर वह परमात्मा प्रगट हो जाए उसे सारा विश्व अपना ही नज़र आता है।'' हम कह लेते हैं कि हम सबसे प्यार करते हैं। आप जरा सोचकर देखो कि अगर कोई जरा सा भी हमारा विरोध करे तो हम कैसे आपे से बाहर हो जाते हैं! जब हमारे अंदर इतनी ईर्ष्या है तो वह प्रभु कैसे हमारे अंदर प्रगट हो सकता है?

एक महात्मा किसी गाँव में गए। उन्होंने बताया कि मेरा नाम शीतल दास है। उस गाँव के लोग बहुत खुश हुए कि अपने गाँव में शीतल दास आ गया है।

सुथरा एक बेधड़क फकीर था। उसने सोचा कि देखें क्या वाकई ही यह शीतल है या इसने नाम ही शीतल रखा है? सुथरे ने उस महात्मा से कहा, ''महात्मा जी जरा सी आग चाहिए।'' महात्मा ने कहा, ''नहीं है।'' उसने फिर आग माँगी। महात्मा

ने कहा, ''है ही नहीं।'' जब तीसरी बार उसने फिर आग माँगी तो महात्मा चिमटा लेकर उसके पीछे भागा। सुथरे ने कहा, ''महात्मा जी! कैसे भाँबड़ मच रहे हैं? नाम शीतल और अंदर आग ही आग भड़क रही है।''

मन अपुने ते बुरा मिटाना॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी के बीच है। जब हम त्रिकुटी से ऊपर पारब्रह्म में जाते हैं वहाँ इन चीजों का नामोनिशान नहीं होता। जब हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है तो हमारा मन जो हमारे साथ दुश्मनी करता था, वह हमारा मित्र बन जाता है। जब मन मित्र बन जाता है तो सारी दुनिया मित्र बन जाती है।

सूख दूख जन सम द्रिसटेता॥
नानक पाप पुंन नही लेपा॥

आप प्यार से समझाते हैं कि जो व्यक्ति सुख-दुःख, मान-अपमान को एक समान समझता है वह पाप-पुण्य से भी परे है।

निरधन कउ धनु तेरो नाउ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि 'नाम' धन ही हमारे साथ जाएगा। वही सच्चा शाह है जिसके पास 'नाम' है। परमात्मा का 'नाम' बेसहारों का सहारा है। हम जानते हैं कि जब मौत आती है तो माँ-बाप, बहन-भाई कोई भी हमारे साथ नहीं जाता। जो धन-दौलत हमने कमाई है वह बैंकों में छोड़ जाते हैं या घर में ही पड़ी रह जाती है।

तोसा बन्धों जीव का, ऐथे ओथे नाल।

हम जो थोड़ा बहुत भजन-सिमरन करते हैं, वह आगे के लिए तोशा इकट्ठा कर रहे हैं। वही हमारे साथ जाएगा।

निमाने कउ प्रभ तेरो मानु॥
सगल घटा कउ देवहु दानु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो निमाणा हूँ। अगर मेरा कोई ठिकाना है तो तू ही मेरा ठिकाना है। तू दान देते समय यह नहीं देखता कौन पापी, पुण्यात्मा, औरत, मर्द, गरीब, अमीर है या किस देश का है। तू दयालु होकर इस संसार में आता है और हर किसी को नाम के साथ मालोमाल कर देता है।''

करन करावनहार सुआमी॥
सगल घटा के अंतरजामी॥

आप सतगुरु की तारीफ करते हुए कहते हैं, ''तू आप ही जीवों को जोड़ता है आप ही सब कुछ करता है। तू हर एक के घट-घट में बैठा लेखा-जोखा करता है। तू अन्तरयामी है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग यह कहते हैं कि हम सन्तों के पास 'नाम' लेने जाते हैं यह वही कहते हैं जिनकी आँखें नहीं खुली। जिनकी आँखें खुली हैं वे जानते हैं कि कोई हमें सतसंग में बुलाकर 'नाम' दे रहा है।''

हम गुरु के आगे तब तक ही सवाल करते हैं जब तक हमारा पर्दा नहीं खुला। जब पर्दा खुल जाता है, फिर हम कोई सवाल नहीं करते। बहुत से अभ्यासी मेरे पास आकर कहते हैं कि जब हम घर से चले थे तो हमारे मन में बहुत सवाल थे।

लेकिन यहाँ आकर ये सवाल फिजूल से लगते हैं। हम सिर्फ दर्शन करने के लिए आए हैं।

अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥

गुरु अर्जुनदेव जी अपने सतगुरु के आगे फरियाद करते हैं, ''तू अपनी गत-मत आप ही जानता है। हम तेरे राज़ को नहीं समझ सकते हैं।''

तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥

तू अपनी महिमा आप ही जानता है। हम बेचारे जीव तेरी क्या महिमा कर सकते हैं। आप कहते हैं :

तू सुल्तान कहाँ हो मियां तेरी कंवण वडियाई हो।

हम ज्यादा से ज्यादा तुझे सुल्तान कह देंगे, मियाँ कह देंगे। यह भी दुनियादारी का लफ़्ज़ है।

तू जो कुछ है सो है।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥

एक बनिया नित्य ही सतसंग में जाया करता था। एक दिन उसे कोई खास काम पड़ गया। उसने अपने बेटे से कहा, ''बेटा! तू सतसंग में जा।'' उसका बेटा सतसंग में गया। महात्मा सतसंग कर रहे थे, ''गाय, गरीब और साधु पर दया करनी चाहिए।'' वह लड़का घर आया। उसने देखा कि गाय आटा खा रही है। उसके दिल में ख्याल आया कि मकानों का बहुत किराया आता है ब्याज भी बहुत आता है। अगर यह गाय दो किलो आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा?

उसका पिता आया और कहने लगा, ''ओ अन्धे के अन्धे। तुझे दिखाई नहीं दे रहा कि गाय आटा खा रही है?'' लड़के ने कहा, ''पिता जी! परमात्मा ने हमें बहुत कुछ दिया है।'' उसने पिता का विरोध सहन कर लिया लेकिन गाय को नहीं हटाया। पिता ने कहा, ''मुझे सतसंग में जाते हुए तीस साल हो गए। अगर मैं ऐसी शिक्षाओं पर अमल करता तो अब तक अपना घर उजाड़ चुका होता! तू घर से निकल जा!''

वह लड़का घर से निकल गया। बाहर गया तो उसने देखा कि साँप के मुँह में एक मेंढक चिल्ला रहा था। उस लड़के ने मेंढक को साँप के मुँह से छुड़वा दिया। लड़के ने साँप को भूख से व्याकुल देखकर अपनी जांघ का माँस काटकर साँप को खिला दिया और आगे की तरफ चल दिया। वह लड़का बहुत दुःख पा रहा था, उससे चला नहीं जा रहा था।

आगे चलकर उस लड़के को एक बुजुर्ग माता मिली जिसके साथ एक छोटा लड़का था; वह माता बहुत परेशान थी। माता ने बनिये के लड़के से कहा, ''अगर तू मेरी यह गठरी उठा ले तो मैं तेरी बहुत आभारी होऊंगी।'' बनिये का लड़का बहुत अच्छा था उसने माता की गठरी अपने सिर पर उठा ली। जब वे तीनों थोड़ी दूर ही गए तो उन्होंने देखा सामने से एक आदमी घोड़ा लेकर आ रहा था। माता ने कहा, ''देख बेटा! मेरे पास बहुत धन है। तू इस घोड़े को खरीद ले। हम घोड़े पर सवार हो जाएंगे।''

घोड़ा खरीदकर जब वे तीनों आगे गए तो उन्होंने किसी जगह एक रात गुजारी। अन्त में वे सब एक नगर में पहुँचे और वहाँ बादशाह के पास नौकरी कर ली।

बादशाह के पास एक चमत्कारी अंगूठी थी जिसे वह हर समय अपने पास रखता था। उस अंगूठी की वजह से स्वर्ग की

परियाँ बादशाह का तख्त उठाकर उसे सैर करवाने ले जाती थी। एक दिन बादशाह और बुजुर्ग माता का लड़का सैर करने निकले। बादशाह की अंगूठी दरिया में गिर गई। बादशाह बहुत भयभीत हुआ कि अंगूठी के बिना परियाँ नहीं आएंगी। मेरा तख्त कौन उठाएगा? बादशाह ने कहा, ''अगर कोई मेरी अंगूठी दरिया में से निकाल दे तो मैं उसे मनचाही चीज दे सकता हूँ।''

बुजुर्ग माता के लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर आप अपनी बेटी की शादी मेरे बड़े भाई से कर दें तो मैं आपकी अंगूठी निकाल दूँगा। बादशाह ने कहा, ''मैं कर दूँगा।'' लड़के ने दरिया में छलाँग लगाई और अंगूठी निकालकर बादशाह के आगे रख दी। बादशाह ने अपनी लड़की की शादी उसके बड़े भाई से कर दी। बादशाह की और कोई सन्तान नहीं थी। बादशाह ने अपना राज्य भी अपने दामाद को दे दिया।

कुछ समय बाद माता कहने लगी, ''चलो हम अपने अपने घर वापिस चलें!'' रास्ते में बुजुर्ग माता के लड़के ने बनिये के लड़के से कहा, ''तू मुझे जानता है मैं कौन हूँ?'' माता के लड़के ने कहा, ''मैं वही मेंढक हूँ जिसे तूने साँप के मुँह से छुड़वाया था। मैं तेरा भाई बना। मैंने तेरी शादी राजकन्या से करवा दी। राजा ने तुझे बादशाह बना दिया। इस तरह मैंने अपना कर्ज उतार दिया।''

थोड़ी दूर चलकर घोड़ा भी लोप होने लगा और कहने लगा, ''मैं वही साँप हूँ जिसको तूने अपनी जाँघ का माँस खिलाया था। मैं भी तेरा कर्ज उतारकर जा रहा हूँ।'' थोड़ी दूर चलकर वह बुजुर्ग माता भी लोप होने लगी और कहने लगी, ''मैं वही गाय हूँ जिसको तूने आटा खाते हुए नहीं हटाया था और अपने पिता का विरोध सहकर घर छोड़ दिया था। मैंने अपना कर्ज

उतार दिया है। अब तू अपना राजपाट सँभाल। प्रभु के नाम की कमाई कर। साध संगत में जा, ताकि तू और भी तरक्की करके मालिक के नजदीक हो सके।''

सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सारे धर्मों में ऊँचा धर्म साध संगत में जाकर 'शब्द-नाम' की कमाई करना है।''

सगल उदम महि उदमु भला॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा॥

हम जानते हैं कि दुनियादारी के कामों के लिए हम कितनी मेहनत करते हैं। सुबह उठकर 'शब्द-नाम' की कमाई करना सबसे ज्यादा फायदेमंद है।

सगल बानी महि अंम्रित बानी॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी॥

सारी बानी में उत्तम बानी वही है जो आवाज *सच्चखंड* से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। सबसे श्रेष्ठ वही आत्मा है जो अपने फैले ख्यालों को सिमरन के जरिये इकट्ठा करके इस जगह आकर इस बानी के साथ जुड़ जाए।

सगल थान ते ओहु ऊतम थानु॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु॥

आप कहते हैं, ''सारे हृदयों में वही हृदय पवित्र है जहाँ पर 'नाम' प्रगट है।''

❖ ❖ ❖

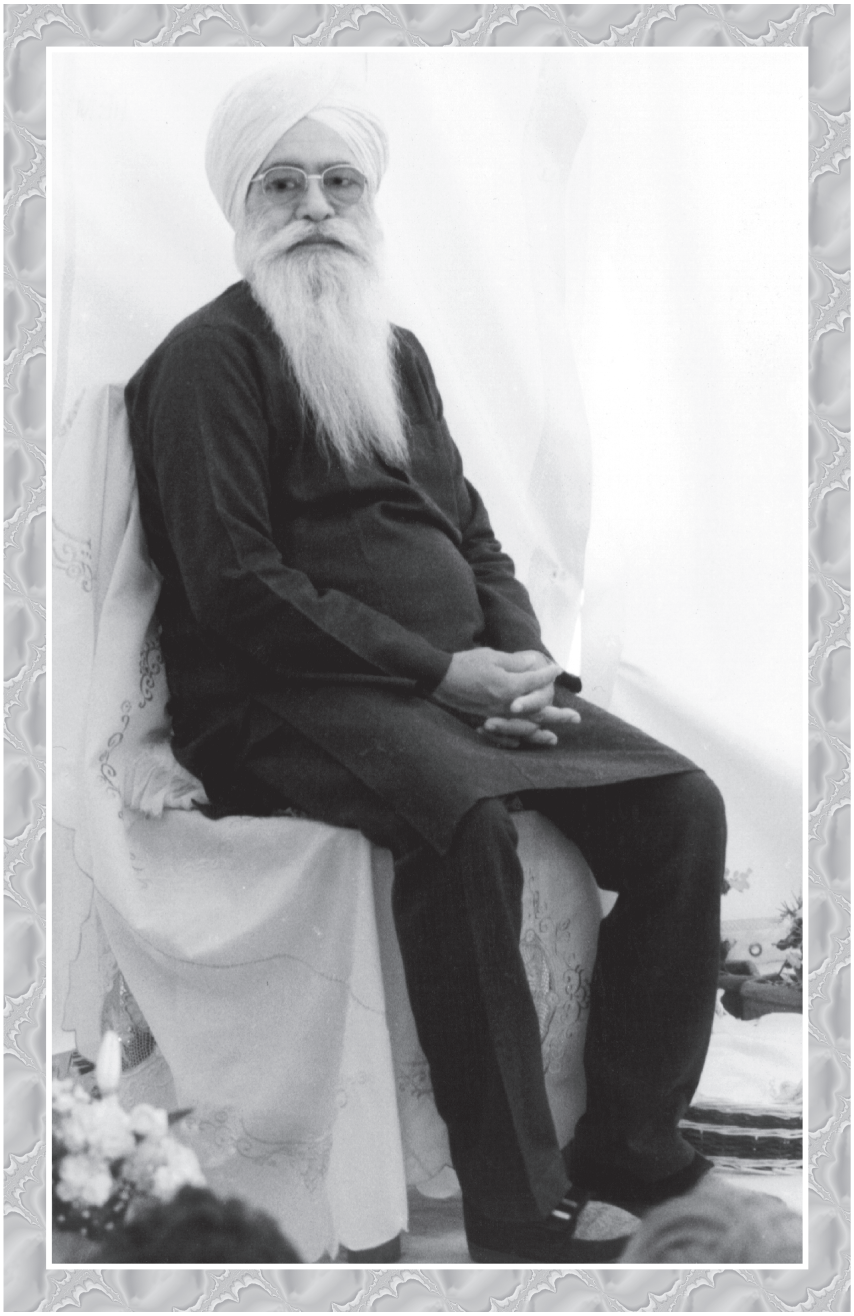

अष्टपदी – चार

रेत का घर

निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज समझाते हैं कि हमें परमात्मा को याद रखना चाहिए, अपने हृदय में बसा लेना चाहिए। जिसने पानी की एक बूँद से यह शरीर बनाया है; आखिर वही हमारी मदद करेगा। अन्त में उसके नाम के सिवाय हमारा कोई नहीं होगा। इसलिए हमें सिर्फ परमात्मा का ही ध्यान करना चाहिए।

रमईआ के गुन चेति परानी॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी॥

आप प्यार से समझाते हैं कि जिस परमात्मा ने यह जीवन दिया है, उसे याद रखना चाहिए। परमात्मा ने उस समय हमारी मदद की जब हम माता के गर्भ में थे। उसने हमें वे सब चीजें दी हैं जिनकी हमें जरूरत है।

परमात्मा ने हमारे शरीर के सारे अंग आँख, कान, नाक और सुन्दर बाल ठीक जगह पर लगाए। परमात्मा ने इस सबका सृजन इस तरह किया है जिसका ज्ञान हमारी जन्म देने वाली माता को भी नहीं था। परमात्मा यह काम बिना किसी की सहायता के करता है।

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जब हम माता के पेट में टेढ़े-मेढ़े लटके होते हैं, परमात्मा हमें वहाँ भी खाना इत्यादि पहुँचाता है। माता के गर्भ की आग में ये हड्डियाँ 90 दिन तक जलकर मजबूत होती हैं। हम ऐसे परमात्मा को क्यों बिसारें! जिसे हम गर्भ के दुःख में लगातार याद करते थे।''

बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध॥

जब हम पैदा हुए, एक छोटे बच्चे थे। परमात्मा ने माता के स्तनों में हमारे लिए दूध की व्यवस्था की। जवान होने पर उसने सब प्रकार के भोजन, ऐशो आराम की व्यवस्था की। ये सब उस मालिक की दया और उसका तोहफा है। हमें जब जो चाहिए वह देता है।

कबीर साहब के जीवन की एक घटना है। आप एक घर में जाया करते थे। आप वहाँ के बुजुर्ग से कहते, ''इन्सानी जामा अमूल्य है इसे हाथ से न निकलने दे।'' वह बुजुर्ग कहता कि बच्चे बड़े हो जाएं, मैं फिर 'नाम' जपूँगा।

आप जानते हैं कि मौत बचपन, जवानी और बुढ़ापे का लिहाज नहीं करती। हम नहीं जानते कि कब यह संसार और परिवार छोड़कर जाना पड़ जाए! उस बुजुर्ग का प्यार घर के साथ था इसलिए वह उसी घर में बछड़ा बनकर पैदा हुआ। परिवार के लोगों ने उसे खेत में जोता। जब वह बैल उनके काम का न रहा तो उन्होंने उसे एक तेली को बेच दिया। तेली ने कई साल तक उसे कोल्हू पर जोता। जब वह तेली के काम का न रहा तो तेली ने उसे एक कसाई को बेच दिया। कसाई ने उसे काटकर कीमा बनाकर उसका माँस बेच दिया। उसकी चमड़ी नगाड़ा बनाने वाले ले गए, उन्होंने उस चमड़ी का नगाड़ा बनाकर मन्दिर

वालो को बेच दिया। अब उस नगाड़े पर सुबह शाम डंडे पड़ने लगे। उसकी यह हालत देखकर कबीर साहब ने कहाः

बैल बने हल में जुते ले गाड़ीवान।
तेली के घर में रहे पुन घेर कसाई लेन॥
माँस कटा बोटी बिकी, चमड़न मड़ी नगाड़।
कुछ एक कर्म बाकी रहे तिस पर पड़ती मार॥

कबीर साहब ने उस बुजुर्ग से कहा, ''देख! 'नाम' नहीं जपा तो तेरी यह हालत हुई। तू कहाँ कहाँ गया, कितने कष्ट उठाए और अब सुबह-शाम तुझ पर डंडे पड़ते हैं।''

बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जब हम जवानी भोगकर बूढ़े हो जाते हो, हिल-डुल भी नहीं सकते। परमात्मा उस समय भी हमारा ख्याल रखता है। परमात्मा ने हमें पत्नी, बच्चे, रिश्तेदार और मित्र दिए जो दिलोजान से हमारी सेवा करते हैं। हमें 'नाम' जपना चाहिए और परमात्मा को याद रखना चाहिए।''

इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै॥

अब गुरु अर्जुनदेव जी हमारे लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, ''हे मालिक! ये गरीब आत्माएं आपकी महिमा नहीं समझ सकती कि आप कौन हैं? आप इन पर अपनी दया करेंगे तो ही इनका उद्धार हो सकता है।''

हम सतसंग में जाते हैं और भजन भी करते हैं; यह तब तक है जब तक हमारी आँखें बन्द हैं। जब हम अपनी आँखें खोलते हैं तो देखते हैं कि परमात्मा ही हमें सतसंग में ले जाता

है और भजन में बिठाता है। यह उस मालिक की दया ही है कि हम उसकी याद में बैठते हैं।

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुख बसहि ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सोचकर देखो! उस मालिक ने हमें क्या क्या दिया है? मालिक की दया से आज हमारे पास कितने सुख हैं। उसने हमें पत्नी, बच्चे, मित्र और रिश्तेदार दिए ताकि हम खुश रह सकें।''

जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥

अब आप कहते हैं, ''उस मालिक ने हमारे पीने के लिए ठंडा पानी दिया। ठंडी ठंडी हवाएं चलाईं जिसकी हमें कोई कीमत अदा नहीं करनी पड़ती। उसने हमारे इस्तेमाल के लिए आग और कई चीजें बनाई। ये सब परमात्मा की दी हुई दातें हैं जो उसने इन्सान को दान दी हैं।''

जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥

उस मालिक ने संसार की सब दातें देकर हमें सब जीवों का सरदार बनाया है।

दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा ने हमें आँख, कान, हाथ और पैर दिए। संसार में घूमने फिरने की शक्ति दी। उसने

हमें सब प्रकार के ऐशो आराम की चीजें दी। लेकिन यह दुःख की बात है कि जिस परमात्मा ने हमें ये सब दातें दी, हम उसी को भूल गए। हम दुनियावी रसों-कसों से जुड़कर अपनी जिंदगी बरबाद कर रहे हैं।''

ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥

आप एक बार फिर हमारी तरफ से परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि यह इन्सान तो मूर्ख है, अज्ञानी है। यह भूल गया कि यह इस संसार में किस मकसद के लिए आया था? इसलिए हे प्रभु! इन जीवों पर दया करो ताकि इनको चौरासी लाख योनियों में चक्कर न काटने पड़ें। ये संसार के भवसागर से पार हो जाएँ। यह आपकी दया से ही हो सकता है।

मेरे अंदर तो कोई गुण नहीं है। मैं आपकी दया से ही अपने प्यारे परमात्मा को पा सका हूँ। मैं आपकी कृपा से ही जिन्दा हूँ। मैं जब भी आपका नाम लेता हूँ तो मेरा शरीर और आत्मा आनन्द से भर जाते हैं।

आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥

जब हम इस संसार में आए, एक माँस के लोथड़े की तरह थे। अंत समय में हम फिर एक माँस के लोथड़े की तरह ही हो जाते हैं। परमात्मा ने हमें सहारा दिया, परमात्मा की वजह से ही लोग हमारा ख्याल रखते हैं। जो परमात्मा हमें हर पल सहारा देता है, हमें ऐसे परमात्मा को याद रखना चाहिए।

जा की सेवा नव निधि पावै ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥

मालिक की सेवा करके, उसकी ओर लगन लगाकर हम नाम के खज़ाने और मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह दुःख की बात है कि हम अपने मन को मालिक की सेवा में नहीं लगाते। हम कई बार भजन में बैठे हुए सोचते हैं कि जैसे किसी पर अहसान कर रहे हैं। ज्यादातर लोग भजन में इस तरह बैठते हैं जैसे यह रोजमर्रा का काम है।

एक साधु का कहना है कि जब इन्सान जवान होता है, खेती करता है, जानवरों को चराता है। दुनिया के सब काम करता है। लेकिन जब बूढ़ा हो जाता है, कोई काम नहीं कर सकता तब माला लेकर नाम जपता है; सोचता है कि वह भगवान की भक्ति कर रहा है; भगवान पर अहसान कर रहा है।

जो ठाकुरु सद सदा हजूरे॥
ता कउ अंधा जानत दूरे॥

परमात्मा ही इन्सान के सबसे नजदीक होता है। वह उसकी हर जरूरत को देखता और पूरा भी करता है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''यह बहुत हैरानी की बात है कि परमात्मा इन्सान के नजदीक होता है फिर भी यह इन्सान उसे हिमालय की चोटी पर, समुद्र की तह में या पाताल में ढूँढता है। इन्सान यह नहीं समझता कि वह परमात्मा हमारे अंदर बैठकर हमारी रक्षा कर रहा है।''

जा की टहल पावै दरगह मानु॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु॥

हम उस सतगुरु को भूल जाते हैं जिसकी सेवा करके हम परमात्मा के दरबार में यश पा सकते हैं। यह हमारी मूर्खता है कि हम उसे ही बिसार देते हैं।

सदा सदा इहु भूलनहारु॥
नानक राखनहारु अपारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि हे परमात्मा! यह जीव भूलनहार है। यह जन्म-जन्मांतर से यही भूल करता आया है। जब तक आप इस पर दया नहीं करेंगे, इसे अपनी याद नहीं दिलवाएंगे, यह आपके पास वापिस नहीं आ सकता। आप इन गरीब आत्माओं पर दया करो।

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै॥

आप कहते हैं, ''यह जीव कीमती हीरों को छोड़कर कौड़ियाँ इकट्ठी करने में लगा हुआ है। 'नाम' अनमोल हीरा है। लेकिन दुःख की बात यह है कि यह सांसारिक रसों-कसों, नाम और प्रसिद्धि में फँसा हुआ है।''

परमात्मा ही सच और अविनाशी है। यह दुनिया झूठ है, एक कूड़े का ढेर है जो एक दिन नष्ट हो जाएगी। परमात्मा ही रहेगा। मगर दुःख तो इस बात का है कि हम परमात्मा को भूलकर झूठी वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं।

जो छडना सु असथिरु करि मानै॥
जो होवनु सो दूरि परानै॥

हम सोचते हैं कि यह संसार स्थिर है। जब हमारा समय आएगा हमें यह संसार छोड़ना ही पड़ेगा। न हम स्थायी हैं न यह संसार ही स्थायी है। गुरु नानक जी कहते हैः

जो उपजा जो बिनस है

जो उपजा है जो जन्मा है उसे एक दिन नष्ट होना ही है।

संसार में कुछ भी स्थायी नहीं। यह सब एक स्वप्न है। दुनिया की चीजों का मोह त्यागो और नाम जपो। गुरु तेगबहादुर साहब ने कहा है, ''राम को जाना पड़ा। रावण को भी जाना पड़ा जिसका परिवार बहुत बड़ा था।''

सब सन्त कहते हैं कि यह दुनिया एक स्वप्न है, एक धोखा है। हम जब तक सोते हैं, स्वप्न सच लगता है। नींद खुलते ही स्वप्न टूट जाता है। इसी तरह जब तक हम इस दुनिया में रहते हैं, यह स्वप्न चलता रहता है। जब हम जाग जाते हैं, तब हमें पता लगता है कि यह सच नहीं था; फिर भी हम इस संसार से जुड़े रहते हैं।

बाबा बिशनदास जी ने इस जिंदगी की तुलना होली के प्रसाद से की है। भारत में कुछ अमीर लोग होली का प्रसाद इस तरह का बनाते हैं, जो देखने में तो अच्छा दिखता है लेकिन खाने पर मुँह का स्वाद कड़वा हो जाता है। खाने वाला सोचता है कि काश! उसने यह प्रसाद चखा ही न होता। लेकिन जिन लोगों ने यह प्रसाद नहीं चखा, वे सोचते हैं कि काश! उन्हें भी यह प्रसाद चखने का मौका मिलता!

छोडि जाइ तिस का स्त्रमु करै॥
संगि सहाई तिसु परहरै॥

हम अपने परिवार, बच्चे, धन-दौलत, दुनियावी इज्जत और शोहरत के साथ लिपटे हुए हैं। इसके साथ ही हम यह भी घमंड करते हैं कि मैं अपने परिवार का बहुत ख्याल रखता हूँ। अपनी बिरादरी का सेवादार हूँ। हमनें एक दिन इन्हें छोड़कर चले जाना है; हमें इस बात की जरा भी फिक्र नहीं कि इस संसार को छोड़ने के बाद हमारा क्या होगा?

चंदन लेपु उतारै धोइ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ॥

आप एक उदाहरण देकर समझाते हैं कि गधे को चंदन का लेप पसंद नहीं। वह मिट्टी और गन्दी चीजों से प्यार करता है। अगर उस पर चंदन का लेप करेंगे तो वह उस लेप को उतारकर अपने ऊपर गंदी चीजें लगा लेता है। इसी तरह सतगुरु हमारे मन पर नाम-रूपी चंदन का लेप लगाते हैं, लेकिन हम उस सुगन्ध को सहन नहीं कर पाते।

अंध कूप महि पतित बिकराल॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल॥

गुरु अर्जुनदेव जी एक बार फिर हमारी तरफ से उस अविनाशी, सर्वशक्तिमान मालिक से प्रार्थना करते हैं कि हे मालिक! हम जीव इस दुनिया रुपी अंधेरे कुएं में डूबे हुए हैं। तुम तो दाता हो, अपना हाथ बढ़ाकर हम जीवों पर दया करो।

इसी तरह हम जीवों को भी उस मालिक के आगे विनती करनी चाहिए कि हे मालिक! हमारा साथ आपसे छूट गया है। हम बेसहारा हो गए हैं। हममें शक्ति नहीं रही। हम कमजोर पड़ गए हैं।

जिस तरह छोटा बच्चा सो रहा हो तो माँ बेफिक्र हो जाती है। जब बच्चा रोता है तो माँ दौड़कर उसके पास आकर देखती है कि उसे क्या तकलीफ है, उसे किस चीज की जरूरत है। माँ बच्चे की जरूरत को पूरा करती है।

इसी तरह जब हम दुनियावी कामों में लगकर मालिक को याद नहीं करते तो वह भी हमारी तरफ से बेखबर हो जाता है। जब हम उस मालिक की भक्ति करते हैं, उससे भीख माँगते हैं

और उसके प्यार में रोते हैं तो वह हमारी पुकार सुनकर उसी तरह दौड़ा आता है जैसे बच्चे का रोना सुनकर उसकी माँ आती है। इसलिए हमें परमात्मा का बच्चा बनकर परमात्मा के आगे पुकार करनी चाहिए।

करतूति पसू की मानस जाति॥
लोक पचारा करै दिनु राति॥

आप कहते हैं,''हम जब से उस मालिक से बिछुड़े हैं हमारी इन्सानों वाली करतूतें नहीं हैं। हम इन्सान अवश्य हैं लेकिन हमारी हरकतें पशुओं जैसी है।'' कबीर साहब कहते हैं :

पशु घड़ेंदा नर घड़ा, चूक गया सींग पूँछ।
अकल वही हैवान की, बिना सींग बिन पूँछ॥

परमात्मा बनाने तो पशु लगा था लेकिन इन्सान बना दिया, सींग-पूँछ लगाने थे मगर दाढ़ी-मूँछ लगा दिए।

बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ॥

अब गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि चाहे कोई सफेद, नीले, भगवे कपड़े पहने, चाहे दुनिया को कितना भी साधु बनकर दिखाए। लेकिन जो अंदर है वह छिप नहीं सकता। खोटा सोना उतनी देर ही सोना दिखता है जब तक सर्राफ के पास नहीं पहुँचता। सर्राफ देखते ही बता देता है कि इसमें इतना खोट है।

इसी तरह जब पूरा शिष्य गुरु के पास जाता है तो कच्चा गुरु भागता है वह जानता है कि अब यह कुछ माँगेगा! जैसे कच्ची सरसों में से तेल नहीं निकलता इसी तरह कच्चे गुरु से भी कुछ नहीं मिलता।

बाहरि गिआन धिआन इसनान॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु॥

आप प्यार से समझाते हैं कि यह इन्सान बाहर तो ज्ञान ध्यान की बातें करता है और लोगों को समझाता है। लेकिन अंतर में लोभ का कुत्ता भौंक रहा है कि यहाँ से वहाँ से कुछ मिल जाए।

पुराने जमाने में हिन्दुस्तान के हर गाँव में एक लाल बुझक्कड़ हुआ करता था। एक बार एक आदमी बैलगाड़ी पर लकड़ी का कोल्हू लादकर ले जा रहा था। उस गाँव के लोगों ने उससे पहले कभी कोल्हू नहीं देखा था। सभी अपना अपना अन्दाज लगा रहे थे कि यह क्या चीज है। जब किसी को समझ नहीं आया तो उन्होंने अपने गाँव के लाल बुझक्कड़ को बुलाया। लाल बुझक्कड़ कोल्हू को देखकर पहले रोया, फिर हँसा। गाँव के लोगों ने उससे रोने और हँसने का कारण पूछा। उसने कहा, ''मैं इसलिए रोया कि जब मैं मर जाऊँगा तो आपको ऐसी बातें कौन समझाएगा! हँसा इसलिए कि भगवान की यह सुरमेदानी नीचे गिर गई है।''

बूझे लाल बुझक्कड़, होर ना किसे जानी।
बोदी होके डिग पई, रब्ब दी सुरमेदानी॥

हमारी भी यही हालत है। हम परमार्थ में अनजान हैं। हम ऐसे लाल बुझक्कड़ों के पास जाते हैं जिन्होंने कभी अभ्यास नहीं किया होता, कभी अंदर नहीं गए होते, कभी चिन्गारी भी नहीं देखी होती। वे सन्तों की नकल करके समझाते हैं कि आप आँखें बन्द करो, अंदर देखो।

हजूर कहा करते थे, ''बिना तकलीफ उठाए बच्चा भी पैदा नहीं होता। बिना मेहनत किए कुछ भी प्राप्त नहीं होता।'' आप

महात्माओं की जीवनियाँ पढ़कर देखो! गुरु नानक साहब ने ग्यारह साल कंकड़-पत्थरों का बिस्तर किया। गुरु अमरदेव जी ने बहत्तर वर्ष की आयु से तिरासी वर्ष की आयु तक लंगर की सेवा की। इसी तरह महाराज जयमल सिंह जी, सावन सिंह जी, कृपाल सिंह जी ने कितनी मेहनत की कितनी कमाई की! तब कहीं मालिक के दरबार में पहुँच सके। कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है, खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए॥

अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह॥

गुरु साहब कहते हैं, ''कुछ लोग घर-बार, बाल-बच्चे छोड़कर अपने जिस्म पर राख लगा लेते हैं। लेकिन अंदर विषय-विकारों की आग जल रही है। वे संसार समुद्र से किस तरह निकलेंगे!''

जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि॥
नानक ते जन सहजि समाति॥

आप कहते हैं, ''जिनके अंदर वह परिपूर्ण परमात्मा प्रगट हो जाता है। उन्हें सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

त्रिगुणा विच सहज ना पाइए, त्रिगुणा भ्रम भुलाए।
चौथे पद में सहज है, गुरुमुख पल्ले पाए॥

जब हम सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर चले जाते हैं, अगर तब हमें कोई *सच्चखंड* पहुँचा हुआ साधु मिल जाए तो वह हमें सहज अवस्था प्राप्त करवा सकता है।

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि अगर कोई अन्धा इन्सान हमसे रास्ता पूछे और हम उसे रास्ता बता भी दें, तब भी वह मंजिल तक नहीं पहुँच सकता। वह मंजिल तक तभी पहुँचेगा, जब हम उसका हाथ पकड़कर उसे पहुँचा देंगे।

इसी तरह हम रूहानियत में अन्धे हैं। हम इस मसले को पोथियाँ पढ़कर हल नहीं कर सकते, पोथियाँ सिर्फ रास्ता ही बताती हैं। जब तक हमें ऐसा सन्त नहीं मिलता जो हमारी बाजू पकड़कर *सच्चखंड* ले जाए और सतपुरुष के आगे खड़ा करके कहे, ''यह तेरा जीव है, तू इसे माफ कर दे।''

कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि बहरे आदमी को चाहे सारी रात समझाते रहो! वह बहुत मामूली ही समझेगा। हमारी हालत भी उसी तरह है कि हम उस मालिक की आवाज को, जो दिन-रात हमारे अंदर आ रही है, सुन नहीं रहे। महात्मा हमें दिन-रात समझाते हैं, लेकिन हम उस तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं।

मायाधारी अत अन्धा बौला, शब्द ना सुने वो रोल घचोला।

कहा बिसनपद गावै गुंग ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

गूंगा आदमी चाहे कितनी भी कोशिश करे, उसका सुर ठीक नहीं निकलता। वह गा नहीं सकता।

कह पिंगुल परबत पर भवन॥
नही होत ऊहा उसु गवन॥

पिंगले की टाँगें नहीं, वह पर्वत पर चढ़ ही नहीं सकता। इसी तरह रूहानी चढ़ाई ऊपर की ओर है जब तक पूरा गुरु मदद न करे, हम रूहानी रास्ते पर चलने के काबिल नहीं हैं। हम अपनी कोशिश से कुछ भी नहीं कर सकते।

करतार करुणा मै दीनु बेनती करै॥
नानक तुमरी किरपा तरै॥

मैं दीन होकर तेरे आगे विनती करता हूँ, ''तू कृपा कर। तेरी कृपा से ही यह जीव तर सकता है।''

संगि सहाई सु आवै न चीति॥
जो बैराई ता सिउ प्रीति॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा हमेशा हमारे साथ रहता है। हमारी मदद करता है। हम उससे प्यार नहीं करते। बेटे-बेटियाँ तो मतलब का ही प्यार करते हैं। मतलब निकलते ही कौन किसको पूछता है?''

बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै॥
अनद केल माइआ रंगि रसै॥

जिस तरह **रेत का घर** कभी भी गिर सकता है, उसी तरह हमारा शरीर भी रेत की दीवार की तरह है। मालूम नहीं कब साँस की गति रुक जाए! कब भरे बाजार को छोड़कर जाना पड़ जाए! माया के नशे में आकर खुशियाँ मना रहे हैं। विषय विकारों में मस्त हुए पड़े हैं। मालूम नहीं कब मालिक इसमें से अपनी किरण निकाल लेगा।

द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति॥
कालु न आवै मूड़े चीति॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त मत में दृढ़ विश्वास होना चाहिए। मन को दुनिया से मोड़कर प्रभु की तरफ लगाना है। जिसको पूरा भरोसा है, काल उसकी तरफ नहीं आएगा।''

बैर बिरोध काम क्रोध मोह॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह॥

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, ''हमारे अन्दर ईर्ष्या, बैर, काम, क्रोध, लोभ, मोह हैं। इसलिए वह परमात्मा हमें कैसे दर्शन दे? हम शिकायत करते हैं कि हमें 'नाम' लिए हुए इतना समय हो गया है। हमारी अंदर कोई तरक्की नहीं हुई!'' तुलसी साहब कहते हैं :

जुआ चोरी मुखबरी, ब्याज घूस परनार।
जे चाहे दीदार को, ते अेती वस्त निकार॥

इआहू जुगति बिहाने कई जनम॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''बैर, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमें इसी जन्म से नहीं चिपटे हुए; इनको भोगते हुए हम कई जन्म पा चुके हैं। हमने मन को अब तक जवाब नहीं दिया।'' आप फिर कहते हैं कि हे परमात्मा! तू खुद ही हम पर दया मेहर कर।

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि॥

आप उस परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि यह पिंड शरीर सब कुछ तेरा ही है। संसार में सब कुछ तेरे हुक्म से हो रहा है। सारे जीव तेरे हुक्म से ही आते हैं।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥

हे परमात्मा! तू ही हमारा पिता है, तू ही हमारी माता है। हम तेरे बच्चे हैं। तेरी दया से ही हम इस संसार मण्डल पर सुख पा रहे हैं।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥

तेरा कोई अन्त नहीं जान सकता। तू अपनी महिमा आप ही जानता है। जिन पर तू दया करे वे ही तुझे समझ सकते हैं। तू सब देवी-देवताओं से ऊँचा है।

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥

यह सारा संसार तेरे धागे में इस तरह पिरोया हुआ है जैसे माला में मनके पिराये होते हैं। सब कुछ तेरी आज्ञा से ही हो रहा है।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू अपनी गत-मत को आप ही समझता है, मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ।'' कबीर साहब कहते हैं :

सारी सृजन हार की, जाना नाहिं कोये।
कह जानन आपन धनी, या दास दीवानी होये॥

मालिक की गति को मालिक ही जानता है, या वह महात्मा जानता है, जिस पर उस परमात्मा की दया है। महात्मा परोपकारी बनकर इस संसार मण्डल पर आते हैं।

इसी तरह एक महात्मा को परोपकारी कहते थे। उस महात्मा के नजदीक कुछ चोर रहते थे। उन चोरों ने सोचा, देखें! यह महात्मा हमारी मदद करेगा? दो चोर महात्मा के पास जाकर कहने लगे, ''हमारा तीसरा साथी बीमार है। आप हमारे साथ चलकर हमारी मदद करो।'' अगर महात्मा इनकार करे तो वह परोपकारी नहीं कहलवा सकता था।

वे चोर महात्मा को साथ लेकर किसी घर में चोरी करने चले गए। चोरों ने चोरी कर ली। महात्मा ने शंख बजा दिया। घर के लोग जाग गए। चोर चुराए हुए सामान को छोड़कर भाग गए। घर के लोगों ने पूछा, ''आप तो परोपकारी महात्मा हैं! यह सब क्या है?'' महात्मा ने सारी वार्ता बताई। महात्मा ने कहा, ''हमारा काम परोपकार करना है। चोरों की बात भी रख ली और आपका नुकसान भी नहीं होने दिया।''

सन्त-महात्मा इस संसार मण्डल में आकर हमारे बीच रहते हैं। हमारी तरह ही खाते-पीते हैं, बातचीत करते हैं। लेकिन उनका मकसद यही होता है कि यह जीव किसी न किसी तरह प्रभु परमात्मा से मिल जाए।

❖ ❖ ❖

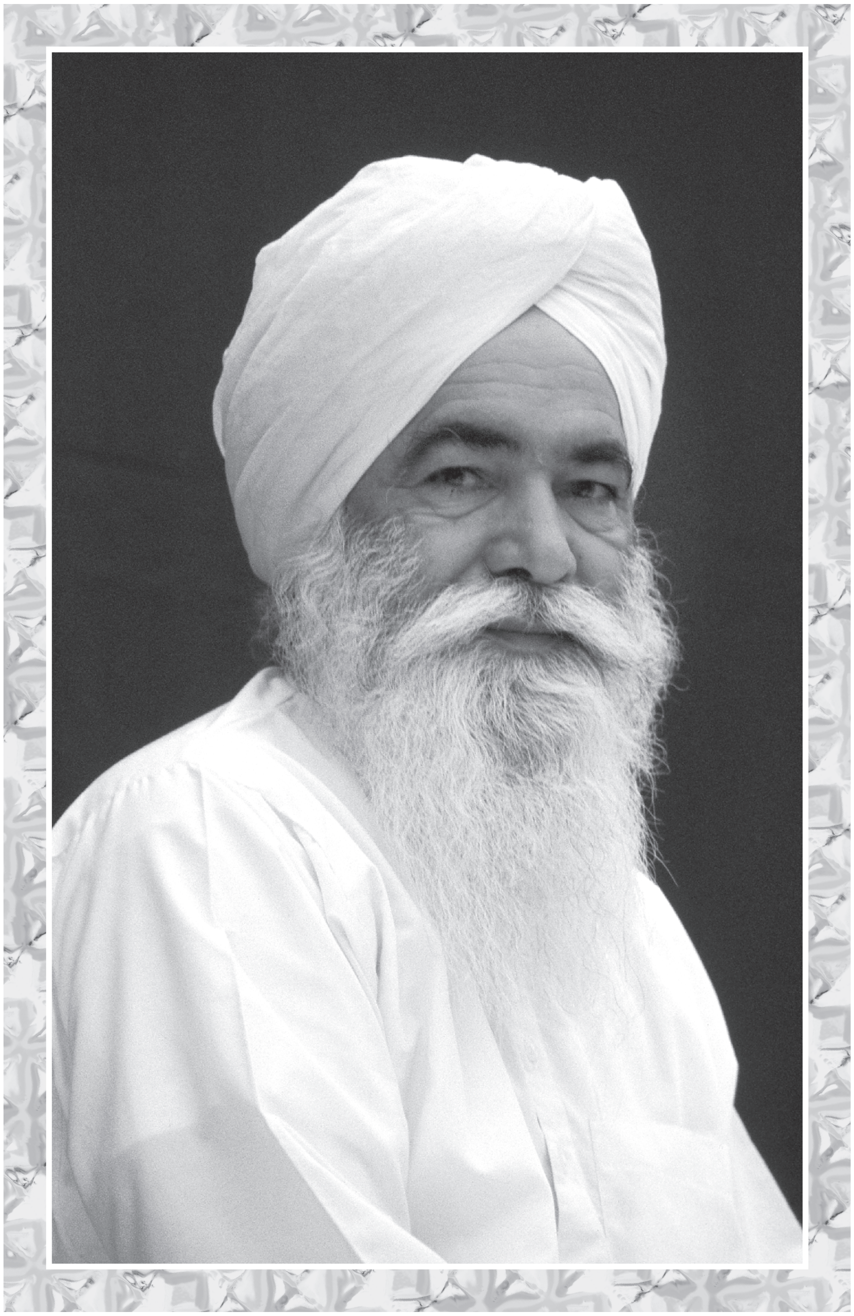

मिथ्या

देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ॥
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी फरमाते हैं कि वह प्रभु सबका दाता है, सबका बादशाह है, सबको इज्जत देता है। प्रभु हम पर दया-मेहर करता है हमारी पालना करता है। हमारे रहने के लिए अपनी धरती, हवा और आग देता है। हम उस प्रभु को छोड़कर दुनिया के विषय-विकारों में और मैं-मेरी में फँस जाते हैं।

हम दुनिया में प्रभु का 'नाम' जपने के लिए आए थे, लेकिन हमने उस 'नाम' को भुला दिया। हमें 'नाम' के बिना यमदूतों के हाथों ख्वार होना पड़ता है। यमदूत बड़ी मुसीबत में फँसाते हैं। 'नाम' की कमाई ही इस संसार समुद्र से पार लगाएगी। महात्मा जब भी इस संसार मण्डल पर आते हैं, हमें यही समझाते हैं, ''झूठ बोलना छोड़ दो। सच बोलो। 'नाम' की कमाई करो।''

एक कमाई वाला महात्मा था। वह प्रेमियों के बुलावे पर बाहर गया। उस जमाने में आज की तरह गाड़ियों और बसों के साधन नहीं थे। आमतौर पर महात्मा पैदल ही यात्रा किया करते थे। उस महात्मा ने अपने पल्ले में तीन परोंठे बाँध लिए। महात्मा को रास्ते में एक लोभी आदमी मिला वह भी उनके साथ चल पड़ा। उस आदमी के दिल में विचार आया कि महात्मा के पास कुछ न कुछ पैसे तो जरूर होंगे। जब थोड़ा आगे गए, रास्ते में एक नहर आई। महात्मा ने कहा, ''भाई! मुझे जंगल दिशा में

जाना है, तुम मेरे सामान का ख्याल रखना।'' लोभी आदमी ने कहा, ''अच्छा जी! मैं रखवाली करूँगा।''

महात्मा जब दूर चले गए तो उसने पैसों की लालच में उनके सामान की तलाशी ली लेकिन पैसे नहीं मिले। सिर्फ तीन परोंठे ही थे। उसमें से उसने एक परोंठा खा लिया। महात्मा ने वापिस आकर अपना सामान देखा और उन्हें मालूम हुआ कि इसने एक परोंठा खा लिया है। महात्मा ने उससे पूछा, ''भाई! तूने इसमें से एक परोंठा खाया है?'' उसने कहा, ''नहीं जी।''

महात्मा ने उससे कहा, ''तू उस मालिक को याद कर, जिसने तुझे पैदा किया है। उसकी सौगन्ध खाकर कह कि तूने परोंठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने कहा, ''मैं उस परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने परोंठा नहीं खाया।'' लेकिन महात्मा चुप रहे। महात्मा ने बचे हुए दो परोंठों में से एक परोंठा खुद खा लिया और दूसरा उसे खिला दिया।

आगे चलकर दोनों एक नदी पार करने लगे। लोभी उस नदी में डूबने लगा। महात्मा ने कहा, ''देख भई सजना! जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है उसे याद कर। वह परमात्मा हर इन्सान की मदद करता है।'' लोभी ने परमात्मा को याद किया और वे डूबने से बच गए। महात्मा ने कहा, ''देख! उस परमात्मा ने हमारी कितनी मदद की है। पानी में डूबने से बचाया है। तू उसी परमात्मा को साक्षी रखकर कह कि तूने परोंठा नहीं खाया।'' उसने कहा, ''मैं उसी परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने परोंठा नहीं खाया।'' महात्मा चुप रहे।

जब आगे गए तो जंगल में आग लगी हुई थी जिससे बचना नामुमकिन था। महात्मा कहने लगे, ''देख भई! उस परमात्मा को याद कर जिसने हमें पैदा किया है। वही हमें इस आग से

बचा सकता है।'' लोभी आदमी ने परमात्मा को याद किया, परमात्मा ने रक्षा की। जब उस जंगल से आगे निकल आए महात्मा कहने लगे, ''देख भई! परमात्मा ने हम पर बड़ी दया-मेहर की है, हमें आग से बचाया है। तू उसी परमात्मा की सौगन्ध खाकर कह कि तूने परोंठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने उसी तरह से फिर सौगन्ध खा ली। हम दुनियादार ऐसे ही हैं।

अगरचे अल्लाह सबका अन्नदाता है, फिर भी हर शख्स अल्लाह को पतियाता है।
अल्लाह का कोई शुक्रगुजार नहीं, अल्लाह सिर्फ कसम खाने के काम आता है॥

दुनिया परमात्मा को सिर्फ कसम खाने के लिए ही याद करती हैं। महात्मा बहुत समझदार और कमाई वाले थे। उन्होंने सोचा कि जब तक यह झूठ बोलना नहीं छोड़ेगा, यह परमात्मा के दरबार में नहीं पहुँच सकेगा। उनका मकसद सिर्फ झूठ छुड़वाना ही था। महात्मा ने अपनी माया की शक्ति से वहाँ पर काफी सोना इत्यादि इकट्ठा कर दिया। उसकी तीन ढेरियाँ बनाकर लोभी आदमी से कहा, ''एक ढेरी मेरी, दूसरी तेरी और तीसरी उसकी, जिसने परोंठा खाया था।'' लोभी ने कहा कि जिस परमात्मा ने पैदा किया है, हमारी पानी से, आग से रक्षा की है, मैं उसकी कसम खाकर कहता हूँ, वह परोंठा मैंने ही खाया था। महात्मा का भाव तो उसे समझाने का ही था। महात्मा ने कहा, ''तू पहले क्यों नहीं माना?'' महात्मा तो माफ करने के लिए ही आते हैं। सच आखिर सच ही होता है।

दस बसतू ले पाछै पावै॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै॥

परमात्मा ने इस जीव को बहुत कुछ दिया है। जब यह पैदा होता है इसके लिए दूध की दो नदियाँ बहा देता है; माता के स्तनों में दूध होता है। जब यह थोड़ा सा होश संभालता है तो

इसके भाई-बहन इसे प्यार करने लग जाते हैं। जब यह जवान होता है परमात्मा इसे बुद्धि दे देता है। परमात्मा इसके लिए ऐशो-ऐश्वर्य के साधन बना देता है। कितनी ही प्रकार की खाने-पीने की वस्तुएं देता है। अगर एक भी वस्तु कम हो जाए तो यह उसके लिए कहना शुरू कर देता है, ''परमात्मा ने मेरे साथ कितना अन्याय किया है कि मुझे यह वस्तु नहीं दी।''

एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ॥

जिस वस्तु के लिए यह परमात्मा में दोष निकालता है अगर परमात्मा वह वस्तु तो क्या इससे घर की सारी वस्तुएं भी वापिस ले ले तो यह उस परमात्मा का क्या कर सकता है।

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा के आगे आपका कोई जोर नहीं है। परमात्मा के लिए कोई अदालत नहीं है। वह खुद मालिक है। हम उसकी बराबरी नहीं कर सकते। उसे नमस्कार करके ही हम उससे फायदा उठा सकते हैं।''

जा कै मनि लागा प्रभु मीठा॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा॥

आप कहते हैं कि जो 'नाम' की कमाई करता है, जिसे 'नाम' मीठा लगता है। वह मालिक को अपने अंदर प्रगट कर लेता है और रोज उसके दर्शन करता है।

सुई लोहा ढूंढन खातिर, रहंदी नित उदासी।
ऐ गल सुनके हँसी आवे, जल विच मीन प्यासी॥

सुई लोहे की बनी है, लेकिन उसे खुद नहीं पता कि मैं

लोहे की बनी हूँ। अफसोस! मछली पानी के अंदर रहते हुए भी मुँह खोलकर पानी नहीं पी सकती। इसी तरह हम उस परमात्मा को अपने अंदर नहीं देखते। वह परमात्मा हमारे प्यार के इन्तजार में है। हमें दर्शन देने के लिए तैयार है। हम सोचते हैं कि वह परमात्मा वेदों-शास्त्रों में या जंगलों-पहाड़ों में है। हम लोग परमात्मा को बाहर ढूँढने में लगे हुए हैं। परमात्मा इन्सान की तलाश में है। हजूर महाराज कहा करते थे, ''परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं। इन्सान का बनना मुश्किल है।''

जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ॥

आप कहते हैं कि जिन पर प्रभु दयाल होता है, उनके अन्दर 'नाम' प्रगट कर देता है। उनसे 'नाम' की कमाई करवाता है। दुनिया की सारी ताकतें उसके आगे सिर झुकाती हैं। गुरु साहब कहते हैं :

होण नजदीक खुदाए दे, भेद न किसे देन।

महात्मा के पास सब कुछ होते हुए भी वह एक तुच्छ जीव की तरह अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

अगनत साहु अपनी दे रासि॥
खात पीत बरतै अनद उलासि॥

परमात्मा जिन पर दया करता है उनको अपनी रास-पूँजी दे देता है। वे चाहे उसे जितना मर्जी खर्च कर दें, चाहे लोगों में बाँट दें। उनके पास कभी कमी नहीं आती।

अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ॥
अगिआनी मनि रोसु करेइ॥

आप कहते हैं, ''हमें मिलना तो हमारा कमाया हुआ कर्म ही है।'' जो कुछ हम बीजकर आये हैं, अब उसे खा रहे हैं।

जो बीजै सो उगवे, खांदा जाना जीओ।

लेकिन हम अज्ञानवश होकर परमात्मा को दोष दे रहे हैं कि उसने हमारे साथ न्याय नहीं किया। हम अपने आपको दोष नहीं देते कि हमारे कर्म ही हमें दुःख दे रहे हैं।

अपनी परतीति आप ही खोवै॥
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै॥

हम अपना विश्वास अपने आप ही खत्म कर लेते हैं। अगर हम किसी से पैसे लेकर उसके साथ वायदा करें कि मैं फलाने समय पर तेरे पैसे वापिस करूँगा। हम समयानुसार उसके पैसे वापिस न करें तो हम अपना विश्वास खुद ही खत्म कर लेते हैं। फिर उससे मांगें तो वह कभी नहीं देगा।

इसी तरह हम माता के पेट के अंदर परमात्मा के साथ बहुत वायदे करते हैं, ''हे परमात्मा! मुझे बाहर निकाल। मैं तेरे 'नाम' की कमाई करूँगा। कभी भी बुरे कर्म नहीं करूँगा।'' लेकिन हम हर जन्म में बाहर आकर उस मालिक को भूल जाते हैं, याद तक नहीं करते। इसी तरह हम अपना विश्वास खोकर इस संसार में दुःखी रहते हैं।

अब परमात्मा किस तरह विश्वास करे कि हम 'नाम' की कमाई जरूर करेंगे? लेकिन वह फिर भी दयालु है। हम पर दया करके हमें बख्श देता है।

जिस की बसतु तिसु आगै राखै॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै॥

आप प्यार से समझाते हैं कि मालिक ने हमें जो वस्तुएं दी

हैं, हमें वे वस्तुएं उसी के आगे रख देनी चाहिए। गुरु गोविंद सिंह जी के चार बेटे थे। मुगल फौजों ने जब आपके चारों बेटों को मार दिया, तब आपने मालिक का शुक्र किया। ''हे मालिक! आपने जो अमानत मुझे सौंपी थी, वापिस ले ली है। मैं अब निश्चिंत होकर सोऊँगा।''

उस ते चउगुन कै निहालु॥
नानक साहिबु सदा दइआलु॥

अगर हम परमात्मा के हुक्म को सिर-मत्थे मानते हैं, उसका भाणां मानते हैं तो वह परमात्मा हमें ज्यादा वस्तुएं और ज्यादा प्यार देता है।

अनिक भाति माइआ के हेत॥
सरपर होवत जानु अनेत॥

आप कहते हैं, ''माया की रचना अनेक प्रकार की है। जीव इस रचना में फँसा हुआ है। मनुष्य जन्म ही इससे निकलने का रास्ता है। अगर 'नाम' मिल गया तो बेड़ा पार है; नहीं तो उसी माया के रंग में भटक जाता है।''

बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जो माया के पदार्थों में फँसे हैं वे इस तरह हैं, जैसे कोई इन्सान वृक्ष की छाया से प्यार करके उसके नीचे बैठ जाता है। रात होने पर छाया खत्म हो जाती है और इन्सान उस छाया से प्यार करके पछताता है।''

जो दीसै सो चालनहारु॥
लपटि रहिओ तह अंधु अंधारु॥

आप कहते हैं, ''हम जो कुछ भी इन आँखों से देखते हैं, जैसे बेटा-बेटी, स्त्री, जायदाद, सब कुछ चलनहार है। हम आँखों के होते हुए भी अंधे हैं। हमारे साथी हमारे सामने हमारा साथ छोड़ जाते हैं, लेकिन हम सोचते हैं कि मौत इनके लिए है हमारे लिए नहीं।''

बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिस तरह मुसाफिर से प्यार करने वाले को कुछ हासिल नहीं होता, इसी तरह हम इस दुनिया में एक मुसाफिर की तरह हैं। हम ऐसे ही एक दूसरे के प्यार में उलझे हुए हैं। हम कभी भी एक दूसरे का साथ नहीं निभा सकते। क्योंकि 'नाम' के सिवाय हमारा कोई संगी-साथी नहीं। अन्त समय में 'नाम' ही हमारे साथ जाएगा।''

मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥

आप कहते हैं ''जो प्यार प्रभु के साथ किया जाए वह प्यार ही सुख देता है।''

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥

आप जो कुछ भी तन, मन, धन, कुटुंब देखकर अहंकार करते हैं, यह सब कुछ **मिथ्या** है।

मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥

यह हुकूमत, धन, जवानी, काम की लज्जतें, सब **मिथ्या** हैं।

मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा॥
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता॥

अगर हमारे पास हाथी, घोड़े और बहुत साधन हैं, ये सब कुछ **मिथ्या** हैं।

मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु॥

आप कहते हैं कि अपने ऊपर मान करना भी **मिथ्या** है।

असथिरु भगति साध की सरन॥
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन॥

आप कहते हैं कि अगर किसी महात्मा की संगत मिल जाए तो कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ना चाहिए। उसके पीछे लगे रहो। अगर वह हमारी तरफ देखता है तो वह अपनी नज़र से हमारी आत्मा को पवित्र करता है। अगर हम चार दिन उसके साथ रहेंगे तो वह हमें 'नाम' जपने के लिए ही कहेगा।

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि॥

एक महात्मा, राजा अजासुर के पास लंगर के लिए कुछ दान माँगने गया। राजा ने उसे घोड़े की लीद उठाकर दे दी। परम्परा यह है कि हम जो दान देते हैं, वह दस गुना बढ़ जाता है। महात्मा ने दान को अपनी कुटिया के पास रख दिया तो वह बढ़ना शुरू हो गया और लीद का एक बहुत बड़ा ढेर बन गया।

एक बार राजा अजासुर वहाँ से निकला। उसने कुटिया की तरफ देखा कि महात्मा के पास कोई घोड़े-घोड़ी तो है नहीं पर

यह लीद कहाँ से आई? महात्मा ने बताया, ''यह हमारे एक प्रेमी का दिया हुआ दान है जो बढ़ रहा है।'' राजा को याद आया कि यह कर्म तो मैंने ही किया था। राजा ने महात्मा से कहा, ''मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। मुझे क्षमा करो।''

महात्मा ने कहा, ''राजा! यह तो खाकर ही खत्म होगी और तुझे ही खानी पड़ेगी।'' राजा बहुत दुःखी हुआ और उसने महात्मा से प्रार्थना की, ''कोई युक्ति बताओ।'' महात्मा ने कहा, ''हाँ, एक युक्ति है। अगर लोग तेरी निन्दा करें तो वे ये लीद खा लेंगे। तेरे हिस्से में नहीं आएगी।''

राजा के दिल में ख्याल आया कि मेरी निन्दा कौन करेगा? आखिर घर आकर उसने एक ऐसा कर्म किया कि एक कुँवारी लड़की को जबरदस्ती महल में बुला लिया। लोग राजा की निन्दा करने लगे कि राजा पिता समान होता है। अफसोस की बात है कि उसने लड़की के साथ मुँह काला करने के लिए उसे महलों में बुला लिया है। लेकिन वह राजा अंदर से सच्चा और पवित्र था। लड़की की पूजा करता था। उसकी बहुत इज्जत करता था। लोग राजा की निन्दा करते रहे। अब जो लीद थी वह निन्दा करने वालों को मिल रही थी।

वहाँ एक बढ़ई भी था, जिसने राजा की निन्दा नहीं की। जितनी लीद राजा ने दान की थी वहाँ उतनी लीद बच गई। राजा फिर महात्मा के पास गया और पूछा, ''कुछ लीद बच गई है?'' महात्मा ने कहा, ''राजा! तेरे राज्य में एक बढ़ई है जिसने तेरी निन्दा नहीं की। अगर वह भी तेरी निन्दा करे तो ही यह बची हुई लीद खत्म हो सकती है।''

अब तक राजा बहुत डर चुका था। वह रात को भेष बदलकर बढ़ई के घर गया और उससे कहने लगा, ''अपना राजा पहले

तो बहुत अच्छा था परन्तु अब कितने बुरे कर्म करता है?'' बढ़ई ने छड़ी उठाई और कहने लगा, ''यह दिखाई देती है?''

राजा अजासुर वहाँ से चल पड़ा और महात्मा के पास आकर रोकर कहने लगा कि वह बढ़ई तो निन्दा नहीं करता। महात्मा ने कहा, ''अब तू ही इसे खाकर खत्म कर।'' राजा ने वैसा ही किया। गुरु नानक साहब कहते हैं :

अजासुर रोवे भिखिया खाये, ऐसी दरगाह मिले सजाये।

आप कहते हैं कि वह कान **मिथ्या** हैं जो किसी की निन्दा सुनते हैं। वह हाथ **मिथ्या** हैं जो पराई वस्तु को उठाते हैं।

मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद॥

जो आँखें बुरी दृष्टि से पराई औरतों को देखती हैं वे **मिथ्या** हैं। वह जुबान भी **मिथ्या** है जो अन्न के अलावा माँस वगैरह खाती है।

मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि॥

जो पैर बुरे कर्म करने के लिए दौड़ते हैं, वे **मिथ्या** हैं। अपना हक छोड़कर पराया हक खाने को लोभ कहते हैं।

मिथिआ तन नही परउपकारा॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा॥

आप प्यार से समझाते हैं कि अगर हमने यह शरीर धारण करके जीवन में कोई उपकार नहीं किया तो यह शरीर किसी काम का नहीं। इसी तरह नाक से 'नाम' की सुगन्ध लेनी है। 'नाम' को छोड़कर हम जो भी सुगन्ध लेते हैं वे सब **मिथ्या** हैं।

बिनु बूझे मिथिआ सभ भए॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए॥

उस परमात्मा को अपने अंदर प्रगट न करने वाली देह भी **मिथ्या** है। उन्हीं की देह उत्तम है जो दिन-रात 'नाम' की कमाई करते हैं। साँस ऊपर जाए तब भी सिमरन चल रहा हो, साँस नीचे आए तब भी सिमरन चलना चाहिए।

बिरथी साकत की आरजा॥
साच बिना कह होवत सूचा॥

बिरथा नाम बिना तनु अंध॥
मुखि आवत ता कै दुरगंध॥

आप कहते हैं कि साकत पुरुष कभी भी प्रभु की भक्ति नहीं करता। उसका जीवन किसी भी लेखे में नहीं आता। साकत की संगत करना तो दूर, उसे देखकर दूर से ही भाग जाना चाहिए। अगर ऐसे की वासना भी आ जाए तो कुल को दाग लग जाता है। कबीर साहब कहते हैं :

साकत संग ना कीजिए, दूरों जाइये भाग।
वासन करो परसिए, तो कुल लागे दाग॥

बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी एक बड़ी अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि सिमरन के बिना हमारे दिन-रात इस तरह बेकार जा रहे हैं जैसे बारिश न होने पर खेती खराब हो जाती है।

गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम॥
जिउ किरपन के निरारथ दाम॥

आप कहते हैं, ''मालिक की भक्ति के बिना सब काम बेकार हैं। जिस तरह कंजूस आदमी का धन बेकार ही चला जाता है। उसका धन या तो बैंकों में या घर में ही दबा रह जाता है। वह धन का इस्तेमाल न तो खुद करता है और न ही अपनी सन्तान को करने देता है।''

एक कहावत है कि राजस्थान का एक जाट अरब देश चला गया। उसने वहाँ खजूर के पेड़ देखे तो उसका मन ललचाया कि खजूरें खा लें! वह खजूर के पेड़ पर चढ़ गया। जब उसने नीचे देखा तो वह घबरा गया कि यह पेड़ बहुत ऊँचा है। घबराकर उसने सौगन्ध ली कि अगर मैं सही सलामत नीचे उतर आया तो सन्तों के लंगर में सौ चादरें दान दूँगा। जब वह आधा नीचे उतर आया तो सोचने लगा, सौ चादरें ज्यादा हैं पचास ही बहुत हैं। जब और नीचे उतर आया, सोचने लगा पचास तो ज्यादा हैं सन्तों के पास क्या कमी है? पच्चीस ही दे देंगे। आखिर नीचे उतरते उतरते वह पाँच चादरों पर आ गया।

जब बाजार में चादरें खरीदने गया तो सोचने लगा कि सन्तों के पास कौन सी कमी है? एक चादर ही बहुत है। वह एक चादर लेकर सन्त के पास गया। सन्त जी उससे कहने लगे, ''भले आदमी! सब कुछ तो मालिक का दिया हुआ है, तुम इतना कष्ट क्यों करते हो? तुम इस चादर को अपने घर ले जाओ। यह तुम्हारे काम आएगी।''

जाट हाथ जोड़कर विनती करने लगा, ''बाबा जी! जब मैं खजूर के पेड़ पर चढ़ा तो मैंने सौ चादरों की सौगंध ली थी। धीरे धीरे नीचे उतरता गया और अब आपके पास एक ही चादर लेकर आया हूँ। अगर आप इसे रख लें तो अच्छी बात है। नहीं तो मैं यह भी अपने घर ले जाऊँगा।''

धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥

धन्य है वह भक्त जो दिन-रात 'शब्द-नाम' की कमाई करता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हम ऐसे भक्त पर बलिहार जाते हैं जो परमात्मा की भक्ति में लगा हुआ है।'' आप यह मत सोचो कि हम जो भजन-सिमरन करते हैं, इसकी कोई कीमत नहीं। हम जब उस शब्द को सुनते हैं तो हमारी हाजरी सच्चखंड में लग जाती है। वह परिपूर्ण परमात्मा उसे अपने ख़ज़ाने में दाखिल कर लेता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं :

एक चित जो इक क्षण ध्यावे, काल फाँस के बीच नहीं आवे।

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि जो लोग बाहर से दिखने में अच्छे लगते हैं, कोमल शब्द भी बोलते हैं। मगर उनके दिल में खोट है, वे दुनिया को धोखा दे सकते हैं लेकिन जो परिपूर्ण परमात्मा हमारे अंदर बैठा है, वह कभी भी धोखे में नहीं आता।

जाननहार प्रभू परबीन ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥

आप कहते हैं, ''मालिक अंदर बैठा है, सब कुछ जानता है। वह हमारे सोचने से पहले ही सुन लेता है। वह बाहरी बातों पर खुश नहीं होता।'' कबीर साहब कहते हैं :

राम झरोखे बैठके, सबका झारा ले।
जाकी जैसी चाकरी, ताको तैसा दे॥

अवर उपदेसै आपि न करै ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥

आप कहते हैं कि जो लोगों को उपदेश करता है कि 'नाम' जपो निन्दा न करो, खुद सारे ऐब करता है, विषय वासना भोगता है, काल उसकी चमड़ी उतार लेता है। उसका जन्म-मरण कभी खत्म नहीं होता।

जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥

आप कहते हैं कि जिसके अंदर परमात्मा विराजमान है। उसकी शिक्षा से सारा संसार तर जाता है।

जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
नानक उन जन चरन पराता ॥

आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! जिन लोगों ने आपको पहचान लिया है, मैं उनके पाँव पकड़ता हूँ।''

जिन्हाँ दिसदिया दुरमत, वंजण मित्र असाडले सेई।
हो ढुंढ़ेदी जग सवाया जन, नानक विरले कोई॥

वही हमारे मित्र हैं जिनके दर्शन करने से जीव बुरे कर्म करने छोड़ देता है। ऐसा करोड़ों में कोई एक ही होता है।

करउ बेनती पारब्रहम सभु जानै ॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥

आप कहते हैं कि मैं उस परमात्मा के आगे फरियाद करता हूँ। उसके चरणों में अपने आपको अर्पण करता हूँ क्योंकि वह खुद ही अपने किए को जानता है।

आपहि आप आपि करत निबेरा॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा॥

आप कहते हैं कि परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथों में रखा हुआ है। जिन पर वह दया करता है उनको शरीर के अंदर ही दर्शन करवा देता है, उनसे एक पल भी ओझल नहीं होता। जिन पर वह दया नहीं करता, उनके मन में यह बात बिठा देता है कि परमात्मा तो जंगलों-पहाड़ों में ही मिल सकता है।

उपाव सिआनप सगल ते रहत॥
सभु कछु जानै आतम की रहत॥

आप कहते हैं कि 'नाम' के बिना हम कोई भी उपाय कर लें, वह कारगर नहीं हो सकता। गुरु की मदद के बिना हम परमात्मा को नहीं पा सकते।

जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ॥
थान थनंतरि रहिआ समाइ॥

आप कहते हैं, ''वह मालिक सच्चखंड में बैठा है। वह अंदर बैठा जानता है, किसमें तड़प है, कौन मिलना चाहता है। जिस तरह पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ आदमी जानता है कि नीचे कहाँ आग लगी है। इसी तरह परमात्मा को भी मालूम है कि किसके अंदर तड़प है, मुझे किससे मिलना है।

सो सेवकु जिसु किरपा करी॥
निमख निमख जपि नानक हरी॥

आप कहते हैं कि वही सेवक है जिस पर वह परमात्मा कृपा करता है। वह सेवक भी साँस साँस के साथ उस परमात्मा-सतगुरु को याद करता है।

❖ ❖ ❖

मालिक की कृपा

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव॥
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव॥

श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपने सतगुरु रामदास जी के आगे प्रार्थना करते हैं, ''इन्सान के अंदर पाँच डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार गुप्त रूप से हैं। हमें इनसे कोई भाई-बन्धु नहीं बचा सकता। दुनिया में ऐसा कोई हथियार भी नहीं है जो हमें इनसे बचा सके। सिर्फ एक सतगुरु ताकत ही इनसे बचा सकती है।''

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा ने कितनी कृपा की है! हमारे खाने के लिए कितने पदार्थ बनाए हैं! हमें उसका शुक्रगुजार होना चाहिए। उसका सिमरन करना चाहिए।

जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि॥
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि॥

उस मालिक की कृपा से हम इस शरीर पर तेल, इत्तर इत्यादि लगाते हैं। जब तक वह परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है तब तक ही इस शरीर की शोभा है, सब इससे प्यार करते हैं। जब परमात्मा इस शरीर में से अपनी किरण निकाल लेता है, फिर चाहे इस पर तेल-इत्तर कुछ भी लगाएं; इस शरीर की

कोई कीमत नहीं! गुरु साहब कहते हैं, ''जिस परमात्मा के इस शरीर में होने के कारण तेरी इज्जत है उस परमात्मा का सिमरन क्यों नहीं करता?''

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥

आप कहते हैं, ''हम उस **मालिक की कृपा** से ही इस शरीर में बस रहे हैं। हमें उस परमात्मा का सिमरन करना चाहिए, शुक्रगुजार होना चाहिए।''

जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥

आप कहते हैं कि उस **मालिक की कृपा** से ही हम भाई-बहनों और रिश्तेदारों के बीच रह रहे हैं। हमें आठों पहर उसका सिमरन करना चाहिए, शुक्रगुजार होना चाहिए।

जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा हमारे शरीर के अंदर होने के कारण ही हमें दुनिया के रंग-तमाशे अच्छे लगते हैं। परमात्मा ही पूजा और ध्यान के काबिल है। हमें उसका ही सिमरन करना चाहिए।''

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥

उस **मालिक की कृपा** से ही हम इस शरीर पर वस्त्र पहन रहे हैं। इस शरीर का हार श्रृंगार कर रहे हैं। हमें उसका सिमरन करना चाहिए।

जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''उस **मालिक की कृपा** से ही हम अच्छे अच्छे बिस्तरों पर सोते हैं, आरामदायक गद्दों पर बैठते हैं। हमें उसका सिमरन करना चाहिए।''

जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै॥

उस **मालिक की कृपा** से ही दुनिया हमें मान-बड़ाई दे रही है। हमें रात-दिन उसका सिमरन करना चाहिए।

जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु॥

प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि॥
नानक पति सेती घरि जावहि॥

आप कहते हैं, ''नाम जपने से हम अपने घर *सच्चखंड* वापिस जा सकते हैं। वहाँ हमारी इज्जत होगी।''

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही॥

परमात्मा की कृपा से हम तन्दुरुस्त हैं। हमें इस तन्दुरुस्ती का फायदा उठाना चाहिए। भजन-सिमरन करना चाहिए।

जिह प्रसादि तेरा ओला रहत॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''तू इतने पाप करता है, फिर

भी परमात्मा तेरा कितना पर्दा रखता है! तुझे उसका शुक्रगुजार होना चाहिए। दिन-रात उसका सिमरन करना चाहिए।''

जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥

जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥

उस **मालिक की कृपा** से ही काल की ताकत हम तक नहीं पहुँच सकती। हमें साँस साँस के साथ सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते सिमरन करना चाहिए।

जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
नानक ता की भगति करेह ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा की कृपा से हमें यह इन्सान का जामा मिला है। परमात्मा ने खास दया करके हमें यह दुर्लभ देह दी है। हमें इस देह को पाकर परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए।

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥

आप कहते हैं कि परमात्मा हर घड़ी हमारी रक्षा करता है। हम उसका सिमरन करते हुए आलस क्यों करते हैं?

सारा दिन मजदूरी करे, हर सिमरन वेले वज्र सिर पड़े।

जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥

आप कहते हैं कि परमात्मा की कृपा से ही हम घोड़ों-

हाथियों पर चढ़ते हैं। कारों, हवाई जहाजों में सफर करते हैं। जिस परमात्मा ने हमें इतनी सहूलतें दी हैं, हमें भूलकर भी उसका सिमरन नहीं छोड़ना चाहिए।

जिह प्रसादि बाग मिलख धना॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा की महिमा करते हुए कहते हैं कि परमात्मा ने इन्सान के लिए बाग-बगीचे लगाए। सैर करने के लिए सड़कों का इन्तजाम किया। इसलिए हमें उसका शुक्रगुजार होना चाहिए, परमात्मा को मन के अंदर बसा लेना चाहिए।

जिनि तेरी मन बनत बनाई॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई॥

आप कहते हैं, ''देख! जिस परमात्मा ने तुझे इन्सान बनाया, माँ के पेट के अंदर तेरी रक्षा करता रहा। तेरी तन्दुरुस्ती का ध्यान रखा। अब तेरा भी फर्ज बनता है कि तू उस परमात्मा को अपने मन के अंदर बसा। उठता-बैठता, सोता-जागता उसका सिमरन कर।''

तिसहि धिआइ जो एक अलखै॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै॥

आप कहते हैं कि उस परमात्मा की भक्ति करनी है, जो अलख है। इन हाथों से नहीं लिखा जा सकता। वह इस संसार में हमारी इज्जत रखता है, हमें अपने चरणों में जगह देता है।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''उस परमात्मा की कृपा से ही हम दान-पुण्य करते हैं। वही मालिक हमें धन देता है। उस मालिक की बख़्शीश से ही हम गौ-दान कर सकते हैं। इसलिए हमें उसका सिमरन-ध्यान करना चाहिए।''

जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी॥

जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु॥

परमात्मा ने तेरे ऊपर इतनी कृपा की कि तुझे सब योनियों से सुन्दर बनाया है। तुझे इन्सान बनाकर वह खुद तेरे अंदर बैठ गया है। जब तक वह परमात्मा तेरे शरीर के अंदर है, इसकी शोभा है; हर कोई इसके साथ मोहब्बत करता है। जब वह परमात्मा शरीर में से अपनी ज्योति उठा लेता है तो इसमें से बदबू आने लग जाती है। सब कहते हैं, ''जल्दी करो! इसे श्मशान भूमि में छोड़ आओ। अब इससे हमारा क्या रिश्ता है?''

जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति॥

उस मालिक की कृपा से ही हम छोटी जाति से ऊँची जाति के बन जाते हैं। जिस तरह कलयुग में कबीर इस संसार में आए। उनका जन्म एक छोटी जाति जुलाहे के घर में हुआ। हिन्दुस्तान में जुलाहे की जाति बहुत छोटी मानी जाती है। कबीर साहब ने 'नाम' की कमाई की। बड़े बड़े राजा-महाराजाओं ने उनसे 'नामदान' प्राप्त किया। उन्हें अपना गुरु माना।

जिह प्रसादि तेरी पति रहै॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै॥

गुरु साहब कहते हैं, ''उस **मालिक की कृपा** से ही जीव की लाज रहती है। हमें दिन-रात परमात्मा का यश करना चाहिए।''

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद॥

उस **मालिक की कृपा** से ही हम उसका अंदरूनी राग शब्द, जो हमारे अंदर धुनकारें दे रहा है, उसे सुन रहे हैं। अपने अंदर प्रकाश देख रहे हैं। यह उस परमात्मा की ही देन है।

जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना॥

मालिक की कृपा से ही हम मीठे वचन बोलते हैं। इस जीभ के साथ सिमरन करते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

जिह प्रसादि हसत कर चलहि॥
जिह प्रसादि संपूरन फलहि॥

जिह प्रसादि परम गति पावहि॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि॥

उस **मालिक की कृपा** से ही हम परम गति को प्राप्त करते हैं। साध-संगत में आते हैं। 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं।

ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु॥
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने इन्सान का जामा दिया। सारे सुख दिये। क्या ऐसे परमात्मा को भूल जाना चाहिए? जिन आत्माओं पर गुरु कृपा करता है उनका मन परमात्मा की तरफ जाग पड़ता है और दुनिया की तरफ से सो जाता है।''

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि॥

उस **मालिक की कृपा** से ही हम इस संसार में प्रगट हैं। इस संसार में हमारी इज्जत है। हमें भूल से भी मालिक का सिमरन नहीं बिसारना चाहिए। साँस साँस के साथ उसका सिमरन करना चाहिए, उसकी याद दिल में बिठा लेनी चाहिए।

जिह प्रसादि तेरा परतापु॥
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु॥

परमात्मा की कृपा से ही संसार में हमारा प्रताप है। आप कहते हैं, ''मूर्ख मन! उस परमात्मा को याद कर, जिसकी वजह से हम संसार में जाने जाते हैं।''

जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे॥
तिसहि जानु मन सदा हजूरे॥

गुरु साहब कहते हैं कि वह परमात्मा तेरे हर कारज में तुझ पर कृपा करता है। वह मालिक पर्दे के पीछे तेरे ऊपर इतनी दया कर रहा है! तू उसे अपने नजदीक समझ।

जिह प्रसादि तूं पावहि साचु॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु॥

जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं, वे ही जानते हैं कि परमात्मा साँस साँस के साथ जीव पर दया कर रहा है। अगर परमात्मा दया न करे तो हमारा जीवन सूना है। हम जीव जिन्दगी जी ही नहीं सकते। यह सब परमात्मा की दया है।

जिह प्रसादि सभ की गति होइ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ॥

आप प्यार से समझाते हैं कि उस **मालिक की कृपा** से ही सबकी रक्षा हो रही है। वह परमात्मा ही हमारी रक्षा कर रहा है। हमें उस परमात्मा का सिमरन करना चाहिए। उसका शुक्रगुजार होना चाहिए।

आपि जपाए जपै सो नाउ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस अष्टपदी में परमात्मा की बहुत महिमा गाई है। आप कहते हैं, ''जिस पर वह परमात्मा दया करे, वही 'नाम' प्राप्त कर सकता है और जप सकता है। वही इस जुबान से मालिक की महिमा गा सकता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिनकी आँखें बन्द हैं, वही कहते हैं कि हम सन्तों के पास जाते हैं, 'नाम' जपते हैं। लेकिन जिनकी आँखें खुली हैं, वे कहते हैं कि सन्त खींचते हैं, 'नाम' जपाते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं :

आपन लिए जे मिले, बिछुड़ को रोवन?

हे परमात्मा! हमारे बस में होता तो हम तुझसे बिछुड़ कर रोते क्यों फिरते?

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु॥

आप कहते हैं, ''किसी के दिल में ये ख्याल हो कि हमें सन्त-सतगुरु के पास जाने की क्या जरूरत है, परमात्मा का शुक्रगुजार होने की क्या जरूरत है? जिस तरह आम सतसंगी बैठते हैं, हम भी बैठ जाएं। हमारे अंदर अपने आप प्रकाश हो जाएगा।'' आप कहते हैं, ''नहीं!'' जब तक वह मालिक अपनी दया नहीं करता, अंदर ज्योति का प्रकाश हो ही नहीं सकता।

प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ॥

परमात्मा अपनी दया से ही हमारे अंदर बसता है। हमारी मति उस समय ही ऊँची हो सकती है, जब वह परमात्मा चलते-फिरते, उठते-बैठते हमारे दिल के अंदर बस जाता है।

सरब निधान प्रभ तेरी मइआ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ॥

आप कहते हैं, ''जो धन-दौलत दुनिया के खजाने परमात्मा ने बख्शे हैं, वह उन सबका मालिक है। हम अपने आप कितनी भी कोशिश कर लें, लेकिन जब तक वह दया-मेहर न करे, हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।''

जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ॥
नानक इन कै कछू न हाथ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस अष्टपदी के आखिर में कहते हैं, ''परमात्मा ने किसी को 'नाम' जपने में लगा रखा है, किसी को सतसंग करने में लगा रखा है, किसी को शराबों-कबाबों में लगा रखा है। वह खुद किसी के अंदर प्रगट है और किसी के अंदर गुप्त है। बेचारे जीवों के हाथ में क्या है?'' गुरु अर्जुनदेव जी ने जिस परमात्मा की महिमा गाई है उस परमात्मा की वजह से ही दुनिया में हमारी इज्जत, नाम और मान है। इसलिए जब तक जीवन है, हमें उस परमात्मा का सिमरन करना चाहिए, उसका शुक्रगुजार होना चाहिए।

❖ ❖ ❖

साधु की महिमा

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ। जो जो कहै सु मुकता होइ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता। साध जना की अचरज कथा॥

परमात्मा अगम है, अगाध है। हम उसकी महिमा बयान नहीं कर सकते। किसी भी देश का रहने वाला, किसी भी धर्म को मानने वाला उस परमात्मा को याद कर सकता है; मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

आप सुखमनी साहब की इस अष्टपदी में **साधु की महिमा** बयान करते हैं। जिस तरह परमात्मा आश्चर्यजनक है, उसकी शोभा बयान नहीं की जा सकती। उसी तरह उसके प्यारे सन्त की शोभा भी आश्चर्यजनक है, बयान नहीं की जा सकती।

साध कै संगि मुख ऊजल होत॥
साधसंगि मलु सगली खोत॥

आप कहते हैं कि साधु की संगत में जाने से हमारा दिल पवित्र हो जाता है। आत्मा पर जन्मों जन्मों से लगी मैल उतर जाती है। नदियों और तालाबों का पानी हमारे शरीर की मैल ही उतार सकता है। साध-संगत हमारे पापों की मैल उतार देती है।

साध कै संगि मिटै अभिमानु॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु॥

साधु के पास जाने से हमारे अंदर का अभिमान खत्म हो जाता है। हमारे अंदर प्रकाश पैदा हो जाता है।

साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा॥
साधसंगि सभु होत निबेरा॥

आमतौर पर हमारे दिल में यह ख्याल होता है कि परमात्मा किसी चर्च, सोने के मन्दिर, पहाड़ या समुद्र की तह में बैठा है। जब हम किसी साधु के पास जाते हैं, वह साधु परमात्मा को हमारे शरीर के अंदर ही दिखा देता है। साधु की संगत से हमारे पापों के बोझ का भी निबेड़ा हो जाता है।

साध कै संगि पाए नाम रतनु॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु॥

आप कहते हैं, ''साधु के पास जाकर हमें 'नाम-रतन' मिलता है। यह 'नाम-रतन' दुनिया की किसी कीमत से नहीं मिलता। साधु के पास पहुँचकर हम सारे यत्न छोड़कर परमात्मा से मिलने के यत्न में लग जाते हैं।''

साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी॥
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी॥

आप कहते हैं कि **साधु की महिमा** बयान नहीं की जा सकती। दुनिया के पास ऐसा कोई थर्मामीटर नहीं है जिससे यह समझा जा सके कि साधु की रसाई कहाँ तक है? साधु की शोभा परमात्मा के अंदर समाई हुई है। तुलसी साहब कहते हैं :

जे कोई कहे सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पे दीन्हा।

अगर दुनिया **साधु की महिमा** को समझ सकती तो क्या क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाते, क्या गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाते? बुल्लेशाह ने कहा है :

बुल्लयां साडा उत्थे वासा, जित्थे बहुते अन्नै।
ना साडी कोई कदर पछाने, ना सानू कोई मन्ने॥

साध कै संगि अगोचरु मिलै॥
साध कै संगि सदा परफुलै॥

आप कहते हैं, ''साधु के पास जाकर वह वस्तु मिलती है जिसे ये चमड़े की आँखें नहीं देख सकती। साधु की संगत में हमेशा फायदा ही फायदा है।''

साध कै संगि आवहि बसि पंचा॥
साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत करने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमारे बस में आ जाते हैं।''

साधसंगि होइ सभ की रेन॥
साध कै संगि मनोहर बैन॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हमारा मन झुकने वाला हो जाता है। हमारी भाषा में अमृत आ जाता है। यह मीठी हो जाती है।''

साध कै संगि न कतहूं धावै॥
साधसंगि असथिति मनु पावै॥

साधु की संगत लेखे में है। साधु की संगत करने से हिरन की तरह भटकने वाले मन में ठहराव आ जाता है।

साध कै संगि माइआ ते भिंन॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में आकर शराबी शराब

और कबाबी कबाब छोड़ देता है। हम बुरे कर्म छोड़कर कसम ले लेते हैं कि फिर ऐसा कर्म नहीं करेंगे। साधु के पास जाने से परमात्मा खुश होता है।''

साधसंगि दुसमन सभि मीत॥
साधू कै संगि महा पुनीत॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत करने से हमें दुश्मन भी मित्र दिखने लग जाते हैं। हमें हर जगह परमात्मा ही नजर आता है। साधु की संगत महापवित्र होती है।''

साधसंगि किस सिउ नही बैरु॥
साध कै संगि न बीगा पैरु॥

आप कहते हैं, ''साधु निर्भय होते हैं। वे हमें किसी से बैर करने के लिए नहीं कहते। वे हमसे मालिक की भक्ति करवाने के लिए संसार मे आते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं :

कोई आवे भाव से, कोई आवे अभाव।
संत दोहा को पोसते, भाव ना गिने अभाव॥

साध कै संगि नाही को मंदा॥
साधसंगि जाने परमानंदा॥

आप कहते हैं, ''साधु का संग करना कोई बुरा काम नहीं; साधु की संगत से ही परमात्मा हमें जानता है।'' रामायण में लिखा है कि अगर कोई साधु की संगत के बिना राम की भक्ति करता है तो राम उसे ठुकरा देता है।

साध कै संगि नाही हउ तापु॥
साध कै संगि तजै सभु आपु॥

आप कहते हैं, ''हमें जो अहंकार की बीमारी लगी हुई है

यह साधु की संगत में जाकर 'नाम' की कमाई करके ही खत्म हो सकती है।''

आपे जानै साध बडाई ॥
नानक साध प्रभू बनि आई ॥

आप कहते हैं, ''दुनिया साधु की महानता को नहीं समझ सकती। साधु खुद अपनी महानता जानता है। हम तो साधु को पवित्र आदमी ही कह सकते हैं, लेकिन उसकी शोभा को नहीं समझ सकते। क्योंकि परमात्मा खुद साधुरूप में संसार से जीवों को लेने के लिए आता है।''

साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥

आप कहते हैं, ''साधु का संग भूल से भी नहीं छोड़ना चाहिए। साधु की संगत में सुख ही सुख है।''

साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥

साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥

साधु की संगत में जाने का यह फायदा है कि साधु हमारा इश्क, *सच्चखण्ड* का बनाते हैं। हमारी आत्मा जहाँ से बिछुड़कर आई थी, फिर अपने महल *सच्चखण्ड* पहुँच जाती है।

साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हम सब धर्मों

को अपना धर्म समझते हैं। सब धर्मों से हमारा प्यार हो जाता है।'' हम जानते हैं, सन्तों का हर जाति-धर्म से प्यार होता है। वे हर जाति-धर्म को अपना समझते हैं।

साध कै संगि पाए नाम निधान॥
नानक साधू कै कुरबान॥

हमें साधु से सबसे बड़ी वस्तु 'नाम' मिलता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मैं सदा ही ऐसे साधु पर कुर्बान जाता हूँ जिसने मेरे हृदय में 'नाम' बसा दिया।''

साध कै संगि सभ कुल उधारै॥
साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हम तर जाते हैं। हमारी कुल तर जाती है। हमारे सब यार-दोस्त तर जाते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं :

अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़।

साधू कै संगि सो धनु पावै॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै॥

आप कहते हैं, ''साधु से हमें 'नाम' का धन मिलता है। 'नाम' का धन छोटा धन नहीं है।'' कबीर साहब कहते हैं :

कहत कबीर निर्धन है सोई, जाके हिरदे नाम ना होई।

साधसंगि धरम राइ करे सेवा॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा॥

आप कहते हैं, ''जब हम साधु के साथ स्वर्गों में से जाते हैं तो धर्मराज कहता है कि यह अच्छा जीव है। इसने साधु का

कहना माना। 'नाम' की कमाई की। देवताओं का शिरोमणि देवता इन्द्र भी सतसंगी की जय जयकार करता है।''

साधू कै संगि पाप पलाइन॥
साधसंगि अंम्रित गुन गाइन॥

आप कहते हैं, ''साधु की संगत से हमारे सारे पापों का नाश हो जाता है।'' कबीर साहब कहते हैं :

जब ही नाम हिरदे धरियो, भयो पाप को नास।

साध कै संगि स्रब थान गंमि॥
नानक साध कै संगि सफल जनंम॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हमें सब स्थान प्यारे लगते हैं। हमारे दिल में सबके लिए इज्जत हो जाती है। साधु की संगत करने से हमारा जन्म सफल हो जाता है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

बिन साधु जे जीवणा, ते तो बिरथा रूप।

साध कै संगि नही कछु घाल॥
दरसनु भेटत होत निहाल॥

आप कहते हैं, ''जैसे मन्दिरों में जाकर हमें धूप-सामग्री जलानी पड़ती है, घण्टे बजाने पड़ते हैं; लेकिन साधु के पास जाने के लिए हमें किसी आडम्बर की जरूरत नहीं पड़ती। सिर्फ साधु का दर्शन ही हमारी जिन्दगी के लिए बहुत है। उससे ही हमारा उद्धार हो जाता है।''

साध कै संगि कलूखत हरै॥
साध कै संगि नरक परहरै॥

साधु के पास जाने से काल का दायरा खत्म हो जाता है।

जब राजा जनक शरीर छोड़कर अपने धाम को जाने लगे। रास्ते में नर्कों में जीवों की चीख-पुकार सुनकर उन्होंने धर्मराज से पूछा, ''ये जीव कुरलाह क्यों रहे हैं?'' धर्मराज ने कहा ''इन जीवों ने संसार में बहुत अत्याचार किए हैं, जिसकी इन्हें सजा दी जा रही है।'' राजा जनक ने कहा, ''मैं एक तरफ अपना सिमरन रखता हूँ। जितने जीव मेरे सिमरन के बराबर आ जाएं, तुम उन्हें छोड़ देना।'' राजा जनक ने एक घड़ी का सिमरन रखा। नर्कों के सारे कुण्ड खाली कर दिये। महात्मा कहते हैं :

धन धन राजा जनक हैं, जिन सिमरन कियो विवेक।
एक घड़ी के सिमरने, पापी तरे अनेक॥

साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला॥
साधसंगि बिछुरत हरि मेला॥

आप कहते हैं, ''यहाँ भी साधु की संगत सुखदाई है। आगे चलकर भी साधु का संग सुखदाई है। साधु हमें बुरे कामों से हटाकर 'नाम' जपने के लिए प्रेरित करता है।''

जो इछै सोई फलु पावै॥
साध कै संगि न बिरथा जावै॥

आप कहते हैं, ''हमारी जो भी इच्छा है साधु उसे पूरी करता है। शर्त यह है कि हम साधु का कहना मानें। साधु के कहे मुताबिक अपना जीवन ढालें, 'नाम' जपें, पवित्र बनें। साधु की संगत कभी बेकार नहीं जाती।''

पारब्रहमु साध रिद बसै॥
नानक उधरै साध सुनि रसै॥

परमात्मा साधुओं के अंदर बसता है। साधुओं की संगत में जाकर जीव का कल्याण होता है। कबीर साहब कहते हैं:

मन मेरा पंखी भया, उड़कर चढ़या आकास।
स्वर्ग लोक खाली पया, साहब सन्तन पास॥

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ॥

साधु की संगत में जाकर उस शब्द को सुनना है जो *सच्चखण्ड* से उठकर हमारे मस्तक में धुनकारे दे रहा है।

साध कै संगि न मन ते बिसरै॥
साधसंगि सरपर निसतरै॥

ऐसा नहीं कि जब तक साधु की संगत में रहे, उनके दर्शनों में मगन रहे और जब दुनिया में आए तो उनकी संगत को भूल गए। हमें साधु संग को भूलना नहीं, साधु स्वरूप को दिल में बिठा लेना है। उसे साँस साँस के साथ याद करना है।

साध कै संगि लगै प्रभु मीठा॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा॥

हम जिस परमात्मा को दूर समझते थे, साधु के पास जाकर वह परमात्मा हमें इतना प्यारा इतना मीठा लगता है कि हम उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। हम साधु की संगत में जाकर ही जान सके कि वह परमात्मा हर घट में समाया हुआ है। पशु, पक्षी, इन्सान, हैवान सबके अंदर एक ही परमात्मा है। गुरु नानक साहब कहते हैं :

दूजा होये सो अवरो कहिए।

हे परमात्मा! तूने सबको बनाया है, सबमें तू ही बैठा है।

साधसंगि भए आगिआकारी॥
साधसंगि गति भई हमारी॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''साधु की संगत करके हमें हुक्म मानने की आदत पड़ जाती है। हम जान जाते हैं कि परमात्मा का भजन करना जरूरी है। साधु संगत में ही हम अनुशासन सीखते हैं। साधु संगत में रहकर जीव जान जाता है कि शराब नहीं पीनी, माँस नहीं खाना। वह हर किस्म के ऐब छोड़ देता है। अपने सतगुरु की आज्ञा का पालन करता है।''

साध कै संगि मिटे सभि रोग॥
नानक साध भेटे संजोग॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''साधु संगत करने से हमारे जन्मों जन्मों के रोग खत्म हो जाते हैं। लेकिन पूरे साधु की सोहबत तभी मिलती है जब परमात्मा अपना संजोग लिख दे। जिस तरह हम गरीबी-अमीरी, सुख-दुःख, बीमारी-तन्दुरुस्ती अपनी किस्मत में लिखवाकर लाए हैं, इसी तरह अगर हमारी किस्मत में साधु का संग नहीं लिखा तो चाहे साधु हमारे घर में ही क्यों न पैदा हो जाए, हमारे नजदीक रहने लग जाए लेकिन हमें उस पर ऐतबार ही नहीं आएगा।''

साध की महिमा बेद न जानहि॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि॥

आप कहते हैं, ''वेद, **साधु की महिमा** बयान नहीं कर सकते। वेद, ब्रह्म तक, त्रिकुटी तक ही बयान करते हैं। सन्त चौथे पद से आते हैं।''

साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि॥
साध की उपमा रही भरपूरि॥

जब हम रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण से थोड़ा ऊपर जाते

हैं तभी हमें **साधु की महिमा** का पता चलता है। **साधु की महिमा** सदा भरपूर होती है।

साध की सोभा का नाही अंत॥
साध की सोभा सदा बेअंत॥

आप कहते हैं, ''हम **साधु की महिमा** का अन्त नहीं पा सकते, साधु की शोभा बेअन्त हैं।''

साध की सोभा ऊच ते ऊची॥
साध की सोभा मूच ते मूची॥

साध की सोभा साध बनि आई॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई॥

आप कहते हैं, ''साधु की शोभा साधु ही जानता है। साधु और परमात्मा में कोई फर्क नहीं है।'' गुरु नानक जी कहते हैं:

हर का सेवक सो हर जेहा, भेद ना जाणों मानस देहा।
ज्यों जल तरंग उठे बहु भाँती, मिल सलले सलल समाऐंदा॥

इस अष्टपदी में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने **साधु की महिमा** को बड़े प्यार से बयान किया है। हमें भी चाहिए, साधु की संगत से फायदा उठायें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

❖ ❖ ❖

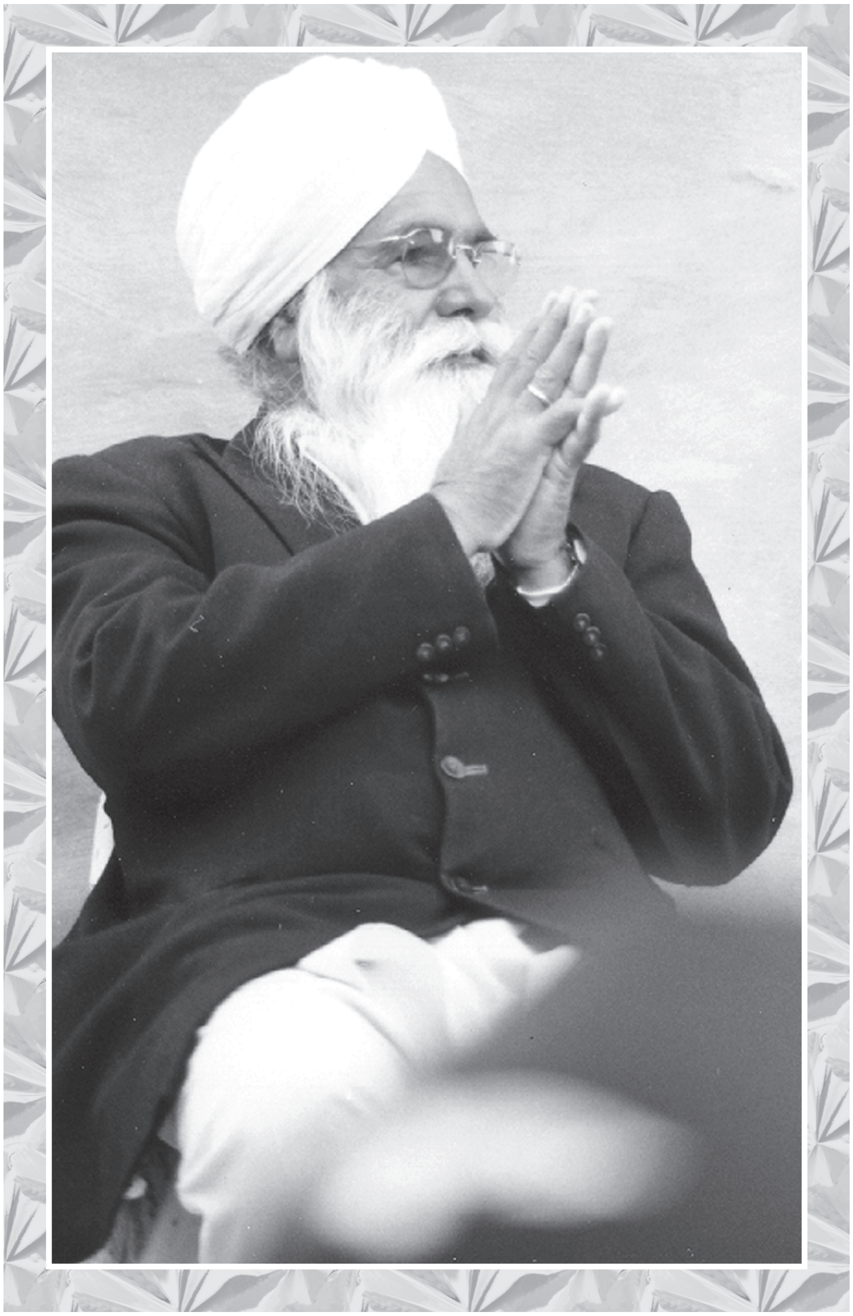

ब्रह्मज्ञानी

मनि साचा मुखि साचा सोइ॥		
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ॥		
नानक	इह	लछण
ब्रहम	गिआनी	होइ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप॥
जैसे जल महि कमल अलेप॥

ब्रहम गिआनी सदा निरदोख॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख॥

जिस तरह सूरज, गन्दे और साफ पानी को खुष्क कर देता है; उसी तरह **ब्रह्मज्ञानी** के ऊपर दुनिया का कोई असर नहीं होता। वह सदा ही निर्दोष है।

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान॥

ब्रह्मज्ञानी की नजर में गरीब-अमीर, औरत-मर्द एक समान हैं।

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप॥

ब्रह्मज्ञानी में कमाल का धीरज होता है। जिस तरह कोई धरती को खोदता है कोई चन्दन का लेप लगाता है कोई बिष्टा करता है; लेकिन धरती किसी को वर या श्राप नहीं देती।

ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥

ब्रह्मज्ञानी में यह बहुत बड़ा गुण है कि चाहे उसके पास दोस्त, दुश्मन, सज्जन, ज्ञानी कोई भी आए; सब अपनी अपनी भावना के मुताबिक उससे फायदा उठाते हैं। जिस तरह आग के पास बच्चा, बूढ़ा, पशु-पक्षी जो भी बैठे, आग उसे गर्मी देती है।

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥

ब्रह्मज्ञानी का मन इतना निर्मल होता है जिस तरह पानी को मैल नहीं लगती। पानी हर एक की मैल साफ करता है।

ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥

ब्रह्मज्ञानी के अंदर दिन-रात का कोई फर्क नहीं होता। उसके अंदर सूरज जितना प्रकाश होता है। गुरु नानक साहब ने आधी रात के समय अपने पुत्रों से कहा, ''सूरज चढ़ आया है। ये चादरें धोकर ले आओ।'' उनके पुत्रों ने कहा, ''आपकी अक्ल ठिकाने नहीं, अभी तो आधी रात का समय है।'' जब आपने भाई लैहणे से कहा (जो आपके अंदरूनी राज का वाकिफ था) लैहणे ने कहा, ''हाँ जी।'' वह चादरें धोकर ले आया।

ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** की नजर में दोस्त-दुश्मन एक समान हैं। वह दोनों में ही परमात्मा को देखता है। उसमें अभिमान नहीं होता।'' हम जानते ही हैं कि अगर किसी

सतसंगी को चार व्यक्ति मत्था टेकने लग जाएं तो वह अपने आपको भूल जाता है। सोचता है कि मुझमें कोई गुण है।

ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा॥

ब्रह्मज्ञानी परमात्मा का रूप होता है। लेकिन वह अपने आपको सबसे नीचा समझता है। नम्रता सन्तों का शृंगार होती है। सन्त कभी भी अपने मुँह से यह नहीं कहते कि 'मैं कुछ हूँ।' उनकी तारीफ करें तो वे कहते हैं, ''सब सतगुरु की दया है।'' वे अपने आपको संगत का सेवादार, दास ही बयान करते हैं।

ब्रहम गिआनी से जन भए॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** को किसी पार्टी ने नहीं बनाया होता, न ही लोग उसे थाप सकते हैं। जिस पर परमात्मा दया-मेहर करे वही **ब्रह्मज्ञानी** बन सकता है।''

ब्रहम गिआनी सगल की रीना॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना॥

ब्रह्मज्ञानी अपने आपको हर एक के चरणों की राख समझता है क्योंकि उसकी आत्मा को आत्म-रस मिल चुका है।

ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ॥

ब्रह्मज्ञानी सबके ऊपर अपने रहम की वर्षा करता है। ब्रह्मज्ञानी किसी का भी बुरा नहीं करता। वह अपने आपको तभी सुखी समझता है जब वह किसी का भला कर दे।

ब्रहम गिआनी सदा समरदरसी॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी॥

आप कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** को दुनिया के हर हिस्से का जीव दिख रहा है। उसका एक पैर इस संसार में और दूसरा पैर *सच्चखण्ड* में होता है। जब वह आँख बंद करता है तो *सच्चखण्ड* में पहुँच जाता है। आँख खोलता है तो दुनिया में होता है। **ब्रह्मज्ञानी** की आँख से अमृत बरसता है। वह सबको खुशी से देखता है।''

ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता॥

ब्रह्मज्ञानी के लिये दुनिया का कोई बंधन नहीं होता। वह आजाद पुरुष होता है। इसलिए वह मालिक से मिलने की जो युक्ति बताता है वह सच्ची और निर्मल होती है।

ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु॥

ब्रह्मज्ञानी को दुनिया की तरह भूख नहीं लगती। उसे अंदर से 'नाम' की खुराक मिलती रहती है। ज्ञान ही उसका भोजन है। इसलिए वह किसी भी खाने का मोहताज नहीं होता। उसका ध्यान हमेशा ब्रह्म के अंदर रहता है।

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास॥

आप कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** की आस एक परमात्मा पर ही होती है। सतगुरु जन्मता-मरता नहीं। उसका कभी नाश नहीं होता।'' कबीर साहब कहते हैं :

गुरु करया है देह का, सतगुरु चीन्हा नाये।
लख चौरासी धार में, फिर-फिर गोते खाये॥

हम सन्तों के शरीर को पकड़ते हैं। उनके अंदर जो ताकत काम करती है वह जन्म-मरण से रहित है। नानक जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा-सदा, ना आये ना जाये।
वो अविनाशी पुरुष है, हर जह रहा समाय॥

सतगुरु शब्द की धारा में से आते हैं। जब तक हुक्म होता है तब तक हमारे बीच में रहकर हमें 'नाम' का भेद देते हैं। सन्त हमेशा कहते हैं, ''आपका गुरु 'शब्द-नाम' है।'' वे आपको 'नाम' के साथ जोड़ते हैं।

ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा॥

धन पदार्थ होते हुए भी **ब्रह्मज्ञानी** ने गरीबी धारण की होती है। वह हमेशा गरीबों पर परोपकार करता है।

ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा॥
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा॥

ब्रह्मज्ञानी दुनियादारी का धंधा नहीं चलाता। उसका धंधा सतसंग करना, 'नाम' देना और 'नाम' जपाना होता है।

ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला॥
ब्रहम गिआनी सुफल फला॥

ब्रह्मज्ञानी से जब भी होगा, भला ही होगा। महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से वर लिया हुआ था, ''किसी को मेरा श्राप न लगे, वर बेशक लग जाए।''

ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु॥

ब्रह्मज्ञानी संसार की सब आत्माओं को *सच्चखंड* ले जा सकता है क्योंकि उसे मालिक की तरफ से पूरी पॉवर होती है। गुरु नानक जी कहते हैं :

सौंपे जिस भंडार फिर, पुछ ना लीतियन।

संसार मंडल में वही रूहें रह जाती हैं जो **ब्रह्मज्ञानी** को नहीं मानती। उनसे 'नामदान' प्राप्त नहीं करती।

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग॥

ब्रह्मज्ञानी के मन में हमेशा परमात्मा का रंग चढ़ा होता है। परमात्मा, **ब्रह्मज्ञानी** के साथ इस तरह रहता है जैसे इन्सान के साथ परछाई रहती है।

ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु॥

ब्रह्मज्ञानी हमेशा 'नाम' का ही आसरा रखता है। वह 'नाम' को ही अपना परिवार समझता है।

ब्रहम गिआनी सदा सद जागत॥
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत॥

ब्रह्मज्ञानी पर नींद का कोई जोर नहीं होता। वह मालिक की तरफ से जागता है और दुनिया की तरफ से सोता है। **ब्रह्मज्ञानी** अपने अंदर के अहंकार का त्याग कर देता है।

ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद॥

ब्रह्मज्ञानी के मन के अंदर परमात्मा बसा होता है। उसका दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है।

ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास।
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास॥

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता॥

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म को जानने वाला है। उसका परमात्मा के साथ प्यार लगा रहता है।

ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत॥

ब्रह्मज्ञानी के मन के अंदर कोई चिन्ता नहीं कि क्या हो रहा है और क्या होगा? उसका मंत्र बिल्कुल निर्मल होता है। जो भी उस मंत्र को जपता है, उसका उद्धार हो जाता है।

ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप॥

परमात्मा जिस पर दया करता है उसे **ब्रह्मज्ञानी** बनाता है। **ब्रह्मज्ञानी** के प्रताप से बड़े बड़े पापियों का उद्धार हो जाता है।

ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ॥

आप कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** का दर्शन बड़े भाग्य वालों को मिलता है। हमें **ब्रह्मज्ञानी** के ऊपर कुर्बान जाना चाहिए।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

धन-धन कुल धन-धन जननी, जिन गुरु जनया माऐ।
धन-धन सतगुरु जिन नाम अराधया, आप तरया जिन्ना डिठा तिन्ना लए छुड़ाऐ॥

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥

शिव, ब्रह्मा, विष्णु, ईश्वर, महेश्वर सभी देवी-देवता **ब्रह्मज्ञानी** की खोज में फिरते हैं। **ब्रह्मज्ञानी** खुद परमेश्वर होता है। जिसके अंदर परमेश्वर ने वास कर लिया, उसमें और परमेश्वर में कोई फर्क नहीं रहता। जैसे दूध में मिश्री घोलने से दूध का जायका ही बदलता है, रंग नहीं बदलता।

किसी प्रेमी ने महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''**ब्रह्मज्ञानी** की कोई निशानी बताएं?'' महाराज सावन सिंह जी ने जवाब दिया, ''**ब्रह्मज्ञानी** की यह निशानी है कि वह दिन-रात अभ्यास में लगा रहता है। जिसने अपने जीवन के कई साल अभ्यास में गुजारे होते हैं, वही **ब्रह्मज्ञानी** है।''

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥

आप कहते हैं कि हम किसी भी तरह **ब्रह्मज्ञानी** की कीमत नहीं लगा सकते। वह दुनिया का उद्धार करने के लिए आता है। उसके दिल में सबके लिए प्यार और दया होती है।

ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥

ब्रह्मज्ञानी का भेद कौन पा सकता है? हम उसे सदा नमस्कार करते हैं। परमात्मा सुजाखा है, जीव अंधे हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी को तपते तवे पर बिठाया गया, सिर पर गर्म रेत डाली गई, पत्थर से घसीटकर शहीद कर दिया गया। वे बेचारे नहीं जानते थे कि वे किसको दुःख दे रहे हैं!

मियां मीर आपका प्रेमी दोस्त था। जब उसे पता चला कि लाहौर में आपके साथ जुल्म हो रहे हैं तो वह आपके पास गया। आपको तपते तवे पर बैठे देखकर बोला, ''गुरुदेव! अगर आप मुझे हुक्म दें तो मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूँ।'' आपने हँसकर मियां मीर से कहा, ''यह तो मैं भी कर सकता हूँ। लेकिन मालिक का भाणां मानना मेरे लिए बहुत जरूरी है।''

ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥

ब्रह्मज्ञानी के बारे में हम आधा अक्षर भी बयान नहीं कर सकते। वह सबका ठाकुर, सबका मालिक है।

ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥

ब्रह्मज्ञानी को दुनिया नहीं समझ सकती। **ब्रह्मज्ञानी** को **ब्रह्मज्ञानी** ही समझ सकता है।

ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि हम **ब्रह्मज्ञानी** का अंत नहीं पा सकते। हम उसे नमस्कार करते हैं।

ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥

हम समझते हैं **ब्रह्मज्ञानी** हम जैसा इन्सान है। इसके हाथ में दुनिया का जीना-मरना कैसे हो सकता है? जिन महात्माओं की आँखें खुल गई हैं, वे कहते हैं कि **ब्रह्मज्ञानी** सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है। वह मरता नहीं, सदा जीवित रहता है।

ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता॥

आप कहते हैं, ''**ब्रह्मज्ञानी** के पास जीवों को मुक्त करने की युक्ति होती है। वह विधाता, कुल मालिक, पूर्ण पुरुष होता है।'' महात्मा कहते हैं :

अंदर वड़के पौड़ी चढ़के, तू नजारा देख ले।
जेड़ा सारे जग दा वाली, सतगुरु प्यारा देख ले॥

ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु॥

ब्रह्मज्ञानी सब अनाथों का नाथ है। वह सबके सिर के ऊपर हाथ रखता है। गरीब, अमीर सबको अपना समझता है सब पर दया करता है।

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु॥

सब पसारा **ब्रह्मज्ञानी** का है। परमात्मा ने खुद उस महात्मा के अंदर निवास किया हुआ है। परमात्मा उसमें प्रगट है।

ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी॥
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी॥

ब्रह्मज्ञानी की शोभा ब्रह्मज्ञान से बनी है। वह सबका धनी, सबका दाता है। उसके पास 'नाम' का सच्चा धन है। जब मौत आती है, तब कोई भी धन-पदार्थ हमारे साथ नहीं जाता। साथ जाने वाली वस्तु 'नाम' है। हमें 'नाम' की कमाई करनी चाहिए।

जिसके संगे नाम है सो ही शहन्शाह।

❖ ❖ ❖

अष्टपदी – नौ

भक्त कैसा हो ?

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''वही महात्मा इस संसार मंडल को तार सकता है जो अपने अंदर 'नाम' प्रगट कर लेता है। वह साँस साँस के साथ परमात्मा को याद करता है, हर काम में परमात्मा को हाजिर-नाजिर समझता है। उसका हर जाति और पशु-पक्षी से प्यार होता है।''

मिथिआ नाही रसना परस ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

महात्मा मिथ्या वचन नहीं बोलते। उनके मन में परमात्मा के लिए प्रीति होती है। वे हर समय मालिक का दर्शन करते हैं।

पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
साध की टहल संतसंगि हेत ॥

आप कहते हैं, ''वे हर स्त्री, अगर छोटी है तो उसे बेटी, अगर बराबर की है तो उसे बहन, अगर बड़ी है तो उसे माता के समान देखते हैं। किसी को बुरी दृष्टि से नहीं देखते। वह महात्मा की सेवा करके खुश होते हैं।''

करन न सुनै काहू की निंदा॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा॥

महात्मा किसी की निन्दा नहीं करते और न ही निन्दा सुनकर खुश होते हैं। निन्दा परमार्थ की जड़ काट देती है। वे कहते हैं, ''मैं संसार में सबसे बुरा हूँ।'' कबीर साहब कहते हैं:

बुरा जो देखन मैं गया, बुरा ना मिलया कोय।
जब दिल फोलया आपणा, मुझसे बुरा ना कोय॥

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इन्द्रिय का अपना अपना रस होता है। निन्दा न कड़वी है न मीठी है। लेकिन फिर भी यह इन्सान से चिपकी हुई है। निन्दा करनी भी बुरी है, सुननी भी बुरी है।''

गुर प्रसादि बिखिआ परहरै॥
मन की बासना मन ते टरै॥

जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं, सतगुरु कृपा करता है तो हमारे मन के अंदर के दुःख, विषय-विकार और वासनाएँ खत्म हो जाती हैं।

इंद्री जित पंच दोख ते रहत॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जितेन्द्रिय, करोड़ों में कोई एक ही ऐसा बिरला महात्मा होता है जिसने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को कैद कर रखा होता है।''

जग में उत्तम कडिऐ, विरले केई के।

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन॥
बिसन की माइआ ते होइ भिंन॥

जैसे हम दुनियादार लोग कोई न कोई धर्म धारण कर लेते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाइयों में कई फिरके हैं। उन फिरकों में रहकर हम सोचने लग जाते हैं कि हम परमात्मा के भक्त हो गए हैं। हमारे फिरके को ही परमात्मा से मिलने का फख्र हासिल है।

गुरु साहब के जमाने में हिन्दुस्तान में वैष्णव मत का बहुत जोर था। ये लोग सोचते थे कि हमने वैष्णव मत धारण कर लिया है। हम ही परमात्मा से मिल सकते हैं। गुरु साहब अपनी बाणी में जिक्र करते हैं, ''वही वैष्णव है जिस पर माया का असर नहीं होता। वह संसार में कमल के फूल की तरह रहता है। परमात्मा उससे प्रसन्न रहता है।''

करम करत होवै निहकरम॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम॥

आप कहते हैं, ''उसी वैष्णव का धर्म निर्मल है जो निष्काम कर्म करता है। कर्म करते हुए फल की इच्छा नहीं रखता।''

काहू फल की इछा नही बाछै॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै॥

आप कहते हैं, ''भक्त के मन में कोई इच्छा नहीं होती। वह दिन-रात भजन में लगा रहता है। परमात्मा के कीर्तन को सुनता रहता है।''

अगर हम भजन-अभ्यास करते हैं तो घर की सभी जरूरतें सतगुरु के सामने रखकर कहते हैं, ''हे सतगुरु! तू मेरा यह काम कर, वह काम कर।'' हमारे अंदर ये इच्छाएं हमारा मन पैदा करता है। हम इन इच्छाओं को सतगुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। अपने आपको समझाने की बजाय परमात्मा को समझाने लगते हैं कि तू हमारे कहे मुताबिक काम कर।

मन तन अंतरि सिमरन गोपाल॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल॥

आप कहते हैं, ''महात्मा दिन-रात सिमरन में लगा रहता है। वह सब पर दया करता है। उसका किसी से वैर नहीं होता। वह संसार में देने के लिए आता है।''

आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै॥

आप कहते हैं, ''जिसने दृढ़ विश्वास करके अपने अंदर गुरु को, 'नाम' को प्रगट कर लिया, वही दूसरों को भरोसा दिलवाते हैं कि भाई! तुम भी अपने अंदर गुरु को, 'नाम' को प्रगट करोगे तो परम गति को प्राप्त करके मुक्त हो जाओगे। वही वैष्णव परमगति को प्राप्त करता है जो ख़ुद 'नाम' जपता है और औरों से भी 'नाम' जपवाता है।''

भगउती भगवंत भगति का रंगु॥
सगल तिआगै दुसट का संगु॥

अब आप भक्त के लक्षण बयान करते हैं कि वही भक्त हैं जिन पर परमात्मा का रंग चढ़ गया है। वे बिष्टा की संगत छोड़कर भले इन्सानों की सोहबत में आ गए हैं।

मन ते बिनसै सगला भरमु॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु॥

जो भजन के चोर हैं, भजन नहीं करते। मन उनके अंदर भ्रम पैदा कर देता है। अगर हमारे अंदर भ्रम है तो मालिक दरवाजा नहीं खोलता। आप कहते हैं, ''अगर आप 'शब्द-नाम' की कमाई करेंगे तो आपके अंदर भ्रम पैदा ही नहीं होंगे।''

साधसंगि पापा मलु खोवै॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै॥

आप कहते हैं, ''उन्हीं भक्तों की बुद्धि उत्तम है जो साध-संगत से मिलकर अपने पापों की मैल दूर करते हैं। पापों की मैल दूर करने का तीर्थ साध-संगत ही है।'' गुरु रामदास जी कहते हैं, ''बिना सतसंग के चाहे कोई कितना भी श्रेष्ठ या ऊँचा कर्म क्यों न करता हो; वह इस तरह है जैसे साफ पानी को कीचड़ में डाल रहा हो।''

भगवंत की टहल करै नित नीति॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति॥

आप कहते हैं, ''वही भक्त है जो परमात्मा की भक्ति में लगा हुआ है। उसने अपना तन-मन परमात्मा पर अर्पण कर दिया है। वह परमात्मा को ही सब कुछ समझता है।''

हरि के चरन हिरदै बसावै॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै॥

वही भक्त है जो अपने हृदय के अंदर गुरु चरणों को प्रगट कर लेता है। भक्त की धुन तीसरे तिल सहस्र दल कमल में है। वह अपने फैले हुए ख्यालों को आँखों के पीछे इकट्ठा करके गुरु चरणों तक पहुँच जाता हैं। परमात्मा उसे अपने हृदय से लगा लेता है। वह परमात्मा के दरवाजे पर शोभा पाता है।

सो पंडितु जो मनु परबोधै॥
राम नामु आतम महि सोधै॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''पंडित वही है जो अपने आपमें परमात्मा को प्रगट कर लेता है। अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद करके उस परमात्मा में मिला लेता है।''

राम नाम सारु रसु पीवै॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै॥

आप कहते हैं, ''जो पंडित अपनी आत्मा को 'नाम' का रस पिलाता है उसका उपदेश हमेशा जिन्दा रहता है।'' वह पंडित कहता है कि आपकी आत्मा जन्म-जन्मांतर से भूखी-प्यासी विलाप कर रही है। आप उसे 'नाम' का रस पिलाओ।

हरि की कथा हिरदै बसावै॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै॥

जिस पंडित ने अपने आपमें 'नाम' प्रगट कर लिया, वह फिर इस संसार की किसी भी योनि में नहीं आता। परमात्मा से मिल जाता है।

बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल॥
सूखम महि जानै असथूलु॥

आप कहते हैं, ''चाहे वह अनपढ़ है फिर भी वेदों-शास्त्रों में जो लिखा है उसे अच्छी तरह समझता है। वेदों-शास्त्रों में सतगुरु की महिमा, 'नाम' की महिमा और सतसंग की महिमा है। सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता, 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं मिलती और सतसंग के बिना हमारी तहकीकात पूरी नहीं होती।'' कबीर साहब कहते हैं :

साखी लाया बनायके, इत-उत अक्षर काट।
कहे कबीर कब लग जिए, जूठी पत्तल चाट॥

इन्सान सब इल्मों की माँ है। सारे इल्म इन्सान में से निकले हैं। इन्सान इस छह फुट के शरीर को नहीं पढ़ता और बाहर मिसालें देता है।

चहु वरना कउ दे उपदेसु॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु॥

आप कहते हैं, ''जिसने 'नाम' को प्रगट कर लिया वही पंडित है। पंडित वही कहलवा सकता है जो चारों वर्णों या सारी दुनिया को 'नाम' दे। उसकी नज़र में औरत-मर्द, गरीब-अमीर सभी एक समान हैं। अगर ऐसा इन्सान इस संसार में नजर आता है तो हम उसे हमेशा नमस्कार करते हैं।''

बीज मंत्रु सरब को गिआनु॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु॥

उस परमात्मा के 'नाम' के सब ही हकदार हैं। चारों वर्णों में कोई भी औरत-मर्द, बच्चा-बूढ़ा 'नाम' को जपकर मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

जो जो जपै तिस की गति होइ॥
साधसंगि पावै जनु कोइ॥

इसमें किसी मुल्क या जाति का लिहाज नहीं। पापी पुण्यात्मा कोई भी इस पवित्र 'नाम' को जपकर मुक्ति प्राप्त कर सकता है। साध संगत में जाकर परम गति प्राप्त कर सकता है।

करि किरपा अंतरि उर धारै॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि वह परमात्मा जिन पर कृपा करता है, महात्मा उनके अंदर 'नाम' रख देते हैं। पशु पक्षियों का तरना तो सहज है वह तो पत्थरों को भी तार देते हैं।

सरब रोग का अउखदु नामु॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम॥

आप कहते हैं कि सारी बीमारियों की दवा 'नाम' है। कल्याण करने वाली शक्ति भी 'नाम' है।

सगल सृष्टि का राजा दुखिया, हर का नाम जपत हो सुखिया।

काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि॥

चाहे इन्सान किसी भी धर्म में दाखिल हो जाए, चाहे कितनी भी युक्तियाँ कर ले, अगर उसकी किस्मत में 'नाम' नहीं लिखा, तो उसे 'नाम' नहीं मिलेगा। 'नाम' उन्हीं को मिलेगा, जिनके मस्तक में परमात्मा ने धुर-दरगाह से लिख दिया है।

जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु॥
तिस का नामु सति रामदासु॥

गुरु अर्जुनदेव जी अपने गुरु की उपमा करते हुए कहते हैं कि जिसके अंदर परमात्मा प्रगट है उसका नाम रामदास है। असल में पूछो तो इस वक्त भगवान का नाम ही रामदास है।

अगर हम अपने प्यारे सतगुरु कृपाल को भगवान कहें तो कोई बुरी बात नहीं, क्योंकि सतगुरु और भगवान एक ही हैं। जो भी सन्त *सच्चखंड* पहुँचा, उसने गुरु और भगवान में कोई फर्क नहीं समझा।

आतम रामु तिसु नदरी आइआ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मुझे गुरु रामदास आत्मा के राम नज़र आए। उनमें इतनी नम्रता थी कि वह अपने आपको दासों का भी दास जाहिर करते थे।'' इतिहास में जिक्र आता है आपकी दाढ़ी काफी लम्बी थी। गुरु नानक जी के लड़के श्रीचन्द

का रामदास से गद्दी के लिए बहुत विरोध था। जब वह अमृतसर आया तो उसने कहा कि आपने इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है? आपने अपनी दाढ़ी से उनके पैर साफ करते हुए कहा, ''मैंने यह दाढ़ी आप जैसे महापुरुषों के चरण झाड़ने के लिए बढ़ाई है।'' श्रीचन्द की आँखों से पानी बहने लगा। उसने कहा कि आपकी इसी नम्रता ने ही हमारे पिता से गद्दी छीन ली।

सदा निकटि निकटि हरि जानु॥
सो दासु दरगह परवानु॥

उस दरगाह में वही परवान हैं जो अपने सतगुरु परमात्मा को सदा ही अपने पास समझते हैं। बेशक वह परमात्मा पर्दे के पीछे बैठा है, जब तक हमारा उससे प्रेम-प्यार नहीं बनता तब तक वह पर्दा नहीं खोलता। प्रेमी में श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए कि मेरा गुरु मेरे पास है।

अपुने दास कउ आपि किरपा करै॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै॥

वह जिस पर दया करता है उसे समझ आ जाती है कि मेरे लिए कौन सा काम फायदेमंद है। सब कुछ गुरु के हाथ में है।

सगल संगि आतम उदासु॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मेरे गुरु रामदास के पास 'नाम' की ऐसी युक्ति है कि जीव संसार में रहते हुए भी संसार से उदास रहता है। परमात्मा से मिलने के लिए उतावला रहता है। उसे समझ आ जाती है कि इस संसार की कोई भी वस्तु मेरे साथ नहीं जाएगी।''

प्रभ की आगिआ आतम हितावै॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै॥

वही जीते जी मुक्ति प्राप्त कर सकता है जो प्रभु की आज्ञा के अनुसार दुःख आने पर भी न घबराए। अगर कोई बुराई करे तो उसे भी सह जाए।

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु॥

महात्मा सुख या दुःख में परमात्मा को नहीं भूलता। उसके लिए हर्ष या शोक एक जैसा होता है। वह हमेशा खुश रहता है। ऐसा नहीं कि दो आदमी उसकी निन्दा करने लग जाएं तो वह घबराकर रोने लग जाए। उस मत को ही छोड़ जाए। अगर कुछ लोग उसकी उपमा करने लग जाएं तो वह 'नाम' जपना ही छोड़ दे और उसमें अहंकार आ जाए कि मैं हूँ कुछ।

तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी॥

महात्मा की नजर में सोना और मिट्टी एक समान हैं। वह सोने को पाकर खुश नहीं होता और मिट्टी को पाकर दुःखी नहीं होता। वह अमृत और जहर को एक समान समझता है। जैसे मीरा बाई को मारने के लिए उसके माँ-बाप ने जहर देकर कहलवा भेजा कि यह अमृत है, पी ले। उसकी नौकरानी ने उसे बताया भी कि इसमें जहर है, लेकिन वह फिर भी उस जहर को पी गई कि मुझे तो यह अमृत बताया गया है।

तैसा मानु तैसा अभिमानु॥
तैसा रंकु तैसा राजानु॥

महात्मा की नजर में राजा और रंक एक जैसे हैं। उनको मानने वाले और निन्दा करने वाले उन्हें एक जैसे ही लगते हैं।

जो वरताए साई जुगति॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति॥

महात्मा के जीवन में जो भी घटना घटती है वह उसे परमात्मा की युक्ति समझता है। वह कहता है कि मेरी इसी में बेहतरी होगी। जिस महात्मा का इस तरह का दिल बन गया है आप उसे जीते जी मुक्त समझो।

पारब्रहम के सगले ठाउ॥
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ॥

परमात्मा सभी जगह है। दोस्त और दुश्मन में परमात्मा बैठा है। जो जैसी योनि में आता है उसका वैसा ही नाम पड़ जाता है।

आपे करन करावन जोगु॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु॥

सब कुछ परमात्मा के हुक्म में होता है। वह सब कुछ अपने आप ही करवाता है। किससे 'नाम' जपवाना है, किससे निंदा करवानी है, किससे प्रशंसा करवानी है? वह अंदर बैठकर खुद ही चाबी मरोड़ता है।

पसरिओ आपि होइ अनत तरंग॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा की गति को कौन समझ सकता है? जिस तरह समुद्र के पानी पर हवा पड़ने से बुलबुले उठने शुरू हो जाते हैं और हवा निकल जाने पर फिर पानी बन जाता है। इसी तरह हम सभी परमात्मा के बच्चे हैं। वक्त आने पर हम

वहीं जाकर समा जाते हैं।'' गुरु साहब कहते हैः

एक पिता एकस के हम बारिक।

मैं तो यह कहूँगा कि जो बच्चे अपने पिता की बात नहीं मानते, वह अपने पिता की खुशी प्राप्त नहीं कर सकते। इसी तरह अगर हम एक-दूसरे को बुरा समझते हैं तो हम उस सतगुरु की खुशी नहीं ले सकते।

जैसी मति देइ तैसा परगास॥
पारब्रहमु करता अबिनास॥

वही मालिक सब जीवों को मत देता है, सबके अंदर उसका प्रकाश है। फरीद साहब कहते हैं :

इक ना मत खुदाएं दी, इक ना मंग लई।
इक दित्ती ना लेण, जो पत्थर बूँद पई॥

हम महात्मा से कहते हैं, ''महाराज जी! मैं बड़ा तंग हूँ। मुझे मालिक की तरफ से कुछ दो।'' महात्मा ज्ञान करवाते हैं, 'नाम' देते हैं और बताते हैं कि कौन सा रास्ता ठीक है, कौन सा गलत है। लेकिन हमारे ऊपर कोई असर नहीं होता। महात्मा जिस काम से रोकते हैं हम वही काम करते हैं।

सदा सदा सदा दइआल॥
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल॥

वह परमात्मा सतयुग, द्वापर, त्रेता में भी दयालु था, आगे भी दयालु रहेगा। जो लोग उसका सिमरन करते हैं, वे खुश हैं, निहाल हैं। आप भी सिमरन करके खुशी प्राप्त करो।

❖ ❖ ❖

सब कुछ उसके हाथ में

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार॥

सभी जीव-जंतु, पशु-पक्षी अपनी अपनी जुबान से उस मालिक को याद करते हुए उसका शुक्राना करते हैं। लेकिन किसी ने उस मालिक का अन्त नहीं पाया। वह बेअन्त है। उस मालिक ने विभिन्न प्रकार के जीव, पशु, पक्षी और चारों खानियों की रचना रची है। जानवर भी सुबह उठकर अपनी बोली में उस परमात्मा का धन्यवाद करते हैं। फरीद साहब कहते हैं :

हों बलिहारी तिन पंछियां, जंगल जिन्हा वास।
कंकर चुगन थल वसन, रब ना छोड़न पास॥

कई कोटि होए पूजारी॥
कई कोटि आचार बिउहारी॥

संसार में करोड़ों ही पुजारी परमात्मा की पूजा करने में लगे हुए हैं। करोड़ों ही गुरमुख लोगों ने उसे पाया है।

कई कोटि भए तीरथ वासी॥
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी॥

करोड़ों लोग तीर्थों पर जाकर बसने में अपनी मुक्ति समझते हैं। करोड़ों लोग परमात्मा को वनों में ढूंढते-फिरते हैं।

कई कोटि बेद के स्रोते॥
कई कोटि तपीसुर होते॥

करोड़ों आदमी वेदों-शास्त्रों की कथा सुनने में रुचि रखते हैं। करोड़ों ही आदमी जंगलों में जाकर तप करते हैं।

कई कोटि आतम धिआनु धारहि॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि॥

करोड़ों आदमी अपनी आत्मा का ध्यान परमात्मा की तरफ लगाने में लगे हुए हैं। करोड़ों ही आदमी दुनिया में अपनी कविता का प्रसार कर रहे हैं।

कई कोटि नवतन नाम धिआवहि॥
नानक करते का अंतु न पावहि॥

करोड़ों ही आदमी उस अकाल पुरख के नए नाम रख रहे हैं और उन्हें जप रहे हैं। लेकिन उन नामों को जपकर भी कोई अन्त नहीं पा रहे।

कई कोटि भए अभिमानी॥
कई कोटि अंध अगिआनी॥

गुरु साहब दुनिया की हालत बताते हैं कि करोड़ों ही आदमी मान-अभिमान में फँसे हुए हैं। करोड़ों ही अज्ञानी इस संसार मंडल में फिर रहे हैं।

कई कोटि किरपन कठोर॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर॥

करोड़ों आदमी कंजूस बनकर इस संसार में अपना वक्त गुजार रहे हैं। करोड़ों आदमी ऐसे भी हैं जिनकी आत्मा 'नाम' की तरफ नहीं आती। उन पर मालिक का रंग नहीं चढ़ता।

कई कोटि पर दरब कउ हिरहि॥
कई कोटि पर दूखना करहि॥

करोड़ों आदमी दूसरों का धन चुराने की कोशिश में लगे हुए हैं। करोड़ों ही आदमी दूसरों को देखकर अपने अंदर ईर्ष्या करते हैं कि इसकी मान, बड़ाई क्यों हो रही है? वे बेचारे सारा दिन अपने मन को जला रहे हैं।

कई कोटि माइआ स्रम माहि॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि॥

करोड़ों आदमी माया की खातिर छोटे से छोटा काम करने में भी शर्म महसूस नहीं करते। करोड़ों ही आदमी माया की खातिर अपना देश छोड़कर परदेसों में फिर रहे हैं।

जितु जितु लावहु तितु तितु लगना॥
नानक करते की जानै करता रचना॥

गुरु साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने हर एक को अपने अपने कार्य में लगाया हुआ है। जिसको जो कार्य सौंपा है वह बेचारा वही करता है। लेकिन परमात्मा पर्दे के पीछे जानता है कि मैंने किसको किस तरफ लगाया हुआ है।''

कई कोटि सिध जती जोगी॥
कई कोटि राजे रस भोगी॥

इस संसार में करोड़ों ही राजा-महाराजा, जति, योगी, सिद्ध रस पीकर मालिक की तरफ से सोए हुए हैं।

कई कोटि पंखी सरप उपाए॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए॥

परमात्मा ने इस संसार मंडल में नाना प्रकार की रचना की। करोड़ों ही पक्षी और पेड़ पैदा किए।

कई कोटि पवण पाणी बैसंतर॥
कई कोटि देस भू मंडल॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने करोड़ों ही देवता, देश और भू-मंडल पैदा किए हैं।''

कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र॥

परमात्मा ने करोड़ों की संख्या में सूरज, चन्द्रमा, सितारे और देवी-देवता पैदा किए हैं। देवताओं का शिरोमणि राजा इन्द्र जिसके सिर के ऊपर छत्र है उसे भी परमात्मा ने पैदा किया है।

सगल समग्री अपनै सूति धारै॥
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै॥

परमात्मा ने सारे ही जीव-जंतु माला की तरह पिरोए हुए हैं। परमात्मा जानता है किसको मुक्ति देनी है, किसको अभी दुनिया में भेजना है, यह **सब कुछ उसके हाथ में** है।

कई कोटि राजस तामस सातक॥
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत॥

करोड़ों ही सात्विक, राजसी और तामसी आदमी हुए हैं। करोड़ों ही वेद-शास्त्र रचे गए हैं।

कई कोटि कीए रतन समुद॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत॥

गुरु साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने करोड़ों ही समुद्र बनाए हैं, जिनमें नाना प्रकार के जीव-जंतु पैदा किए हैं।'' मानते हैं कि साइंस ने बहुत तरक्की की है लेकिन सन्तमत की तरक्की

तक अभी कोई नहीं पहुँच सका। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा ने पाँच तत्वों का इन्सान बनाया है कोई चार या तीन तत्वों का बनाकर तो दिखाए!''

कई कोटि कीए चिर जीवे॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे॥

संसार में करोड़ों ही आदमी ज्यादा समय तक जीवित रहते हैं। परमात्मा ने करोड़ों ही स्वर्ण के छोटे-बड़े पहाड़ बनाए हैं।

कई कोटि जख्य किंनर पिसाच॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच॥

परमात्मा ने करोड़ों ही भूत-प्रेत, यक्ष, किन्नर, पिशाच और करोड़ों ही पशु-पक्षी, मृग और मृग को खाने वाले शेर पैदा किए हैं।

सभ ते नेरै सभहू ते दूरि॥
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि॥

परमात्मा मनमुखों से दूर है, गुरुमुखों के पास है। वह सब जगह भरपूर है, संग होते हुए भी न्यारा है।

कई कोटि पाताल के वासी॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी॥

परमात्मा ने करोड़ों ही जीव पाताल में पैदा किए हैं। करोड़ों ही स्वर्ग-नर्क में भी पैदा किए हैं।

कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि॥

करोड़ों ही जीव दुनिया में जीते और मरते हैं। करोड़ों ही

कभी पशु, कभी पक्षी, कभी इन्सान, तो कभी हैवान बनकर दुनिया में आते हैं।

कई कोटि बैठत ही खाहि॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि॥

कई जीव ऐसे हैं जो बैठे ही रहते हैं कोई काम नहीं करते, हाथ नहीं हिलाते। परमात्मा ने करोड़ों जीव ऐसे भी पैदा किए हैं जो सारा दिन मेहनत करते करते थक जाते हैं।

कई कोटि कीए धनवंत॥
कई कोटि माइआ महि चिंत॥

परमात्मा ने करोड़ों ही धनी पैदा किए हैं जो यह नहीं जानते कि हमारे पास कितना धन है। करोड़ों ही जीव ऐसे भी है जिन्हें चिन्ता लगी रहती है कि उनके पास खाने के लिए खाना नहीं, रहने के लिए घर नहीं और शरीर पर ओढ़ने के लिए चादर तक नहीं है।

जह जह भाणा तह तह राखे॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे॥

अपने-आप कोई अमीर या गरीब नहीं बनता। परमात्मा को जैसा ठीक लगता है वह उसे वैसे ही रखता है। यह **सब कुछ उसके हाथ में** है।

कई कोटि भए बैरागी॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी॥

करोड़ों ही जीव मालिक के बैराग में लगे हुए हैं। करोड़ों ही जीव मालिक के साथ अपनी लिव लगाए बैठे हैं।

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥

करोड़ों ही जीव अपनी आत्मा को मन के पंजे से छुड़ाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥

करोड़ों ही जीव प्रभु के दर्शनों के प्यासे हैं। जिन्हें मालिक के दर्शनों की प्यास है, उन्हें वह अविनाशी प्रभु जरूर मिलता है। महाराज कृपाल कहते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत का असूल है, जरूर मिलता है।''

कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥

करोड़ों ही जीव दिन-रात प्रभु के आगे विनती करते हैं, ''हे परमात्मा! तू हमें अपना सतसंग दे।'' जो सतसंग की माँग करते हैं, उन पर मालिक का रंग चढ़ा हुआ है।

जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥

जिनके ऊपर परमात्मा प्रसन्न हो जाता है वे सदा ही उस परिपूर्ण परमात्मा का धन्यवाद करने में लगे हुए हैं।

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥

परमात्मा ने करोड़ों ही खानियाँ, आकाश और खंड-ब्रह्मांड रचे हुए हैं।

कई कोटि होए अवतार॥
कई जुगति कीनो बिसथार॥

इस पृथ्वी पर करोड़ों ही अवतार हुए हैं।

कई बार पसरिओ पासार॥
सदा सदा इकु एकंकार॥

कई बार इस संसार का विस्तार हुआ। कई बार प्रलय, महा-प्रलय आये। लेकिन इस संसार की रचना करने वाले परमात्मा का कभी नाश नहीं हुआ। परमात्मा कई बार अपनी ही मौज में इस धरती पर रह गया।

कई कोटि कीने बहु भाति॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति॥

प्रभु ने करोड़ों ही तरह के जीव जैसे बिल्ली, चूहा, इन्सान आदि बनाए। प्रभु खुद ही इनमें निवास कर रहा है।

ता का अंतु न जानै कोइ॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा का कोई अन्त नहीं जान सकता। वह अपना अन्त अपने आप ही जानता है। हम उस परमात्मा को नमस्कार करते हैं।''

कई कोटि पारब्रहम के दास॥
तिन होवत आतम परगास॥

उस परमात्मा के करोड़ों ही दास हैं। वह परमात्मा करोड़ों में प्रगट है। उनकी आत्मा के अंदर उस प्रभु का प्रकाश है।

कई कोटि तत के बेते ॥
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥

करोड़ों ही उस परमात्मा को जानने वाले हुए हैं। वे आँखों से सदा ही परमात्मा को देख रहे हैं।

कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥

करोड़ों ही जीव 'नाम' का रस पीकर अमर हो गए हैं। जो जीव इस रस को पी लेते हैं वे सदा ही जीते हैं। उनका कभी नाश नहीं होता।

कई कोटि नाम गुन गावहि ॥
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥

करोड़ों ही 'शब्द-नाम' की कमाई कर रहे हैं और अपनी आत्मा को 'नाम' का रस पिला रहे हैं।

अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥

जो अपने गुरु को साँस साँस के साथ याद करते हैं, सिमरन करते हैं, वे परमात्मा को प्यारे हैं। गुरु साहब ने इस अष्टपदी में परमात्मा की स्तुति की है। हमें भी उस परमात्मा का शुक्रिया करना चाहिए।

❖ ❖ ❖

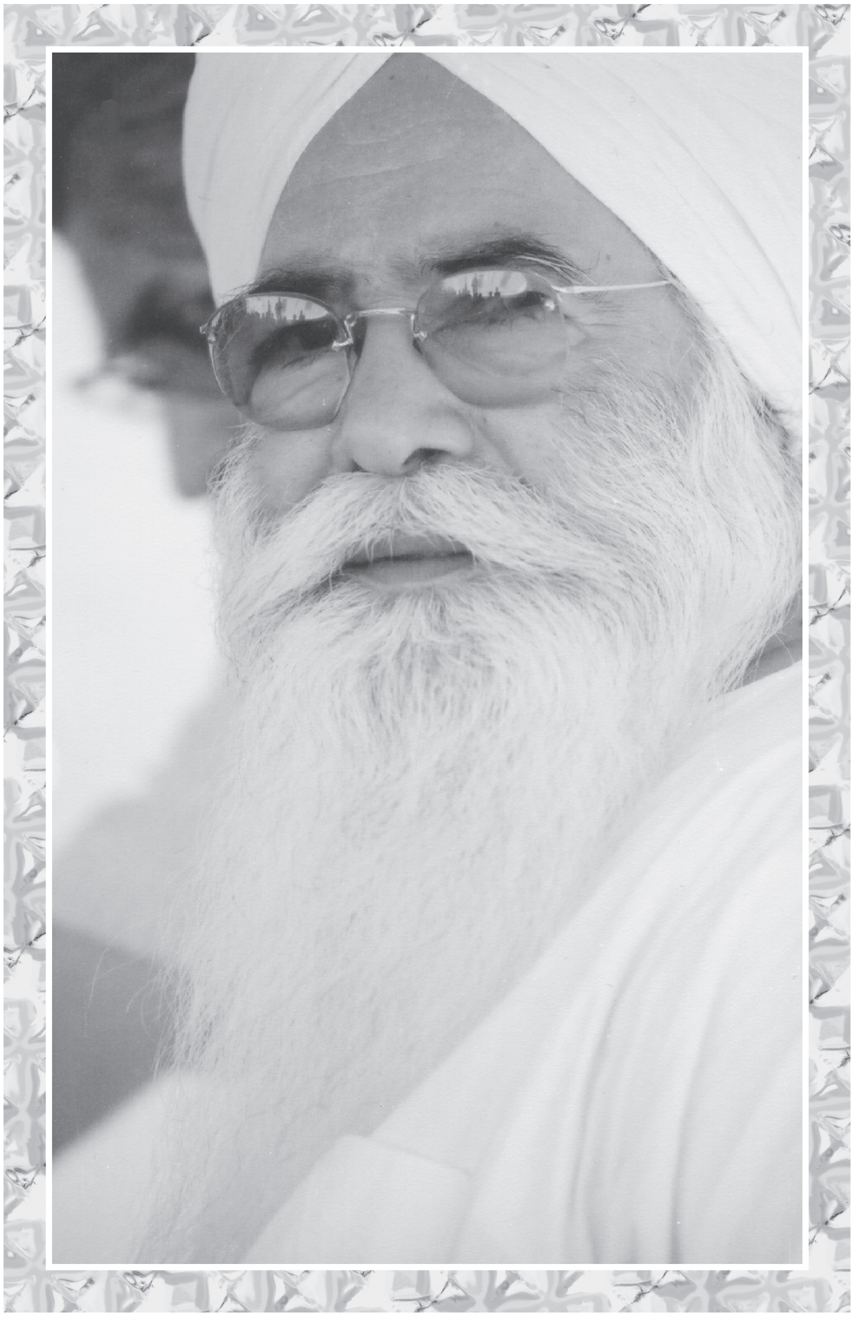

वह प्रभु

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं कि **वह प्रभु** इस संसार की रचना करता है, इसका नाश करता है। आकाश-पाताल, जल-थल में भी वही है। हम उस परमात्मा पर बलिहार जाते हैं।

करन करावन करनै जोगु॥
जो तिसु भावै सोई होगु॥

वह प्रभु अपने आप ही सब कुछ करता है। आप ही जीवों के अंदर बैठकर सब कुछ करवाता है। वही होता है जो मालिक को मंजूर होता है। सिक्खों ने गुरु नानक साहब से पूछा कि जब सब कुछ प्रभु के हाथ में है; **वह प्रभु** ही सब कुछ करता है तो जीव सुख-दुःख क्यों भोगता है? गुरु नानक साहब ने कहा, ''जब जीव यह कहता है कि यह काम मैं करता हूँ, यह वहीं पकड़ा जाता है।''

खिन महि थापि उथापनहारा॥
अंतु नही किछु पारावारा॥

आप कहते हैं, ''प्रभु एक सेकेण्ड में इस संसार की रचना कर सकता है और एक सेकेण्ड में ही इसे लय कर सकता है। उस प्रभु का कोई अन्त नहीं पा सकता।''

हुकमे धारि अधर रहावै॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै॥

वह प्रभु अपने हुक्म के जरिये संसार को पैदा करता है। उसके हुक्म के जरिये ही सारा संसार कायम है।

हुकमे ऊच नीच बिउहार॥
हुकमे अनिक रंग परकार॥

प्रभु के हुक्म के अंदर ही यह जीव ऊँच-नीच कर्म करता है। प्रभु के हुक्म के अंदर ही यह अनेक रंगों में व्याप्त है।

करि करि देखै अपनी वडिआई॥
नानक सभ महि रहिआ समाई॥

प्रभु जीवों में बैठकर खुद अपनी बड़ाई करवाता है। **वह प्रभु** बड़ी युक्ति के साथ हर जीव में समाया हुआ है।

प्रभ भावै मानुख गति पावै॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै॥

प्रभु चाहे तो मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता है, अगर प्रभु चाहे तो पत्थर भी तर सकते हैं।

सहारनपुर में एक साहूकार रहता था जो बहुत कंजूस था। उसके दो बेटे थे। उसने दोनों बेटों की शादी कर दी। साहूकार की पत्नी का देहान्त हो गया। उसे दुःखों ने घेर लिया।

साहूकार की बहुएं बहुत अच्छी थी। उन बहुओं ने अपने पतियों को सलाह दी कि आप अपने पिता को हरिद्वार ले जाओ। यह वहाँ किसी महात्मा का सतसंग सुनेंगे तो इनकी विचारधारा बदल जाएगी। बेटों ने अपने पिता को सलाह दी कि आप बुजुर्ग

हो गए हैं। आपको हरिद्वार ले चलते हैं। वहाँ महात्मा इकट्ठे होते हैं, सतसंग सुनवा लाते हैं।

कंजूस साहूकार ने कहा, ''मैं जानता हूँ, वहाँ के सब पंडित और महात्मा ठग हैं। गंगा का पानी वायी-खोरा है; मैं वहाँ नहीं जाना चाहता। आखिर वह मर गया। बेटों ने सोचा, ''पिता जीते जी तो सतसंग में नहीं गया अब हम इनका दाह संस्कार गंगा पर ही करेंगे।'' उन दिनों बसों, गाड़ियों के साधन नहीं थे। उन्होंने अपने साथ कुछ रिश्तेदार ले लिए और मुर्दे को पालकी में उठाकर हरिद्वार की तरफ चल पड़े।

उन्होंने रास्ते में एक रात सराय में बिताई। सब लोग बाहर सो गए और पालकी को अंदर रख दिया। वहाँ एक कोढ़ी था। उस कोढ़ी ने मुर्दा उठाकर एक तरफ रख दिया और खुद उस पालकी में सो गया कि ये लोग हरिद्वार जा रहे हैं। मैं हरिद्वार पहुँच जाऊँगा। मैं यहाँ पर तो भूखा मर रहा हूँ। वहाँ आए गए लोग दान-पुण्य करते हैं जिससे मेरा गुजारा चल जाएगा।

सुबह होते ही किसी ने कुछ नहीं देखा। पालकी उठाई और चल दिए। हरिद्वार पहुँचकर जब पंडितों को संस्कार के लिए मुर्दा दिखाया तो मुर्दे के अंग हिलते हुए देखकर उन्हें खुशी हुई कि मुर्दा जिन्दा हो गया है। देखा तो पालकी में मुर्दे की जगह एक कोढ़ी था। उस कोढ़ी ने अपनी सारी बात बताई कि मैं वहाँ भूखा मरता था। यहाँ पर कुछ खाना मिल जाएगा। आपका मुर्दा सराय में ही पड़ा है।

उनमें से कुछ आदमी हरिद्वार में रहे और कुछ वापिस उस सराय में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुर्दे को घोड़ी पर बाँध दिया। घोड़ी डरी और भागकर वापिस सहारनपुर आ गई। वहाँ के लोग कहने लगे, ''इसके बेटे तो इसे हरिद्वार ले गए थे और

यह यहीं पर आ गया है।'' बेटों ने वापिस आकर सबको हालात बताए कि हमारे साथ यह सब कुछ हुआ। आखिर उस कंजूस साहूकार का संस्कार सहारनपुर में ही किया गया।

हिन्दुस्तान के लोग गंगा में ही हड्डियाँ प्रवाह करते हैं।उस जमाने में पंडित ही हड्डियाँ लेकर हरिद्वार जाते थे। कंजूस साहूकार के परिवार के लोगों ने पंडित को रुपये-पैसे, थोड़ा सा सोना-चाँदी और कपड़े में हड्डियाँ बाँधकर गंगा में प्रवाह करने के लिए दी। पंडित ने सोचा कि रास्ते में चोर मिल गए तो सारा सामान लुट जाएगा।

पंडित ने हड्डियों को कपड़े में डालकर पेड़ के साथ बाँध दिया। सोना-चांदी और रुपये-पैसे रखने अपने घर चला गया। इतनी ही देर में एक लक्कड़हारा उस पेड़ पर चढ़ा। लक्कड़हारे ने हड्डियों को वहाँ फेंक दिया और कपड़ा लेकर अपने घर चला गया। जब पंडित वापिस आया तो उसने देखा, वहाँ कुछ भी नहीं था। उस पंडित ने हरिद्वार वाले पंडित को भी ऐसे ही चिट्ठी लिख दी कि अमुक पंडित आया था, हमने फूल बहा दिए।

कुछ दिनों बाद लक्कड़हारे की पत्नी ने उस कपड़े से अपनी कमीज सिलवाकर पहन ली। साहूकार की बहू ने वह कपड़ा पहचान लिया और लक्कड़हारे को बुलवाकर पूछा, ''यह कपड़ा कहाँ से आया?'' जब लक्कड़हारे को धमकाया गया तो उसने सारी बात बता दी कि आपके पिता की हड्डियाँ पेड़ पर इस कपड़े में बंधी हुई थी। मैंने हड्डियाँ वहीं फेंक दी और यह कपड़ा अपने घर ले गया।

पंडित को बुलवाकर उससे पूछा गया कि तुमने हमें झूठी चिट्ठी भिजवाई कि हमारे पिताजी की हड्डियाँ गंगा में प्रवाहित हो गई हैं। पंडित ने कहा, ''देखो जी! जब आपका पिता इतने

लोगों के साथ हरिद्वार नहीं गया तो मैं अकेला इसे कैसे ले जा सकता था?'' इसलिए जब परमात्मा को अच्छा लगता है तो ही इन्सान साध-संगत में आ सकता है, 'नाम' जप सकता है।

प्रभ भावै बिनु सास ते राखै॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै॥

प्रभु को मंजूर हो तो वह सांस के बिना भी जीवित रख सकता है। प्रभु को मंजूर हो तो ही हम 'शब्द-नाम' की कमाई कर सकते हैं; प्रभु की महिमा गा सकते हैं।

प्रभ भावै ता पतित उधारै॥
आपि करै आपन बीचारै॥

प्रभु को मंजूर होता है तो बड़े बड़े पापी तर जाते हैं। बड़े बड़े पापियों का भी सुधार हो जाता है।

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी॥
खेलै बिगसै अंतरजामी॥

वह प्रभु पापियों और पुण्यवानों के अंदर बैठा सब कुछ जानता है। जो उस प्रभु को समझ नहीं सके, वे ही कहते हैं कि तू हमारा यह काम कर, वह काम कर। वह ये नहीं जानते कि **वह प्रभु** हमारी हर हरकत को देख रहा है।

जो भावै सो कार करावै॥
नानक द्रिसटी अवरु न आवै॥

जो प्रभु को मंजूर है वह हमें उसी काम में लगा देता है। अगर वह हमसे 'नाम' जपवाना चाहता है तो हमें 'नाम' जपने में लगा देता है। अगर हमसे सतसंग करवाना चाहता है तो हमें सतसंग में भेज देता है।

कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥

इन्सान क्या कर सकता है? इन्सान की ताकत ही क्या है? वही परमात्मा अंदर बैठकर सब कुछ करता है।

इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥

आप कहते हैं, ''अगर इन्सान के बस में हो तो वह यही चाहेगा कि सारी दुनिया का धन-पदार्थ उसे ही मिल जाए। पर जो परमात्मा को मंजूर है, वही होता है।''

एक जाट ने बहुत भक्ति की। परमात्मा उस पर प्रसन्न हुआ। परमात्मा ने जाट से कहा, ''माँग क्या माँगता है?'' जाट ने कहा, ''मेरे घर में अन्न-धन की कमी है आप मुझे अन्न-धन दो।'' परमात्मा ने उसे एक घंटी देकर कहा, ''जब तुझे किसी चीज की जरूरत हो तो इसे बजा दिया कर। तुझे जो चाहिए, वह मिल जाएगा। मगर शर्त यह है कि तेरे पड़ोसी के घर तुझसे दुगना जाएगा।''

घंटी का वरदान पाकर जाट खुश हुआ लेकिन शर्त सुनकर दुःखी हुआ। जाट ने अपनी पत्नी से कहा कि इस घंटी में यह गुण है। उसकी पत्नी उसे हमेशा कहती कि तुम इस घंटी को बजा दो। अगर पड़ोसी के घर दुगना जाता है तो जाने दो। जाट ने कहा, ''भक्ति मैंने की और फायदा पड़ोसियों को मिले?''

परमात्मा ने सोचा, ''देखें! इसकी हिम्मत कहाँ तक है।'' उस पर हर तरह के कष्ट आए लेकिन उसने घंटी नहीं बजाई। आखिर उसने अपना गांव छोड़ दिया और बाहर जाकर अपना समय बिताने लगा। जाट के चले जाने के बाद उसकी पत्नी ने

घंटी बजाई। परमात्मा प्रगट हुए और पूछा, ''क्या जरूरत है?'' उसने जो माँगा, वह मिला। उसके घर में बहुत अन्न-धन आ गया। पड़ोसी भी मौज करने लगे।

कुछ वर्षों बाद जब वह जाट लौटा तो लोगों ने उसे बताया कि परमात्मा ने तेरे घर में तो बहुत कुछ दिया है। उसने कहा, ''कहाँ से आना था, मेरी ही घंटी बजाते होंगे?'' घर आकर पत्नी से कहने लगा, ''तू ना मानी।'' जाट ने स्नान करके घंटी बजाई। परमात्मा हाजिर हुए और पूछा, ''भाई! क्या चाहिए?'' जाट ने कहा, ''मेरे घर में एक कुआँ लग जाए।'' पड़ोसी के घर में दो कुएं लग गए। जाट ने फिर घंटी बजाई परमात्मा ने हाजिर होकर पूछा, ''क्या चाहिए?'' उसने कहा ''मेरी एक आँख फूट जाए।'' पड़ोसी की दोनों आँखें फूट गई।

भाव यह है कि अगर इन्सान के बस में हो तो वह किसी को कुछ भी न खाने दे। यह सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है। वह परमात्मा सबको एक समान देखता है, सब पर दया करता है।

अनजानत बिखिआ महि रचै॥
जे जानत आपन आप बचै॥

यह जीव नहीं जानता कि मैंने जो बुरे कर्म किए हैं उनका हिसाब मुझे ही देना पड़ेगा। यह बेचारा अनजाने में गन्दे कर्म करके अपने गले में आप ही फन्दा डाल लेता है।

भरमे भूला दह दिसि धावै॥
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै॥

जीव भ्रम में पड़ा हुआ है। जब मौत आती है तब पता चलता है कि कोई भी हमारे साथ नहीं जाता। कोई भी हमारी

मदद नहीं करता। हम बैठे बैठे ही संकल्पों के जरिए सारे संसार में घूम आते हैं।

करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ॥
नानक ते जन नामि मिलेइ॥

परमात्मा जिस पर दया करे अपना 'नाम' दे, केवल वही मुक्त हो सकता है।

खिन महि नीच कीट कउ राज॥
पारब्रहम गरीब निवाज॥

प्रभु चाहे तो एक सेकेण्ड में भिखारी को राजा बना दे। वह गरीब पर दया करता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप गुरु के पास दीन बनकर जाओ।''

जा का द्रिसटि कछू न आवै॥
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै॥

जो जीव किसी भी गिनती में न हो। उसके घर के लोग उसे कुछ न समझते हों। अगर प्रभु चाहे तो उसे सारी दुनिया में प्रगट कर सकता है।

जिस नीच को कोई ना जाने, नाम जपत चों बैकुंठ पहचाने।

जा कउ अपुनी करै बखसीस॥
ता का लेखा न गनै जगदीस॥

आप कहते हैं, ''जिस पर सतगुरु अपनी दया करे, उससे कोई हिसाब नहीं पूछता कि तुमने लोगों को मेरे 'नाम' का इतना धन या इतनी दया क्यों दी?''

जीउ पिंडु सभ तिस की रासि॥
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास॥

वह प्रभु सारे जीवों में है। यह जीवन भी उसका है। यह शरीर भी उसी का है।

अपनी बणत आपि बनाई॥
नानक जीवै देखि बडाई॥

प्रभु को किसी ने नहीं बनाया। उस प्रभु ने अपनी रचना भी अपने आप ही की है। गुरु अर्जुन साहब कहते हैं, ''हम उसकी यह बड़ाई देख-देखकर खुश हैं।''

इस का बलु नाही इसु हाथ॥
करन करावन सरब को नाथ॥

वह प्रभु ही कर्ता है। जीव में कोई ताकत नहीं। जिस तरह इंजन में सब कलपुर्जे हैं अगर उसमें करंट न छोड़ा जाए तो इंजन हरकत में नहीं आता। इसी तरह हमारे शरीर में आँख, नाक, कान, मुँह इत्यादि हैं। जब तक **वह प्रभु** उसमें अपना करंट न छोड़े, शरीर का कोई भी अंग हरकत नहीं कर सकता।

आगिआकारी बपुरा जीउ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ॥

यह बेचारा जीव आज्ञाकारी है। **वह प्रभु** इसे जिस तरफ खींचता है यह उसी तरफ खिंचा चला जाता है।

कबहू ऊच नीच महि बसै॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै॥

यह बेचारा जीव कभी हँसता है, कभी रोता है। कभी खुश

होता है, कभी नाराज होता है। कभी ऊँची योनियों में जाता है, कभी नीची योनियों में जाता है।

कबहू निंद चिंद बिउहार॥
कबहू ऊभ अकास पइआल॥

आप कहते हैं, ''यह बेचारा जीव कभी निन्दा और कभी प्रशंसा करने लगता है। कभी ख्यालों में आकाश पर उड़ने लगता है, कभी पातालों में चला जाता है।''

कबहू बेता ब्रहम बीचार॥
नानक आपि मिलावणहार॥

कभी यह प्रभु को जानने वाला बन जाता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''**वह प्रभु** खुद ही मिलाप करवाने वाला है।''

कबहू निरति करै बहु भाति॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति॥

कभी यह नृत्य करता है। कभी बाजे बजाता है। कभी सोने में ही दिलचस्पी रखता है।

कबहू महा क्रोध बिकराल॥
कबहूं सरब की होत रवाल॥

कभी यह इतना क्रोधी बन जाता है कि अपने आसपास के लोगों को दुःखी कर देता है। कभी अपने आपको लोगों के चरणों की धूल समझने लग जाता है।

कबहू होइ बहै बड राजा॥
कबहु भेखारी नीच का साजा॥

कभी यह अपने आपको बादशाह समझने लग जाता है। कभी भिखारियों से भी अति भिखारी बन जाता है।

कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कबहू भला भला कहावै ॥

कभी यह चाहता है कि सारी दुनिया मुझे अच्छा कहे। कभी अपनी कीर्ति चाहता है कि मैं जहाँ जाऊँ, वहाँ मेरा ही यश हो।

जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हम गुरुओं की चर्चा द्वारा आपको बताते हैं कि जैसे परमात्मा चाहता है, यह जीव बेचारा वैसे ही करता है।''

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥

कभी यह पंडित बनकर शास्त्र-विद्या पर विचार करता है। कभी मौनी बनकर बैठ जाता है।

कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥

कभी यह तीर्थों पर घूमता है। कभी सिद्ध बन जाता है। कभी समाधियाँ लगाने वाला बन जाता है।

कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥

यह बेचारा जीव कभी कीड़ों, कभी पतंगों, कभी हाथी,

कभी घोड़ों की योनियों में और कभी किसी जगह तो कभी किसी जगह अनेकों योनियों में भटकता फिरता है।

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जिस तरह स्वाँगी लोग कई किस्म के रूप धारण करते हैं। इसी तरह **वह प्रभु** भी इस जीव से कई तरह के रूप धारण करवाता है। गुरमुख लोग जानते हैं कि प्रभु जैसे चाहता है वैसे ही इस जीव को नाच नचवाता है।

जो तिसु भावै सोई होइ ॥
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥

प्रभु को जो अच्छा लगता है वही होता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''और तो कोई नज़र नहीं आ रहा, जो जीवों के पीछे बैठकर यह काम करता है।''

कबहू साधसंगति इहु पावै ॥
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥

कभी यह बेचारा भटकता हुआ साध-संगत में आ जाता है। कभी मन ऐसा भटकाता है कि कई सालों तक यह जीव साध-संगत में नहीं आता।

अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसु असथान का नही बिनासु ॥

सतसंग के जरिए हमारे अंदर जो प्रकाश होता है, उस प्रकाश का कभी नाश नहीं होता।

मन तन नामि रते इक रंगि॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि॥

आप कहते हैं, ''जिनके मन के अंदर 'नाम' का रंग है। प्रभु हमेशा उनके साथ रहता है।''

जिउ जल महि जलु आइ खटाना॥
तिउ जोती संगि जोति समाना॥

जिस तरह कीचड़ गंगा के पानी में मिलकर गंगा कहलाता है। उसी तरह हमारी ज्योति उस ज्योति में मिल जाती है।

मिटि गए गवन पाए बिस्राम॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान॥

आप कहते हैं, ''प्रभु की भक्ति करने का, 'नाम' जपने का, साध-संगत में आने का यह फायदा हुआ कि हमारा दुनिया में आना जाना खत्म हो गया। हमारा ठिकाना प्रभु के पास हो गया।'' मैं उस प्रभु पर बलिहार जाता हूँ जिसने हमारे ऊपर दया की। अपना 'नाम' दिया और हमें अपने घर में जगह दी।

❖ ❖ ❖

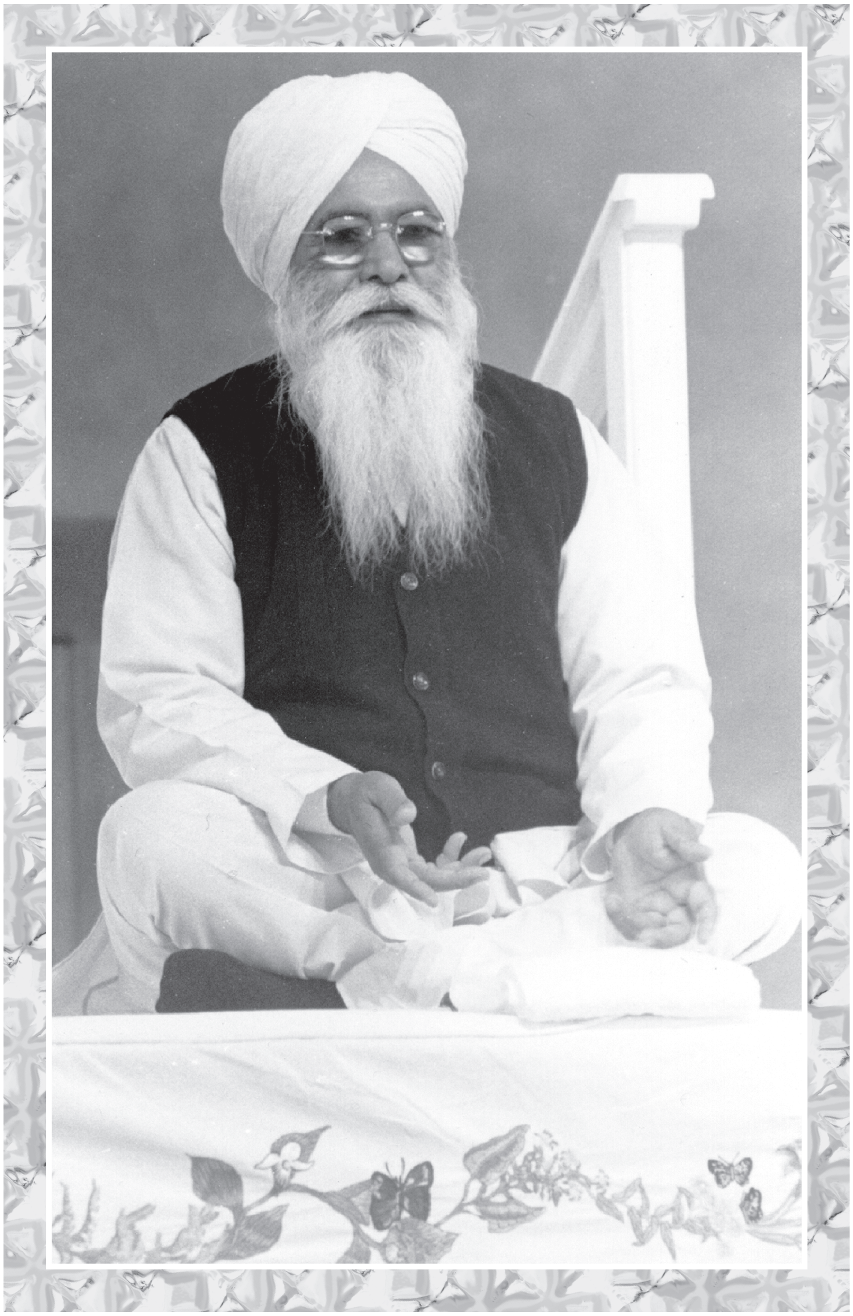

अहंकार

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥

गुरु अर्जुनदेव जी के पास एक आदमी 'नाम' लेने गया। गुरु साहब ने उससे कहा कि तुझे 'नाम' बाद में मिलेगा। पहले तू हमारे एक सतसंगी के पास यह हुक्मनामा लेकर जा। उससे कहना कि गुरु साहब ने तुम्हारे लिए यह हुक्मनामा भेजा है; तुम्हें यह हुक्मनामा सौ रुपये भेंट में देने के बाद ही मिलेगा।

वह आदमी गुरु साहब का हुक्मनामा लेकर उस गरीब सतसंगी के घर जाकर कहने लगा, ''मुझे सौ रुपये दो तभी मैं तुम्हें यह हुक्मनामा दे सकता हूँ।'' उस सतसंगी के पास पैसे नहीं थे। उसने घर के गहने बेचकर हुक्मनामा ले लिया।

उस हुक्मनामे में लिखा था, ''लंगर के लिए पाँच सौ रुपये भेजने जरूरी हैं।'' वह प्रेमी सतसंगी था। उसने अपने प्रेम और श्रद्धा को डोलने नहीं दिया। वह बाहर कमाई करने के लिए निकल पड़ा। बाहर ढोल वाला बोल रहा था, ''अगर कोई आदमी मसकीनिआ पहलवान को गिरा देगा तो उसे एक हजार रुपये इनाम में मिलेंगे। अगर उसके आगे गिर जाएगा तो उसे पाँच सौ रुपये मिलेंगे।''

प्रेमी सतसंगी ने सोचा, ''सतगुरु अपना काम अपने आप ही बना लेता है। अगर मैं मसकीनिआ पहलवान के आगे गिर गया तो मुझे पाँच सौ रुपये मिल ही जाएंगे। मैं गुरु के लंगर

के लिए पाँच सौ रुपये भेज सकूँगा। अगर पहलवान मेरी जान भी निकाल देगा तो भी मैं गुरु का ही काम कर रहा होऊँगा।''

प्रेमी सतसंगी उस कुएं के पास पहुँचा, जहाँ बहुत लोग खड़े थे। उसने वहाँ जाकर कहा, ''पहले मुझे पानी पिला दो।'' वहाँ मसकीनिआ पहलवान भी खड़ा था। उसने सतसंगी से कहा, ''तू सबसे बाद में आया है और पानी पहले माँग रहा है?'' सतसंगी ने कहा, ''मैंने पहले पानी इसलिए माँगा है क्योंकि मुझे मसकीनिआ पहलवान से लड़ाई करनी है।'' मसकीनिआ ने उससे पूछा, ''क्या तूने कभी मसकीनिआ पहलवान को देखा है? वह बहुत तगड़ा पहलवान है। वह तुझे मार गिराएगा।''

प्रेमी सतसंगी ने मसकीनिआ पहलवान को अपना सारा हाल बताया कि मैं गुरु अर्जुनदेव जी का शिष्य हूँ। गुरु साहब ने हुक्मनामा भेजा है कि लंगर के लिए पाँच सौ रुपये भेजो। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ। जब मैंने मसकीनिआ पहलवान का ढिंढोरा सुना तो सोचा, ''चाहे मैं मर ही क्यों न जाऊँ? मेरे भेजे हुए पाँच सौ रुपये तो गुरु के लंगर में काम आएंगे।''

उस प्रेमी सतसंगी की श्रद्धा देखकर मसकीनिआ पहलवान ने कहा, ''मैं ही मसकीनिआ पहलवान हूँ। मैं यह तो नहीं कह सकता कि तू मुझे गिरा देगा। वहाँ लोग इकट्ठे होंगे, राजा भी आएगा। मैं तुझे इधर-उधर उछालूँगा। तू हिम्मत मत हारना। मैं धीरे से तुझे ऊपर उठा लूँगा। लोग ताली मार देंगे और तुझे पाँच सौ रुपये मिल जाएंगे। लेकिन मेरी शर्त यह है कि तू मुझे भी अपने गुरु के पास ले चलना। मैं भी पूरे गुरु से 'नाम' लेकर तेरी तरह श्रद्धावान बनूँगा, मुक्ति प्राप्त कर सकूँगा।''

जब मसकीनिआ उस प्रेमी के साथ गुरु अर्जुनदेव जी के पास नाम लेने के लिए गया, उस समय गुरु साहब अमृतसर में

सुखमनी साहब की रचना कर रहे थे। गुरु साहब ने उससे सारी बात पूछी कि तुझे सन्तमत की जानकारी कैसे प्राप्त हुई?

मसकीनिआ पहलवान ने कहा, ''मैं बहुत बड़ा पहलवान हूँ। आपके इस प्रेमी को लंगर के लिए पाँच सौ रुपये भेजने थे। इसलिए यह मुझ जैसे पहलवान से कुश्ती करने आया। मैंने इसकी श्रद्धा देखी कि यह मुझे हरा तो नहीं सकता। अगर मैंने इसे धक्का दिया तो इसकी जान निकल जाएगी। लेकिन आपके प्रति इसकी श्रद्धा देखकर मेरे दिल में दया आई कि इस देह ने तो मेरे साथ नहीं जाना। गुरु का 'नाम' ही मेरे साथ जाएगा।'' गुरु साहब ने इस बानी में उस पहलवान का नाम दिया है।

गुरु साहब ने कहा, ''मसकीनिआ तेरी आत्मा को सुख मिलेगा, तूने **अहंकार** को दूर करके मेरे दिल में अपने लिए इज्जत पैदा की है। जो इस संसार में ज्यादा **अहंकार** करते हैं, जिनमें 'मैं' है, वे गर्भ में इस तरह गल जाते हैं जैसे दाल में नमक गल जाता है।''

जो आदमी हुक्मनामा लेकर गया था, उसने और मसकीनिआ पहलवान ने भी 'नाम' लिया।

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥

गुरु अर्जुनदेव जी मसकीनिआ के प्रति अपनी बानी में फरमाते हैं कि जो मालिक का दिया हुआ राजपाट पाकर **अहंकार** करता है वह नर्कों में जाकर कुत्ता तक बनता है।

जो जानै मै जोबनवंतु ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥

जो अपने रूप और जवानी का मान करता है, उस **अहंकार**

की वजह से उसे बिष्टा का कीड़ा तक बनना पड़ता है।

आपस कउ करमवंतु कहावै॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै॥

जो नेक कर्म करके **अहंकार** करता है कि मैं ही ये सब करने वाला हूँ। उसे बहुत सारी योनियों में भरमाया जाता है।

धन भूमि का जो करै गुमानु॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो ज्यादा धन और जायदाद होने का **अहंकार** करता है, वह अंधा है, अज्ञानी है।''

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै॥

जो लोग धन, राजपाट सब कुछ परमात्मा का समझते हुए भक्ति करते हैं। अपने आपको गरीब समझते हैं, वे दुनिया में रहते हुए भी मुक्त हैं। मालिक के दरबार में जाकर सुख भोगते हैं।

नम्रता सन्तों का शृंगार होती है। सन्त-महात्मा कुल मालिक का रूप होकर भी अपने आपको गरीब, दास, संगत का झाड़ू देने वाला समझते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

नानक गरीब ढह पया दवारे, मेल ल्यो वडयाई।

धनवंता होइ करि गरबावै॥
त्रिण समानि कछु संगि न जावै॥

जो आदमी मालिक के दिए हुए धन पर **अहंकार** करता है कि मेरे पास इतना धन है, उसे याद कर लेना चाहिए कि जब मौत आएगी तो यह धन उसके साथ नहीं जाएगा।

कारूँ बादशाह ने बहुत धन इकट्ठा किया, उसने अपने राज्य में किसी के पास धन रहने ही नहीं दिया। एक बार उसने सरकारी कर्मचारियों द्वारा हाथी बेचने के लिए भेज दिया। हाथी की कीमत सिर्फ एक टका रखी। एक बच्चा रोकर अपनी माँ से कहने लगा कि मुझे हाथी लेना है। उसकी माँ ने कहा, ''कारूँ बादशाह ने तो किसी के पास कोई पैसा छोड़ा ही नहीं।'' बच्चा बहुत जिद करने लगा कि मैं हाथी जरूर लूँगा।

मुसलमानों में यह रिवाज था, जब कोई मरता तो मरने वाले के मुँह में चाँदी का रुपया डालकर उसे दफनाते थे। उस बच्चे की माँ ने बच्चे से कहा, ''तेरा पिता मर चुका है तू उसकी कब्र खोदकर वह रुपया निकाल ले।'' बच्चे ने कब्र खोदकर रुपया निकाल लिया और हाथी खरीद लिया।

जब कारूँ बादशाह को पता चला कि हाथी खरीदने के लिए टका कहाँ से आया? तो उसने सारी कब्रें खुदवाकर उनमें से भी चाँदी के रुपये निकलवाकर अरबों रुपये इकट्ठे कर लिए।

कीता सब्र ना वाँग बेसब्रा, कर कर जुल्म पुटाईयाँ कब्रां।

गुरु नानक साहब उस समय संसार मंडल में थे। गुरु नानक जी की महिमा सुनकर कारूँ बादशाह उनके दर्शनों के लिए गया और उसने आपसे कहा, ''कोई सेवा बताओ?'' गुरु नानक जी ने कहा, ''तू अपने पास यह सुई रख ले। हम यह सुई तुझसे अगले जन्म में ले लेंगे।'' कारूँ ने सुई पकड़ ली। रानी पास ही बैठी थी। रानी ने कहा, ''बादशाह सलामत! यह फकीर हैं। आपको समझा रहे हैं कि आप अगले जन्म में इन्हें यह सुई कैसे देंगे? जबकि आपके साथ तो आपका शरीर भी नहीं जाएगा।'' कारूँ ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''मेरे साथ तो यह शरीर भी नहीं जाएगा।''

गुरु नानक जी ने कारूँ बादशाह से कहा, ''तू कहता है कि तेरा शरीर भी साथ नहीं जाएगा तो इतना धन इकट्ठा करके दुनिया को तंग क्यों कर रहा है?'' कारूँ बादशाह को ज्ञान हो गया। गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''तू यह धन-दौलत गरीबों में बाँट दे। साध-संगत में लगा दे।''

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस॥
पल भीतरि ता का होइ बिनास॥

आप कहते हैं कि अगर यह बहुत सी फौजों का मालिक बन जाता है, फौजों से रक्षा की उम्मीद करता है। लेकिन तजुर्बा यह बताता है कि मालिक जब चाहता है एक सेकेण्ड में राख की ढेरी बना देता है। चाहे हमारी कितनी फौजें हों, नौकर-चाकर हों! अन्त समय में उस मालिक और सतगुरु के सिवाय कोई हमारी मदद नहीं कर सकता।

सभ ते आप जानै बलवंतु॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु॥

जो अपने आपको सबसे ताकतवर समझता है, जब मालिक की मौज होती है तो एक सेकेण्ड में भस्म की ढेरी बन जाता है।

किसै न बदै आपि अहंकारी॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जो किसी की परवाह नहीं करता, सोचता है, ''मेरा मुकाबला कौन कर सकता है? मैं जिसे चाहूँ, अपने पैरों पर झुका लूँ।'' धर्मराज उसे ख्वार करके ऊँची-नीची योनियों में भेजता है।

गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु॥
सो जनु नानक दरगह परवानु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिन पर गुरुओं की कृपा हो जाती है, वे 'नाम' की कमाई करते हैं। दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों में नहीं लिपटते। वे ही मालिक की दरगाह में परवान हैं।''

सन्त यह नहीं कहते कि बेटे बेटियाँ छोड़ दो, धन-दौलत बाहर फेंक दो, बल्कि सन्त यह कहते हैं कि इन सबको अपना मत समझो, इन्हें पाकर **अहंकार** मत करो।

कोटि करम करै हउ धारे ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥

अगर जप-तप, पूजा-पाठ करके जीव यह कहे कि ये सब मैंने किये हैं तो यह शर्म की बात है। महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''अगर कोई अच्छा कर्म करके यह कहे कि मैं करता हूँ, तो यह इस तरह है जैसे हम अच्छा पुलाव बनाकर उसके ऊपर राख डाल दें। अगर हम दाएं हाथ से दान करें तो बाएं हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए।'' गुरु नानक जी कहते हैं:

तीर्थ व्रत और दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात है, ज्यों कुन्चर स्नान॥

अनिक तपसिआ करे अहंकार॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार॥

आप कहते हैं, ''अगर कोई **अहंकार** में आकर तपस्या, अभ्यास वगैरह करता है तो वह बेचारा नर्कों-स्वर्गों में ही चक्कर लगाता रहता है।'' महात्मा कहते हैं :

किया कराया सब गया, जब आया अहंकार।

हमारे राजस्थान की एक मशहूर कहानी है। आज से 50-60 साल पहले पानी की कमी की वजह से अन्न की भी कमी थी।

अब गंगानगर में नहर आने से दुनिया सुख भोग रही है। चार साधु एक माता के घर जाकर कहने लगे, ''बहुत भूख लगी है।'' माता ने उन्हें खाना खिलाकर तृप्त किया। उन साधुओं की पहुँच स्वर्गों तक थी। साधु खुश होकर माता से कहने लगे, ''माता! तुझे स्वर्गों में छोड़ आएं?'' माता आँखें बंद करके चारपाई पर बैठ गई। साधु चारपाई उठाकर स्वर्गों में ले गए। स्वर्ग में रहने वाली आत्माएं कहने लगी, ''इस माता ने कितने पुण्य किए है कि साधु इसे चारपाई पर उठाकर यहाँ लाए हैं।''

माता के दिल में **अहंकार** आ गया। वह कहने लगी, ''ये साधु मुझे ऐसे ही उठाकर नहीं लाए। मैंने इन्हें चार-चार रोटियाँ खिलाई थीं।'' माता के **अहंकार** की वजह से साधुओं से चारपाई नहीं उठाई गई। उनके कंधे दुखने लगे। साधुओं ने कहा, ''माता आँखें खोल!'' आँखें खोलते ही वह माता वापिस अपने घर पर थी। इसलिए **अहंकार** हमें स्वर्गों से भी नीचे ले आता है।

अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥

हम 'नाम' की कमाई के बिना, सुरत-शब्द के अभ्यास के बिना चाहे जितने भी यत्न कर लें, हमारी आत्मा कभी भी परमात्मा से नहीं मिल सकती। हम मालिक की दरगाह में पहुँच ही नहीं सकते।

आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥

गुरु साहब उन लोगों का जिक्र करते हैं कि जो सारा दिन अपने आपको सच्चा और दूसरों को झूठा साबित करने में लगे हुए हैं। सच्चा आदमी अपनी सफाई पेश नहीं करता और झूठा

सफाई पेश करने में लगा रहता है। सन्त-महात्मा धुरधाम पहुँचकर भी अपने अंदर नम्रता रखते हैं।

सरब की रेन जा का मनु होइ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ॥

आप कहते हैं, ''उन्हीं की सच्ची शोभा है जो अपने आपको साध-संगत में छोटा समझते हैं। अपने आपको मालिक के हवाले किए रखते हैं। सब कुछ मालिक का दिया हुआ ही समझते हैं।''

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ॥

जब तक जीव यह समझता है कि 'मैं कर रहा हूँ।' तब तक यह सुखों से करोड़ों कोस दूर है। दुनिया की हुकूमत या धन पाकर कोई भी शान्त नहीं हो सकता। शान्ति 'नाम' में और अपनी आत्मा का मिलाप परमात्मा के साथ कराने में है।

जब इह जानै मै किछु करता॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता॥

जब यह सोचता है कि मैंने ही ये सुखों के सामान, इज्जत बनाई है! मुझे कौन मार सकता है? यह इन बातों में फँसकर परमात्मा को भूल जाता है। विभिन्न योनियों में चक्कर काटता हुआ गर्भ में आता है। जन्म लेता और मरता है।

जब धारै कोऊ बैरी मीतु॥
तब लगु निहचलु नाही चीतु॥

जब तक यह संसार में किसी को दुश्मन, किसी को मित्र समझता है तब तक यह निर्मल, पवित्र नहीं हो सकता। क्योंकि इस संसार में जितनी भी आत्माएं आई हैं वे उस मालिक की हैं।

सबके अंदर मालिक बैठा है। महात्मा के दिल में औरत-मर्द, गरीब-अमीर सभी के लिए एक जैसी इज्जत है। उनका सब धर्मों से प्यार होता है। हम भला-बुरा तब तक ही समझते हैं जब तक परमात्मा से दूर हैं। जब हमारा मिलाप परमात्मा से हो जाता है तो हमें सभी के अंदर परमात्मा दिखता है।

जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥
तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥

जब तक यह माया के साथ मोह लगाए बैठा है तब तक धर्मराज इसे सजा देता है।

प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥

जिनको परमात्मा बख्शना चाहता है, उन पर अपनी कृपा करता है। उन्हें सतगुरु की शरण में ले आता है। सतगुरु 'नाम' दे देते हैं। जब हम 'नाम' की कमाई करते हैं तो माया के बीच रहते हुए भी दुनिया के बंधनों में नहीं फँसते।

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि अगर इन्सान हजार रुपये जोड़ता है तो लाख की तृष्णा पैदा हो जाती है। लाख हो जाए तो उसे बैंक में जमा करवाकर और तृष्णा बढ़ा लेता है।

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥

यह अपने मन की शान्ति के लिए अनेकों भोगों की सामग्री इकट्ठी करता है। लेकिन आज तक भोग भोगकर किसी की

तृप्ति नहीं हुई, बल्कि अशान्ति आती है और भोगों को भोगते भोगते उसी में खत्म हो जाता है।

बिना संतोख नही कोऊ राजै॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै॥

राजा भोज की सभा में एक तृष्णालु पुरुष आया। उसने पूछा, ''वह कौन सी दलदल है, जिसमें फँसकर इन्सान बाहर नहीं निकलता?'' राजा भोज संस्कृत का पंडित था। उसके दरबार में बहुत विद्वान थे। उसने सबसे पूछा लेकिन सबकी राय अलग अलग थी। राजा भोज की नज़र में जो सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा पंडित था, उसे आठ दिन की मोहलत दी गई कि अगर तूने सही जवाब नहीं दिया तो तुझे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

वह पंडित जंगल में चला गया। वहाँ उसे एक सतसंगी मिला। सतसंगी ने पंडित से पूछा, ''पंडित जी! आप इतने परेशान क्यों हैं?'' पंडित ने अपनी सारी व्यथा सुनाई और कहा, ''राजा ने मुझसे सवाल किया है कि वह कौन सी दलदल है जिसमें फँसकर इन्सान बाहर नहीं निकलता?''

सतसंगी समझदार था। उसने कहा, ''मैं तेरी बात का जवाब दूँगा। मेरे पास एक पारस है, जिसमें यह गुण है कि अगर इसे लोहे से लगा दें तो लोहा सोना बन जाता है। मैं तुझे यह पारस दे दूँगा। तुझे राजा के यहाँ नौकरी करने की कोई जरूरत नहीं है। तेरे बच्चे आराम से खाएंगे। मैंने शादी नहीं करवाई, मेरा कोई बच्चा-बाला भी नहीं। अगर किसी से कोई गुण लेना हो तो उसका शिष्य बनना पड़ता है। तू मेरा शिष्य बन जा!''

पंडित बहुत खुश हुआ और सतसंगी की बात मानने के लिए तैयार हो गया। तब सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे अपना शिष्य तभी बनाऊँगा जब तू मेरी भेड़ का दूध पिएगा।'' पंडित ने

कहा, ''मैं भेड़ का दूध कैसे पी सकता हूँ मैं तो पंडित हूँ।'' सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे पारस नहीं दूँगा।''

अब पंडित ने सोचा, ''इस पारस में बहुत गुण हैं, यह सोना बनाता है। पाप हो जाएगा तो क्या? मैं प्रायश्चित कर लूँगा।'' पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं दूध पी लेता हूँ पर तू मुझे पारस दे देना।''

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका निकल गया अब तो तुझे पारस तभी मिल सकता है कि पहले दूध को मैं पिऊँगा, फिर कुत्ता पिएगा, फिर तू पीना।'' पंडित ने कहा, ''नहीं।'' फिर पंडित के दिल में ख्याल आया कि प्रायश्चित तो करना ही है, मैं दोनों प्रायश्चित इकट्ठे ही कर लूँगा। पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं तैयार हूँ।''

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका भी निकल गया। अगर अब तुझे पारस लेना है तो मैं तुझे कुत्ते का जूठा दूध, जिसमें मेंगने पड़ी होंगी, इन्सान की खोपड़ी में डालकर दूँगा। वह पीना पड़ेगा।'' पंडित ने पूछा, ''तू मुझे पारस दे देगा?'' सतसंगी ने कहा, ''हाँ''। जब पंडित को खोपड़ी में दूध डालकर पीने के लिए दिया और वह पीने लगा। तब सतसंगी ने कहा, ''दूध पीने से पहले मेरा जवाब सुन।''

वह जवाब यह है कि ''यही वह दलदल है जिसमें फँसा हुआ इन्सान सारी जिंदगी निकल नहीं सकता। पैसे के लोभ के लिए इन्सान हर तरह की चोरी, ठगी, बेईमानी करता है।'' पंडित खामोश हो गया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

जिसको कछु ना चाहिये, सो ही शहनशाह।

नाम रंगि सरब सुखु होइ॥
बड़भागी किसै परापति होइ॥

आप कहते हैं, ''शान्ति और तृप्ति 'नाम' में है। लेकिन नाम बड़े भाग्य वालों के अंदर ही प्रगट होता है। जिन पर गुरु दयाल होता है उनके दिल को सुख और शान्ति मिलती है।''

करन करावन आपे आपि॥
सदा सदा नानक हरि जापि॥

परमात्मा अपने आप ही सामान बनाता है कि किस आत्मा को शान्ति देनी है, किसको अपने साथ मिलाना है। हमेशा उस परमात्मा की मौज में भजन-बंदगी करनी चाहिए। उसकी मौज में रहना चाहिए क्योंकि सब कुछ उसके हुक्म से ही हो रहा है।

करन करावन करनैहारु ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु॥

यह उन महात्माओं की बानी है, जिनकी आँखें खुली हैं, जो मालिक से मिल चुके हैं। वे कहते हैं, ''मालिक सब कुछ अपने आप करता है। इन्सान के बस में कुछ नहीं।''

जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ॥

परिपूर्ण परमात्मा जिस पर जैसी दृष्टि करता है वह वैसा ही काम करता है। परमात्मा पर्दे के पीछे चाबी मरोड़ता है कि तुझे 'नाम' जपना है, मुझसे मिलना है। वह इन्सान 'नाम' की तरफ लग जाता है। जिसकी चाबी नहीं मरोड़ता, उसके अंदर दुनिया बसा देता है।

जो किछु कीनो सु अपनै रंगि॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि॥

परमात्मा जो कुछ भी करता है, अपनी मौज में करता है।

वह हमेशा गुरुमुख महात्माओं के साथ है। उनके अंदर प्रगट है। मनमुखों से दूर है। मनमुख समझ ही नहीं सकते कि परमात्मा हमारे अंदर बस रहा है।

बूझै देखै करै बिबेक॥
आपहि एक आपहि अनेक॥

परमात्मा खुद ही विचार करता है कि किस आत्मा को *सच्चखंड* में जगह देनी है। वह अपने आप ही सबके अंदर शब्द-रूप होकर बैठा है। वह आप ही गुरु बनकर इस संसार में आकर आत्मा को उपदेश देता है।

मरै न बिनसै आवै न जाइ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ॥

परमात्मा जन्मता-मरता नहीं, आता-जाता नहीं। वह सबके अंदर बहुत युक्ति से समाया हुआ है। इस संसार में दो ही ताकतें अमर हैं : एक परमात्मा, दूसरा सतगुरु। सतगुरु इस संसार में परोपकार के लिए ही आते हैं।

आपि उपदेसै समझै आपि॥
आपे रचिआ सभ कै साथि॥

वह आप ही उपदेश करता है। आप ही शिष्य बनकर समझना शुरू कर देता है। परमात्मा गुरु में भी है, शिष्य में भी है। गुरु में होने के कारण ही उसे ध्याया जाता है।

आपि कीनो आपन बिसथारु॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु॥

परमात्मा को किसी ने सलाह नहीं दी कि तू सोलह शक्तियाँ पैदा कर। *काल* बनाकर उससे दुनिया की रचना करवा या

उसने *काल* को प्रेरित किया हो कि तू भक्ति कर। यह परमात्मा की मौज थी, जो उसने रचना की और विस्तार किया। यह सब कुछ वह अपनी मौज में बिना किसी की सलाह से कर रहा है।

उस ते भिंन कहहु किछु होइ॥
थान थनंतरि एकै सोइ॥

उस मालिक के बगैर दुनिया में कोई ताकत काम नहीं करती। उसके हुक्म से ही पैदाइश और मौत होती है। चिड़िया, कौआ, इन्सान, हैवान सभी में वह परमात्मा है। हिन्दुस्तान में और बाहर रहने वालों में भी वही परमात्मा है।

अपुने चलित आपि करणैहार॥
कउतक करै रंग आपार॥

वह परमात्मा अपने रंग अपने आप ही रचता है। उस परमात्मा को कोई सलाह नहीं दे सकता। दुनियादारों को मालूम नहीं कि वह परमात्मा क्या शक्ति है। वह किस तरह दुनिया का इन्तजाम कर रहा है, यह वह खुद जानता है या कोई महात्मा जानता है। जो भी महात्मा उस परमात्मा तक पहुँचा, वह उस परमात्मा का ही हो गया। कबीर साहब कहते हैं :

सारी सृजन हार की, जाने नाहिं कोए।
के जाणें आपण धनी, या दास दिवानी होऐ॥

मन महि आपि मन अपुने माहि॥
नानक कीमति कहनु न जाइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिस परमात्मा के हमारे शरीर में होने की वजह से सारी दुनिया हमारा मान करती है। जब वह परमात्मा हमारे शरीर में से निकल जाता है,

शरीर में से बदबू आने लग जाती है। हमारे मित्र, रिश्तेदार कहते हैं कि अब इसके साथ हमारा क्या संबंध है?''

इसलिए गुरु नानक साहब कहते हैं कि आप विचार करके देखो! आपको उस परमात्मा का शुक्रगुजार होना चाहिए जिसके होने की वजह से आपकी इतनी शोभा है, इज्जत है।

सति सति सति प्रभु सुआमी॥
गुर परसादि किनै वखिआनी॥

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा सच है उसका कभी नाश नहीं होता। जिन पर गुरुओं की कृपा हुई उन्होंने उस मालिक के साथ मिलाप किया। उन्होंने अपने आप ही आकर बताया कि एक ऐसी हस्ती है जो सदा ही कायम है, जो कभी नहीं बदलती। जन्म-मरण के दुःखों में नहीं है। वह एक परमात्मा है।''

सचु सचु सचु सभु कीना॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना॥

परमात्मा सदा है सच है, उसका कभी नाश नहीं होता। लेकिन करोड़ों में एक महात्मा ही है जो परमात्मा के साथ मिलाप करता है।

भला भला भला तेरा रूप॥
अति सुंदर अपार अनूप॥

गुरु अर्जुनदेव जी के गुरु रामदास जी भल्ले कौम में थे। वे अपने गुरु की तारीफ करते हैं कि इस समय वह परमात्मा भल्ले रामदास के रूप में हैं। वे बड़े ही खूबसूरत हैं। प्रेमी को दुनिया में अपने गुरु से ज्यादा खूबसूरत कोई नज़र नहीं आता। स्वामी जी महाराज अपने गुरु की तारीफ करते हुए कहते हैं :

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे, हो जाए दूर परन्दरी।

बेशक परियों को लोग बहुत सुन्दर कहते हैं लेकिन वे गुरु के स्वरूप की बराबरी नहीं कर सकतीं।

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी॥

गुरु अर्जुनदेव जी उस परमात्मा की तारीफ करते हैं कि तू निर्मल है, पवित्र है। तेरी *सच्चखंड* से उठ रही बानी भी पवित्र है। जो भाग्य वाले लोग इस बानी को सुनते हैं, वे भी पवित्र हो जाते हैं।

पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति॥

परमात्मा पवित्र है। अगर तीन बार, तीन चीजें पवित्र हों तो उनका पुनीत बन जाता है। यानी पवित्रों से पवित्र। वही 'नाम' जप सकते हैं जिनके मन में प्रीति है, जिनकी आत्मा पवित्र है। क्योंकि हमारे पाप हमें नाम की तरफ आने ही नहीं देते। नाम जपने वाला ही मन के साथ मुकाबला कर सकता है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि 'नाम' जपकर हम किसी के ऊपर कोई अहसान नहीं करते। 'नाम' को जपते समय बोझ मत समझो, आलस मत करो। अपने अंदर प्यार और मोहब्बत पैदा करो। मोहब्बत में कोई भी काम बुरा नहीं लगता। अगर हमारे अंदर परमात्मा से मिलने के लिए प्यार और तड़प है तो हम परमात्मा से मिलने के लिए कोई पाप नहीं करेंगे। हम सोचेंगे कि वह परमात्मा पवित्र है और हम भी पवित्र बनें।

❖ ❖ ❖

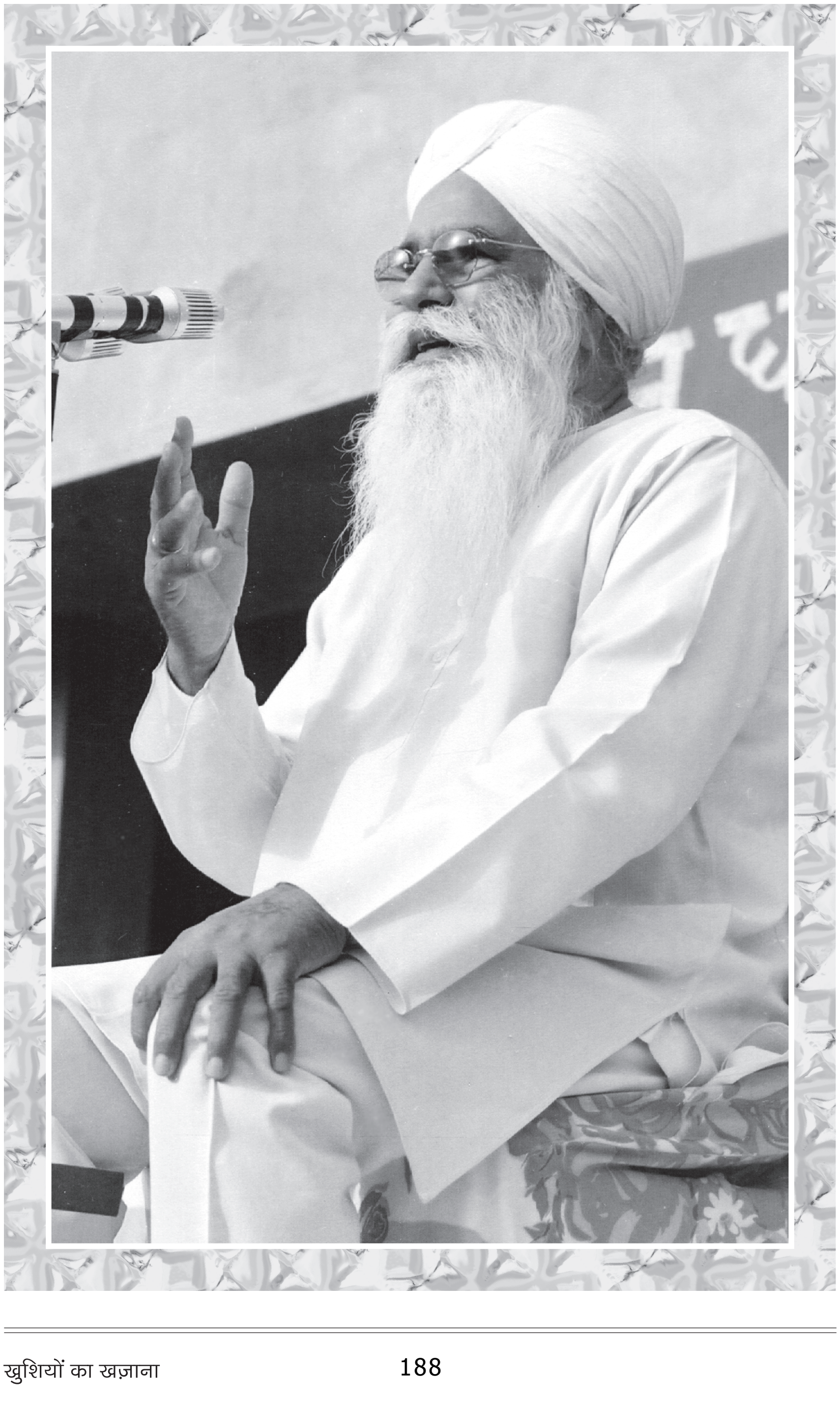

अष्टपदी – तेरह

निन्दा

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार॥
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार॥

महात्मा की जिन्दगी तजुर्बे से गुजरी होती है। उनका कहा गलत नहीं होता। जो लोग उनके वचनों को अपनी जिंदगी का आधार बना लेते हैं, वे सुख और शान्ति से अपने घर *सच्चखंड* वापिस पहुँच जाते हैं। सन्तों की कहानियाँ उन लोगों के लिए फायदेमंद होती हैं, जो उनकी कहानियों पर अमल करते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्तों की शरण में जाने वाला जीव तर जाता है। वह अपनी आत्मा को, जहाँ से यह बिछुड़ी है, वापिस मिला लेता है। जो महात्मा की **निन्दा** करता है, वह बार बार इस संसार में जन्मता मरता है।

संत के दूखनि आरजा घटै॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै॥

गुरु अर्जुनदेव जी इस अष्टपदी में निन्दक की हालत बताते हैं कि **निन्दा** करने वालों की आगे जाकर क्या दुर्दशा होती है।

एक बादशाह की कोई औलाद नहीं थी। किसी ने उससे कहा कि तू यज्ञ कर, तभी औलाद हो सकती है। उसने यज्ञ किया। यज्ञ में बड़े बड़े ऋषि मुनियों को खाना खिलाया गया। मालिक की मौज; उस खाने में साँप ने जहर घोल दिया। जिन लोगों ने पहले खाना खाया, वे सभी मर गए।

बादशाह को बहुत दुःख हुआ कि मैंने यज्ञ तो अपने भले के लिए किया था, लेकिन इससे बहुत से अच्छे लोग मर गए। मेरा पाप कैसे कटेगा? उसने उदास होकर दिल में ख्याल किया कि इससे तो अच्छा है कि मैं इस राज्य को छोड़कर जंगल में जाकर भक्ति करूँ। वह अपना राजपाट छोड़कर बाहर चला गया। वहाँ जाकर उसने पूछा, ''कोई ऐसा घर है जहाँ मैं रात काट सकूँ?'' वहाँ एक विधवा औरत रहती थी। पड़ोस वाले उससे बहुत नफरत करते थे। उन पड़ोसियों ने कहा, ''तू उस औरत के यहाँ रात काट सकता है।'' उनका विचार था कि अगर यह वहाँ रात गुजारेगा तो हम उस औरत की और **निन्दा** करेंगे।

राजा नौजवान और सुन्दर था। उसने, उस औरत के घर जाकर कहा, ''माता मुझे रात काटनी है।'' वह औरत गरीब थी। हर कोई उसकी **निन्दा** करता था। औरत ने कहा, ''भाई! तू बैठ जा। मेरे घर में जैसा भी है तुझे खाने के लिए दूँगी।'' जब रात कट गई, लोग बातें बनाने लगे। उसकी **निन्दा** करने लगे कि यह बदमाश औरत है। इसने जवान आदमी को अपने घर में रखा। बादशाह के ऊपर जो श्राप था, वह सारा उन **निन्दा** करने वालों ने उठा लिया।

भगवान का भेजा हुआ दूत उस बादशाह के पास आया और कहने लगा, ''देख भई बादशाह! तेरा पाप इन लोगों ने ले लिया है। अब भगवान का हुक्म है कि तू जल्दी से जल्दी इस औरत को लेकर यहाँ से निकल जा। क्योंकि यहाँ निन्दक ही निन्दक हैं। पापियों को इसी जगह सजा दी जाएगी।''

बादशाह ने औरत से कहा, ''माता! अगर तू विश्वास करे तो मैं तुझे सच बताऊँ! मैंने औलाद पाने के लिए यज्ञ किया। उसमें साँप ने जहर घोल दिया। खाना खाने से कई ऋषि-मुनि

मर गए। प्रायश्चित करने के लिए मैंने राजपाट छोड़ दिया और सोचा कि भगवान की भक्ति करने से मेरे पाप की मुक्ति हो जाएगी। जब मैं यहाँ आया तो यहाँ के लोगों ने मजाक बनाने के लिए मुझे तेरे घर भेज दिया। तूने मुझे अपना बेटा समझा। मेरी मेहमान-नवाजी की। मेरे दिल में तेरी बड़ी इज्जत है।''

जब लोगों ने **निन्दा** की तो भगवान की कचहरी में इन्हें पाप मिला। अब दूत मुझसे कह रहे हैं, ''तू इस औरत को यहाँ से ले जा, इस गाँव में आग लगने वाली है। अगर तू मुझ पर विश्वास करती है तो मेरे साथ चल।'' औरत ने कहा, ''भाई! मुझे यहाँ के लोग सुखी नहीं रहने देते। मैं तेरे साथ चलती हूँ।'' जब वह उसके साथ चली गई, लोगों ने रही सही कसर भी पूरी कर दी कि वह बदमाश आदमी था, औरत को लेकर भाग गया। तभी उस गांव में आग लग गई। गुरु नानक जी कहते हैंः

सो पापी दा फेड़या, निन्दक दे सिर भार।

कानून सबके लिए एक जैसा है। कहीं कोई यह सोचें, ''हम सतसंगी हैं, जिसकी चाहे **निन्दा** करें।'' बल्कि जानकार को ज्यादा सजा मिलती है। जो अनजान है उसे कम सजा मिलती है। सतसंगी को अगर **निन्दा** करनी है तो अपने मन की करे और बड़ाई अपने सतगुरु की करे।

गुरु-पीर उसकी हामी भरता है जो उसके कहने के मुताबिक अपना जीवन ढालता है। भजन-सिमरन करता है। महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''निन्दा परमार्थ की जड़ काट देती है। आप जिसकी **निन्दा** करते हैं उसके पाप आपके खाते में जमा हो जाते हैं, आपका भजन-सिमरन उसके खाते में जमा हो जाता है।''

संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ॥

सन्त किसी को बददुआ नहीं देते। यह कुदरत का असूल है कि अगर हम सन्त की **निन्दा** करते हैं तो हमारे सुख खत्म होने शुरू हो जाते हैं। काल सजा देता है और नर्क में डाल देता है।

संत कै दूखनि मति होइ मलीन॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन॥

सन्त की **निन्दा** करने से बुद्धि मलीन हो जाती है। वह झूठ बोलने लग जाता है लोग उसका साथ छोड़ने लग जाते हैं। उसकी शोभा घटने लग जाती है। महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''निन्दा करने वाला अपना छोटा होने का सामान बनाता है।''

संत के हते कउ रखै न कोइ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले को कोई भी नहीं रखता। वह जगह भ्रष्ट समझी जाती है। परमात्मा उसे अपने दर पर चढ़ने नहीं देता।

संत क्रिपाल क्रिपा जे करै॥
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै॥

जो सन्तों की **निन्दा** करके भ्रष्ट हो जाता है, वह काल की सजा का हकदार हो जाता है। उसके तरने का एक ही रास्ता है; जिस सन्त की वह **निन्दा** करता है, अगर वही सन्त कृपा करे, तभी उस निन्दक का उद्धार हो सकता है। इसके अलावा उसके उद्धार का और कोई रास्ता नहीं।

संत के दूखन ते मुखु भवै॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै॥

आप कहते हैं, ''सन्त की **निन्दा** करने वाले को जन्मों

जन्मों में लकवे की बीमारी रहती है। उसका मुँह टेढ़ा हुआ रहता है। जैसे कौआ मुंडेर पर आकर बोलने लग जाए तो सारे बुरा मानते हैं। कोयल चाहे काफी दूर से बोलती हो, उसे प्यार से सुनते हैं क्योंकि उसकी बोली में रस होता है। इसी तरह कोई भी निन्दक की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता।'' हर प्रेमी कहता है, ''तू दूर हो जा, मुझसे ऐसी बात न कर।'' इसलिए कौए की तरह निन्दक भी बुरा लगने लग जाता है।

संतन के दूखनि सरप जोनि पाइ॥
संत के दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ॥

आप कहते हैं, ''सन्त का निन्दक गन्दी योनियों में जाता है।''

संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै॥
संत कै दूखनि सभु को छलै॥

सन्त की **निन्दा** करने वाला जहाँ जाकर जन्म लेता है वहाँ उसकी कोई आशा पूरी नहीं होती। वह तृष्णा में जलता रहता है। जो सन्तों की **निन्दा** करता है, वह सबको छलता है। **निन्दा** करने के पीछे उसका कोई न कोई मकसद होता है।

संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले का तेज, पुण्य खत्म होना शुरू हो जाता है। वह नीच से नीच योनियों में जाता है।

द्वापर युग में सन्त दुर्वासा के पास यादवों के कुछ लड़के सांभा नाम के लड़के के पेट पर कुछ बाँधकर कहने लगे, ''महात्मा जी! अगर आप बिल्कुल सच्चे हो तो बताओ इसके पेट में क्या है?'' महात्मा जानते थे कि ये मजाक करने के लिए आए हैं। सन्त दुर्वासा ने कहा, ''इसके पेट में वह चीज है जो

तुम्हारे कुल का नाश करेगी।'' जब यादवों के लड़के घर आए तो उन्होंने सोचा, हमें श्राप मिल गया है। उन्होंने उस लड़के का कपड़ा खोलकर देखा तो उसका शरीर लोहे का बन चुका था। वे कृष्ण भगवान के पास गए। कृष्ण ने उनसे कहा, ''महात्मा का श्राप तो जरूर पूरा होगा।''

अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''निन्दक को यहाँ सुख नहीं। मालिक उसे दरगाह में घुसने नहीं देता। जब यम आकर गले में अंगूठा देते हैं, फिर पछताता है।'' इसे 'नाम' जपकर अपना जन्म संवारना चाहिए था। **निन्दा** करके जन्म बिगाड़ लिया।

निंदक ऐला जन्म गवाँया, निंदक ऐला जन्म गवाँया।
पहुँच ना सके काहूँ बाते, आगे ठौर ना पाया॥

बातों से या किसी की **निन्दा** आलोचना करके भगवान नहीं मिलता। आप निन्दक पर तरस खाकर कहते हैं, ''यह उस बेचारे के अपने बस में नहीं है। उसकी किस्मत में **निन्दा** करनी लिखी थी। जिस तरह सुख-दुःख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तन्दुरुस्ती हम लिखवाकर लाते हैं, अगर यह भी किस्मत में लिखी होती है तो जीव बेचारा इस तरफ लग जाता है। वह कोशिश भी करता है कि **निन्दा** बुरी है लेकिन उसे छोड़ नहीं सकता।''

कहाँ बेगुता जहँ कोई ना राखे, ओह किसपे करे पुकारा।

काल निन्दक को पकड़कर उस जगह फेंकता है, जहाँ वह किसी के आगे चीख पुकार भी नहीं कर सकता। काल के राज्य में न्याय है। जैसा कोई कर्म करता है, काल उसे वैसा ही फल जरूर देता है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हर पापी की गति हो जाती है, लेकिन निन्दक की गति नहीं होती। क्योंकि परमात्मा को ऐसा ही मंजूर है।''

जो जो निन्द करे सन्तन की, त्यों संतन सुख माना।

जैसे जैसे लोग सन्तों की **निन्दा** करते हैं, वैसे वैसे सन्त बहुत सुख महसूस करते हैं। निन्दक उनके पाप धो देता है और साधु पाप से हल्के हो जाते हैं। उनका मन मालिक की तरफ जाने के लिए और भी मजबूत हो जाता है। सच्चा साधु कहता है, ''निन्दो! निन्दो! मुझे तो मालिक से मिलने का शौक है।''

सन्ता टेक तुम्हारी स्वामी, तू संतन का सहाई।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त मालिक का आसरा लेकर संसार मंडल में अपना सफर करते हैं। मालिक हर जगह सन्तों की सहायता करता है।'' परमात्मा ने सन्तों को युगों युगों में रखा है, उनकी मदद करता है और शोभा बढ़ाता है। निन्दकों को गेंद की तरह लुढ़का देता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

कहो नानक संत हर राखे निन्दक दिए रुड़ाई।

संत दोखी का थाउ को नाहि॥
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले का कोई ठिकाना नहीं कि उसे कहाँ पहुँचना है? वह जिस सन्त की निन्दा करता है अगर वह सन्त चाहे और दया करे तभी निन्दक तर सकता है।

संत का निंदकु महा अतताई॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई॥

अगर कोई आदमी अचानक मकान को आग लगा दे और उसमें सोये हुए लोग जलकर मर जाएं! अगर कोई किसी को जहर देकर मार दे! अगर कोई किसी की जमीन पर जबरदस्ती कब्जा कर ले! अगर कोई किसी की स्त्री को उठाकर ले जाए!

अगर कोई किसी सोये हुए आदमी को मार दे! जिसमें यह छह दोष हों उसे आतताई कहते हैं। मगर सन्तों का निन्दक इससे भी ज्यादा पापी है।

संत का निंदकु महा हतिआरा॥
संत का निदंकु परमेसुरि मारा॥

सन्त का निन्दक महापापियों से भी पापी है। वह परमात्मा का मारा हुआ है। लोगों ने कबीर साहब की बहुत **निन्दा** की। उस समय के लोदी बादशाह को भड़काया। कबीर साहब को कई बार मारने की साजिश भी की गई।

कबीर साहब को गठरी में बाँधकर मस्त हाथी के सामने फेंका गया। जंजीरें बाँधकर गंगा में फेंका गया। उस समय हिन्दू-मुसलमान दोनों ही फिरके आपके खिलाफ थे।

पंडित कबीर साहब से ईर्ष्या करते थे। एक बार उन्होंने इश्तिहार छपवा दिए कि इस वक्त कबीर साहब के यहाँ यज्ञ होगा। कबीर साहब गरीब परिवार के थे। पंडितों ने सोचा, यह गुरु कहलवाता है! देखेंगे! यह लोगों को अन्न-पानी कहाँ से खिलवाएगा? बहुत से लोग कबीर साहब के घर पहुँच गए। लोई घबराई। कबीर साहब ने कहा, ''ये अपनी किस्मत लेकर आए हैं। मालिक सबकी लाज रखता है।''

वहाँ रखी टोकरी पर कबीर साहब ने कपड़ा डाला और लोई से कहा, ''मालिक का ध्यान कर! अगर रहती है तो उस मालिक की है। जाती है तो भी उस मालिक की है। तू परमात्मा का सिमरन करके लोगों को अन्न-पानी खिला।'' दुनिया खाना खाकर धन्य-कबीर, धन्य-कबीर कहकर चली गई।

ना हम किया ना करेंगे, ना कर सके शरीर।
क्या जाणा तिस हर पाया, भयो कबीर कबीर॥

कबीर साहब निन्दक को उपदेश करते हुए कहते हैं, ''हे प्यारेओ! आप लोग बड़ी खुशी से मेरी **निन्दा** करो। मुझे निन्दा बहुत प्यारी है। निन्दा को मैं माता और भ्राता के समान समझता हूँ। **निन्दा** करने वाला मुझे बहुत प्यारा है। निन्दा करने वाला हमारा मित्र है। हमें निन्दक का हमेशा ख्याल रहता है। कहीं यह बेचारा बीमार न हो जाए? निन्दक हमारे जीवन को सुधारता है। निन्दक हमें पापों से हल्का करता है। निन्दक डूब जाता है और हम पार हो जाते हैं।''

निन्दो निन्दो मोको लोग निन्दो, निन्दो निन्दो मोको लोग निन्दो।
निन्दा जन को खरी प्यारी, निन्दा बाप निन्दा महतारी॥

सन्त दोस्त और दुश्मन में कोई भेद नहीं समझते। वे न तो खुद **निन्दा** करते हैं और न ही अपने सेवकों को **निन्दा** करने की इजाजत देते हैं। निन्दक हमारी आत्मा की मैल धोता है, हमें उजला करता है।

संत का निंदकु राज ते हीनु॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु॥

आप कहते हैं, ''अगर राज्य मिलता हो और हम सन्तों की **निन्दा** करें तो वह राज्य खत्म हो जाता है। निन्दक जहाँ भी जन्म लेता है, वहाँ दुःख और मुसीबतें ही मुसीबतें उठाता है।''

एक महात्मा का डेरा गाँव से थोड़ी दूर था। उनके पास दो आदमी आया करते थे। उन दोनों में से पहला आदमी रोजाना महात्मा को दूध देकर आता। दूसरा आदमी रोजाना उस महात्मा को पत्थर मारकर आता। मालिक की मौज एक दिन बहुत तेज तूफान चल रहा था। पहला आदमी महात्मा को दूध देने जा रहा था। रास्ते में उसके पैर में काँटा चुभ गया। वह वहीं बैठ गया।

दूसरा आदमी महात्मा को पत्थर मारकर वापिसी में पहले

वाले आदमी के पास आकर बैठ गया। उसने मिट्टी खोदनी शुरू की। उसे मिट्टी में से एक गागर मिली उस गागर में एक मोहर और बाकी राख थी।

उसने पहले वाले आदमी से कहा, ''मैं रोज महात्मा को पत्थर मारकर आता था। आज मुझे यह गागर मिली है जिसमें एक मोहर है, बाकी राख है। अगर राख न होती तो मेरे पास कितना धन होता?'' पहले वाला आदमी जो महात्मा को दूध देकर आता था, उसने अपने पैर में से काँटा निकाला और महात्मा के पास जाकर पूछने लगा, ''बाबा जी! मैं आपको रोज दूध देने आता हूँ, आज मेरे पैर में काँटा चुभ गया। जो आपको रोजाना पत्थर मारकर जाता है उसे आज मोहरों से भरी गागर मिली है जिसमें सिर्फ एक मोहर है बाकी राख है।''

महात्मा ने कहा, ''देख बेटा! आज तुझे सूली पर चढ़ना था। तू मुझे रोज दूध लाकर देता है, मेरी सेवा करता है। इसलिए सूली की सूल बन गई है। उसे आज मोहरों से भरी गागर मिलनी थी। लेकिन जैसे जैसे वह पत्थर मारता गया, मोहरें राख बनती गई। सिर्फ एक मोहर इसलिए बची रह गई ताकि वह समझ सके कि **निन्दा** करने का यह फल मिलता है। अगर एक भी मोहर न बचती तो वह यह समझता कि सारी गागर राख से भरी हुई है।''

संत के निंदक कउ सरब रोग॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग॥

सन्त के निन्दक को जहाँ भी जन्म मिलता है, उसे रोग ही लगे रहते हैं। उसका मालिक से सदा ही वियोग बना रहता है।

संत की निंदा दोख महि दोखु॥
नानक संतभावै ता उसका भी होइ मोखु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त का निन्दक दुःख में ज्यादा दुःखी रहता है। अगर सन्त चाहें तो वे उस निन्दक का भी उद्धार कर सकते हैं।''

संत का दोखी सदा अपवितु॥
संत का दोखी किसै का नही मितु॥

आप कहते हैं, ''सन्त की **निन्दा** करने वाला अपवित्र होता है। वह किसी का भी मित्र नहीं होता।''

महात्मा रविदास जी चमार जाति में हुए। हिन्दुस्तान में चमार जाति को काफी नीची जाति समझा जाता है। मेड़ता की रानी मीराबाई के दिल में मालिक से मिलने का शौंक उठा, वह काशी गई। वह उन पंडितों से मिली जो उनके कुल का श्रौत थे। मीराबाई ने पंडितों से मालिक के मिलने की युक्ति पूछी। लेकिन वे पंडित तसल्ली नहीं करा सके।

किसी ने मीराबाई को रविदास के बारे में बताया। वह रविदास जी के पास गई, उनसे 'नामदान' प्राप्त किया। वह अभी काशी में ही थी कि पंडितों ने राजा को बड़ी घृणात्मक बातें बताई कि मीराबाई ने एक चमार को गुरु धारण कर लिया है। जब रानी घर आई तो उसे काफी कष्ट दिए गए।

आखिर एक दिन मीराबाई ने रविदास जी से कहा, ''गुरुदेव आप मेरे घर अपने चरण डालकर मेरे घर को पवित्र करें।'' रविदास मीराबाई के प्रेम को देखकर उसके घर आये। जब खाना तैयार हुआ, पंडितों ने विरोध किया कि अगर यह नीच जाति का पंगत में खाना खाने बैठेगा तो हम खाना नहीं खायेंगे।

उस समय बहुत छूआछूत थी। रविदास कहने लगे, ''देख बेटी! मैं तेरी इज्जत बनाने के लिए यहाँ आया हूँ। अगर मेरे

बैठने से कोई विघ्न पड़ता है तो मैं पंगत में नहीं बैठूँगा। मैं दूसरी तरफ बैठकर खाना खा लूँगा। तुम इन्हें खिलाओ।'' जब पंडित खाना खाने लगे, मालिक की ऐसी मौज हुई कि सब पंडितों को लगने लगा कि रविदास उनके साथ खाना खा रहा है। पंडित कहने लगे, ''अंधेर-अंधेर।''

रविदास जी उन निन्दकों को उपदेश देते हुए कहते हैं, ''अगर आप अड़सठ तीर्थ नहा लो, बारह शिला के दर्शन करने के बाद भी **निन्दा** करो तो इन सबका फल निष्फल जाता है।''

जहाँ पानी की दिक्कत हो, लोग प्यासे मरते हों, कोई कुआँ लगवा दे! फिर भी वह **निन्दा** करे तो उसका सारा दान बेकार चला जाता है।

साधु का निन्दक किसी भी तरीके से बच नहीं सकता। उसके सिर के ऊपर नर्क मंडरा रहा होता है। मौत के बाद वह नर्क में जरूर जाता है।

ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र की धरती पर कोई अपनी औरत के सारे गहने दान कर दे। सारे वेद-शास्त्र सुने। भूखों को रोटी खिलाए। भूमिदान करे। गरीबों के लिए मकान बनवा दे। तो भी उसका सारा दान निष्फल जाता है। अपना बिगाड़ कर दूसरे का भला करे, फिर भी वह **निन्दा** करे तो उसका पुण्य किसी भी लेखे में नहीं है।

संत के दोखी कउ डानु लागै॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै॥

सन्त के निन्दक को दरगाह में दंड मिलता है। सन्त के निन्दक को उसके सारे रिश्तेदार, यार-दोस्त छोड़ जाते हैं।

संत का दोखी महा अहंकारी॥
संत का दोखी सदा बिकारी॥

निन्दक को बहुत अहंकार होता है। वह कहता है, ''मैं सच्चा हूँ।'' वह हर जगह जाकर **निन्दा** करता है। उसको दुनिया के सब विषय-विकार और पाप आकर घेर लेते हैं।

संत का दोखी जनमै मरै॥
संत की दूखना सुख ते टरै॥

सन्त की **निन्दा** करने वाला जन्म-मरण में लगा रहता है। उसके सुख खत्म हो जाते हैं और उसे दुःख घेर लेते हैं।

संत के दोखी कउ नाही ठाउ॥
नानक संत भावै ता लए मिलाइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त के निन्दक का कोई ठिकाना नहीं। अगर महात्मा चाहे तो उसे मालिक के दरबार में ले जा सकता है।''

संत का दोखी अध बीच ते टूटै॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले का कोई भी मनोरथ पूरा नहीं होता। वह जहाँ पहुँचना चाहता है, वहाँ नहीं पहुँच सकता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर कोई बिना लज्जत गुनाह है तो वह **निन्दा** है। हर इन्द्रिय से कोई न कोई स्वाद मिलता है लेकिन **निन्दा** इन्द्रिय से कुछ नहीं मिलता। न यह कड़वी है न मीठी है, इन्सान ऐसे ही इससे चिपटा हुआ है।''

संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त के निन्दक को यह सजा मिलती है। वह जीता और मरता है।''

संत का दोखी अंतर ते थोथा॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले के अंदर कुछ नहीं रहता। उसकी रूहानियत खत्म हो जाती है क्योंकि उसकी आत्मा अंदर से लानत देती है कि तू गुनाह कर रहा है। वह इस तरह थोथा होता है जैसे साँस के बिना शरीर थोथा होता है।

संत के दोखी की जड़ किछु नाहि॥
आपन बीजि आपे ही खाहि॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले की कोई जड़ नहीं। वह अपना बीजा खुद ही खाता है। जहाँगीर ने गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया। उनके सिर पर गर्म रेत डलवाई। उसके दिल में यह ख्याल था कि यह पूरे सन्त नहीं, पाखंडी हैं। लेकिन तजुर्बा बताता है कि आज जहाँगीर का नाम तक लेने वाला कोई नहीं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के जगह जगह गुरुद्वारे बने हुए हैं। जिस दिन उन्हें गर्म तवे पर बिठाया गया था, आज भी उस दिन हिन्दुस्तान में जगह जगह मीठे पानी की छबीलें लगाई जाती हैं।

कहने का मतलब, जब तक दुनिया है, महात्मा की जड़ रहती है। ईसा मसीह, गुरु नानक, मोहम्मद साहब को गए हुए कितने ही साल हो गए। आज भी लोग उन्हें प्यार से याद करते हैं, उनका नाम लेकर खाना खाते हैं।

पंजाब में एक गाँव सन्धु है; मुझे उस गाँव में रहने का मौका मिला। यह गाँव पाँच-छह सौ साल पुराना है। जिस वक्त यह गाँव आबाद हुआ, पंजाब में इतनी आबादी नहीं थी। इस गांव में एक कमाई वाला साधु रहता था। वहाँ के लोगों ने एक

किला बनाने का विचार किया। साधु की झोपड़ी किले के अंदर लेनी चाही। साधु ने कहा, ''तुम पीछे की जगह ले लो।'' गाँव के लोग नहीं माने। इस मामूली सी बात के कारण उस गाँव के लोगों ने उस साधु को मार डाला।

साधु ने कहा था, ''तुम्हारा यह सब ऐसे ही पड़ा रह जाएगा।'' मालिक की मौज, तब वहाँ आठ घर थे, आज भी वहाँ आठ ही घर हैं। मैंने उनसे पूछा कि आपका रुतबा तो काफी है। क्या बात है? उस गाँव के लोगों ने मुझे सारी कहानी सुनाई कि हमारे बुजुर्गों ने एक साधु को मार डाला था। यह उस साधु का श्राप है कि हम लोग कभी नहीं फले-फूलेंगे। कहने का भाव, दुनिया इस फल को खाती भी है और पछताती भी है।

सन्त-महात्मा भी यही विचार करते हैं और वेदों में भी यही लिखा है कि मालिक के प्यारे अपने मुँह से जो वचन निकालते हैं वे सच होते हैं। दुनिया के लोग यह समझते हैं कि **निन्दा** करने से हमारी बड़ाई होगी। वे अंहकार से जल रहे होते हैं, रुहानियत का पेड़ काट रहे होते हैं। महात्मा का किसी के साथ कोई बैर-भाव नहीं होता। जब लोग महात्माओं के साथ बैर-भाव करते हैं, धर्मराय न्याय करता है। जिसका जैसा ऐब होता है वह उसको वैसी सजा देता है।

संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु॥
नानक संत भावै ता लए उबारि॥

सन्त की **निन्दा** करने वाले को कोई अपने पास नहीं रखता। वह जिस सन्त की **निन्दा** करता है, वही सन्त उसका उद्धार कर सकता है।''

संत का दोखी इउ बिललाइ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ॥

सन्त की **निन्दा** करने वाला इस तरह तड़पता है जैसे मछली पानी के बिना तड़पती है। वह तड़प तड़प कर मरता है।

संत का दोखी भूखा नही राजै॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै॥

परमात्मा निन्दक को चाहे कितना भी धन-पदार्थ दे दे, उसकी तृष्णा लकड़ियों में लगी आग की तरह नहीं बुझती।

संत का दोखी छुटै इकेला॥
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला॥

सन्त की **निन्दा** करने वाला अन्त में बिल्कुल अकेला रह जाता है। उसके सारे रिश्तेदार, यार-दोस्त उसका साथ छोड़ जाते हैं। वह तिल के उस बूटे की तरह है जिसमें फूल तो लगते हैं लेकिन अंदर दाना नहीं होता। जमींदार लोग उस बूटे को खेतों में ही छोड़ आते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जो लोग गुरु-पीरों का कहना नहीं मानते, अपने आपको समझदार समझते हैं, सतगुरु उन्हें इस तरह अलग छोड़ देते हैं, जिस तरह जमींदार उस तिल के बूटे को खेतों में ही छोड़ आते हैं।''

आपके कहने का भाव यह है कि निन्दक के बेटे-बेटियाँ भी होती हैं, उसके पास धन-दौलत भी होता है, उसकी सेहत भी अच्छी होती है। चाहे वह कितना भी जप-तप करे, मालिक उसे लेखे में नहीं लेता। उसने **निन्दा** करके इतना बोझ उठा लिया होता है कि उसके सारे जप-तप और पुण्य खत्म हो जाते हैं।

संत का दोखी धरम ते रहत॥
संत का दोखी सद मिथिआ कहत॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''सन्त की **निन्दा** करने वाले के सब धर्म नष्ट हो जाते हैं। वह हमेशा झूठ बोलता है।''

किरतु निंदक का धुरि ही पइआ॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ॥

आप कहते हैं, ''उसके कर्मों में **निन्दा** मालिक की तरफ से ही लिखी है। चाहे वह सन्तों के दरबार में चला जाए, वह बेचारा उस बगुले भगत की तरह है जो मानसरोवर में जाकर भी मेंढक ढूँढता है।'' हजरत बाहु निन्दक के लिए अपना विचार इस तरह जाहिर करते हैं :

तुम्मै तरबूज कदे ना हुन्दे बाहु, चाहे तोड़े तोड़ मक्के लै जाइऐ हु।

तुम्बे का तरबूज कभी नहीं बनता। हम चाहे उसे मक्के की यात्रा ही क्यों न करवा लाएं।

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ॥
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ॥

सन्तों की **निन्दा** करने वाले को बुरी योनि मिलती है। उसे दरगाह में सजा मिलती है। वह सन्तों के पास 'नाम' जपने के लिए गया था लेकिन निन्दक बन गया।

संत का दोखी सदा सहकाईऐ॥
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ॥

सन्त की **निन्दा** करने वाला जन्म-मरण में पड़ा रहता है। वह बेचारा अनेकों योनियों में जन्म लेता और मरता है।

संत के दोखी की पुजै न आसा॥
संत का दोखी उठि चलै निरासा॥

हम ईर्ष्या की वजह से **निन्दा** करते हैं कि इस महात्मा का इतना मान क्यों है? लोग हमें क्यों नहीं मानते? दिल में ख्याल आता है कि अगर हम इस महात्मा की **निन्दा** करके इसे बेइज्जत कर दें तो लोग हमें मानने लग जाएंगे। जब हमारी आशा पूरी नहीं होती तो हम निराश होकर सन्तों की **निन्दा** करने लग जाते हैं। धर्मराज सजा देता है कि तुझे सन्तों के पास 'नाम' की कमाई के लिए भेजा था, लेकिन तू निन्दक बन गया।

संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ॥
जैसा भावै तैसा कोई होइ॥

पइआ किरतु न मेटै कोइ॥
नानक जानै सचा सोइ॥

अगर जीव की किस्मत में **निन्दा** करना ही लिखा है तो चाहे वह सारी जिन्दगी सन्तों की संगत में रहे, **निन्दा** ही करेगा।

गुरु गोविंद सिंह जी का एक सेवक गंगू ब्राह्मण था। उसने इक्कीस साल तक आपकी रसोई की, सतसंग सुना। जब मुगल फौजों का जोर पड़ा तो गुरु गोविंद सिंह जी को आनन्दपुर छोड़कर मुरन्डा गाँव जाना पड़ा। तब गंगू ब्राह्मण आपके दो मासूम बच्चों और माता को लेकर अपने घर चला गया। उसने इनाम पाने के लालच में आपके मासूम बच्चे मुसलमान हाकिमों के हाथ सौंप दिए। ढाई सौ साल बाद गंगू ब्राह्मण महाराज सावन सिंह जी की संगत में आया। आप सोचकर देख लो! इन ढाई सौ सालों में उसने दुःखों की कितनी योनियाँ पाई होंगी?

सुन्दरदास, महाराज सावन सिंह जी का खास नजदीकी था। उसने मुझे बताया कि गंगू इस जन्म में आकर भी लोगों की चुगलियाँ करता था। कई प्रेमी उससे ईर्ष्या करते। प्रेमियों ने

महाराज सावन से शिकायत की कि यह चुगलियाँ करता है। महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''तुम पहचानते हो, यह कौन है? यह वही गंगू ब्राह्मण है जिसने इक्कीस साल गुरु गोविंद सिंह जी का नमक खाकर उनके बच्चे मुसलमान हाकिमों को सौंप दिए थे।'' सन्तों को अपने बिरद की लाज होती है। उन्होंने फिर भी उसका उद्धार किया।

निन्दक जीवे जुगन जुग, काम हमारा होए।
काम हमारा होए, बिन कोड़ी को चाकर॥

अगर हम सन्त-महात्माओं की **निन्दा** करते हैं तो वह हमारी नकल नहीं उतारते। ओछा आदमी हमेशा ही सफाई पेश करता है, समझदार आदमी वक्त की इन्तजार में रहता है। महात्मा वक्त की इन्तजार में होते हैं कि वक्त अपने आप ही बता देगा। कमाई वाले महात्मा का सतसंग सुनकर उनकी किताबें पढ़कर देखें, वे कभी किसी की **निन्दा** नहीं करते। बल्कि वे निन्दक के साथ प्यार करते हैं।

पल्टू साहब कहते हैं, ''निन्दक की उम्र चार युगों की हो जाए। वह युगों युगों तक जीवित रहे क्योंकि हमारा काम निन्दक की वजह से ही हो रहा है।'' आप कहते हैं कि हर कोई नौकरी माँगता है, लेकिन निन्दक बिना नौकरी हमारा काम करता है।

जिस तरह किसी आदमी की कमर दुखने लग जाती है, वह थक जाता है तो कमरकसा बाँध लेता है। इसी तरह निन्दक का कमरकसा बंधा होता है। वह जहाँ भी जाता है, सन्तों को उजागर करता है। सन्तों का प्रचार करने वाला निन्दक ही है। वह सबको बताता है कि यह साधु-सन्त नहीं। प्रेमियों को ख्याल आता है कि चलो चलकर देखें तो सही! प्रेमी जाकर देखते हैं; वे महसूस करते हैं कि यह तो पूरा सन्त है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग करने के लिए ऐबटाबाद गए। वहाँ के प्रेमियों ने महाराज जी से कहा कि कोई इश्तेहार वगैरह निकलवा दिया जाए। महाराज जी ने कहा, ''आप क्यों फिक्र करते हो? कुछ समय बाद ही वहाँ के अकाली और आर्यसमाजी भाई लाउडस्पीकर लेकर मुनियादी करते हुए नज़र आए। वे कह रहे थे, ''राधास्वामियों का गुरु आया हुआ है। उसकी आँखों में इतनी कशिश है, वह आँखों से जादू कर देता है। आप लोग वहाँ मत जाना।'' महाराज जी चौबारे पर खड़े यह सब देख रहे थे। आपने प्रेमियों से कहा, ''देखो भई! ये आपका काम कर रहे हैं।''

वहाँ इतनी संगत आई कि पंडाल छोटा पड़ गया। सतसंग सुनने के बाद आम प्रेमियों को यह कहते हुए सुना गया कि भला हो उन अकाली और आर्यसमाजी भाइयों का, जिन्होंने ऐसे गुरु के बारे में जानकारी दी। अगर वे **निन्दा** न करते तो हम ऐसे गुरु से न मिल पाते। कहने का भाव, कि निन्दक हमेशा ही सन्तों को उजागर करते हैं। महात्मा चतुरदास जी कहते हैं :

पता नहीं की जादू लिखया, सतगुरु वाले वेहड़े।
औथों मुड़के कोई ना औंदा, पैर टिकौंदे जैहड़े॥
औथे जाके फैसले हुन्दे, मजहब वाले झोड़े।
चतुर हीर नू मिल गया राँझा की करण हुण खेड़े॥

हमें अपनी उतनी फिक्र नहीं होती जितनी फिक्र हमारा निन्दक करता है। वह दिन-रात गालियाँ निकालता है।

सन्त बड़े दृढ़ विश्वास के साथ दुनिया में आते हैं। वे निन्दक के डराने से नहीं डरते। वे हम जीवों का भ्रम निकालने के लिए आते हैं। निन्दक ही ऐसा है जो बिना मजदूरी के भार उठाता है और भक्त का भार हल्का करता है। पल्टू साहब कहते हैं :

सुनके निन्दक मर गया, पल्टू दिया रोए।
निन्दक जीवे जुगन जुग, काम हमारा होए॥

सन्तों का कोई दुनियावी नुकसान हो जाए तो वे नहीं रोते। लेकिन जब वे यह सुनते हैं कि निन्दक मर गया है तो बहुत रोते हैं। वे जानते हैं कि निन्दक के प्रचार से ही उनका काम बनता है। अगर कोई कमाई वाले महात्मा की **निन्दा** कर रहा है तो आप उसके नजदीक मत जाओ। अगर आपके सामने **निन्दा** करता है तो आप अपने कान बन्द कर लो।

एक बार मैं महाराज कृपाल के पास खड़ा था। एक प्रेमी ने महाराज जी से कहा, ''मेरा भजन नहीं बनता।'' हजूर ने उससे कई किस्म के सवाल किए कि तू काम, क्रोध के वश होगा। कहीं चोरी न करता हो? हँसते हँसते उससे पूछने लगे, ''भाई! कहीं **निन्दा** तो नहीं करता?'' उसने कहा, ''नहीं जी।'' फिर महाराज ने पूछा, ''कहीं **निन्दा** तो नहीं सुनता?'' उसने कहा, ''हाँ जी।'' महाराज ने कहा, ''**निन्दा** करने वाला और सुनने वाला एक जैसा ही होता है।''

पल्टू साहब कहते हैं, ''अगर आप सन्तों की **निन्दा** सुनते हैं तो आपको पाप लगेगा। पाप की वजह से आप नर्कों में जाएंगे। अगर आपका मित्र सन्तों का निन्दक हो जाए तो उसे दुष्ट समझकर उसका साथ छोड़ दो। सन्तों की **निन्दा** करने या सुनने वाला नर्क में जाकर भिखारी बनता है।''

भगवान भी निन्दक को देखकर प्रणाम करता है कि तू धन्य है! तूने मेरे भक्त के पाप धो दिए, उसे उज्ज्वल कर दिया। तेरे **निन्दा** के प्रताप से ही सन्त सारी दुनिया में जाने गये।

सभ घट तिस के ओहु करनैहारु॥
सदा सदा तिस कउ नमसकारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''दोस्त, पशु, पक्षी सभी में वह परमात्मा है। हम हर आत्मा को परमात्मा समझकर नमस्कार करते हैं।''

प्रभ की उसतति करहु दिनु राति॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''आप दिन रात परमात्मा की महिमा गाओ। उसका भजन-सिमरन करो।''

सभु कछु वरतै तिस का कीआ॥
जैसा करे तैसा को थीआ॥

सब कुछ परमात्मा के हुक्म से हो रहा है। वह परमात्मा जानता है कि किसको मैंने अपने साथ मिलाना है, किसको इस संसार में चक्कर लगवाने हैं, किससे **निन्दा** करवानी है, किससे 'नाम' की कमाई करवानी है।

अपना खेलु आपि करनैहारु॥
दूसर कउनु कहै बीचारु॥

गुरुमुख जानता है कि परमात्मा ने यह खेल रचाया हुआ है। वह परमात्मा सब कुछ आप ही करता है।

जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ॥
बडभागी नानक जन सेइ॥

जिस पर परमात्मा दया-मेहर की बख्शिश करता है, उसे 'नाम' के साथ मिलाए रखता है। जो 'नाम' के साथ जुड़ा रहता है, वही ऊँचे भाग्य वाला है ।

❖ ❖ ❖

परमात्मा का आसरा

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज फरमाते हैं, ''हे श्रेष्ठ पुरुषो! उस परमात्मा की भक्ति का आसरा रखो। परमात्मा की भक्ति करने से जन्म-मरण का डर खत्म हो जाएगा। हमारे अंदर शान्ति पैदा हो जाएगी।''

मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु॥
देवन कउ एकै भगवानु॥

इन्सान दुनिया में रिश्तेदारों का आसरा रख रहा है। इन्सान की परवरिश करने वाला एक परमात्मा ही है।

जिस कै दीऐ रहै अघाइ॥
बहुरि न त्रिसना लागै आइ॥

परमात्मा जिसे 'नाम' का धन देता है, उसे भरपूर कर देता है। जब हमारे अंदर 'नाम' प्रगट हो जाता है, फिर दुनिया की कोई तृष्णा नहीं रह जाती। इन्सान की ख्वाहिशें ही इन्सान को कंगाल बनाए रखती हैं। महाराज सावन सिंह जी कहते थे :

जिसको कछु ना चाहिए सो ही शहनशाह।''

मारै राखै एको आपि॥
मानुख कै किछु नाही हाथि॥

आप कहते हैं कि मारने वाला और रखने वाला परमात्मा है। सब कुछ परमात्मा के हाथ में है। इन्सान के हाथ में कुछ भी नहीं। हम सोचते हैं कि हम अपनी परवरिश अपने आप ही कर रहे हैं। जिन महात्माओं की आँखें खुल गई हैं, वे कहते हैं, ''सबकी परवरिश और रक्षा करने वाला परमात्मा ही है।''

तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ॥
तिस का नामु रखु कंठि परोइ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा के हुक्म को पहचान कर ही सुख हो सकता है। उस परमात्मा का 'नाम' उठते-बैठते, सोते-जागते हमारे मन में बस जाना चाहिए।''

सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ॥
नानक बिघनु न लागै कोइ॥

आप कहते हैं, ''उठते-बैठते, सोते-जागते, चलते-फिरते सिमरन जुबान पर चढ़ जाना चाहिए। जिनका सिमरन इस तरह का हो जाता है उनके रास्ते में कोई रुकावट नहीं आती।'' कबीर साहब कहते हैं :

सुपने हो बरड़ाइके, जे मुख निकसे नाम।
ताके पग की पनही, मेरे तन को चाम॥

अगर सपने में बड़बड़ाते हुए भी किसी के मुँह से 'नाम' निकलता है तो मैं उसके पैरों में अपने शरीर की जूती बनाकर भी पहनाने के लिए तैयार हूँ।

उसतति मन महि करि निरंकार॥
करि मन मेरे सति बिउहार॥

आप कहते हैं, ''हमें हमेशा परमात्मा की महिमा गानी

चाहिए। उसने हम पर बहुत परोपकार किया है। इन्सान को चौरासी लाख योनियों का सरदार बनाकर भेजा है।''

निरमल रसना अंम्रितु पीउ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ॥

सिमरन आत्मा के लिए झाड़ू का काम करता है। हम जिस जगह झाड़ू लगाते हैं, वह जगह साफ हो जाती है। इसी तरह सिमरन करने से हमारी जुबान और आत्मा पवित्र हो जाती है। परमात्मा पवित्र है। आत्मा पवित्र होकर परमात्मा से मिल जाती है। आत्मा को परमात्मा से मिलाने का यही साधन है कि ज्यादा से ज्यादा सिमरन किया जाए।

नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु॥

आप कहते हैं, ''हमें इन आँखों से परमात्मा का दर्शन करना है। जब हम सच्चे महात्मा की संगत में जाते हैं, तो दुनिया की कुसंगत के रंग खत्म हो जाते हैं।''

चरन चलउ मारगि गोबिंद॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद॥

पापों को उतारने की दवाई 'शब्द-नाम' की कमाई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

सर्व रोग का औखद नाम।

कर हरि करम स्रवनि हरि कथा॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''इन हाथों से साध संगत की सेवा करनी है। *सच्चखंड* से उठ रहे शब्द को कानों से सुनना

है। जब हम दिन-रात उस शब्द को सुनते हैं तो परमात्मा हमें अपनी दरगाह में मान देता है।''

बडभागी ते जन जग माहि॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि॥

ऊँचे भाग्य वाले वही हैं जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। साध-संगत में जाते हैं। तुलसी साहब कहते हैंः

धन दारा सुत लक्ष्मी, पापी के भी होय।
सन्त समागम हर कथा, तुलसी दुर्लभ होय॥

राम नाम जो करहि बीचार॥
से धनवंत गनी संसार॥

हम दुनिया का धन-पदार्थ इकट्ठा करते हैं। इनका सम्बंध हमारे शरीर के साथ होता है। अन्त में जब मौत आती है शरीर में से आत्मा निकल जाती है। तन यहीं पर रह जाता है। आप कहते हैं, ''वही धनवंते हैं, जो दिन-रात 'नाम' की कमाई करते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं :

कहत कबीर निर्धन है सोई, जाके हृदय नाम ना होई।

मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी॥
सदा सदा जानहु ते सुखी॥

शान्ति 'नाम' में है। जिनके अंदर 'नाम' प्रगट है, वे तन से भी सुखी हैं, मन से भी सुखी हैं। वे दुनिया में शान्ति से रहते हैं। सहजोबाई कहती हैंः

धनवंते अति दुःखी, निर्धन दुःख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे, जिन पाया भेद अनूप॥

एको एकु एकु पछानै ॥
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिन्होंने **परमात्मा का आसरा** ले लिया या उसे अपने अंदर प्रगट कर लिया, उन्हें इस संसार की और अगली दुनिया की समझ है। वे जब आँखें बंद करते हैं तो मालिक के दरबार में होते हैं। आँखें खोलते हैं तो इस संसार में होते हैं। उनका एक पाँव यहाँ है तो दूसरा *सच्चखंड* में है।''

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥

आप कहते हैं, ''जिनका 'नाम' के साथ सम्पर्क पैदा हो गया, जिन्होंने 'नाम' को प्रगट कर लिया, उन्होंने ही परमात्मा को जाना है। क्योंकि 'नाम' ही परमात्मा है।''

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥

'नाम' को हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। सतगुरुओं की कृपा से ही 'नाम' प्राप्त किया जा सकता है।''

साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''साधु से मिलकर ही हम परमात्मा का गुणगान कर सकते हैं। 'नाम' की कमाई कर सकते हैं।''

अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥

गृहस्थ में रहते हुए वही मुक्त हैं जो उस 'शब्द' को सुन रहे हैं, वह 'शब्द' दिन-रात हमारे अंदर धुनकारा दे रहा है।

एक ऊपरि जिसु जन की आसा॥
तिस की कटीऐ जम की फासा॥

आप कहते हैं कि जिनकी एक गुरु पर आस है, जो सतगुरु के भाणें में रहते हैं, चाहे सुख है या दुःख है; उनके पास यम नहीं आएंगे। जब गुरुमत में आए हैं तो गुरु को मजबूत होकर पकड़ना है। जो कुछ भी है सतगुरु के हाथ में ही है। प्रेमी को सतगुरु का भाणां मानना चाहिए।

पारब्रहम की जिसु मनि भूख॥
नानक तिसहि न लागहि दूख॥

आप कहते हैं, ''जिनके अंदर मालिक से मिलने की भूख है, प्यास है, तड़प है, उनको जन्म-मरण का दुःख नहीं लगेगा।''

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै॥

गुरु साहब कहते हैं कि जिन लोगों के अंदर 'नाम' बस जाता है वे दुनिया की किसी भी मुसीबत को देखकर नहीं डोलते। वे दुःख में भी खुश हैं, सुख में भी खुश हैं। जिस तरह तूफान आने पर बड़े बड़े पेड़ टूट जाते हैं; इसी तरह जब जिंदगी में बड़ा कष्ट आता है तो मजबूत रहना किसी महात्मा का ही काम है।

जिसु प्रभु अपुना किरपा करै॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै॥

जिनके ऊपर परमात्मा अपनी दया-मेहर करता है, वे दुनिया से नहीं डरते। दुनिया छोटी है और परमात्मा बड़ा है। जिनके सिर पर परमात्मा का हाथ है, दुनिया उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। बड़े बड़े महात्मा इस संसार में आए। दुनिया ने उनको

बहुत कष्ट दिए। लेकिन उन्होंने परमात्मा को नहीं छोड़ा। वे सच्चाई का होका देते रहे। हजूर महाराज कहा करते थे, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?''

जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ॥

वह परमात्मा जैसा है वैसा ही नज़र आता है। वह युक्ति से हर एक के अंदर समाया हुआ है।

सोधत सोधत सोधत सीझिआ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ॥

गुरु साहब कहते हैं कि हमने अच्छी तरह समझा और विचारा है कि गुरु की कृपा के बिना कुछ भी नहीं होता। हमें यह समझ गुरु रामदास जी की कृपा से ही आई है। इसमें उन्हीं की बड़ाई है।

जब देखउ तब सभु किछु मूलु॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु॥

आप कहते हैं, ''जल में भी परमात्मा है, थल में भी परमात्मा है। जिस सृष्टि को हम आँखों से देख रहे हैं वह भी परमात्मा ने बनाई है। जिसे नहीं देख रहे, वह भी उसी परमात्मा की बनाई हुई है। स्थूल और सूक्ष्म में भी वही है।''

नह किछु जनमै नह किछु मरै॥
आपन चलितु आप ही करै॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''न कोई जन्मता है, न मरता है। आत्मा सदा अमर है। यह जन्म-मरण में नहीं आती। जिस तरह हम कपड़े उतार देते हैं, आत्मा शरीर को छोड़ देती है।''

आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि॥
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि॥

आप कहते हैं, ''आना जाना परमात्मा ने एक खेल बनाया हुआ है। उसकी दृष्टि सब जगह काम करती है। जिस सृष्टि को हम देख रहे हैं और जिस सृष्टि को हम नहीं देख रहे, ये परमात्मा ने अपनी आज्ञा से बनाई है।''

आपे आपि सगल महि आपि॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि॥

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा हर जगह है। कीड़ी में भी वही है, हाथी में भी वही है। यह सब उसका खेल है।''

अबिनासी नाही किछु खंड॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड॥

परमात्मा अविनाशी है। उसका कभी नाश नहीं हुआ। उसके बनाए खंड-ब्रह्मांड भी उसके हुक्म के बगैर नाश नहीं होते।

अलख अभेव पुरख परताप॥
आपि जपाए त नानक जाप॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा अलख है, अभेद है। उसका भेद नहीं पाया जा सकता। जब तक पूरा गुरु हम पर कृपा न करे या वह परमात्मा खुद चोला धारण करके हमें अपना भेद न बताये, तब तक हम उससे नहीं मिल सकते।''

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत॥

गुरु साहब कहते हैं कि जिसने परमात्मा को प्रगट कर

लिया, सारा संसार उसकी शोभा करता है। जिस महात्मा ने परमात्मा को प्रगट कर लिया, उससे मंत्र लेकर सारा संसार तर सकता है। क्योंकि सन्त महात्मा अपना कमाया हुआ मंत्र देते हैं। उनके मंत्र के पीछे उनकी चार्जिंग काम करती है।

प्रभ के सेवक सगल उधारन॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन॥

आप कहते हैं, ''जो प्रभु के सेवक बन जाते हैं, वे उस परमात्मा को अपने आप में प्रगट कर लेते हैं। परमात्मा की तरफ से उनके ऊपर कोई नियम नहीं होता। परमात्मा ने उन्हें भंडारी बनाकर भेजा होता है। वे तो सारी सृष्टि का उद्धार करने के लिए आते हैं। जिनका नसीब होता है वे ही उनके पास आकर फायदा उठा सकते हैं।''

नारद ने भगवान से कहा, ''दुःखी दुनिया को स्वर्ग में जगह दें।'' भगवान ने कहा, ''नारद जी! आप जितनों को ले आओगे, मैं उतनों को स्वर्ग में जगह दे दूँगा।'' नारद खुशी खुशी चल पड़े कि सारी दुनिया ही तैयार हो जाएगी।

नारद ने देखा कि एक बूढ़ा बनिया दुकान में बैठा खाँस रहा था। वह बलगम की वजह से बहुत दुःखी हो रहा था। नारद ने सोचा, इस बूढ़े को स्वर्ग ले चलते हैं। नारद जी ने बूढ़े से पूछा, ''क्यों बाबा! स्वर्गधाम जाएगा?'' बूढ़े ने पूछा, ''आप कौन हैं?'' उन्होंने कहा, ''मैं नारद हूँ।'' बूढ़े ने कहा, ''मेरे बेटे दुकान की रखवाली नहीं कर सकते। मैं दुकान की रखवाली करता हूँ। फिर कभी सोचेंगे।''

आगे जाकर नारद देखते हैं कि एक बूढ़े जमींदार का कूबड़ निकला हुआ था। वह खेतों में हल चला रहा था। उसके मुँह में से लारें टपक रही थी। बहुत दुःखी हालत में था। नारद ने सोचा

यह जरूर स्वर्ग चलेगा। लेकिन उसने भी यह कहकर इनकार कर दिया कि मैं अपने बच्चों के लिए ख़ुशी से हल चला रहा हूँ।

आखिर नारद ने सोचा, ''सूअर की योनि सबसे निम्न है।'' वे सूअर से पूछने लगे, ''स्वर्ग जाना है?'' सूअर ने पूछा, ''क्या वहाँ पर मैला-पाखाना, बाल-बच्चे हैं?'' नारद ने कहा, ''वह स्वर्ग ही क्या, जहाँ ये सब चीजें हों?'' सूअर ने कहा, ''शायद ही कोई मूर्ख तेरे जाल में फँस जाए! मैं तेरे जाल में नहीं फसूँगा।'' और नारद को मारने के लिए दौड़ा।

नारद उदास होकर भगवान के पास पहुँचे। भगवान ने पूछा, ''नारद उदास क्यों है?'' नारद ने कहा, ''क्या बताऊँ! दुनिया बहुत दुःखी है। चीखती है, चिल्लाती है मगर तेरे स्वर्ग में आने के लिए कोई तैयार नहीं।''

आपे मेलि लए किरपाल॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल॥

आप कहते हैं कि जब परमात्मा जीवों पर दया करता है ख़ुद ही इन्सान बनकर हमारे बीच में आकर रहता है। जो उस सतगुरु का दिया हुआ 'शब्द' जपते हैं वे ही निहाल हैं।

उन की सेवा सोई लागै॥
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै॥

जिनका भाग्य बहुत ऊँचा हो, वही जीव महात्मा की सेवा में लग सकते हैं।

नामु जपत पावहि बिस्रामु॥
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु॥

जीव को ठहराव 'नाम' जपने से ही मिलता है। जो जीव

'नाम' को प्रगट कर लेते हैं वे ही जगत में उत्तम पुरुष हैं।

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि॥
सदा सदा बसै हरि संगि॥

जो एक बार परमात्मा को अपने आप में प्रगट कर लेता है, वह जो कुछ करता है, परमात्मा के हुक्म के अंदर ही करता है। महात्मा, परमात्मा के बच्चे बनकर इस संसार में विचरते हैं। प्यारा बच्चा अपने पिता से जो चाहे सो करवा सकता है।

सहज सुभाइ होवै सो होइ॥
करणैहारु पछाणै सोइ॥

सहज स्वभाव से जो कुछ होता है वह उसी में खुश रहता है। सुख-दुःख को परमात्मा का दिया हुआ ही समझता है।

प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना॥

मालिक के प्यारों को मालिक का भाणां मीठा लगता है। वे भाणें में रहकर खुश रहते हैं।

जिस ते उपजे तिसु माहि समाए॥
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए॥

आपस कउ आपि दीनो मानु॥
नानक प्रभ जनु एको जानु॥

परमात्मा ही अपने आपको मान देता है। परमात्मा ही इन्सान की देह धारकर गुरु बनकर संसार में आता है। वही उत्तम पुरुष है जो उस परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लेता है, क्योंकि परमात्मा कण कण में व्यापक है।

❖ ❖ ❖

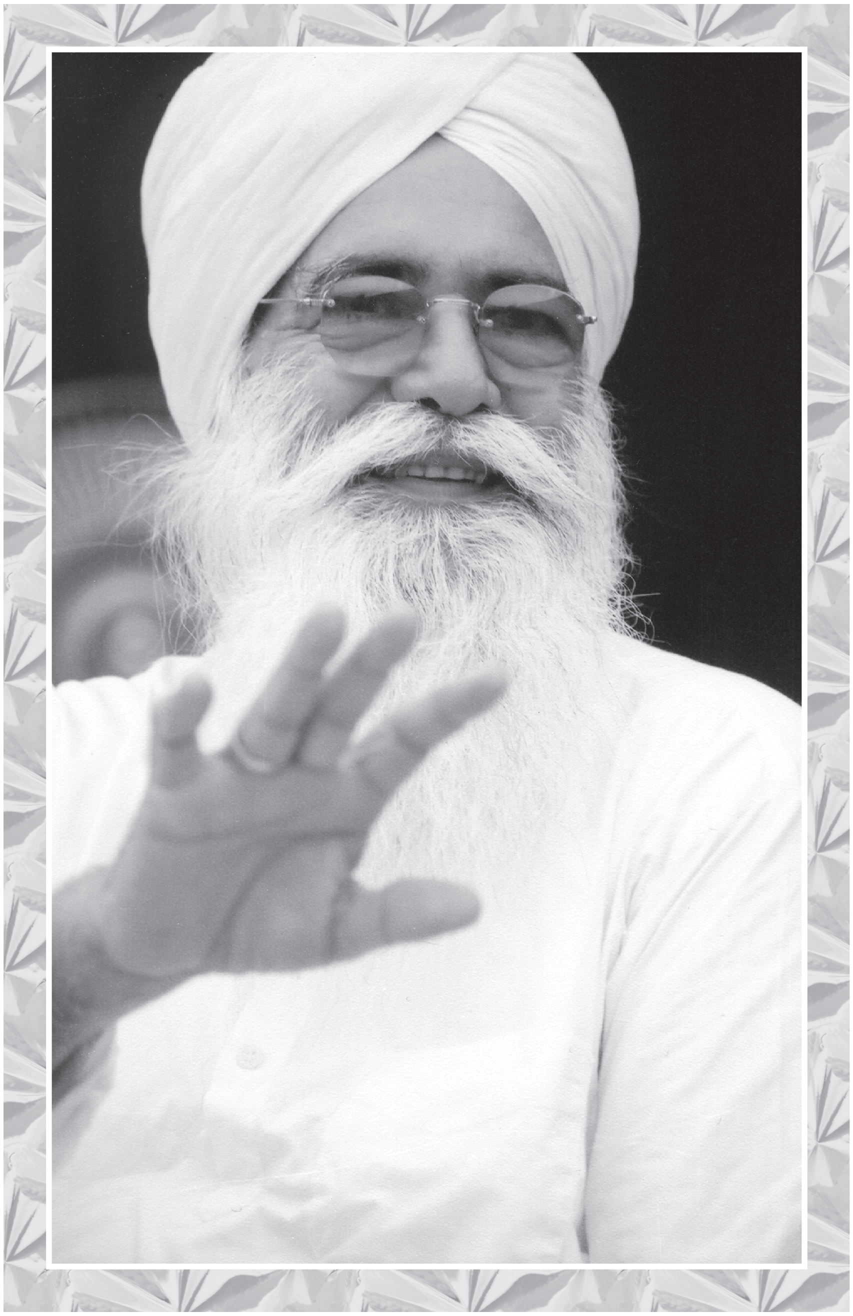

साधु-सेवा

सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज उपदेश करते हैं कि परमात्मा सर्वकला भरपूर है। सबका मालिक है। हम उसका सिमरन करके ही पार हो सकते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जो लोग उसका सिमरन करते हैं, सोते-जागते, उठते-बैठते उसे याद करते हैं, मैं उन पर बलिहार जाता हूँ।''

टूटी गाढनहार गुोपाल॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''वह गोपाल, पृथ्वी का पालन करने वाला, जिससे हमारी आत्मा बिछुड़ गई थी, उसे फिर से जोड़ने वाला, वही सब जीवों की रक्षा करता है।''

सगल की चिंता जिसु मन माहि॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि॥

उस प्रभु को पशु, पक्षी, जल में रहने वाले, आकाश में उड़ने वाले सभी की चिंता है। वह परमात्मा बड़ी युक्ति से सबमें समाया हुआ है। सबकी रक्षा कर रहा है। जिनकी आँखें अभी नहीं खुलीं, वे ही कहते हैं कि हम अपनी रक्षा खुद कर रहे हैं।

जो मालिक से मिल चुके हैं, वे जानते हैं कि हमारी रक्षा कोई और कर रहा है। इस चलती-फिरती रचना के पीछे कोई

गुप्त ताकत जरूर काम कर रही है, जिसे सन्त-महात्मा परिपूर्ण परमात्मा कहते हैं।

रे मन मेरे सदा हरि जापि॥
अबिनासी प्रभु आपे आपि॥

आप कहते हैं, ''उस परमात्मा की भक्ति करो। वह अविनाशी है। सदा कायम है। अगर हम उसकी भक्ति करेंगे तो हम भी कायम हो जाएंगे। परमात्मा में जाकर मिल जाएंगे।''

आपन कीआ कछू न होइ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ॥

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपना तजुर्बा बयान करते हैं, ''हम सब चाहते तो हैं कि परमात्मा की भक्ति करें, उससे प्यार करें। लेकिन यह इन्सान के अपने बस में नहीं। जिन पर परमात्मा दया-मेहर करता है, वे ही उसकी संगत में आ सकते हैं और भक्ति कर सकते हैं।''

तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम॥
गति नानक जपि एक हरि नाम॥

आप कहते हैं, ''चाहे हम जप-तप, पूजा-पाठ, दान-पुण्य जो भी श्रेष्ठ कर्म कर लें, इनसे मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। परमात्मा जब भी मिलेगा, शब्द-नाम की कमाई से ही मिलेगा।''

रूपवंतु होइ नाही मोहै॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै॥

किसी के दिल में यह ख्याल हो कि मैं ज्यादा सुन्दर बनकर उस परमात्मा को मोह लूँगा। आप कहते हैं, ''उसकी ज्योति सबके अंदर है। उसी ज्योति के कारण ही हम सुंदर दिखते हैं।''

धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥

कभी किसी के दिल में यह ख्याल हो कि मैं धनी हूँ। मैं ही परमात्मा को पा सकता हूँ। वह बेचारा ऐसे ही अहंकार करता है। सब कुछ दिया हुआ तो परमात्मा का ही है।

अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥

कभी किसी के दिल में यह ख्याल हो कि मैं बड़ा सूरमा, बहादुर हूँ। मैं दुनिया को मार सकता हूँ। आप ठंडे दिल से विचार करके देखो! परमात्मा की शक्ति होने के कारण ही इन्सान दौड़ा फिरता है। जब परमात्मा अपनी शक्ति उठा लेता है तो यह इन्सान एक मिट्टी की ढेरी की तरह पड़ा रहता है।

जे को होइ बहै दातारु ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥

अगर कोई खुद को दाता समझने लग जाए कि मैं ही दाता हूँ, मैं ही सबको देता हूँ। उसे यह सोचना चाहिए कि मुझे यह दातें किसने दी? जब मैं पैदा हुआ था, क्या यह धन, इल्म साथ लेकर आया था? यह सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ ही है।

जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥

आप समझाते हैं, ''प्रभु की शक्ति के बिना इन्सान कुछ नहीं कर सकता। गुरु कृपा करे, हमारा हौमें का रोग खत्म हो जाए तो ही यह जीव सदा अरोग-नाम के साथ मिल सकता है।''

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥

जिस तरह मकान को मजबूत बनाने के लिए खम्भे लगाते हैं। उसी तरह मन को रोकने वाली शक्ति गुरु का 'नाम' है।

जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै॥

जिस तरह पत्थर पानी पर नहीं तर सकता। अगर उसी पत्थर को बेड़ी पर रख दें तो वह तर जाता है। इसी तरह चाहे हमने कितने भी बुरे कर्म किए हों, लेकिन जब हम पूरे सतगुरु के चरणों में गिर पड़ते हैं कि आप बख्श लो! तो सन्त पहले के अवगुण बख्श कर आगे के लिए समझा देते हैं।

जिउ अंधकार दीपक परगासु॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु॥

जिस तरह अंधेरे में दिया जलाया जाए तो मकान एकदम प्रकाश से भर जाता है। इसी तरह जब प्रेमी आत्मा को गुरु का दर्शन मिलता है, उसके दिल को बहुत खुशी होती है।

जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै॥

जैसे कोई जंगल में चला जाए, उसे रास्ता न मालूम हो, अगर कोई जानकार उसे रास्ता बता दे। उसी तरह सन्त-महात्मा उस मालिक की ज्योति से वाकिफ होते हैं। वे शब्द में से आते हैं और हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं। हम महात्मा से मिलकर ही 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ सकते हैं।

तिन संतन की बाछउ धूरि॥
नानक की हरि लोचा पूरि॥

सन्तों के साथ मिलकर हमारे अंदर ज्योत प्रगट हो जाती

है। 'नाम' प्रगट हो जाता है। अगर भाग्य से ऐसे सन्त मिल जाएं तो मैं उनके चरण धोकर पीने के लिए तैयार हूँ।

मन मूरख काहे बिललाईऐ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ॥

आप कहते हैं, ''हे मूर्ख मन! तू दिन-रात अपनी फिक्र में क्यों लगा हुआ है? तुझे वही मिलना है जो परमात्मा ने तेरे मस्तक में लिख दिया है।'' सन्तों के कहने का भाव यह नहीं कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं। पुरुषार्थ करना हमारा परम धर्म है।

दूख सूख प्रभ देवनहारु॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु॥

दुःख-सुख मालिक के हुक्म से ही आता है। हमें दुःखों-सुखों से ऊपर उठकर परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए।

जो कछु करै सोई सुखु मानु॥
भूला काहे फिरहि अजान॥

जो कुछ हो रहा है, वह परमात्मा के हुक्म में हो रहा है। तू परमात्मा को दोष क्यों दे रहा है? परमात्मा जो कुछ भी करता है, जीव के फायदे के लिए ही करता है।

कउन बसतु आई तेरै संग॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग॥

गुरु साहब कहते हैं, ''जरा सोचकर देख! जब तेरा जन्म हुआ, क्या भाई-बहन, माता-पिता, धन-दौलत तेरे साथ आए थे? तू जिन रसों-कसों, भाई-बहनों, रिश्तेदारों में फँसा हुआ है, इनमें से कौन तेरे साथ जाएगा?''

राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥

अगर कोई शोभा प्राप्त करनी है, अपने घर *सच्चखंड* वापिस जाना है तो शब्द-नाम की कमाई कर। शब्द-नाम ही हमारे साथ जाने वाला है। दुनिया की कोई भी वस्तु हमारे साथ नहीं जाएगी।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

अब अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''इस संसार में तू जिस सौदे को लेने के लिए आया है, वह सौदा, 'नाम' इस संसार में सिर्फ सन्तों की दुकान से ही मिलता है।''

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

अगर सन्तों से फायदा उठाना चाहते हो तो अपने अंदर नम्रता और आज़िज़ी धारण करो। इसके अलावा सन्तों से फायदा उठाने का और कोई साधन नहीं। कबीर साहब कहते हैं :

सन्त की गैल ना छोड़िए, मारग लागा जाए।

लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥

इस संसार से ले जाने वाला सौदा 'नाम' है। तू विषय-विकारों की लज्जत छोड़कर नाम का ही व्यापार कर।

धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥

अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो हमारी इस

संसार में भी शोभा होती है और दरगाह में भी प्रभु इज्जत मान देता है। रज्जत महात्मा कहते हैं :

भक्ति करे पाताल में, प्रगट होय आकाश।
तीन लोक में प्रगट होय, छिपे ना हर का दास॥

इहु वापारु विरला वापारै॥
नानक ता कै सद बलिहारै॥

आप कहते हैं, ''नाम का व्यापार विरले ही करते हैं। आप जानते ही हैं कि हीरों के व्यापारी कम होते हैं। दाने-फक्के* का व्यापार करने वाले बहुत होते हैं। इसी तरह 'नाम' का व्यापार करने वाला करोड़ों में कोई एक ही होता है, बाकी दुनिया ऐशो-इशरतों में फँसी हुई है।''

चरन साध के धोइ धोइ पीउ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज साधुओं की महिमा बयान करते हैं, ''हमें साधु पर अपना तन-मन कुर्बान कर देना चाहिए। हमें अपना मन साधु को अर्पण कर देना चाहिए। जिसने मन अर्पण कर दिया, उसने अपना सब कुछ ही अर्पण कर दिया।'' सन्त हमें अपने चरण धोकर पीने की आज्ञा नहीं देते। अगर आपको ऐसा मौका मिले तो उस मौके का फायदा उठाओ।

मैं मुम्बई गया। वहाँ के एक परिवार ने ऐसा प्यार दिखाया। वे लोग चाँदी की थाली लाकर कहने लगे, ''आप इसमें अपने पैर रखो हम आपके पैर धोकर पीना चाहते हैं।'' मैंने उन्हें बड़े प्यार से समझाया कि ''मैं आपसे बहुत खुश हूँ।'' महात्मा कभी भी इस तरह की आज्ञा नहीं देते। वहाँ मैंने संगत में इस तरह का प्रेम देखा कि प्रेमी धरती पर लेट जाते हैं। कभी पैर का

*अनाज

अंगूठा मुँह में डालने की कोशिश करते हैं। कभी पैरों पर माथा रगड़ते हैं। इस शहर में बहुत दुनिया बस रही है लेकिन परमात्मा ने बहुत थोड़े से जीवों के हिस्से में ही ऐसा प्यार दिया है।

साध की धूरि करहु इसनानु॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु॥

अगर हमें साधुओं की धूलि मिल जाए, वह मिट्टी मिल जाए जिस पर उनका पैर पड़ा हो, हम उस मिट्टी को पानी में डालकर स्नान करें तो हमारे करोड़ों किस्म के पाप दूर हो जाएं। अपने आपको साधु पर कुर्बान करने में ही भला है।

साध सेवा वडभागी पाइऐ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ॥

अगर हमारे भाग्य बहुत ऊँचे हों और परमात्मा हम पर दया करे तो ही हम **साधु सेवा** कर सकते हैं। अगर हम भूले-भटके साधु की सेवा में आ भी जाएं तो काल हमारे मन में अहंकार पैदा करता है कि मेरी वजह से ही साधु का काम चलता है। हमें परमात्मा का शुक्रगुजार होना चाहिए कि हे परमात्मा! तूने मेरे ऊपर मेहर की है और मेहर किए रखना, ताकि मैं **साधु सेवा** में लगा रहूँ।

अनिक बिघन ते साधू राखै॥
हरि गुन गाइ अंम्रित रसु चाखै॥

जिंदगी में अनेकों ही कष्ट आते हैं। साधु कष्ट के समय में अपनी दया दृष्टि से हमें बचाता है। गुरु पॉवर हमेशा मुनासिब मदद करती है। मैं आमतौर पर यह भजन गाता रहता हूँ :

तेरे जेहा मैनूं इक वी ना मिलना, मेरे जेहियाँ तैनूं लखी प्यारेया।

हे सतगुरु कृपाल! चाहे मैं सारी दुनिया ढूँढ लूँ, मुझे तेरे जैसा एक भी नहीं मिलेगा! मेरे जैसे तो तुझे लाखों ही मिल सकते हैं। गुरु जहाँ जाकर बैठ जाए, संगत बना लेता है। संगत गुरु नहीं बना सकती।

ओट गही संतह दरि आइआ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''मैं सारी दुनिया का आसरा छोड़कर पूरे गुरु की शरण में आया हूँ। गुरु की शरण में आने से मेरी आत्मा को शान्ति, सब्र और सुखों का सुख है।''

मिरतक कउ जीवालनहार॥
भूखे कउ देवत अधार॥

गुरु साहब उस परमात्मा की महिमा बयान करते हैं, ''जब बच्चा माँ के पेट में होता है, यह माँस का एक लोथड़ा होता है। यह वहाँ भूखा होता है। कोई काम नहीं कर सकता। परमात्मा वहाँ इसकी मदद करता है इसे अन्न पहुँचाता है!''

सरब निधान जा की द्रिसटी माहि॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि॥

परमात्मा की दृष्टि में दुनिया के सब ख़ज़ाने और धन पदार्थ हैं। वह इन सबका दाता है। लेकिन हम उतना ही प्राप्त कर सकते हैं जितना हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों में लिखा है।

सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु॥

गुरु साहब कहते हैं, ''यह सारी रचना उस परमात्मा की बनाई हुई है। इस जमाने में डाक्टरों ने कितनी तरक्की की है!

लेकिन जब मौत आती है, डाक्टर भी जवाब दे देते हैं कि अब हमारे बस से बाहर है।'' गुरु साहब कहते हैं :

वैद्य कहे हौं ही भला, दारू मेरे वस।
ऐह ते वस्तु गोपाल की, जब भावै ले खस॥

जपि जन सदा सदा दिनु रैणी॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी॥

हमें चलते-फिरते, उठते-बैठते हमेशा 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए। यही कर्म सबसे उत्तम-निर्मल है।

करि किरपा जिस कउ नामु दीआ॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने कृपा करके जिन्हें अपना 'नाम' बख्श दिया है, वही पवित्र हैं। महात्मा ने जिन्हें नाम के साथ जोड़ दिया है, वही परमात्मा से मिलने के काबिल है।''

जा कै मनि गुर की परतीति॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति॥

आप कहते हैं, ''जिसको 'नाम' मिल गया, 'नाम' लेकर जिसके दिल में गुरु के लिए भरोसा बढ़ जाए, उसे परमात्मा जरूर दर्शन देता है। गुरु और परमात्मा अलग अलग नहीं। गुरु के अंदर परमात्मा प्रगट है।''

भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ॥
जा कै हिरदै एको होइ॥

जिनके हृदय में परमात्मा बस जाता है, जिन्हें गुरु पर भरोसा हो जाता है, उनका यश त्रिलोकी तक होता है। उन्हें तीनों लोकों में सच्चा भक्त, सच्चा सन्त कहकर पुकारा जाता

है। उन्हें संसार छोड़े हुए चाहे हजारों साल हो जाएं, फिर भी वे लोगों के दिलों पर राज करते हैं।

सचु करणी सचु ता की रहत॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत॥

ऐसा महात्मा, जिसके अंदर 'नाम' प्रगट हो जाता है, वह जो कुछ भी बोलता है, सच बोलता है। उसकी कहनी और रहनी में कोई फर्क नहीं होता। वह बाहर-अंदर एक जैसा है, सबका भला चाहता है।

साची द्रिसटि साचा आकारु॥
सचु वरतै साचा पासारु॥

वह औरत-मर्द सबको एक ही दृष्टि से देखता है। उसके लिए दोनों एक बराबर हैं। उसका वरतारा सच का ही है।

पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता॥
नानक सो जनु सचि समाता॥

जिसने महात्मा से मिलकर परमात्मा की भक्ति की, परमात्मा को हर जगह व्यापक देखा, परमात्मा को सच समझा। वह परमात्मा में समा जाता है और परमात्मा के दर पर शोभा पाता है।

हमें भी चाहिए, गुरु अर्जुनदेव जी के कहे मुताबिक 'नाम' लेकर सतगुरु पर भरोसा बनाएं। दिल लगाकर बिना किसी आलस के 'नाम' की कमाई करें। झूठ छोड़कर सच को पकड़ें। अपने जीवन को सफल बनाएं।

❖ ❖ ❖

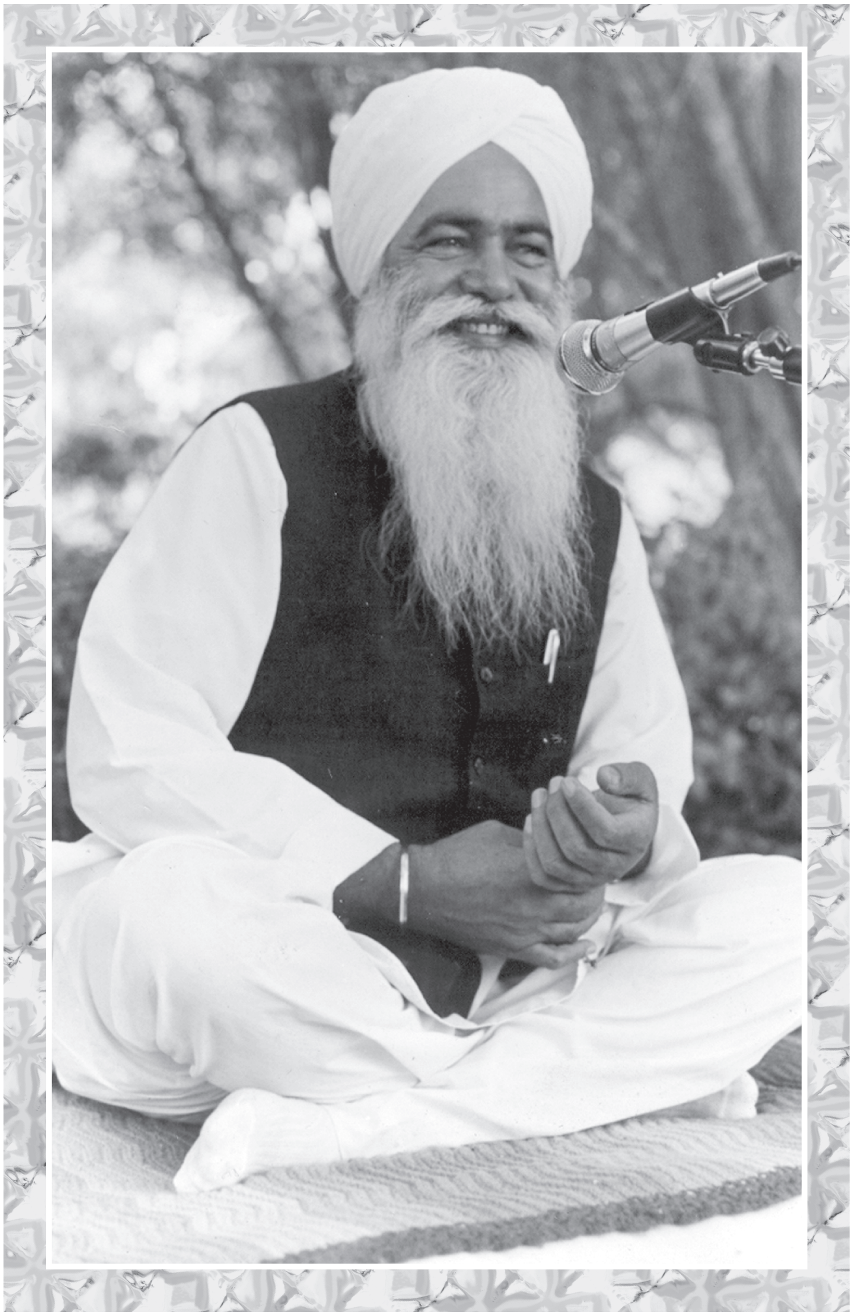

अष्टपदी – सोलह

खुशियों का ख़ज़ाना

रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा की तारीफ करते हुए कहते हैं कि परमात्मा का कोई रूप रंग, चिह्न चक्र नहीं है। वह परमात्मा सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर है। हम ऐसे परमात्मा की पहचान अपने आप नहीं कर सकते। जिन पर वह परमात्मा प्रसन्न हो जाता है उनका मिलाप गुरु से करवाता है। गुरु परमात्मा से मिलवाने में हमारी मदद करता है। गुरु बताता है कि वह परमात्मा आपके अंदर ज्योति रूप, नाद रूप में विराजमान है।

अबिनासी प्रभु मन महि राखु॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु॥

गुरु अर्जुनदेव जी सुखमनी साहब में बताते हैं कि वह परमात्मा अविनाशी है। उसका कभी नाश नहीं होता। दुनिया से प्रीत कम करके उस परमात्मा से प्रीत करो।

तिस ते परै नाही किछु कोइ॥
सरब निरंतरि एको सोइ॥

परमात्मा से बड़ा कोई नहीं है। परमात्मा सबका दाता है। वह इन्सान, हैवान, पशु, पक्षी सबके अंदर युक्ति से समाया हुआ है। सबको रोजी-रोटी देता है।

आपे बीना आपे दाना॥
गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना॥

परमात्मा ख़ुद मालिक है। जो चाहे सो करता है। उसका कोई सलाहकार नहीं। सब कुछ वही है।

पारब्रहम परमेसुर गोबिंद॥
क्रिपा निधान दइआल बखसंद॥

परमात्मा कुल मालिक है, दयाल है, कृपाल है। वह हमेशा जीवों पर दया करता है।

साध तेरे की चरनी पाउ॥
नानक कै मनि इहु अनराउ॥

आप कहते है, ''मेरे दिल में हमेशा यह चाव है कि मैं तेरे साध के चरणों में लगा रहूँ। क्योंकि परमात्मा जब भी जीवों को तारता है, किसी महात्मा के अंदर अपनी शक्ति रख देता है। परमात्मा ख़ुद ज्ञान नहीं देता। वह किसी महात्मा के अंदर बैठकर ही अपना ज्ञान देता है।'' कबीर साहब कहते हैं :

ब्रह्म बोले काया के ओले, काया बिन ब्रह्म क्या बोले।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

साध रूप अपना तन धारया।

पल्टु साहब कहते हैं, ''अगर आप मुझे खिलाना चाहते हैं तो साधुओं को खिलाओ। मैं साधुओं के मुख से खाऊँगा।''

मनसा पूरन सरना जोग॥
जो करि पाइआ सोई होगु॥

वह शरण आए की लाज रखता है। हर किसी की इच्छा

पूरी करता है। हजूर महाराज कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत का असूल है, अवश्य देती है।''

हरन भरन जा का नेत्र फोरु॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु॥

वह आँख झपकते ही दुनिया को लय कर सकता है। आँख झपकते ही दुनिया की रचना कर सकता है। कोई भी यह मंत्र नहीं जानता कि परमात्मा को कैसे पाना है। वह जिस पर दयाल होता है उसके अंदर अपनी कला रख देता है। वही महात्मा, जीवों को परमात्मा से मिलने का मंत्र बताता है।

अनद रूप मंगल सद जा कै॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै॥

परमात्मा के घर में **खुशियों का ख़ज़ाना** है। उसके दरबार में मीठे और सुरीले राग हो रहे हैं। दुनिया की खुशियाँ उसके घर में हैं। परमात्मा के घर में किसी भी चीज की कमी नहीं।

राज महि राजु जोग महि जोगी॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी॥

परमात्मा राजा में बैठकर राज भोगता है। गृहस्थियों में बैठकर गृहस्थ भोगता है। वह सब कुछ करता हुआ भी निर्लेप है।

धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ॥

आप कहते हैं, ''उसके प्यारे भक्तों ने सिमरन करके सच्ची शान्ति, सच्चा सुख प्राप्त किया है। उसके प्यारों ने ही उसे समझा और अपने अंदर प्रगट किया है। आम दुनिया इसका अंत नहीं पा सकी।'' कबीर साहब कहते हैं :

सारी सृजनहार की, जाने नाहि कोय।
ते जाणा आपण धनी, या दास दिवानी होय॥

दुनिया उस परमात्मा का भेद नहीं पा सकती। परमात्मा अपने आपको आप ही जानता है या उसका प्यारा जो उसके रास्ते पर चल पड़ता है वही जानता है।

जा की लीला की मिति नाहि॥
सगल देव हारे अवगाहि॥

गुरु साहब कहते हैं, ''उसकी रचना को कौन जान सकता है! देवी देवताओं ने भी कोशिश की। वे भी उसकी लीला को नहीं जान सके।''

पिता का जनमु कि जानै पूतु॥
सगल परोई अपुनै सूति॥

आप कहते हैं, ''पुत्र को पिता के जन्म का ज्ञान नहीं होता। पिता जानता है कि पुत्र कब पैदा हुआ था। तब क्या तिथि, क्या दिन था। इसी तरह दुनिया को परमात्मा का ज्ञान कैसे हो सकता है? दुनिया तो परमात्मा ने बनाई है। वह परमात्मा हमारा सच्चा पिता है। हम उसके बच्चे हैं। हम नहीं जानते कि परमात्मा कब और किस तरह बना? जिन पर वह परमात्मा दया-मेहर करता है सिर्फ वही लोग परमात्मा के बारे में समझ सके।''

सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ॥

अब गुरु साहब कहते हैं कि जिन पर परमात्मा दया-मेहर करता है, जिनको वह मति देता है वे ही उस परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं। वे ही उसका 'नाम' प्राप्त कर सकते हैं।

तिहु गुण महि जा कउ भरमाए॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए॥

जिन पर परमात्मा दया नहीं करता वे लोग सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण में चक्कर लगाते रहते हैं। जन्म-मरण में ही लगे रहते हैं।

ऊच नीच तिस के असथान॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा सब जगह है। कोई भी ऐसी जगह नहीं, जहाँ परमात्मा नहीं है। परमात्मा जानता है कि किसको अपने साथ मिलाना है। किसको अभी जन्म-मरण के चक्कर में लगाए रखना है। परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है।'' फरीद साहब कहते हैं :

इक ना मत खुदाय दी, इक ना मंग लई।
इक दित्ती ना लैंण, जो पत्थर बूँद पई॥

ऐसी आत्माएं धुरधाम से परमात्मा के हुक्म में ही आती हैं। एक महात्मा धुरधाम से आता है और दूसरा उनकी संगत में रहकर उसी पदवी तक पहुँच जाता है।

नाना रूप नाना जा के रंग॥
नाना भेख करहि इक रंग॥

परमात्मा के विभिन्न प्रकार के रंग हैं, जिसे कोई नहीं समझ सकता। उसने विभिन्न प्रकार की रचना रची है फिर भी वह एक है।

नाना बिधि कीनो बिसथारु॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु॥

परमात्मा की मर्ज़ी है चाहे वह बच्चे, बूढ़े या जवान को ले जाए। दुनिया जन्मती-मरती है। परमात्मा जन्म-मरण के दुःखों में नहीं है, वह अविनाशी है।

नाना चलित करे खिन माहि ॥
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥

नाना बिधि करि बनत बनाई ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥

परमात्मा ने दुनिया की रचना बड़ी युक्ति से की है। वक्त पर मौत-पैदाइश हो रही है। सूरज-चन्द्रमा अपनी रोशनी दे रहे हैं। कोई भी परमात्मा की कीमत नहीं लगा सकता। वह अपनी कीमत आप ही जानता है।

सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा सभी शरीरों में है। सब जगह है। मैं उसका 'नाम' जपकर जीता हूँ। हमारा जीवन आधार ही 'नाम' है।''

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥

इस अष्टपदी में गुरु साहब 'नाम' की महिमा बयान करते हैं कि 'नाम' के आसरे ही खंड-ब्रह्मांड खड़े हैं। सब जीव-जंतु 'नाम' के आसरे ही हैं।

नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥

आप कहते हैं, ''वेद शास्त्र 'नाम' के आसरे है। इनको पढ़ने-सुनने वाले भी नाम के आसरे हैं। सारी कायनात ही 'नाम' के आसरे चल रही है।''

नाम के धारे आगास पाताल॥
नाम के धारे सगल आकार॥

आकाश-पाताल भी 'नाम' के आसरे खड़े हुए हैं।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन॥

इन्द्रपुरी, विष्णुपुरी, ब्रह्मपुरी, कृष्णपुरी, स्वर्ग सब 'नाम' के आसरे ही हैं। उस 'नाम' को सुनकर ही हमारा उद्धार हो सकता है। गुरु साहब कहते हैं, ''नाम लफ़्ज़ नहीं, एक ताकत है, जो कण कण में व्यापक है।''

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए॥

जिस पर परमात्मा कृपा करता है उसे अपनी नाम-भक्ति में लगाता है। वह सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से ऊपर चौथे पद में जाकर उस परमात्मा से मिलकर मुक्ति प्राप्त करता है।

किसी साधु ने बहुत तपस्या की। उसने लोगों में यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो मेरे दर्शन करेगा, वह स्वर्ग में जाएगा। आपको पता है कि जब ऐसे सस्ते स्वर्ग मिलें तो सारी दुनिया उस तरफ भागती है।

मस्ताना जी 'शब्द-नाम' की कमाई करते थे। उन्होंने लोगों से पूछा, ''यह शोर शराबा क्यों हो रहा है?'' किसी ने बताया,

''यहाँ एक साधु आया है उसने बहुत तप किया है। वह कहता है कि जो मेरा दर्शन करेगा वह स्वर्गों में जाएगा।'' यह सुनकर मस्ताना जी ने उस साधु की तरफ अपनी पीठ कर ली।

साधु ने मस्ताना जी से पूछा, ''भाई! तूने मेरी तरफ पीठ क्यों की है? क्या तुझे मेरे दर्शन नहीं करने?'' मस्ताना जी ने कहा, ''आपके दर्शन करने से स्वर्ग मिलेगा। मुझे स्वर्ग की जरूरत नहीं। मुझे तो *सच्चखंड* जाना है।''

इस तरह सन्त अपने सेवकों को न स्वर्गों का लालच देते हैं, न ही नर्कों से डराते हैं। वे समझाते हैं कि आपका घर *सच्चखंड* है, आपकी कौम सतनाम है। कबीर साहब कहते हैं :

क्या नर्क क्या स्वर्ग, संतन दोऊ रादे।
हम काहू की कान ना कडदे, अपने गुर प्रसादे॥

रूपु सति जा का सति असथानु॥
पुरखु सति केवल परधानु॥

उसके सत स्वरूप का कभी नाश नहीं होता। अपने मंडल में वह खुद प्रधान है और प्रधान ही रहेगा। वह थापा नहीं जाता।

थापया ना जाए कीता ना होए, आपे आप निरंजन सोए।

करतूति सति सति जा की बाणी॥
सति पुरख सभ माहि समाणी॥

आप कहते हैं कि उसके करतब और वाणी सच्ची है, वह कभी नाश नहीं होती। वह सतपुरुष कुल मालिक है। सबके अंदर समाया हुआ है।

सति करमु जा की रचना सति॥
मूलु सति सति उतपति॥

सति करणी निरमल निरमली॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली॥

आप कहते हैं, ''उसकी रचना सच्ची है। उस मंडल के अंदर उसके करतब भी सच्चे हैं। वह मालिक कृपा करके, जिसे अपनी रचना का भेद और मिलाप का मौका दे दे, वह भी सच है।''

सति नामु प्रभ का सुखदाई॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई॥

सतनाम सदा ही शान्ति और सुख देता है। हम इसे अपने आप नहीं पा सकते, यह गुरु द्वारा मिलता है। गुरु नानक साहब कहते हैं :

करम होय सतगुरु मिलाए, सेवा-सुरत शब्द चित्त लाए।

सति बचन साधू उपदेस॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस॥

गुरु साहब साधु की महिमा बयान करते हैं, ''जिस तरह परमात्मा सच है इसी तरह साधु भी सच है। साधु जो बोलता है उस सच का वरतारा होकर रहता है। चाहे खंड ब्रह्मांड पलट जाएं, लेकिन साधु का वचन नहीं पलटता।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

बोलो साँच पछाणों अंतर।

झूठ बोलना छोड़कर सच बोलने की आदत डालो। परमात्मा आपसे दूर नहीं। आप उसे अपने शरीर के अंदर देख सकते हैं।

सति निरति बूझै जे कोइ॥
नामु जपत ता की गति होइ॥

आप कहते हैं, ''मुक्ति 'नाम' में है। 'नाम' हमें किसी महात्मा से मिलता है।''

आपि सति कीआ सभु सति॥
आपे जानै अपनी मिति गति॥

जिस की स्रिसटि सु करणैहारु॥
अवर न बूझि करत बीचारु॥

वह परमात्मा अपनी गति मति खुद जानता है। वह किसी पवित्र आत्मा को इस संसार में भेजकर अपना पता खुद बताता है। यह सारी सृष्टि परमात्मा की है। वही इसकी रक्षा करता है। परमात्मा हर जगह व्यापक है, घट घट में बैठकर हर एक का लेखा-जोखा कर रहा है।

करते की मिति न जानै कीआ॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ॥

बिसमन बिसम भए बिसमाद॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद॥

जिन्होंने विषय-विकार छोड़कर 'शब्द-नाम' की कमाई की, परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया, उनको सच्चा स्वाद, सच्चा रस, सच्ची लज्जत आ गई।

प्रभ कै रंगि राचि जन रहे॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे॥

ऐसी आत्माएं मालिक के रंग में रंगी रहती हैं। सुख-दुःख को परमात्मा की देन समझती हैं और हमेशा ही अपने आपको गुरु के वचन में रखती हैं।

ओइ दाते दुख काटनहार॥
जा कै संगि तरै संसार॥

परमात्मा ने महात्माओं को दाता बनाकर इस संसार में भेजा होता है। जिस तरह परमात्मा हर एक का कष्ट दूर करता है, महात्मा भी 'नाम' जपवाकर हमारे सब कष्टों की निवृति करते हैं। उनके पास 'नाम' की दवाई है। 'नाम' ही सब रोगों की दवाई है।

नाम है दारू सब रोगां दा, बिगड़ी गल बनाए नाम।

जन का सेवकु सो वडभागी॥
जन कै संगि एक लिव लागी॥

महात्मा परमात्मा की तरफ से इस संसार मंडल में दाता बनकर आते हैं। उनकी लिव परमात्मा के साथ लगी होती है। महात्मा के सेवक बहुत ऊँचे भाग्य वाले होते हैं।

गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै॥
गुर प्रसादि नानक फलु पावै॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस अष्टपदी में 'नाम' की महिमा और साधुओं की महिमा बताई है। जो उन साधुओं से मिलकर 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं, उन्हें बहुत ऊँचे भाग्य वाला बताया है। आप कहते हैं, ''जैसे पत्थर बेड़ी का सहारा लेकर तर जाता है, वैसे ही जीव ने चाहे कितने पाप और बुरे कर्म किए हों, वह महात्मा की संगत सोहबत में आकर अपना जीवन सफल बना लेता है। आखिर उस परमात्मा की ज्योति में समा जाता है।''

❖ ❖ ❖

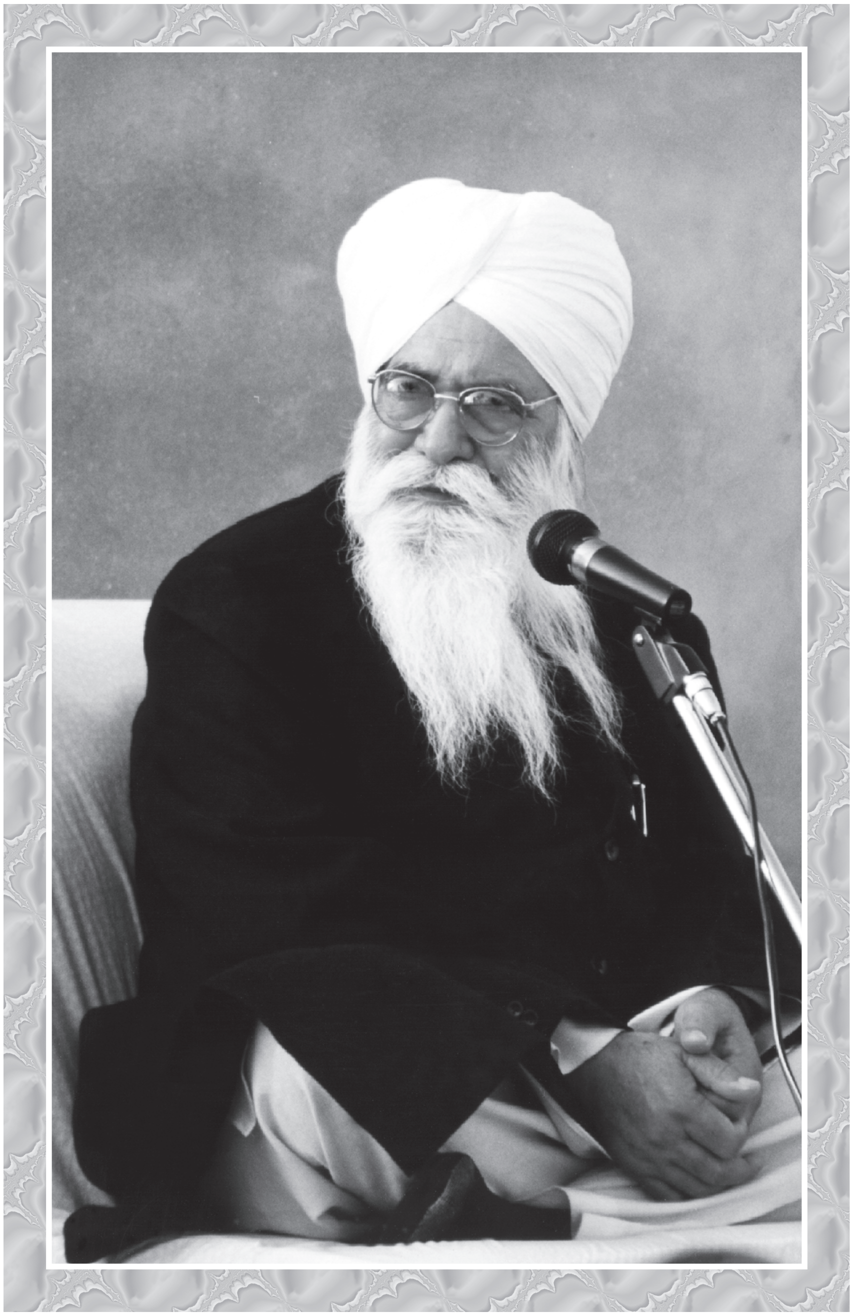

भरोसा

आदि सचु जुगादि सचु॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु॥

गुरु नानक साहब इस श्लोक में बताते हैं कि अभ्यास करने से एक ऐसी चीज हमारे तजुर्बे में आई है, जो आदि-युगादि से सच है। संसार की रचना पैदा होने से पहले भी सच थी। सच का मतलब परमात्मा है, जिसका कभी नाश नहीं होता। वह परमात्मा सतयुग, द्वापर, त्रेता में भी था और कलयुग में भी है। आगे भी वही परमात्मा रहेगा। दुनिया परमात्मा को नहीं बनाती, परमात्मा दुनिया को बनाता है। इसलिए आप कहते हैं, ''वह परमात्मा ही सच है।''

चरन सति सति परसनहार॥
पूजा सति सति सेवदार॥

परमात्मा के चरण सत हैं। जो उन चरणों को अपने हृदय में बसाते हैं वे भी सत हैं। परमात्मा के चरणों की महिमा बयान नहीं की जा सकती। स्वामी जी महाराज की बानी में आता है :

गुरु चरण मेरे गृह आए, सुत्ते दीए भाग जगाए।

दरसनु सति सति पेखनहार॥
नामु सति सति धिआवनहार॥

परमात्मा का दर्शन सत है। जो उस परमात्मा का दर्शन करता है, वह भी सत हो जाता है। जिस तरह बूँद समुद्र में

मिलकर समुद्र ही कहलाती है इसी तरह उस परमात्मा का नाम सत है, सदा कायम है। उस नाम ने ही दुनिया को पैदा किया है।

आपि सति सति सभ धारी॥
आपे गुण आपे गुणकारी॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''वह परमात्मा सत है। सारे गुणों का मालिक है।''

सबदु सति सति प्रभु बकता॥
सुरति सति सति जसु सुनता॥

अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि उस परमात्मा का शब्द नहीं बदलता। वह *सच्चखंड* से उठकर आपके माथे पर धुनकारे दे रहा है। आत्मा परमात्मा की अंश है, आत्मा सदा अमर है। इसका कभी नाश नहीं होता। शब्द ही देह धारकर हमारे बीच आकर रहता है।

जिस तरह किसी के लड़के को खानाबदोश उठाकर ले जाते हैं। उस लड़के का पिता खानाबदोशों वाला वेश धारण करके उन खानाबदोशों के बीच जाकर रहता है और चाहता है कि अपने बेटे को उसका घर दिखा दे, ''कि तू इस घर का मालिक है। खानाबदोशों की तरह क्यों फिरता है!'' हम जीव भी खानाबदोशों की तरह ही हैं। कभी कहीं जन्म लेते हैं तो कभी कहीं।

इसी तरह वह परम पिता परमात्मा इन्सान का चोला धारण करके सन्त रूप में हमारे बीच आकर रहता है। हमें बड़े प्यार से अपने घर की खबर देता है लेकिन हम उसकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं। जब सन्त हमें हमारे वतन *सच्चखंड* की याद दिलाते हैं तो हमारे अंदर उस घर - *सच्चखंड* को देखने का चाव पैदा हो जाता है। वह कहता है, ''अंदर जाकर देखो! तुम्हारा

घर *सच्चखंड* है, तुम्हारी कौम सतनाम है। तुम क्यों छोटे छोटे दायरे, छोटी छोटी कौमें बनाकर लड़ते-झगड़ते हो। तुम्हारी कौम का सम्बन्ध सिर्फ तुम्हारी देह से है।''

बुझनहार कउ सति सभ होइ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ॥

जो उस परमात्मा को पहचान लेता है, अपने अंदर प्रगट कर लेता है, उसे यकीन हो जाता है कि वह एक ऐसी हस्ती है जो आदि-युगादि से चली आ रही है।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ॥

जिसने परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया, उसने परमात्मा को समझ लिया। जिस तरह हम खुली आँखों से इस संसार को देखते हैं, उसी तरह वह खुली आँखों से उस परमात्मा को देखता है। कबीर साहब कहते हैं :

आँख ना मूँदूं, कान ना रूंदूं, काया कष्ट ना धारूं।
खुल्ले नैण, मैं हँस हँस देखूँ, सुंदर रूप निहारूं॥

कनाडा के एक अकाली ने इन्टरव्यू में मुझसे पूछा, ''आपने परमात्मा देखा है?'' मैंने कहा, ''हाँ देखा है! दिखा भी सकता हूँ।'' लेकिन वह बेचारा भाग्य कहाँ से लाए? वह यह भी नहीं कह सका कि मुझे परमात्मा दिखाओ! गुरु नानक जी कहते हैं:

संतन की सुन साची साखी, जो बोले सो पेखण आखी।

मैंने इन आँखों से उस परमात्मा को देखा है, लोग सुने सुनाए रब्ब को बयान करते हैं।

जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ॥

नाम जपने वाले का हृदय फौलाद जैसा होना चाहिए। सबसे पहले विश्वास की जरूरत है। जो इन्सान विश्वास करता है कि परमात्मा है; गुरु उसको परमात्मा दिखा सकता है। जो परमात्मा और गुरु पर **भरोसा** करता है उसके अंदर परमात्मा प्रगट हो जाता है। भरोसे पर ही हम अपनी कीमती जान पायलट के हवाले कर देते हैं। जब दुनिया में भरोसे के बिना कोई काम नहीं चलता तो हम बिना भरोसे परमात्मा को कैसे पा सकते हैं।

भै ते निरभउ होइ बसाना॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना॥

जो परमात्मा की भक्ति करता है वह दुनिया से निर्भय हो जाता है। वह परमात्मा को बड़ा और दुनिया को छोटा समझता है। जब वह परमात्मा की भक्ति करता है तो उसकी आत्मा *सच्चखंड* में जाकर समा जाती है। परमात्मा उसके लिए अपना दरवाजा खोल देता है।

बसतु माहि ले बसतु गडाई॥
ता कउ भिंन न कहना जाई॥

जब यह परमात्मा के घर *सच्चखंड* पहुँचता है तो परमात्मा में मिल जाता है। हमारी अपनी ज्योति उस ज्योति में मिल जाती है। जिस तरह मिश्री दूध में मिला देने से दूध का रंग नहीं बदलता, जायका ही बदलता है।

बूझै बूझनहारु बिबेक॥
नाराइन मिले नानक एक॥

जिसे परमात्मा से मिलने की तड़प है; परमात्मा भी उसके इन्तजार में होता है। सबसे पहले परमात्मा मेहर करता है; गुरु से मिलाप कराता है। गुरु दया करके परमात्मा के साथ मिला

देता है। जब आत्मा, परमात्मा से मिल जाती है तब जीव और नारायण एक हो जाते हैं।

ठाकुर का सेवकु आगिआकारी॥
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी॥

ठाकुर परमात्मा का सेवक है। वह भक्ति करता है परमात्मा की आज्ञा से अपना जीवन व्यतीत करता है, सुख-दुःख को परमात्मा की देन समझता है। वह परमात्मा की भक्ति इस तरह करता है जिस तरह पुजारी मन्दिर में धूप-दीप जलाता है। इसी तरह परमात्मा का भक्त भी रोज परमात्मा के दरवाजे पर जाना अपना फर्ज समझता है।

ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति॥
ठाकुर के सेवक की निरमल रीति॥

आप कहते हैं, ''ठाकुर परमात्मा का सेवक है। उसके दिल में पक्का भरोसा, पक्की प्रतीत होती है कि मुझे उस मालिक से मिलना है। उस मालिक की दया के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता। उसकी रीत निर्मल और पवित्र होती है।''

ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि॥
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि॥

परमात्मा का सेवक हमेशा ही उस परमात्मा को अंग-संग समझता है। वह हमेशा 'नाम' के रंग में रंगा रहता है।

सेवक कउ प्रभ पालनहारा॥
सेवक की राखै निरंकारा॥

जिस तरह माता अपने बच्चे को प्यार से पालती है। इसी तरह वह परमात्मा अपने सेवक की हर जरूरत पूरी करता है।

उसकी रक्षा करता है। जैसे माता को पुत्र प्यारे होते हैं, परमात्मा को भक्त प्यारे होते हैं।

सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै॥
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै॥

परमात्मा का सेवक साँस साँस के साथ उस परमात्मा को याद करता है। परमात्मा भी साँस साँस के साथ उसकी रक्षा करता है, क्योंकि परमात्मा को अपने सेवक की फिक्र है।

अपुने जन का परदा ढाकै॥
अपने सेवक की सरपर राखै॥

परमात्मा हर जगह अपने भक्तों का पर्दा रखता है, उनकी रक्षा करता है। जिस तरह ध्रुव-प्रह्लाद पाँच वर्ष के बालक थे। वे इतनी छोटी सी उम्र में परमात्मा की भक्ति करने लगे। उनके पिता ने उन्हें पहाड़ से नीचे धक्का देकर खत्म करवाना चाहा, आग में बिठाया, तपते खम्भों से चिपटवाया; लेकिन परमात्मा ने उनकी हर जगह रक्षा की।

अपने दास कउ देइ वडाई॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई॥

परमात्मा अपने सेवक को बड़ाई देता है, अपने साथ मिलने का मौका देता है। सच्ची बड़ाई उस परमात्मा के दरबार में ही हो सकती है। वह अपने सेवक को 'नाम' की कमाई में लगाता है। 'नाम' के अंदर शान्ति और तृप्ति है। इस संसार से हमारे साथ जाने वाली वस्तु सिर्फ नाम ही है। गुरु नानक जी कहते हैं:

बिन नामे को संग ना साथी, मुक्ते नाम ध्यावणया।
गुरुमुख लाहा ले चले, मनमुख चले मूल गवाए जियो॥

अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥

परमात्मा अपने सेवक की हर जगह आबरू रखता है। उसकी गति मति को सेवक ही समझ सकता है।

प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥

आप कहते हैं, ''अगर उस मालिक के प्यारे की कोई बराबरी करता है तो वह कच्चा है। क्योंकि मालिक के प्यारे की पहुँच *सच्चखंड* तक होती है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

रीसा करे तनाड़िया, जो साहब दर खड़ियां।

हम उनकी नकल करते हैं जो परमात्मा से मिल चुके हैं।

एक मरासी मस्जिद में गया। वहाँ पाँच नमाजी मौजूद थे। उन्होंने मरासी से कहा, ''नमाज पढ़।'' मरासी ने पूछा, ''नमाज पढ़ने का क्या फायदा है?'' नमाजियों ने कहा कि नमाज पढ़ने से चेहरे पर खुदा का नूर आ जाता है। मरासी ने कहा, ''इस वक्त मुझे काम है। मैं घर जाकर नमाज पढ़ लूँगा।'' उन्होंने कहा कि तू वजू करके नमाज पढ़ना। मरासी ने नशा पिया हुआ था। वह जब तीन बजे नमाज पढ़ने के लिए उठा तो उसने सोचा कि पानी ठंडा है, सर्दी लग जाएगी। मुसलमानों में मिट्टी से हाथ मलकर नमाज पढ़ लेनी जायज़ मानी गई है। जब वह मिट्टी से हाथ मलने लगा तो गलती से उसका हाथ तवे पर लग गया। उसने वह हाथ अपने मुँह पर लगा लिया। मुँह काला हो गया और वह नमाज पढ़कर सो गया।

मरासन ने कहा, ''तू उठा नहीं!'' मरासी ने कहा, ''तू देख तो सही, मेरे चेहरे पर खुदा का नूर आया है।'' मरासन

बेचारी ने ख़ुदा का नूर कहाँ देखा था? वह कहने लगी, ''अगर ख़ुदा का नूर काला है तो घटा बनकर आया है, अगर कुछ और है तो पहले वाला भी गया।''

हम लोगों की भी यही हालत है। हम कहते हैं, ''हम शराबें-कबाबें भी पी-खा लें और परमात्मा भी मिल जाए।'' वह परमात्मा इस तरह नहीं मिलता। उसकी भक्ति करनी पड़ती है। 'नाम-शब्द' की कमाई करनी पड़ती है।

जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने दया करके जिसे अपनी सेवा में लगा लिया है, वह चाहे किसी भी मुल्क में पैदा हो, सारी दुनिया में जाना जाता है।''

दो हजार साल पहले ईसा मसीह ने भक्ति की। सारी दुनिया उनको जानती है। मोहम्मद साहब अरब के रेगिस्तान इलाके में पैदा हुए। सारी दुनिया में उनका नाम रोशन है। कबीर साहब, गुरु नानक साहब छोटे इलाकों में पैदा हुए। उनका नाम भी सारी दुनिया में रोशन हुआ। इसी तरह सावन, कृपाल हिन्दुस्तान में पैदा हुए। दुनिया का ऐसा कौन सा मुल्क है; जहाँ के लोग इन्हें प्यार से याद नहीं करते? सब यही कहते हैंः

सतगुरु सावन शाह, मेरा चित्त हर लिया जी।

सन्त-महात्मा जब भी आते हैं लोगों के दिलों पर राज करते हैं। वे लोगों के दिलों में प्यार का ऐसा सिक्का बिठा जाते हैं कि दुनिया उनको भूल नहीं पाती। परमात्मा अपने प्यारे भक्तों का नाम दुनिया में रोशन कर देता है।

नीकी कीरी महि कल राखै॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै॥

परमात्मा अपनी कला एक चींटी के अंदर रख देता है। वह भी करोड़ों लश्कर भस्म कर सकती है। परमात्मा वही ताकत किसी इन्सान में रखकर उससे जो चाहे सो करवा सकता है। सब कुछ परमात्मा के हाथ में है। परमात्मा बहुत बड़ी शक्ति है।

जिस का सासु न काढत आपि॥
ता कउ राखत दे करि हाथ॥

आप कहते हैं, ''चाहे सारी दुनिया बैरी हो जाए, जिसके सिर पर परमात्मा का हाथ है, दुनिया उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। चाहे कोई भूखा नंगा हो, कोई भी उसका स्वागत न करता हो। अगर वह परमात्मा की भक्ति करता है तो दुनिया के दिलों पर राज करता है।''

मानस जतन करत बहु भाति॥
तिस के करतब बिरथे जाति॥

गुरु साहब कहते हैं, ''इन्सान बहुत यत्नों से बढ़िया से बढ़िया कोठियाँ बनवाता है, बढ़िया कारें खरीदता है, रहने के लिए बहुत ऐशो-आराम के साधन बनाता है। लेकिन जब मालिक चाहता है, इसे बीच में से ही ले जाता है।''

मारै न राखै अवरु न कोइ॥
सरब जीआ का राखा सोइ॥

परमात्मा के हुक्म के बिना कोई किसी को नहीं मार सकता। सब कुछ उसके हुक्म से होता है। मारने वाला और रक्षा करने वाला परमात्मा ही है।

काहे सोचि करहि रे प्राणी॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''अगर खोज करनी है तो परमात्मा की भक्ति की और भजन-सिमरन की खोज करो। परमात्मा सब कुछ देने के लिए तैयार है।'' बुल्लेशाह कहते हैंः

ओह प्रभ साडा सखी है, असीं सेवा कनियों सूम।

बारं बार बार प्रभु जपीऐ॥
पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''साँस साँस के साथ परमात्मा की भक्ति करो उसे याद करो। उसकी भक्ति करोगे तो वह अमृत मिलेगा जिसे पीकर हम अमर हो जाएंगे। जब मन का पर्दा हटाओगे तो अमृत मिल जाएगा।''

नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ॥

जिसने गुरमुखों से 'नाम' प्राप्त कर लिया उसे हर जगह परमात्मा ही नज़र आता है।

नामु धनु नामो रूपु रंगु॥
नामो सुखु हरि नाम का संगु॥

गुरु साहब कहते हैं, ''ऐसे महात्मा के पास 'नाम' का ही सुख है। 'नाम' का ही धन है, 'नाम' का ही रंग है।''

नाम रसि जो जन त्रिपताने॥
मन तन नामहि नामि समाने॥

जिनको 'नाम' की लज्जत आ गई, वे दुनिया के रसों में नहीं फँसते। 'नाम' का रस सब रसों से ऊपर है।

ऊठत बैठत सोवत नाम॥
कहु नानक जन कै सद काम॥

महात्मा उठते-बैठते, सोते-जागते, चलते-फिरते 'नाम' की कमाई करते हैं। दुनिया के साथ बातचीत करते हुए भी उनका सिमरन चलता रहता है। वे 'नाम' के साथ जुड़े रहते हैं। हमें भी 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। दुनिया में से साथ जाने वाली वस्तु सिर्फ 'नाम' है।

बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''प्रभु ने हम पर बहुत दया करके हमें जुबान दी है। हम इस जुबान से अपना सुख-दुःख बता सकते हैं, प्रभु की महिमा गा सकते हैं। आप इस जुबान से किसी की निन्दा न करो। अगर कोई बुराई करता है तो परमात्मा उसे दंड देगा। अगर कोई नेकी करता है तो परमात्मा उसे नेकी का इनाम देगा।''

करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥

आप कहते हैं, ''यहाँ की मान-बड़ाई, धन-दौलत और हुकूमत साथ नहीं जाएगी। इस दुनिया के मसले का ताल्लुक हमारी देह के साथ है। जब हमारी देह ही साथ नहीं जाएगी तो दुनिया का कोई भी सामान साथ नहीं जाएगा। हमें भक्ति परमात्मा से मिलने के लिए करनी है। हमें अपने अवगुण और दूसरों के गुण देखने चाहिए।''

जो होआ होवत सो जानै ॥
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥

जो कुछ हो रहा है प्रभु उससे बेखबर नहीं है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह अंदर बैठकर सब कुछ देख रहा है।

तिस की महिमा कउन बखानउ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ॥

हम परमात्मा की महिमा कैसे बयान कर सकते हैं? उसका हुक्म कैसे मान सकते हैं? परमात्मा जिस पर दया-मेहर करता है, उसमें अपनी कला रख देता है। वह देखने में इन्सान नज़र आता है लेकिन इन्सान से ऊपर होता है। वह परमात्मा की महिमा को जानता है, उसके मुत्तलिक हमें समझा सकता है।

आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे॥
कहु नानक सेई जन पूरे॥

जिनके अंदर परमात्मा प्रगट होता है वे ही पूरे इन्सान हैं, बाकी अधूरे हैं। हजूर कहा करते थे, ''भगवान तो हमेशा इन्सान की तलाश में रहता है कि इन्सान मिले।'' लेकिन हममें इन्सानों वाले गुण नहीं होते।

मन मेरे तिन की ओट लेहि॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि॥

हम इस संसार समुद्र से महात्मा का आसरा लेकर ही तर सकते हैं। हमें उनकी बताई हुई युक्ति के मुताबिक अपना जीवन ढालना चाहिए। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं :

हर हर जन दोए एक है, विधि विचार कुछ नाहे।
जल में उपजे तरंग ज्यों, जल ही विखे समाहे॥

जिनि जनि अपना प्रभू पछाता॥
सो जनु सरब थोक का दाता॥

किसी के घर में करोड़ों रुपया दबा हो और वह भूखा मर रहा हो; अगर उसे कोई भेदी मिल जाए और दबे हुए धन को

निकालने का तरीका बता दे! वह धन निकालकर अमीर हो जाए तो उसे किसका शुक्रगुजार होना चाहिए-भेदी का या धन का? उसे उस भेदी का शुक्रगुजार होना चाहिए क्योंकि धन तो पहले भी उसके घर में दबा पड़ा था।

इसी तरह युगों युगों से बिछुड़े हुए परिपूर्ण परमात्मा के बारे में हमें कौन बता सकता है? कोई महात्मा मालिक का प्यारा हमें बताता है कि भाई! वह परमात्मा तेरे शरीर के अंदर है। तू उस परमात्मा से मिल सकता है।

तिस की सरनि सरब सुख पावहि॥
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि॥

जिस महात्मा के अंदर परमात्मा प्रगट हो जाता है, परमात्मा उसे भंडारी बना देता है। ऐसे महात्मा के दर्शन हम तभी पा सकते हैं जब परमात्मा हम पर दया-मेहर करता है।

भागहीन गुरु ना मिले, निकट बैठे नित पास।

अवर सिआनप सगली छाडु॥
तिसु जन की तू सेवा लागु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा को प्राप्त करना मन-बुद्धि का विषय नहीं है। यह इश्क और प्रेम का विषय है। आप सारे इल्म छोड़कर महात्मा के पास जाओ। महात्मा के पास जाने से आपके अंदर विरह, तड़प और 'नाम' जपने का शौंक पैदा होगा।

आवनु जानु न होवी तेरा॥
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा॥

आप कहते हैं, ''जब हम किसी कमाई वाले महात्मा की

सोहबत-संगत में जाते हैं, उसकी दी हुई शिक्षा पर अमल करते हैं, हमारा जन्म-मरण का दुःख हमेशा के लिए कट जाता है। हमें भी मालिक के प्यारों की सोहबत-संगत में जाकर 'नाम' की कमाई करनी चाहिए।''

जब शाह बल्ख बुखारा को परमात्मा से मिलने का शौंक जागा तो वह राजपाट ठुकराकर कब्रों में जा बैठा। उसे कब्रों में बैठे हुए बहुत दिन हो गए तो उसके लड़के ने जाकर कहा, ''पिताजी! आज घर पर भोग है। बहुत से रिश्तेदार आएंगे। आप घर चलो।'' वह घर आया। घर में हलवा बना हुआ था। उसने थोड़ा सा हलवा शीशे पर लगा दिया और बेटे से कहा, ''देख बेटा! पहले यह शीशा कितना साफ था, अब हम इसमें अपना मुँह नहीं देख सकते।''

इसी तरह हमारी आत्मा दुनिया के भोग-विलासों में फँसकर अपने ऊपर कीचड़ लगा बैठी है। अब इसे अपना स्वरूप नहीं दिखता। आत्मा मैली हो गई है, अपने घर को भूल गई है।

उस जमाने में गाड़ियों, बसों, हवाई जहाजों के साधन नहीं थे। शाह बल्ख-बुखारा पैदल चलकर हिन्दुस्तान आया। हिन्दुस्तान ऋषियों-मुनियों का देश रहा है। वह हिन्दुस्तान में आकर बहुत साधु-सन्तों से मिला। आखिर फिरते फिरते उसे मालूम हुआ कि काशी में कबीर साहब हैं जो उसकी आत्मा को शान्ति दे सकते हैं। वह काशी में कबीर साहब के पास पहुँचा।

उसने कबीर साहब को अपनी हालत सुनाई, ''मैं बल्ख-बुखारा का बादशाह परमार्थ की तलाश में घर से निकला हूँ। आप मुझे परमार्थ की दात दो।'' कबीर साहब हँसकर कहने लगे, ''मैं एक गरीब जुलाहा हूँ। तू एक बादशाह है। तेरी-मेरी गुजर कैसे होगी?'' बादशाह ने कहा, ''मैं आपके दरबार में

बादशाह नहीं, एक भिखारी बनकर आया हूँ। मैं हर तरह से आपकी सेवा करूँगा। आप मुझे जो भी रूखा-सूखा खाने को देंगे, खाकर गुजर कर लूँगा।''

कबीर साहब ताना-बाना बुनते थे। बादशाह ने कबीर साहब के साथ ताना बुनकर उनका हाथ बंटवाया। छह साल बीत गए। माता लोई ने कबीर साहब से कहा, ''यह एक बादशाह होकर हमारे साथ ताना बुन रहा है, आप इसे रूहानियत दो।'' कबीर साहब ने कहा,''अभी बर्तन तैयार नहीं।'' लोई ने कहा, ''मैं कैसे जानूं? मैं इसे जो काम कहती हूँ यह कर देता है।''

कबीर साहब ने लोई से कहा, ''तुम कुछ छिलके लेकर छत पर चली जाओ। जब मैं इसे अंदर बुलाऊँगा तब तुम इसके ऊपर छिलके गिरा देना।'' कबीर साहब ने शाह बल्ख-बुखारा से कहा, ''मैं बाहर अपना कोट भूल आया हूँ। जाकर उसे ला दे।'' जब वह बाहर गया तो लोई ने छत से उसके ऊपर छिलके गिरा दिए। वह ऊपर देखकर गुस्से से बोला, ''अगर मैं बल्ख-बुखारा में होता तो तुझे बताता।'' यह सुनकर माता लोई घबराई कि इसके अंदर तो अभी भी बल्ख-बुखारा की बदबू भरी पड़ी है।

जब छह साल और बीत गए। कबीर साहब ने लोई से कहा, ''अब बर्तन तैयार है।'' माता लोई ने कहा, ''मैं कैसे जानूँ कि अब बर्तन तैयार है?'' कबीर साहब ने कहा, ''इस बार तू गन्दगी का टोकरा लेकर छत पर चली जा। जब मैं इसे बुलाऊँ तब तू गन्दगी इसके सिर पर गिरा देना।''

कबीर साहब ने उसी तरह बादशाह को कोई सामान लाने के लिए बाहर भेजा। जब वह बाहर गया तो माता लोई ने उसी तरह से गन्दगी बल्ख-बुखारा के ऊपर गिरा दी। बल्ख-बुखारा ऊपर देखकर कहने लगा, ''मेरे ऊपर गन्द गिराने वाले! तेरा

भला हो। मैं तो इससे भी गन्दा हूँ।'' यह सुनकर माता लोई चुप रही। इस तरह बारह साल की सेवा के बाद उसे 'नाम' मिला।

जब कबीर साहब 'नाम' का भेद बताने लगे तो सुरत शरीर छोड़कर *सच्चखंड* रवाना हो गई। गुरु कबीर जैसा हो और शिष्य बल्ख-बुखारा जैसा हो! जिसने राजपाट ठुकराकर बारह साल अपने सतगुरु की सेवा की।

महाराज जी कहा करते थे, ''शिष्य भी बड़े भाग्य से मिलता है। जिस तरह गुरु का मिलना मुश्किल है उसी तरह गुरु को शिष्य का मिलना भी मुश्किल है।''

एक बार बल्ख-बुखारा गंगा नदी के किनारे बैठा गुदड़ी सिल रहा था। उसका वजीर फौजें लेकर वहाँ से निकला। उसने देखा, यह तो अपने बादशाह हैं! वजीर ने कहा, ''बादशाह सलामत! अब तक मैं आपके राजपाट की देखभाल करता रहा हूँ। अब आप चलकर अपना राजपाट संभालो।''

बादशाह ने गुदड़ी सिलते सिलते सुई पानी में गिरा दी और वजीर से कहा, ''यह सुई निकाल दो, फिर हम चलेंगे।'' वजीर ने कहा, ''मैं नदी में से सुई कैसे निकाल सकता हूँ?'' बादशाह ने कहा, ''जब तू इतना ही नहीं कर सकता तो मुझे ऐसे राज्य का क्या करना है?'' जब बादशाह ने अपनी तवज्जो दी तो अनेकों मछलियाँ मुँह में सुई पकड़कर वहाँ हाजिर हो गई। 'नाम' जपने वाले अपनी जिदंगी में कभी ऐसी करामात कर जाते हैं।

सन्त-महात्मा एक मामूली इन्सान की तरह अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं। अपने आपको छुपाकर रखते हैं। ऐसे कमाई वाले महात्माओं का पशु-पक्षी भी स्वागत करते हैं।

❖ ❖ ❖

परमात्मा कैसा है ?

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ॥

गुरु अर्जुनदेव जी पूरे सतगुरु की महिमा बयान करते हुए कहते हैं कि जिसने कुल मालिक को अपने अंदर प्रगट कर लिया हो, उसे सतगुरु कहते हैं। जीव अपने आप परमात्मा के देश नहीं पहुँच सकता। अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों, हमें ऐसे सतगुरु मिल जाएं, उनसे 'नामदान' प्राप्त करके ही हमारा उद्धार हो सकता है।

हजूर महाराज कहा करते थे, ''जो काम एक इन्सान कर सकता है, वही काम दूसरा इन्सान भी कर सकता है।'' परमात्मा खुद ही इन्सान बनकर इस संसार मंडल में आता है। हमें अपने मिलने का रास्ता बताता है। हम उसकी संगत का फायदा उठाकर अपने घर वापिस *सच्चखंड* पहुँच सकते हैं।

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल॥

आप कहते हैं, ''गुरु हमेशा ही सेवक की रक्षा करता है, सेवक का पालन करता है। उस पर दयाल रहता है। सतगुरु हमें 'नामदान' देकर जब तक *सच्चखंड* न पहुँचा दे, भूलते नहीं। सतगुरु ही फैसला करता है कि इसे फिर संसार मंडल में भेजना है या अंदर के मंडलों में ही साफ करके ऊपर ले जाना है। सेवक की मौत और पैदाइश गुरु के हाथ में होती है।''

सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥

अगर शिष्य सतगुरु के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करता है तो गुरु शिष्य के खोटे कर्मों को दूर करता है।

सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥

जब शिष्य अपने मन को विषय-विकारों से मोड़ लेता है, सतगुरु उसके सारे बंधन काट देता है। हमारी आत्मा पर पहला बंधन स्थूल शरीर का है। उसके अंदर सूक्ष्म और उसके अंदर कारण है। जिस तरह एक पिंजरे के अंदर दूसरा, दूसरे के अंदर तीसरा पिंजरा है। सतगुरु हमसे 'शब्द-नाम' की कमाई करवाकर हमें इन पिंजरों से आजाद करवा देता है।

हम जानते हैं, जितना हमारा शरीर पवित्र होगा, उतना मन पवित्र होगा। जितना मन पवित्र होगा, उतनी आत्मा पवित्र होगी। जब हमारी आत्मा पवित्र हो जाती है तो वह पवित्र शब्द के साथ जुड़कर फौरन शब्द पर सवार होकर अपने घर *सच्चखंड* पहुँच जाती है।

सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥

ऊँचे भाग्य वाले सेवक ही सतगुरु के पास पहुँचते हैं। सतगुरु उनको 'नाम' का धन देता है। उस धन को चोर चुरा नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता।

सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥

सतगुरु, सेवक का यह लोक और अगला लोक भी संवारता है। 'नाम' देकर उसे भूल नहीं जाता, याद रखता है।

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै॥
गुरु की आगिआ मन महि सहै॥

आप कहते हैं, ''सेवक सतगुरु के घर में रहे। सतगुरु की आज्ञा का पालन करे।''

आपस कउ करि कछु न जनावै॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै॥

आप कहते हैं, ''सेवक की यह ड्यूटी है कि वह सतगुरु के बताए हुए भजन-सिमरन, सेवा या जो सतगुरु कहे उसे मन लगाकर करे। दिल में अहंकार न आने दे। अपने ऊँचे भाग्य समझे कि सतगुरु ने दयाल होकर उसे सेवा बख्शी है।''

मनु बेचै सतिगुर कै पासि॥
तिसु सेवक के कारज रासि॥

हमारे और सतगुरु के दरम्यान मन ही रुकावट है। अगर सेवक अपना मन सतगुरु पर वार दे, उनके पास बेच दे; उनके कहे मुताबिक मन की रुकावट को दूर कर ले तो सेवक के सारे काज रास आ जाते हैं। सेवक की आत्मा मन के पंजे से आजाद होकर परमात्मा से मिल जाती है।

सेवा करत होइ निहकामी॥
तिस कउ होत परापति सुआमी॥

गुरु साहब कहते हैं, ''अगर हम निष्काम सेवा करते हैं, भजन-अभ्यास करते हैं, हमें परमात्मा प्राप्त हो जाता है। गुरु सेवक को परमपद का इनाम देता है।''

अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''यह अपने बस का खेल नहीं कि हम अपना मन सतगुरु पर वार दें। सब सतगुरु के हाथ में है। सतगुरु ही जानता है कि मुझे इसे इसी जन्म में ले जाना है या फिर संसार में भेजना है।''

हजूर कहा करते थे, ''जब तक हमारा पर्दा नहीं खुलता हम तब तक ही कहते हैं कि हम भजन-अभ्यास करते हैं। सतसंग में जाते हैं। सेवा करते हैं। जब पर्दा खुल जाता है, हम जान जाते हैं कि कोई हमें भजन-अभ्यास में बिठा रहा है। तब ही हम सच्चे मायनों में अपने गुरु का धन्यवाद करते हैं।''

बीस बिसवे गुर का मनु मानै॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै॥

आप कहते हैं, ''सेवक का धर्म है कि वह मन को गुरु पर वार दे। अगर हम ऐसा कर लेते हैं तो हमें परमात्मा से मिलने का रास्ता प्राप्त हो जाता है। गुरु पर अपने-आप ही भरोसा आना शुरू हो जाता है।''

सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ॥

आप कहते हैं, ''सतगुरु वही है जिसके अंदर 'नाम' प्रगट है। मैं ऐसे सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ जिसने दया-मेहर करके मेरे अंदर भी 'नाम' टिका दिया।''

सरब निधान जीअ का दाता॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता॥

आप कहते हैं, ''सतगुरु 'नाम' के ख़ज़ाने का मालिक होता है। उसका ख़ज़ाना कभी कम नहीं होता। वह आठों पहर परमात्मा के साथ जुड़ा रहता है। आँख खोलता है तो दुनिया में है; आँख बंद करता है तो परमात्मा के पास है।''

ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु॥
एकहि आपि नही कछु भरमु॥

सतगुरु को परमात्मा या अपने गुरु के मुत्तलिक कोई भ्रम नहीं होता।

सज्जन सेती सज्जन मिलया, जैसे खंड पतासा।

सहस सिआनप लइआ न जाईऐ॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ॥

ऐसा सतगुरु, जिसने अभ्यास करके परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया हो, उसे हम अपनी बुद्धि या चतुराई से नहीं पा सकते। हम परमात्मा की दया से ही ऐसे सतगुरु के चरणों में पहुँच सकते हैं। गुरु साहब प्यार से समझाते हैं :

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे, भेटिया पुरुष रसिक बैरागी।
मिटया अंधेर मिलत हर नानक, जन्म जन्म की सोई जागी॥

सफल दरसनु पेखत पुनीत॥
परसत चरन गति निरमल रीति॥

ऐसे सतगुरु के दर्शन करने में ही हमारी सफलता है। उनके चरणों में शीश झुकाना निर्मल रीति है।

भेटत संगि राम गुन रवे॥
पारब्रहम की दरगह गवे॥

आप कहते हैं, ''जब हम सतगुरु के पास जाते हैं, वह

हमसे 'शब्द-नाम' की कमाई करवाते हैं। 'नाम' की कमाई करने से हमें दरगाह में मान-इज्जत मिलती है।''

सुनि करि बचन करन आघाने ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥

सतगुरु के वचन सुनने से कानों को संतोष आ जाता है। शब्द की आवाज मीठी और सुरीली होती है। जब हम अंदर शब्द के साथ जुड़ जाते हैं तब हमें बाहर के गाजे-बाजे अच्छे नहीं लगते। उस कीर्तन के अंदर शान्ति है, तृप्ति है।

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥
अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥

पूरे गुरु के मंत्र का नाश नहीं होता। गुरु खुद फना नहीं होता। जिसके अंदर वह अपना शब्द-नाम रख देता है, वह सेवक भी फना नहीं होता। पूरा गुरु जिस पर भी दृष्टि डाल देता है, वह चाहे कितने भी बुरे कर्मों वाला क्यों न हो, उसे 'शब्द-नाम' की कमाई में लगाकर सन्त बना देता है। बड़े बड़े चोर डाकू सन्तों की संगत में आकर महात्मा बन जाते हैं। पहले की तरह चोरियाँ छोड़कर 'शब्द-नाम' की कमाई करने लग जाते हैं।

गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥

सतगुरु के गुणों की महिमा बयान नहीं की जा सकती। वह बेअंत है। वह जिसे चाहे परमात्मा के साथ मिला सकता है। परमात्मा ने उसे खुली छूट दी होती है कि आप जिसे भी ले आएंगे, मैं उसे अंगीकार करूँगा। गुरु नानक साहब कहते हैं:

सौंपे जिस भंडार फिर पुछ ना लीतीयन।

जिसे परमात्मा एक बार भंडारी बना देता है, फिर उससे नहीं पूछता कि आप इतने जीवों को ले आए हो? महात्मा जितनों को भी ले जाएं, उन्हें परमात्मा जरूर बख्शता है।

महात्मा प्यार से समझाते हैं कि आप अपने ऐबों और पापों की तरफ मत देखो। 'शब्द-नाम' प्राप्त करो। 'शब्द-नाम' प्राप्त करने के बाद जहाँ खड़े हो, वहीं खड़े रहो। फिर कोई बुरा कर्म न करो जिसका हिसाब आपको चुकाना पड़े। क्योंकि काल किसी के साथ एक पाई की भी रियायत नहीं करता। पूरा हिसाब लेता है। वह हिसाब सेवक दे चाहे गुरु दे।

जिहबा एक उसतति अनेक॥
सति पुरख पूरन बिबेक॥

गुरु साहब कहते हैं, ''अपनी जीभ तो एक है। सतगुरु की महिमा बेअन्त है। हम किस तरह उसकी महिमा बयान कर सकते हैं! गुरु कुल मालिक है, विवेकवान है।''

काहू बोल न पहुचत प्रानी॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी॥

हम दुनियावी रसीले वचनों से उसके पास नहीं पहुँच सकते। वह अगम, अगोचर है। हमारे ऊँचे भाग्य हों, हमें पूरे गुरु की संगत प्राप्त हो, सतगुरु हमारे अंदर शब्द-नाम टिका दे, हम शब्द-नाम की कमाई करें तो ही परमात्मा के दरबार पहुँचेंगे।

निराहार निरवैर सुखदाई॥
ता की कीमति किनै न पाई॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा निराहार, निर्वैर है। वह किसी चीज का आहार नहीं करता। किसी कौम, जाति के साथ उसका

वैर नहीं है। वह सबके साथ प्यार करता है। सबको सुख देता है। वह सुखों का दाता है। अगर हम उसकी भक्ति करते हैं तो हम सारे सुख प्राप्त कर सकते हैं।''

अनिक भगत बंदन नित करहि॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि॥

आप कहते हैं, ''अनेकों भक्त परमात्मा की भक्ति करते हैं, उसे दंडवत प्रणाम करते हैं। गिनती नहीं, कितने लोग उसका भजन-सिमरन करते हैं और उसके आगे प्रार्थनाएं करते हैं।''

सद बलिहारी सतिगुर अपने॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने॥

परमात्मा निराहार, निर्वैर और सुखों का दाता है। उसे प्राप्त करके हमारे अंदर शान्ति आ जाती है। ऐसे परमात्मा को हम सतगुरु द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। मैं अपने सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ जिसने मुझे परमात्मा से मिला दिया।

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ॥
अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ॥

आप कहते हैं, ''यह अमृत कोई विरला ही प्राप्त कर सकता है। जिसे 'शब्द-नाम' का अमृत प्राप्त हो जाता है वह अमर हो जाता है।'' गुरु अमरदास जी कहते हैं :

जिस अमृत नूं सुर, नर, मुनि जन लोचदे, सो अमृत गुरु ते पाया।

उसु पुरख का नाही कदे बिनास॥
जा कै मनि प्रगटे गुनतास॥

आप कहते हैं, ''जो 'शब्द-नाम' प्राप्त कर लेता है उस पुरख का कभी नाश नहीं होता। वह अमर हो जाता है।''

आठ पहर हरि का नामु लेइ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ॥

आप कहते हैं, ''ऐसे महात्मा आठों पहर परमात्मा की भक्ति में लगे रहते हैं। 'शब्द-नाम' के साथ जुड़े रहते हैं। अपने सेवकों को भी यही उपदेश देते हैं कि 'नाम' के साथ जुड़े रहो। 'शब्द-नाम' की कमाई करो। साथ जाने वाली वस्तु सिर्फ 'नाम' है। 'नाम' के सिवाय कोई अपना संगी-साथी नहीं। संसार की कोई भी वस्तु साथ नहीं जाती।''

मोह माइआ कै संगि न लेपु॥
मन महि राखै हरि हरि एकु॥

अंधकार दीपक परगासे॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे॥

जिस तरह किसी भवन के अंदर दीपक रख दें तो अंधेरा दूर हो जाता है। वहाँ रखी हर वस्तु दिखने लग जाती है। उसी तरह जब हमारे अंदर 'शब्द-नाम' का दीपक जल जाता है तो भ्रम का अंधेरा खत्म हो जाता है। परमात्मा हमारे अंदर ज्योत-रूप, नाद-रूप होकर विराजमान है।

सतगुरु हमारे अंदर 'नाम' का दीपक जला देते हैं। हमारा अंतरी-मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। कोई भ्रम नहीं रहता। सतगुरु अंधविश्वास नहीं देते। वे कहते हैं, ''आओ देखो! आपके अंदर ज्योत है। ज्योत के अंदर आवाज है।''

तपति माहि ठाढि वरताई॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमारा हृदय काम, क्रोध,

लोभ, मोह और अहंकार से जल रहा था। सतगुरु ने 'नाम' की वर्षा करके इसे ठार दिया। हमारे अंदर आनन्द हो गया।''

जनम मरन के मिटे अंदेसे॥
साधू के पूरन उपदेसे॥

जिन्हें सतगुरु 'नाम' दे देते हैं, उनमें जन्म-मरण का डर खत्म हो जाता है। उनके दिल में यही चाव होता है कि एक न एक दिन वे सतगुरु की दया से *सच्चखंड* पहुँच जाएंगे।

भउ चूका निरभउ होइ बसे॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे॥

'नाम' जपने से आत्मा में बल आ जाता है, आत्मा निर्भय हो जाती है। यम का डर खत्म हो जाता है। दुनिया के लोगों को जब मौत आती है, वे बड़े कष्ट भोगते हैं। बहुत हाय हाय करते हैं। जब सतसंगी का अन्त समय आता है उस समय वह ख़ुशी ख़ुशी शरीर छोड़ता है।

सतगुरु, सतसंगी के रिश्तेदार, माता, पिता और उसके जानवर तक की भी संभाल करते हैं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि सतसंगी का कोई रिश्तेदार शरीर छोड़ रहा हो और सतसंगी उसके पास बैठा हो तो वह रिश्तेदार भी शान्त-रूप होकर इस संसार से जाता है।

जिस का सा तिनि किरपा धारी॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी॥

गुरु साहब कहते हैं, ''हम जिस परमात्मा के जीव हैं उस परमात्मा ने हमारे ऊपर दया-मेहर की है। परमात्मा की ज्योत सबके अंदर काम कर रही है।''

थिति पाई चूके भ्रम गवन॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन॥

आप कहते हैं, ''जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करने लगे, हममें टिकाव आ गया और भरोसा बन गया।''

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥
कला धारि जिनि सगली मोही॥

परमात्मा आप ही निरगुन और आप ही सरगुन है। सबके अंदर अपनी कला रखकर सबको मोहित कर रहा है। हमें जो यह चलती-फिरती दुनिया नज़र आ रही है, यह अपने आप पैदा नहीं हुई। इस रचना के पीछे कोई गुप्त ताकत काम कर रही है। सन्त उस ताकत को परमात्मा कहते हैं।

अपने चरित प्रभि आपि बनाए॥
अपुनी कीमति आपे पाए॥

हम इस दुनिया में जितने भी खेल देख रहे हैं, यह सब परमात्मा ने ही पैदा किए हैं। वह अपनी महिमा आप ही जानता है। आप ही गुरमुख बनकर सन्त रूप धारकर इस संसार में आता है। आप ही महात्मा के अंदर बैठकर जीवों को बताता है कि वहाँ शान्ति ही शान्ति है। आओ! मैं आपको उस शान्ति के देश ले चलता हूँ।

हरि बिनु दूजा नाही कोइ॥
सरब निरंतरि एको सोइ॥

आप कहते हैं, ''सबको परमात्मा ने पैदा किया है। सबके अंदर परमात्मा है। ऐसे सतगुरु को दोस्त और दुश्मन के अंदर भी परमात्मा दिखता है।''

ओति पोति रविआ रूप रंग॥
भए प्रगास साध कै संग॥

आप कहते हैं, ''जब हम महात्मा की संगत-सोहबत में गए, तभी हमें समझ आई कि दोस्त और दुश्मन के अंदर परमात्मा है।'' मेरा आँखों देखा वाकया है कि एक प्रेमी महाराज सावन सिंह जी का नाम लेवा था। वह भैंस को गले लगाकर कहता, ''इसके अंदर भी सावन है। पेड़ को गले लगाकर कहता, इसके अंदर भी सावन है। मुझे हर जगह अपना गुरु ही नज़र आता है।''

रचि रचना अपनी कल धारी॥
अनिक बार नानक बलिहारी॥

आप कहते हैं, ''मैं ऐसे परमात्मा पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने जीव, जंतु, इन्सान, हैवान सबकी रचना रचकर अपने शब्द की ताकत सबमें रख दी है। उस शब्द की ताकत की वजह से ही हम इस संसार में दौड़े फिरते हैं।''

इस अष्टपदी में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने बड़े प्यार से समझाया है कि सतगुरु वह है जिसके अंदर सतपुरख प्रगट हो गया है। जैसे पारस के साथ लोहा तर जाता है; ऐसे ही सतगुरु की संगत-सोहबत करके हम भी तर जाते हैं। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं, वे ही ऐसे सतगुरु की सोहबत-संगत में आकर फायदा उठा सकते हैं।

❖ ❖ ❖

नाम का ख़ज़ाना

साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु॥
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस अष्टपदी में 'नाम' की महिमा बयान करते हैं। हम दुनिया में जो सामान प्रेम-प्यार से इकट्ठा करते हैं और जिस शरीर में बैठे हैं ये साथ नहीं जाएंगे।

इतिहास बताता है कि जो मुल्क कभी गुलाम थे, गरीब थे, आज आजाद हैं। कोई वक्त था, हिन्दुस्तान सोने की चिड़िया कहलाता था। काबुल से महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान को लूटने के लिए 18 बार हमले किए। वह यहाँ से बहुत सोना-चाँदी लूटकर ले गया।

जब उसका आखिरी समय आया, उसने अपने अहलकारों से कहा, ''मैंने जो गनीमत का माल लूटा है उसे बाहर सजा दो।'' मीलों-मील तक हीरे-जवाहरात, सोना-चाँदी, धन-दौलत सजा दिए गए। जब उसने पालकी में बैठकर सारा माल देखा, दहाड़ें मारकर रोया और कहने लगा, ''ओह! मैंने इस माल के लिए लाखों औरतें विधवा कर दी, लाखों ही बच्चे यतीम कर दिए। अफसोस! इसमें से एक पाई भी मेरे साथ नहीं जाएगी।''

उसने हुक्म दिया कि जब मेरा जनाजा उठाओ तो मेरे हाथ कफन से बाहर नीचे की तरफ हों ताकि दुनिया जान जाए कि जब महमूद गजनवी ने इस संसार से कूच किया तो उसके दोनों हाथ खाली थे। मेरे साथ जो बीतेगी वो तो मुझे भुगतनी ही है।

मेरे पीछे यह नारा लगाना, ''जुल्म साथ है खाली हाथ है।''

संत जना मिलि करहु बीचारु॥
एकु सिमरि नाम आधारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमें जीवन में सन्तों की सोहबत-संगत में जाकर 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है। चलते-फिरते, उठते-बैठते सिमरन करना है।''

अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु॥
चरन कमल रिद महि उरि धारहु॥

अगर आप अपनी आत्मा पर रहम करना चाहते हैं, उसे परमात्मा के साथ मिलाना चाहते हैं तो मेरे प्यारेयो! 'शब्द नाम' की कमाई करो। सतगुरु के चरणों के साथ जुड़े रहो। कोई और उपाय करने की जरूरत नहीं।

करन कारन सो प्रभु समरथु॥
द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु॥

प्रभु करन-कारण है, समरथ है। वह जो चाहे सो कर सकता है। अपने दिल में श्रद्धा और प्यार बनाकर अभ्यास करो। नाम की कमाई करो। यही एक वस्तु संसार से हमारे साथ जाएगी।

इहु धनु संचहु होवहु भगवंत॥
संत जना का निरमल मंत॥

अगर दुनिया में कोई धन इकट्ठा करना है तो वह 'नाम' का ही धन है। यही नाम का धन हमारे साथ जाएगा। सन्त यही शिक्षा देते हैं : 'नाम' की कमाई करो। 'नाम' ही आपकी सहायता करेगा। महात्मा इस संसार को सुखों की नगरी बनाने के लिए नहीं आते। यह दुनिया कभी सुखों की नगरी बन ही नहीं सकती।

इस दुनिया की हालत जैसी थी वैसी ही है।

एक आस राखहु मन माहि॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि॥

दिल में परमात्मा की भक्ति और सतगुरु के प्यार की आशा रखो ताकि जन्म-मरण का रोग खत्म हो जाए। हमें फिर से इस दुःखी दुनिया में हाजिरी लगाने न आना पड़े।

जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि॥
सो धनु हरि सेवा ते पावहि॥

आप कहते हैं, ''हम जिस धन की तलाश पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में करते हैं; अगर हम परमात्मा की भक्ति करें तो हमें वह धन सहज ही प्राप्त हो सकता है।''

जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत॥
सो सुखु साधू संगि परीति॥

यह बेचारा इन्सान! आत्मा की शान्ति के लिए तीर्थों, मन्दिरों, मस्जिदों मे मारा मारा फिरता है। आप कहते हैं, ''अगर आपको सच्ची शान्ति की चाह है तो आप पूरे महात्मा से प्यार करो। महात्मा आपको बताएंगे कि शान्ति 'नाम' में है; वे हमें 'नाम' के साथ जोड़ देते हैं।''

जिसु सोभा कउ करहि भली करनी॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी॥

हम मान-बड़ाई प्राप्त करने के लिए जगह-जगह मारे-मारे फिरते हैं। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो यह शोभा स्वाभाविक ही प्राप्त हो जाती है। इतिहास बताता है : दुनिया के राजा-महाराजाओं ने अपना यश करवाने के लिए मालिक के

प्यारों को कष्ट दिए। लेकिन आज उन राजाओं को कौन जानता है? जो महात्मा उस वक्त हुए जैसे ईसामसीह, गुरु नानक, रामचन्द्र जी और कबीर साहब; आज भी लोग बड़े प्यार से इनका नाम लेते हैं, इनकी इज्जत करते हैं। महात्मा प्यार से लोगों का दिल जीत लेते हैं। प्यार ही परमात्मा है।

अनिक उपावी रोगु न जाइ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ॥

हर बीमारी की दवाई है। संसार में जन्म-मरण की कोई दवाई नहीं। इसकी दवाई 'नाम' है, जो महात्मा के पास है। जब हम नाम की दवाई इस्तेमाल करते हैं तो हमारे जन्म-मरण का रोग हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। जन्म-मरण का रोग पढ़-पढ़ाई और जप-तप से खत्म नहीं होता।

जिनि नाम विसारया, क्या जप-जापे होर।
नानक जमपुर बध्धे मारिए, ज्यों सन्नी ऊपर चोर॥

सरब निधान महि हरि नामु निधानु॥
जपि नानक दरगहि परवानु॥

आप कहते हैं, ''सबसे उत्तम **नाम का ख़ज़ाना** है। हमें 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। नाम के साथ जुड़े रहना चाहिए। अगर कोई आत्मा दरगाह में परवान है तो वह 'नाम' के साथ ही परवान है।''

मनु परबोधहु हरि कै नाइ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ॥

आप कहते हैं, ''हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारा मन है। यह अंदर ही वकील की तरह समझाता रहता है। हम यहाँ राजस्थान में बैठे हैं, यह मन कहाँ-कहाँ की सैर कर रहा है!

क्या-क्या योजनाएं बना रहा है! अगर आप हिरन की तरह भटकते हुए इस मन को वश में करना चाहते हैं तो इसे 'शब्द-नाम' की लज्जत दो, नाम के साथ जोड़ो।''

मुझे अच्छी तरह याद है; मेरे पिताजी जपजी साहब का पाठ किया करते थे। कई बार कहते, ''मन नहीं टिकता।'' तब मुझे ऐसा ज्ञान नहीं था, जो मैं उन्हें बता सकता। वह बुजुर्ग सच कहता था। पढ़-पढ़ाई से मन नहीं टिकता। जपजी साहब में 'नाम' की बड़ी महिमा है। उसमें लिखा हैः

जिनि नाम ध्याया, गए मुशक्कत घाल।
नानक ते मुख उजले, केती छुट्टी नाल॥

ता कउ बिघनु न लागै कोइ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ॥

हम दुनियादार लोग जप-तप पूजा पाठ करते हैं। दिन-दिहाड़े का विचार करते हैं। ज्योतिषियों से पूछते हैं कि कौन सा दिन अच्छा है, कौन सा खराब है। सन्त-महात्मा हमें इससे ऊपर उठाते हैं और समझाते हैं कि जो 'नाम' की कमाई करते हैं उन्हें कोई विघ्न नहीं पड़ता। पल्टू साहब कहते हैं :

लगन महूर्त झूठ है, सभी बिगाड़े काम।

नशहरे में अच्छी कमाई वाला एक महात्मा जल्लण जट था। उसकी एक लड़की थी। उसकी पत्नी ने कहा, ''आप पंडित के पास जाकर शादी का लगन-मुहूर्त निकलवा लाओ।''

हिन्दुस्तान में आम रिवाज है; पंडित से जाकर पूछते हैं कि पत्री देखकर बताओ, कौन सा मुहूर्त ठीक है। बेशक वह कमाई वाला महात्मा था, फिर भी घर के साथी की सलाह माननी जरूरी है। जब वह चला जा रहा था तो रास्ते में एक जगह लोग

रो रहे थे। उसने पूछा, ''ये लोग रो क्यों रहे हैं?'' वहाँ के लोगों ने बताया कि वैद्य का लड़का गुजर गया है। जल्लण जट ने कहा, ''क्या वैद्य ने उसकी दवाई बूटी नहीं की?'' लोगों ने कहा, ''सब कुछ किया था। लेकिन मालिक का भाणां!''

जब जट आगे गया तो पंडित के घर से भी रोने की आवाज आ रही थी। उसने पूछा, ''ये लोग रो क्यों रहे हैं?'' उन्होंने बताया कि पंडित का दामाद मर गया है। लड़की विधवा हो गई है। जट ने पूछा, ''क्या पंडित ने ज्योतिष नहीं लगाया था, लगन-मुहूर्त नहीं निकाला था?'' लोगों ने कहा, ''चाहे जो मर्जी कर लो। जो होना होता है, सो होकर रहता है।'' जल्लण जट घर वापिस आ गया और कहने लगा :

वैद्यां दे घर पिट्टना, ब्राह्मण दे घर रंड।
चल जलणा घर आपणे, साहा देख ना सन्न॥

कलि ताती ठांढा हरि नाउ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ॥

कलयुग की क्रिया गर्म है। जीव इसमें जलता है। हम जानते हैं कि अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग भड़क रही है। इस आग को ठंडा करने के लिए 'नाम' की कमाई की जरूरत है। 'नाम' ही शान्ति दे सकता है। सन्त तपते-जलते जीवों को 'नाम' की दवाई देकर ठंडा कर देते हैं।

भउ बिनसै पूरन होइ आस॥
भगति भाइ आतम परगास॥

नाम की कमाई करने से यमों का डर दूर हो जाता है। नाम की कमाई करने वाले के अंदर प्रकाश हो जाता है।

तितु घरि जाइ बसै अबिनासी॥
कहु नानक काटी जम फासी॥

यह आत्मा शुरू में जहाँ से बिछुड़कर आई थी, उसी घर में चली जाती है। उस घर *सच्चखंड* का कभी नाश नहीं होता। परमात्मा अविनाशी है। आत्मा उसमें मिलकर अविनाशी बन जाती है। यमों से छूटने का साधन महात्मा की शरण है।

साधा चरणी जो पवे, सो छुट्टे बध्धा।

ततु बीचारु कहै जनु साचा॥
जनमि मरै सो काचो काचा॥

जो उस परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है; वही संसार में सच्चा-सुच्चा है। जो जीता-मरता है वह कच्चा है।

आवा गवनु मिटै प्रभ सेव॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव॥

प्रभु की भक्ति करने से आना-जाना खत्म हो जाता है। अपना आप छोड़कर गुरु की शरण में लग जाना चाहिए। यही संसार-समुद्र से तरने का साधन है।

इउ रतन जनम का होइ उधारु॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु॥

यह जन्म हीरा है। हम जानते हैं अगर हम किसी से शरीर का कोई अंग माँगें; चाहे उसे कितना भी धन-दौलत दें, वह अपने शरीर का अंग देने के लिए तैयार नहीं होता। परमात्मा ने हमें यह हीरा मुफ्त में दिया है, लेकिन हम इसे विषय-विकारों में खोकर चले जाते हैं। हमें चाहिए कि हम दिन-रात सिमरन में लग जाएं।

अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥

हिन्दुओं में 27 स्मृतियाँ, 6 शास्त्र और 4 वेद हैं। इन्हें पढ़ने से और इन पर विचार करने से हम अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकते; हमारा उद्धार नहीं हो सकता।

हरि की भगति करहु मनु लाइ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ॥

आप कहते हैं, ''भक्ति , अभ्यास को बोझ नहीं समझना चाहिए। प्रेम-प्यार से करना चाहिए। अगर हम दिल में परमात्मा को प्राप्त करने की आशा रखकर भक्ति करेंगे तो हमें परमात्मा जरूर मिल जाएगा।''

संगि न चालसि तेरै धना॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना॥

गुरु साहब मन की तरफ इशारा करते हुए कहते हैं, ''हे मूर्ख मन! तू दुनिया का जो सामान, धन-दौलत इकट्ठी कर रहा है उसमें से एक पाई भी तेरे साथ नहीं जाएगी। तू इनके बीच क्यों फँसा हुआ है?''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक आदमी घोड़े पर बोझ लादकर जा रहा था। उसने घोड़े के एक तरफ दो मन गेहूँ और दूसरी तरफ दो मन रेत लाद रखी थी। किसी ने पूछा, भाई! घोड़े पर क्या लाद रखा है? घोड़े वाले ने कहा, ''एक तरफ दो मन गेहूँ और दूसरी तरफ दो मन रेत लादी हुई है, ताकि घोड़े का भार बराबर रहे।'' उस आदमी ने कहा, ''तू भार बराबर रखने के लिए दोनों तरफ एक-एक मन गेहूं लाद सकता था।'' घोड़े वाले ने उससे पूछा, ''तेरे पास कितना धन

है?'' उस आदमी ने कहा, ''मेरे पास तो जान ही जान है।'' घोड़े वाले ने कहा, ''तू अपनी अक्ल अपने पास ही रख। मैं तेरी सलाह नहीं मानता। कहीं मैं भी तेरी तरह गरीब न हो जाऊँ।''

कहने का भाव यह है कि महात्मा हमें समझाते हैं, ''जब इस संसार से तुम्हारा शरीर भी साथ नहीं जाएगा, जो सामग्री तुम इकट्ठी कर रहे हो वह कैसे साथ जाएगी?'' हम महात्मा की नसीहत को सुनने के लिए ही तैयार नहीं होते।

सुत मीत कुटंब अरु बनिता॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''पुत्र, स्त्री, पौत्र, इनसे कभी किसी को सुख नहीं मिला।'' हम जानते हैं, जब शादी होती है तो मन फूला नहीं समाता। जब किसी कारण अभाव आ जाता है तो वही घर नर्क बन जाता है।

राज रंग माइआ बिसथार॥
इन ते कहहु कवन छुटकार॥

आप राजा-महाराजाओं की हालत बयान करते हैं : चाहे कोई सारी दुनिया का चक्रवती बादशाह बन जाए, फिर भी वह यमों से नहीं छूट सकता। उसका जन्म-मरण नहीं कट सकता। जिसको भी परमात्मा मिला, 'शब्द-नाम' की कमाई से ही मिला।

असु हसती रथ असवारी॥
झूठा डंफु झूठु पासारी॥

आप कहते हैं, ''हम मान इज्जत के लिए घोड़े, हाथी, रथ, कारें और दुनिया का बहुत सामान इकट्ठा करते हैं। लेकिन यह सब झूठ है। साथ नहीं जाएगा। यहीं छोड़ जाना है।''

जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना॥
नामु बिसारि नानक पछुताना॥

जिस परमात्मा ने अच्छे कर्मों का इनाम राजपाट, धन-दौलत दिया। यह उस परमात्मा को याद नहीं करता। सोचता है, सब कुछ मैंने अपनी अक्ल से प्राप्त किया है। इसलिए 'नाम' की तरफ आता ही नहीं। लेकिन जब यम पकड़ लेते हैं, फिर पछताता है ओह! मैंने 'नाम-शब्द' की कमाई नहीं की।

गुर की मति तूं लेहि इआने॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने॥

गुरु साहब कहते हैं, ''अपने मन की मत छोड़कर महात्मा की मत पर चलो। भक्ति के बिना बड़े बड़े बुद्धिमान भी इस संसार-समुद्र से पार नहीं हो सके। बार बार गोते खाते रहे।''

जो प्राणी गोबिंद ध्यावै, पढ़्या अनपढ़्या परम गति पावै।

हरि की भगति करहु मन मीत॥
निरमल होइ तुम्हारो चीत॥

अपने मन को मित्र बनाकर परमात्मा की भक्ति करो। परमात्मा की भक्ति करने से मन और आत्मा पवित्र हो जाएंगे।

चरन कमल राखहु मन माहि॥
जनम जनम के किलबिख जाहि॥

हमेशा ही सतगुरु के चरणों से जुड़े रहो। ऐसा करने से हमारे जन्म-जन्मांतरों के बुरे कर्म और पाप खत्म हो जाएंगे।

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु॥
सुनत कहत रहत गति पावहु॥

गुरु साहब कहते हैं, ''आप 'नाम' की कमाई करो। दूसरों को भी नाम की कमाई की तरफ प्रेरित करो। नाम की महिमा गाओ। 'नाम' की महिमा सुनो। सतसंग में जाओ। सतसंग सुनकर उस पर अमल करो।''

सार भूत सति हरि को नाउ॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ॥

अगर कोई सार वस्तु है तो वह 'शब्द-नाम' की कमाई है। अगर हम सहज स्वभाव परमात्मा को याद करते हैं तो परमात्मा हमें उसका फल जरूर देता है। जो प्रेमी मिनट या सेकेण्ड भी अभ्यास में बैठते हैं, उनकी हाजरी *सच्चखंड* में लगती है। गुरु बेइन्साफ नहीं। वह अपने सेवकों को फल जरूर देता है। बुल्लेशाह ने कहा था :

ओह प्रभ साडा सखी है, असी सेवा कन्नियो सूम।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु॥

आप कहते हैं, ''नाम की कमाई करने से अहंकार की लाइलाज बीमारी खत्म हो जाती है।''

होहि अचिंतु बसै सुख नालि॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि॥

आप कहते हैं, ''जब हमारा 'शब्द-नाम' के साथ मिलाप हो जाता है, हम सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर पहुँचकर सतगुरु को अपने अंदर प्रगट कर लेते हैं तो हमारी ड्यूटी खत्म हो जाती है। आगे गुरु का काम है। इसलिए हमें साँस-ग्रास से सिमरन करना चाहिए।''

छाडि सिआनप सगली मना॥
साधसंगि पावहि सचु धना॥

सन्त रूहानियत के जानकार होते हैं। जब हम अपने आपको उनके सुपुर्द कर देते हैं, वे हमें मालिक के आगे खड़ा करके कहते हैं, ''यह तेरा जीव है, भूल बख्शवाने आया है।'' आज तक जो सन्त 'नाम' की कमाई करके अंदर गया उसने यह नहीं कहा कि मैं अपने आप अंदर गया। सभी ने सतगुरु की महिमा गाई कि गुरु ही मुझे यहाँ लाए हैं।

हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु॥

गुरु साहब कहते हैं, ''आप यहाँ 'नाम' की पूँजी, 'नाम' का तोशा इकट्ठा करो। जब आप दरगाह में जाओगे, जिस तरफ से गुजरोगे, आपकी जय-जयकार होगी।''

सरब निरंतरि एको देखु॥
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु॥

वह परमात्मा सबके अंदर है, लेकिन जब हम उसे अपने अंदर देख लेते हैं, तब हमें पता लगता है कि वह सबमें समाया हुआ है। ऐसी हालत उन्हीं की होती है, जिनके ऊँचे भाग्य हों। जिनके मस्तक में गुरु ने लिख दिया हो कि इसने परमात्मा को प्रगट करना है।

एको जपि एको सालाहि॥
एकु सिमरि एको मन आहि॥

एक परमात्मा की भक्ति करो, उसकी बड़ाई करो।

एकस के गुन गाउ अनंत॥
मनि तनि जापि एक भगवंत॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा के गुण गाओ। तन-मन से उसकी भक्ति करो। परमात्मा के गुण बेअन्त हैं। उसकी महिमा बड़ी ऊँची है, जिसे हम जुबान से नहीं गा सकते।''

एको एकु एकु हरि आपि॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि॥

वह परमात्मा सब जगह व्यापक है, सबकी संभाल कर रहा है। इसलिए हमें उस परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए।

अनिक बिसथार एक ते भए॥
एकु अराधि पराछत गए॥

पशु-पक्षी, इन्सान सब परमात्मा ने बनाए हैं। यह उसकी लीला है। जो लोग इन चीजों से ख्याल निकालकर परमात्मा की भक्ति करते हैं, परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं, वे ही सही सलामत परमात्मा में समा जाते हैं।

मन तन अंतरि एकु प्रभु राता॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा हर जगह व्यापक है। सारी रचना उसी की है। हमें इस बात की समझ तब आई, जब हमारे गुरु रामदास जी ने हमारे ऊपर दया-मेहर की।''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस अष्टपदी में 'नाम' की महिमा बड़े प्यार से गाई, बताया कि 'नाम' ही सब बीमारियों की दवा है। 'नाम' किसी किताब या ग्रन्थ के अंदर नहीं, महात्मा के पास है। इसलिए सबसे पहले आप सन्तों के पास जाकर 'नाम' की फरियाद करो। 'नाम' पाकर उसे जपो और अपने जीवन को सफल बनाओ।

❖ ❖ ❖

दीनता

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥

हजूर महाराज कहा करते थे, ''परमात्मा के पास सब कुछ है। सिर्फ **दीनता** नहीं। वह कुल मालिक है। किसके आगे दीन हो! अगर हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो हमें अपने अंदर सच्ची **दीनता** अख्तियार करनी चाहिए।''

जब हम मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठकर अपनी आत्मा को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ लेते हैं, तब हमारे अंदर दीनता आती है। जब भी किसी महान आत्मा को उस प्रभु परमात्मा के साथ मिलाप करने का मौका मिला तो उसने अपने आपको परमात्मा के आगे छोटा बयान किया।

आप कहते हैं, ''मैं तुझसे बिछुड़कर अनेक योनियों में से फिरता फिरता आया हूँ। मैं तेरे आगे विनती करता हूँ कि तू मुझे अपनी भक्ति बख्श।''

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु॥
करि किरपा देवहु हरि नामु॥

यहाँ सेवक परमात्मा के आगे भिखारी बनकर खड़ा है। जिस तरह भिखारी किसी के दरवाजे पर भीख माँगने जाता है। घरवाले चाहे उसे भला बुरा कहें, वह भिखारी अपनी रट लगाए रखता है। घरवालों की इच्छा है; उसे जब भी भीख दें! इसी तरह हमें भी परमात्मा के आगे रट लगाए रखनी चाहिए; सिमरन

करते रहना चाहिए। मैं दुनिया का धन-दौलत, बेटे-बेटियाँ या मान-बड़ाई नहीं माँगता। मैं 'नाम' का दान माँगता हूँ।''

साध जना की मागउ धूरि ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥

मैं बहुत श्रद्धा लेकर तेरे दरवाजे पर आया हूँ। तू मुझे अपने साधु-सन्तों की धूल का दान दे। मेरा तारन-तारा उनकी धूल से ही हो सकता है।

अंतरजामी पुरख विधाते, श्रद्धा मन की पूरे।
नानक दास यही सुख माँगे, मोको कर सन्तन की धूरि॥

सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥

अगर तू दया-मेहर करे, अपने 'नाम' का दान बख्शे; मैं साँस साँस के साथ दिन-रात तेरा सिमरन करूँगा।

एक बार मूसा को घमंड हुआ कि परमात्मा को उससे प्यारा कोई नहीं। उसने परमात्मा से पूछा, ''क्या आपको मुझसे ज्यादा प्यारा कोई और भी है?'' परमात्मा ने कहा, ''मूसा! आदमी ही नहीं, पशु, पक्षी, जानवर भी मेरे प्यारे हैं।'' मूसा ने कहा, ''मुझे कैसे यकीन आए?'' परमात्मा ने कहा, ''उस पेड़ पर एक पक्षी बैठा है। तू जाकर उससे बात कर।'' मूसा ने कहा, ''मुझे पक्षी की बोली समझ नहीं आएगी।'' परमात्मा ने कहा, ''तू पक्षी की बोली समझ भी लेगा और बोल भी लेगा।''

मूसा ने उस पक्षी के पास जाकर कहा, ''अगर तुझे कोई दुःख तकलीफ है तो मुझे बता। मैं उसे दूर कर सकता हूँ।'' उस पक्षी ने कहा, ''मैं परमात्मा का सिमरन करता हूँ। पानी पीने के लिए झरने पर जाता हूँ। झरना यहाँ से थोड़ी दूरी पर है

जिससे मेरे सिमरन में हर्ज होता है। अगर तू उस झरने को यहाँ ला दे तो मैं यहीं पानी पी लिया करूँगा और मेरे सिमरन में हर्ज नहीं होगा।''

मूसा के दिल में ख्याल आया कि यह तो एक सेकेण्ड भी मालिक का सिमरन नहीं छोड़ता और मैं कितनी देर सिमरन छोड़े रखता हूँ! मूसा का अहंकार खत्म हो गया। उसने कहा, ''झरना तो मैं यहाँ नहीं ला सकता।'' सन्त फरीद कहते हैं :

हौं बलिहारी पखियां, जंगल जिन्हा वास।
कंकर चुगन थल वसन, रब्ब ना छड्डन पास॥

चरन कमल सिउ लागै प्रीति॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति॥

आप कहते हैं, ''मुझे तेरे चरणों से प्यार हो गया है। मैं नित तेरी भक्ति कर रहा हूँ।''

एक ओट एको आधारु॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी फरियाद करते हैं, ''एक परमात्मा का आसरा है। मैं 'नाम' माँग रहा हूँ। तू 'नाम' की बख्शीश कर।''

प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ॥

आप कहते हैं, ''जिस जीव पर परमात्मा की दृष्टि होती है, वह जीव बहुत भाग्यशाली होता है। भक्ति का रस 'नाम' विरले लोगों के हिस्से में ही आता है।''

जिन चाखिआ से जन त्रिपताने॥
पूरन पुरख नही डोलाने॥

जिन्होंने 'नाम' का रस चख लिया वे तृप्त हो गए, डोलते नहीं। वे पूरे इन्सान, पूरे पुरुष बन गए हैं।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि॥
उपजै चाउ साध कै संगि॥

सन्त परमात्मा के प्यार से लबालब भरे होते हैं। जब हमें उनकी सोहबत मिलती है तो हमारे अंदर भी 'नाम' जपने का शौंक पैदा हो जाता है। जिस तरह खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। संगत में आने का यही फायदा है कि हमारे दिल में भी 'नाम' जपने का चाव पैदा होता है।

परे सरनि आन सभ तिआगि॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि॥

आप कहते हैं, ''अपने आपको त्याग कर महात्मा की शरण में जाना है। महात्मा की लिव सदा परमात्मा के साथ लगी रहती है, महात्मा हमारी लिव भी परमात्मा के साथ लगा देते हैं।''

बडभागी जपिआ प्रभु सोइ॥
नानक नामि रते सुखु होइ॥

जो प्रभु की भक्ति करते हैं, नाम में रम जाते हैं, वे सच्चा-सुख, सच्ची-इज्जत पा लेते हैं। हम उस दिन पर बलिहार जाते हैं, जब हमारा मिलाप साधुओं के साथ हो जाता है।

जां दिन भेटे साध संग वह दिन बलिहारी।

सेवक की मनसा पूरी भई॥
सतिगुर ते निरमल मति लई॥

हमारे ऊपर से दुनिया के रंग उतर जाते हैं और 'नाम' का रंग चढ़ जाता है। हमने जो आशा रखकर 'नाम' लिया, वह

'नाम' हमारे अंदर प्रगट हो गया। सतगुरु ने दया करके अंदर रास्ता तय करने में हमारी मदद की।

जन कउ प्रभु होइओ दइआलु॥
सेवकु कीनो सदा निहालु॥

जिस सेवक पर परमात्मा दयाल हो जाता है; उसे निहाल कर देता है, ख़ुशियाँ बख़्श देता है।

लख ख़ुशियाँ पातशाहियाँ जे सतगुरु नज़र करे।

बंधन काटि मुकति जनु भइआ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ॥

आप कहते हैं, ''सतगुरु ने दया करके स्थूल, सूक्ष्म, कारण के सब बंधन काटकर मन को इन्द्रियों की ग़ुलामी से छुड़ाकर मुक्ति बख़्श दी। अपने साथ मिला लिया।''

इछ पुनी सरधा सभ पूरी॥
रवि रहिआ सद संगि हजूरी॥

आप कहते हैं, ''जब हमने श्रद्धा के साथ 'शब्द-नाम' की कमाई की तब हमारी प्रभु से मिलने की इच्छा पूरी हुई। अब वह प्रभु हमेशा हमारे साथ साथ चलता है। सफर करते हैं तो वहाँ प्रभु है। रात को बंद कमरे में निगाह मारते हैं तो वहाँ प्रभु है। सोते हुए महसूस होता है कि वह प्रभु साथ सोता है।''

जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ॥
नानक भगती नामि समाइ॥

परमात्मा के दिल में दया उठी तो वह इन्सान का चोला धारण करके आत्माओं को संदेश देने के लिए आया। आप कहते हैं, ''भगत की आशा नाम में है वह नाम की कमाई करता है।''

सो किउ बिसरै जि घाल न भानै॥
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै॥

जब सेवक की आँख खुल जाती है, वह देखता है कि सतगुरु जिसे मैं इन्सान समझता था, वह हर समय परछाई की तरह मेरे साथ चलता-फिरता है। साँस साँस की गिनती का हिसाब रखता है। हम जो भी अच्छा कर्म करते हैं, हमें एक एक मिनट का इनाम देता है। वह हमारे अंदर बैठा सब कुछ जानता है।

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ॥
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ॥

आप कहते हैं, ''ऐसे मालिक को क्यों बिसारा जाए जिसने इन्सान का जामा दिया? जिस जामें में इतनी नियामतें हैं! उसने दया करके हमें जीवन दिया, अपना भेद बताया, अपनी कला हमारे अंदर रखी।''

सज्जनो! जब वह अपने शब्द की किरण हममें से निकाल लेता है तब आँख नहीं फड़कती, हाथ-पैर नहीं हिलते, जुबान से बोल नहीं सकते। हम कहते हैं मौत आ गई।

सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै॥
गुर प्रसादि को बिरला लाखै॥

ऐसे परमात्मा को क्यों बिसारा जाए जिसने माता के पेट में जठर अग्नि के ताप से रक्षा की। कोई विरला जीव ही समझता है कि परमात्मा ही हमारी रक्षा करता है। जिनकी आँखें नहीं खुली, जो पूरे गुरु से नहीं मिले, वे कहते हैं, ''हम अपनी रक्षा खुद कर रहे हैं।'' महात्मा का मतलब यह नहीं कि हम सब कुछ छोड़कर हाथ के ऊपर हाथ रखकर बैठ जाएं।

एक बार मोहम्मद साहब ने कहा, ''अल्लाह ताला सब

कुछ करता है। इन्सान के बस में कुछ भी नहीं है।'' ऊँटों की सेवा करने वाले एक सेवक ने कहा, ''जब सब कुछ अल्लाह ताला ही करता है तो मुझे ऊँटों की सेवा करने की क्या जरूरत है? अल्लाह ही देखभाल करेगा।'' मोहम्मद साहब ने कहा, ''तेरा फर्ज है, तू ऊँटों की सेवा कर और देखभाल भी कर।''

उद्यम करेन्दया आवे हार, ते जाणों भाणां करतार।

सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै॥
जनम जनम का टूटा गाढै॥

हम ऐसे परमात्मा को क्यों बिसारें जिसने हमें विषय-विकारों के जहर से निकाला। हमारी जन्म-जन्मांतर की लिव, जो परमात्मा से टूटी हुई थी, उसे अपने साथ जोड़ लिया।

गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमारे सतगुरुओं ने हमें यह असलियत बताई कि आपके साथ जाने वाली वस्तु 'नाम' की कमाई है। यह हमारे गुरुओं की ही दया है कि प्रभु ने हमें भक्ति का मौका बख्शा।''

साजन संत करहु इहु कामु॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु॥

सन्त आकर होका देते हैं कि प्यारेयो! आप विषय-विकारों और दुनिया की मान-बड़ाई को छोड़कर 'नाम' की कमाई करो। यही आपके काम आने वाली वस्तु है।

सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु॥

आप कहते हैं, ''सोते-जागते, उठते-बैठते परमात्मा के सिमरन में लगे रहो। अगर कोई आपकी सोहबत में आता है तो आप उसे भी इस बारे में बताओ कि देख भाई! सिमरन से मेरा फायदा होता है। अगर तेरी समझ में आता है तो तू भी 'नाम' लेकर कमाई कर। तेरा भी जीवन सुधर सकता है।''

भगति भाइ तरीऐ संसारु॥
बिनु भगती तनु होसी छारु॥

आप कहते हैं, ''भक्ति और भक्तों से प्यार करके हम संसार-समुद्र से तर सकते हैं। अगर इन्सान का तन पाकर हम भक्ति नहीं करते तो हम इस तन को राख बनाकर चले जाएंगे।'' गुरु रामदास जी कहते हैं :

जिनि हर हिरदै नाम ना वसओ, तिन मात कीजे हर वान्झा।
तिनि सुन्नी देह फिरै बिन नामे, ओ खप खप मुए कुरान्झा॥

सरब कलिआण सूख निधि नामु॥
बूडत जात पाए बिस्रामु॥

आज तक जिसका भी कल्याण हुआ, मुक्ति हुई और जो परमात्मा को पा सका, वह 'नाम' की कमाई करके ही पा सका। जिस तरह कोई समुद्र में डूब रहा हो अगर उसे बेड़ी मिल जाए तो वह बड़ी आसानी से पार हो जाता है।

इसी तरह पता नहीं इस भवसागर में गोते खाते हुए हमें कितने जन्म हो गए हैं। 'नाम' एक किस्म का जहाज है। हमें गोते खाते-खाते जब यह जहाज मिल जाता है, हम बड़ी आसानी से इस भवसागर को पार कर जाते हैं।

सगल दूख का होवत नासु॥
नानक नामु जपहु गुनतासु॥

गुरु साहब कहते हैं, ''पशु, पक्षी और इन्सान के जामें में दुःख और मुसीबतें हैं। इन दुःखों और मुसीबतों से बचने का इलाज 'नाम' की कमाई है।''

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ॥

आप कहते हैं, ''हमारे अंदर परमात्मा का प्यार पैदा हो गया है। हमारे दिल में खुशी है कि परमात्मा ने हमें भक्ति का दान बख्श दिया है।''

नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ॥

आप कहते हैं, ''जब हमें इन आँखों से सतगुरु का दर्शन होता है, खुशी हो जाती है। अगर हमें सतगुरु के चरण धोने का मौका मिल जाए तो हम इस खुशी को बयान नहीं कर सकते।''

चरन साध के धो धो पिओ, अरप साध को अपना जिओ।
साध की धूड़ करो स्नान, साध ऊपर जाइए कुर्बान॥

भगत जना कै मनि तनि रंगु॥
बिरला कोऊ पावै संगु॥

मालिक के प्यारों के अंदर परमात्मा का रंग चढ़ा होता है। विरले जीव ही सन्त-सतगुरु तक पहुँचते हैं। परमात्मा की दया से ही हम सन्तों की सोहबत-संगत में जा सकते हैं। भक्त उस परमात्मा का शुक्राना करते हैं कि तूने दया-मेहर करके हमें सन्तों की संगत बख्शी, तभी हम तुझसे मिल सके।

एक बसतु दीजै करि मइआ॥
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ॥

तूने दयालु होकर एक वस्तु दी। गुरु ने दया की तभी मैं 'नाम' जप सका।

ता की उपमा कही न जाइ॥
नानक रहिआ सरब समाइ॥

आप कहते हैं, ''मैं उस 'नाम' की, उस परमात्मा की शोभा बयान नहीं कर सकता। जब वह मेरे अंदर प्रगट हुआ, तब मुझे पता लगा कि परमात्मा हर जगह समाया हुआ है। हर एक के अंदर बैठा है, हर एक की रक्षा कर रहा है।''

प्रभ बखसंद दीन दइआल॥
भगति वछल सदा किरपाल॥

जो दीन होता है परमात्मा उसी पर दयाल होता है। जिस तरह माता को बेटे प्यारे हैं परमात्मा को अपने भक्त प्यारे हैं। परमात्मा सदा ही जीवों पर दया करता है, सदा ही कृपाल है।

अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल॥
सरब घटा करत प्रतिपाल॥

वह अनाथों का नाथ है। हर एक घट में बैठकर सबकी पालना करता है, इसलिए उसे कृपाल कहा है।

आदि पुरख कारण करतार॥
भगत जना के प्रान अधार॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं कोई नई बात नहीं बता रहा। वह परमात्मा आदि-युगादि से चला आ रहा है। सबकी पालना करता है। भक्त हमेशा ही उसकी भक्ति करते आए हैं। हर युग में महात्मा आए, उन्होंने परमात्मा की भक्ति के गीत गाए, खुद भक्ति की और प्रेमियों को भी भक्ति में लगाया।''

जो जो जपै सु होइ पुनीत॥
भगति भाइ लावै मन हीत॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा किसी की पर्सनल जायदाद नहीं। चाहे कोई किसी मुल्क का हो, किसी जाति का हो, औरत हो मर्द हो, पढ़ा-लिखा या अनपढ़ हो; परमात्मा की भक्ति कर सकता है। परमात्मा की भक्ति करने से पाप कट जाते हैं। परमात्मा ने इन्सान बनाया, इन्सान ने समाज बनाए। परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा।''

कहाँ करो जाति, कहाँ करो पाति, राम का नाम जपो दिन-राति।

हम निरगुनीआर नीच अजान॥
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान॥

सन्त-महात्मा धुरधाम पहुँचकर भी दम नहीं मारते। अपने अंदर अहंकार नहीं आने देते। वे कहते हैं, ''मैं नीच हूँ, अनजान हूँ, तू दया कर। तेरी मेहर से ही मैं तुझसे मिल सका।''

सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए॥
एक निमख हरि के गुन गाए॥

आप कहते हैं, ''दुनिया स्वर्ग के लिए, ब्रह्मपुरी और शिवपुरी के लिए भाग रही है, मुशक्कत कर रही है। 'नाम' की कमाई करने से हमें इन सब पुरियों से भी ऊँचा सुख मिल गया है।''

अनिक राज भोग बडिआई॥
हरि के नाम की कथा मनि भाई॥

आप कहते हैं, ''दुनिया का राजपाट दो दिन की ही बड़ाई है। अब हमें 'नाम' ही अच्छा लगता है।''

बहु भोजन कापर संगीत॥
रसना जपती हरि हरि नीत॥

आप कहते हैं, ''अब हमारा ख्याल अच्छे भोजन, अच्छे कपड़ों से निकलकर परमात्मा के प्यार की तरफ चला गया है। बच्चे खिलौनों के साथ तब तक ही खेलते हैं, जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है, साथी के साथ प्यार हो जाता है, फिर कौन उन खिलौनों से खेलता है? दुनिया के विषय-विकार, भोग-विलास तब तक ही अच्छे लगते हैं जब तक हम अपने अंदर 'नाम' प्रगट नहीं कर लेते। जब हम 'नाम' प्रगट कर लेते हैं, तब इन्हें धूल जैसा भी नहीं समझते।''

भली सु करनी सोभा धनवंत॥
हिरदै बसे पूरन गुर मंत॥

आप कहते हैं, ''जिनके अंदर पूरे गुरु का मंत्र, 'नाम' प्रगट हो जाता है, जिन्होंने 'नाम' की कमाई की, परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया। उन भक्तों की शोभा नहीं छिनती। अगर आप महात्मा के पास जाकर 'नाम' की कमाई करोगे तो आपको भी फायदा हो सकता है।''

साधसंगि प्रभ देहु निवास॥
सरब सूख नानक परगास॥

इस अष्टपदी में सेवक एक भिखारी बनकर उस परमात्मा सतगुरु के आगे विनती करता है, ''तू मुझे भक्ति का दान दे।''

❖ ❖ ❖

बेअन्त

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज से एक शिष्य ने सवाल किया, ''इस दुनिया की रचना रचने वाला कौन है, कौन इसे लय करता है? जब प्रलय होती है, जीव कहाँ चले जाते हैं, परमात्मा क्या करता है?'' आप सेवक को समझाते हैं, ''परमात्मा उत्पत्ति करता है, जीवों को लय करता है और प्रलय भी वही परमात्मा करता है।''

जब परमात्मा प्रलय करता है, पृथ्वी को पानी घोल लेता है। पानी को अग्नि खुष्क कर देती है। अग्नि को हवा अपने अंदर समा लेती है। हवा को आकाश अपने अंदर समा लेता है। आकाश को माया अपने अंदर समा लेती है। माया ब्रह्म में समा जाती है। दुनिया के अंदर अंधकार छा जाता है। परमात्मा अपनी मौज़ में समाधि लगाकर बैठ जाता है।

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता॥
पाप पुंन तब कह ते होता॥

आप कहते हैं, ''जब दुनिया में जीवों का कोई आकार ही नहीं रहता। सब जीवों का भंडार परमात्मा में समा जाता है, फिर किसको पाप है, किसको पुण्य है?''

जब धारी आपन सुंन समाधि॥
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति॥

जब परमात्मा प्रलय कर देता है, अपनी समाधि में स्थित हो जाता है, तब इस दुनिया में न कोई वैर के योग्य होता है न कोई किसी से विरोध करता है।

जब इस का बरनु चिहनु न जापत॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत॥

जब इसका कोई वर्ण, चिह्न या स्वरूप ही नहीं होता तो किसको हर्ष या शोक होगा।

जब आपन आप आपि पारब्रहम॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम॥

जब वह आप ही कुल मालिक है तो किसको मोह, भ्रम होगा।

आपन खेलु आपि वरतीजा॥
नानक करनैहारु न दूजा॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज उस शिष्य को उत्तर देते हैं, ''देख भाई! परमात्मा आप ही इस दुनिया की रचना रचता है। आप ही जीवों के अंदर बैठकर अपना खेल खेलता है। हर जगह आप ही वरतारा कर रहा है। उसका कोई बंधु नहीं, भाई नहीं, शरीक नहीं, समाज नहीं।''

जब होवत प्रभ केवल धनी॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी॥

जब परमात्मा ही सबका धनी है तो किसी को कोई बंधन नहीं, मुक्ति नहीं।

जब एकहि हरि अगम अपार॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार॥

वह अगम, अपार, कुल मालिक है फिर कोई नर्क, स्वर्ग और अवतार नहीं। वह मालिक ही मालिक है।

जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ॥

वह गुणों से रहित निर्गुण परमात्मा आप ही है, तो न कोई शिव है, न कोई शक्ति है। न ईश्वर है न माया है। जब दुनिया की प्रलय होती है तब ब्रह्मपुरी, इन्द्रपुरी, शिवपुरी, नर्क, स्वर्ग सबकी प्रलय हो जाती है। कोई भी स्थिर नहीं रहता।

जब आपहि आपि अपनी जोति धरै॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै॥

जब वह अपनी ज्योत में ज्योत मिला लेता है, किसी को किसी का कोई डर नहीं।

आपन चलित आपि करनैहार॥
नानक ठाकुर अगम अपार॥

दुनिया में जो भी चोज-चलित्तर हो रहे हैं वह परमात्मा खुद ही कर रहा है; वह अगम है, अपार है।

अबिनासी सुख आपन आसन॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन॥

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा अविनाशी है। अपने घर अनामी देश में आप ही रहता है। वह कुल मालिक अपने आसन पर आप ही विराजमान है। उसके धाम में कोई भी उसके बराबर आसन लगाकर नहीं बैठता।''

जब पूरन करता प्रभु सोइ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ॥

वह कुल मालिक खुद ही वहाँ का कर्ता-धर्ता है, वहाँ किसी को यम का डर नहीं रहता।

जब अबिगत अगोचर प्रभ एका॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा॥

आप कहते हैं, ''जब अवगत, अगोचर परमात्मा एक ही है, फिर चित्रगुप्त वहाँ किसका लेखा लिखेगा?''

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे॥

आप कहते हैं, ''जब अनाथों का नाथ अगम, अगोचर, कुल मालिक ही वहाँ है, तब कौन किसको बाँध सकता है? कौन किसके बंधन काट सकता है?''

आपन आप आप ही अचरजा॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा॥

आप कहते हैं, ''वहाँ कुल मालिक का ही जौहर है।''

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता॥

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा निर्मल है, पवित्र है। उसकी मैल धोने वाला कौन है?''

जह निरंजन निरंकार निरबान॥
तह कउन कउ मान कउन अभिमान॥

वह माया रहित निरंजन, निरंकार आप ही है। वह बंधनों से रहित है। कौन उसका अभिमान कर सकता है? कौन उसे मान दे सकता है?

जह सरूप केवल जगदीस॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस॥

वहाँ उस मालिक का ही जौहर है, कोई झुठलाने वाला नहीं।

जह जोति सरूपी जोति संगि समावै॥
तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा अपने स्वरूप में स्थित है। जब ज्योति-ज्योति में मिल गई तब किसको भूख है और कौन खाना खाकर तृप्त होता है?''

करन करावन करनैहारु॥
नानक करते का नाहि सुमारु॥

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''वह आप ही करने वाला है, आप ही करने योग्य है। कोई उसकी महिमा बयान नहीं कर सकता। कोई उसका अन्त नहीं पा सकता, वह **बेअन्त** है।''

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई॥

उस परमात्मा ने अपनी शोभा खुद ही बनाई होती है। वहाँ उसका माँ-बाप, भाई-बहन, संगी-साथी कोई नहीं, जो उसकी तारीफ कर रहा हो।

जह सरब कला आपहि परबीन॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन॥

आप कहते हैं, ''वहाँ परमात्मा सर्व कला भरपूर है। वहाँ वेदों शास्त्रों को न कोई पढ़ता है न कोई सुनता है।''

जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥

आप कहते हैं, ''जब वह कुल मालिक आप ही है तो वहाँ शगुन-अपशगुन को कोई नहीं विचारता।''

जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

वहाँ परमात्मा आप ही ऊँचा है, आप ही नजदीक है। वहाँ कोई चेला नहीं, ठाकुर नहीं, दास नहीं, मालिक नहीं। वह कुल मालिक सब कुछ आप ही है।

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥

वह मालिक अपने आप ही अचरज है, बिसमाध है, खुश है। अपनी गति को आप ही जानता है।

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥

आप कहते हैं, ''उस परमात्मा को कोई छल नहीं सकता। वहाँ माया का जोर नहीं।''

आपस कउ आपहि आदेसु ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥

वह अपने आपको ही आदेश करता है। वहाँ सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का प्रवेश नहीं।

जह एकहि एक एक भगवंता ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥

जब वहाँ एक परमात्मा ही है। तो वहाँ कौन चिन्ता करता है?

जह आपन आपु आपि पतीआरा॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा॥

आप कहते हैं, ''वहाँ आप ही आप है। वहाँ कौन कथा करता है? कौन सुनता है? परमात्मा आप ही सब कुछ है।''

बहु बेअंत ऊच ते ऊचा॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा॥

वह परमात्मा **बेअन्त** है, सबसे ऊँचा है। सब देवी-देवताओं का शिरोमणि देव है। वह अपने आपको आप ही पहचानता है।

गुरु अर्जुनदेव जी ने इस अष्टपदी में अब तक उस शिष्य को जवाब दिया कि परमात्मा के घर में कोई शगुन-अपशगुन नहीं। कोई वेद-शास्त्र नहीं। कोई दिन-रात नहीं। कोई वैर-विरोध नहीं। कोई दुनिया की चिंता करने वाला नहीं। परमात्मा आप ही उस मंडल का मालिक है। आगे उस शिष्य को उत्पत्ति का हाल बताते हैं कि परमात्मा ख़ुद ही उत्पत्ति करता है।

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु॥
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु॥

जब उसने प्रपंच रचना चाहा तो तीनों गुण - सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण का विस्तार किया।

पापु पुंनु तह भई कहावत॥
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत॥

जब परमात्मा ने इस दुनिया की रचना की तो ऋषियों-मुनियों को इस संसार में भेजा। ऋषियों-मुनियों ने जीवों को यह ज्ञान करवाया कि अगर आप अच्छा कर्म करेंगे तो पुण्य में

शामिल हो जाएंगे। अगर बुरा कर्म करेंगे तो पाप में शामिल हो जाएंगे। पुण्य करेंगे तो स्वर्ग में जाएंगे, पाप करेंगे तो नर्क में जाएंगे। उन्होंने लोगों को स्वर्ग-नर्क के बारे में बताकर, ये कहानियाँ वेदों-शास्त्रों में लिख दी।

इस जीव ने एक माँस का लोथड़ा बनकर जन्म लिया। इसे कोई ज्ञान नहीं था। उन्होंने इसे ज्ञान करवा दिया कि यह तेरी माता है, यह तेरी बहन है, यह तेरा भाई है, यह तेरा समाज है। जीव को तोते की तरह पढ़ा दिया। यह शिक्षा चलती चली गई। यह बेचारा जीव इसमें उलझ कर रह गया।

आल जाल माइआ जंजाल॥
हउमै मोह भरम भै भार॥

जब यह जीव संसार में आया तो माया ने ऐसा जंजाल बनाया कि यह माया कहीं बहन बनकर मोह रही है। कहीं समाज बनकर मोह रही है। कहीं मुल्क बनकर मोह रही है। यह बेचारा जीव इन्हीं का बनकर रह गया है।

दूख सूख मान अपमान॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान॥

आप कहते हैं, ''यहाँ सुख-दुःख, मान-अपमान जैसी चीजों का पसारा कर दिया। यह बेचारा जीव दुःखों से डरता सुखों की तलाश में, अपमान से डरता मान की तलाश में फिरता है।''

आपन खेलु आपि करि देखै॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै॥

परमात्मा अपना खेल आप ही करके देखता है। आप ही खुश होता है। जब वह अपना खेल समेटना चाहता है, फिर एक परमात्मा ही रह जाता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं :

अनेक है फिर एक है।

जह अबिगतु भगतु तह आपि॥
जह पसरै पासारु संत परतापि॥

आप कहते हैं, ''यह एक आश्चर्यजनक बात है कि इस मंडल पर जहाँ उसके भक्त हैं, वहाँ परमात्मा जरूर रहता है। उसने अपने सन्तों का प्रताप बढ़ाने के लिए दुनिया का पसारा किया है। परमात्मा ने दो तरह के इन्सान पैदा किए। एक *गुरमुख* और दूसरा *मनमुख*। *गुरमुख* उसके प्यारे भक्त हैं और *मनमुख* परमात्मा को नहीं मानते।''

मनमुख और गुरमुख दा, हो नहीं सकदा मेल।
वखो वख दोहां दा रस्ता, ज्यों पाणी ते तेल॥
इक डोबे दूजा तारे, एह है अजब प्रभु दा खेल।
इक बाप दे दो बेटे, इक पास ते दूजा फेल॥

दुहू पाख का आपहि धनी॥
उन की सोभा उनहू बनी॥

गुरमुख और *मनमुख* का वह आप ही मालिक है। वह दोनों के अंदर बैठा है। *मनमुख* इस संसार में यही शोर करते रहते हैं कि परमात्मा है ही नहीं। *गुरमुख* - सन्त यही आवाज देते हैं, ''परमात्मा है। आओ! आपको उसके साथ मिला दें।'' कबीर साहब कहते हैं :

राम बुलावा भेजया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग है, सो बैकुंठ ना होय॥

आपहि कउतक करै अनद चोज॥
आपहि रस भोगन निरजोग॥

परमात्मा अपने कौतुक अपने आप ही करता है। घट घट

के अंदर बैठकर आप ही रस मान रहा है। गुरु साहब कहते हैं:

सब घट मेरे साइयाँ, सुन्नी सेज न कोए।
बलिहारी ते घटके, ये गुरमुख प्रगट होए॥

जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''यह बड़ी अचरज लीला है कि परमात्मा को जो जीव अच्छा लगता है उसे अपनी भक्ति में 'नाम' की कमाई में लगा लेता है। जो जीव उसे पसंद नहीं आता उसे संसार के खेल में लगा देता है।''

बेसुमार अथाह अगनत अतोलै॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै॥

परमात्मा **बेअन्त** है, अथाह है, अतोल है। दुनिया में ऐसा कोई तराजू नहीं बना जो उसे तोल सके।

सन्त सुनी सुनाई बातें नहीं करते। उन्होंने जो अपनी आँखों से देखा होता है; वे वही बयान करते हैं। महात्मा कहते हैं :

तू कहता है पुस्तक देखी। हम कहते हैं आँखों देखी॥

महात्मा ने परमात्मा को देखकर दुनिया को उसके बारे में बताया कि वह परमात्मा एक शक्ति है। अगर आप भी वहाँ पहुँच जाएं तो शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ने हम पर भारी दया की। हमें अपनी नाम-भक्ति में लगाया।

हमारा भी फर्ज बनता है कि हम परमात्मा का धन्यवाद करें। हर रोज उसका सिमरन करें।

❖ ❖ ❖

रक्षक

जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार॥
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार॥

इस अष्टपदी में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज उस कुल मालिक परमात्मा की महिमा बयान करते हैं कि तूने सबको पैदा किया है। तू सबके अंदर समाया हुआ है। तू सबकी पालना कर रहा है। तू सबका दाता है। सबका **रक्षक** है। सबका बादशाह है। जो महात्मा कमाई करके तुझे अंदर प्रगट कर लेता है उसे पशु, पक्षी, इन्सान, हैवान सबके अंदर तू ही नज़र आता है। इसलिए तेरी महिमा गाना ही शोभादायक है।

आपि कथै आपि सुननैहारु॥
आपहि एकु आपि बिसथारु॥

तू आप ही ग्रन्थों को पढ़ता है। आप ही कथा करता है और आप ही बैठकर सुनता है। तू एक ही है। एक से अनेक भी तू ही है। जब तेरी मौज होती है तू विस्तार कर लेता है।

जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए॥
आपनै भाणै लए समाए॥

अगर तेरी मौज हुई तो सृष्टि की रचना कर ली। अगर तुझे मंजूर हुआ तो इसे अपने हुक्म के अंदर फिर समा लिया।

तुम ते भिंन नही किछु होइ॥
आपन सूति सभु जगतु परोइ॥

सबके अंदर तू है। तूने सबको अपनी डोर में पिरोया हुआ है।

आतम में राम, राम में आतम चीनस गुर विचारा।

जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए॥
सचु नामु सोई जनु पाए॥

वह परमात्मा जिसे अपना खेल दिखाना चाहता है, जिसे बताना चाहता है कि मैं सबमें हूँ। उन्हें 'शब्द-नाम' की कमाई में लगा लेता है।

सो समदरसी तत का बेता॥
नानक सगल स्रिसटि का जेता॥

परमात्मा सबके दिलों की जानता है। 'नाम' की कमाई करने से हम परमात्मा मे मिल जाते हैं। सारी सृष्टि को जीतने वाले बन जाते है। हमारे अंदर भी वही शक्ति पैदा हो जाती है।

जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ॥
दीन दइआल अनाथ को नाथु॥

जीव-जन्तुओं की डोरी उस परमात्मा के हाथ में है। वह अनाथों का नाथ है।

जिसु राखै तिसु कोइ न मारै॥
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै॥

जिसे परमात्मा रखे, उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं मार सकती। इस संसार में वही मरा हुआ है, जिसे परमात्मा बिसार दे, अपनी भक्ति का दान न दे और अपना प्यार न बख्शे।

एक हिरनी गर्भवती थी। आराम से सोई हुई थी। शिकारी को पता लगा तो उसने एक तरफ जाल बिछा दिया। दूसरी तरफ

शिकारी कुत्ता खड़ा कर दिया। तीसरी तरफ आग लगा दी। चौथी तरफ खुद तीर कमान लेकर खड़ा हो गया। जब हिरनी को आग का सेक महसूस हुआ तो वह उठी। उसने देखा एक तरफ जाल, दूसरी तरफ शिकारी कुत्ता, तीसरी तरफ आग और चौथी तरफ शिकारी खुद तीर कमान लिए खड़ा है। उसने परमात्मा के आगे फरियाद की, ''एक तो मुझे प्रसव का दुःख है। उसके साथ एक दुःख और आ गया।''

पशु-पक्षी भी अपनी जुबान से परमात्मा को याद करते हैं। हम जानते हैं कि दुःख के समय सहज स्वभाव ही परमात्मा की तरफ ख्याल चला जाता है। उस समय हिरनी ने परमात्मा को याद किया। परमात्मा ने उसकी सहायता के लिए बड़े जोर से तूफान चलाया। तूफान से आग उड़कर जाल पर गिर गई, जिससे जाल जल गया। शिकारी जब तीर चलाने लगा, उस समय जमीन में से साँप निकला। उसने शिकारी को काट लिया। शिकारी का हाथ हिलने से तीर कुत्ते को जाकर लगा। हिरनी आजाद हो गई। शिकारी के सारे फंदे नाकाम हो गए। जाल जल गया, कुत्ता मर गया, शिकारी को साँप ने डस लिया।

कहने का भाव, परमात्मा जिसका **रक्षक** है; उसे कोई नहीं मार सकता। जो भी परमात्मा को याद करते हैं, परमात्मा उनकी रक्षा के लिए जरूर पहुँचता है।

तिसु तजि अवर कहा को जाइ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ॥

परमात्मा सबकी रक्षा करता है, सब पर दया करता है। अफसोस की बात है कि हम उस परमात्मा को छोड़कर किसी और की पूजा करें, किसी और से मदद माँगें। कोई और पूजा के काबिल, मदद करने के काबिल है ही नहीं।

जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि॥

हर जीव की युक्ति उसके पास है कि जीव को कितनी देर संसार में रखना है। जब जीव को वापिस बुलाना है, तो मौत कर देता है। वह अंदर बैठकर ही सबकी रक्षा करता है। जब हम उसे प्रगट कर लेते हैं तब हमें पता लगता है कि वह बाहर भी हमारे साथ साथ फिरता है। हमेशा ही हमारी रक्षा करता है।

सगल वनसपत में बसंतर, सगल दूध में धीआ।
ऊँच नीच में जोत समानी, घट घट माधो जीया॥

गुन निधान बेअंत अपार॥
नानक दास सदा बलिहार॥

आप कहते हैं, ''तेरे गुण अपार हैं; तेरी महिमा अपार हैं। तू बेअन्त है, मैं तेरा दास हूँ। मैं हमेशा तुझ पर कुर्बान जाता हूँ।''

पूरन पूरि रहे दइआल॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा पूरा है सब पर दयाल है, कृपाल है। जो तेरी भक्ति नहीं करते, तुझे गाली देते हैं, तू उन्हें भी प्यार करता है। सुख-दुःख तो हम अपने कर्मों की वजह से ही भोगते हैं।''

अपने करतब जानै आपि॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि॥

वह अंतरयामी है। अपने करतब आप ही जानता है। हर जगह व्यापक है। हम प्रार्थना करके अपना मन जरूर खुश कर लेते हैं लेकिन वह अंदर बैठा सब कुछ जानता है।

बिन बोल्या सब कुछ जाणंदा, किसपे करिए अरदास।

प्रतिपालै जीअन बहु भाति॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने जिन्हें पैदा किया है, उनकी देखभाल करता है। वे उसका शुक्राना करते हैं।''

जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ॥

आप कहते हैं, ''बेशक वह परमात्मा हमारे अंदर है। सब अपनी अपनी जुबान से उसका धन्यवाद करते हैं। जिनको वह अपने साथ मिलाना चाहता है, सबसे पहले उनको इन्सान की योनि में जन्म देता है। 'शब्द-नाम' का भेद देता है। वे शब्द-नाम की भक्ति करके परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं।''

नाम बिसार चले अनमारग, अंत काल पछताई हे।

मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ॥
करनहारु नानक इकु जानिआ॥

भक्ति करने के लिए सबसे पहले विश्वास की जरूरत है। अगर विश्वास है तो ही परमात्मा दरवाजा खोलता है। वह हमारे अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है। कबीर साहब कहते हैं :

राम झरोखे बैठकर, सबका झारा ले।
जाकी जैसी चाकरी, ताको तैसा दे॥

जनु लागा हरि एकै नाइ॥
तिस की आस न बिरथी जाइ॥

आप कहते हैं, ''जो मन में यह आशा रखकर 'शब्द-नाम' की कमाई में लग जाते हैं कि हमें परमात्मा मिले, उन्हें परमात्मा

जरूर मिलता है। ऐसा नहीं कि हम शब्द-नाम की कमाई के साथ जो जप-तप, कर्म-धर्म पहले करते थे, वे भी करते रहें, तब चाहे हम सारी जिन्दगी भी लगे रहें, कामयाब नहीं हो सकते।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं :

जब जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब भ्रम नसावे।
जो मारग गुरु देय बताई, सोइ कर्म धर्म हुआ भाई॥

'नाम' लेने से पहले हम चाहे कितनी भी खोज कर लें! कितने भी कर्मकांड कर लें! वह हमारी खोज में शामिल है। लेकिन जब हम नाम ले लेते हैं, फिर जो रास्ता गुरु बताता है, उस पर दृढ़ विश्वास के साथ चलना है।

सेवक कउ सेवा बनि आई॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई॥

भजन-अभ्यास को सेवा समझकर करें। बोझ न समझें। जब हम रोजाना प्रेम-प्यार से 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो सतगुरु हमें परमपद देता है। आज तक जिसने भी गुरु की सेवा की, गुरु के बताए अनुसार 'शब्द-नाम' की कमाई की, वह इस दरबार से खाली नहीं गया।

इस ते ऊपरि नही बीचारु॥
जा कै मनि बसिआ निरंकारु॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा से बड़ा कोई नहीं।'' मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि एक बार इसी तरह संगत बैठी थी। हजूर ने कहा, ''जो परमात्मा को देखना चाहता है, वे अपनी आँखें बंद करें।'' मैंने आँखें बन्द नहीं की। एक प्रेमी ने मेरी शिकायत की कि इसने आँखें बंद नहीं की। हजूर ने मेरे पास आकर कहा, ''ये तेरी शिकायत करते हैं।'' मैंने कहा, ''जब

मुझे इन खुली आँखों से परमात्मा, कुलमालिक दिख रहा है तो मुझे आँखें बंद करने की क्या जरूरत है। मेरे सामने छह फुट लंबा, दो पैरों वाला भगवान चल फिर रहा है।''

मैं इसके अलावा और कोई भगवान नहीं देखना चाहता। मैं हमेशा तेरे चरणों में यही फरियाद करता हूँ, ''मुझे तू ही भगवान नज़र आए। तू ही मेरा भगवान बना रहे। मुझे तेरे अलावा किसी और भगवान की जरूरत न पड़े।'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

गुरु परमेश्वर एको जान, सो तिस भावे सौ परवान।

कबीर साहब कहते हैं :

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, किसके लागु पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दिया मिलाय॥

बंधन तोरि भए निरवैर॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर॥

गुरु ने बंधन काट दिए। यह बता दिया कि सबके अंदर परमात्मा है। हमारा प्यार गुरु के साथ लगा हुआ है। हमारा किसी के साथ वैर नहीं।

कहो नानक प्रभ एह जनाई, बिन गुरु मुक्त ना पाई।

इह लोक सुखीए परलोक सुहेले॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले॥

इस लोक में आत्मा को शान्ति है। जब परलोक में गए तो गुरु हमें सुख और शान्ति के देश में ले जाता है। हममें यह हिम्मत नहीं थी कि हम परमात्मा से मिलाप कर लेते।

साधसंगि मिलि करहु अनंद॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद॥

आप कहते हैं, ''अगर आप सच्ची ख़ुशी प्राप्त करना चाहते हैं तो साधु की संगत में जाएं। कमाई वाला महात्मा आपको परमात्मा की भक्ति में लगा देगा।'' कबीर साहब कहते हैं :

साधु की संगत रहो, जौ की भूसी खाओ।
खांड खीर भोजन मिले, साकत संग ना जाओ॥

राम नाम ततु करहु बीचारु॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु॥

आप कहते हैं, ''साकत की संगत में जाकर समय बरबाद न करें। किसी की निंदा-चुगली न करें। 'नाम' की कमाई करें। आपको परमात्मा ने जो दुर्लभ हीरा इन्सानी जामा बख्शा है, इसका उद्धार करें।''

अंम्रित बचन हरि के गुन गाउ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ॥

आप कहते हैं, ''महात्मा अमृत से भरे होते हैं। आप उनके वचनों पर अमल करें।''

आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा॥

महात्मा की सोहबत में जाने का यह फायदा है कि महात्मा हमारे अंदर 'नाम' जपने का शौंक, विरह और तड़प पैदा कर देते हैं। 'नाम' देकर अज्ञान का अंधेरा दूर कर देते हैं, ज्ञान का दीपक जला देते हैं।

सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु॥
मन इछे नानक फल पावहु॥

महात्मा के उपदेश को अपने हृदय में बसा लें। स्वामी जी महाराज कहते हैं :

पत्थर पानी लेखा वरता।

जिस तरह पत्थर पानी में पड़ा है फिर भी वह पानी को अपने अंदर जज्ब नहीं होने देता। इसी तरह हमें भी चाहिए कि हम अपने दिल को पत्थर की तरह न बनाए। जब तक सतसंग में बैठे हैं, तब तक ही असर है और बाद में नहीं।

गुरु गोविंद सिंह जी मालवा में एक चोरों के गांव में गए। आपने उन लोगों से पूछा, ''क्या कारोबार करते हो?'' उन लोगों ने बताया, ''हम चोरी करते हैं।'' आपने कहा, ''यह काम छोड़ दो, दरगाह में कोई आपकी सिफारिश नहीं करेगा। आप एक लिस्ट बनाओ कि आपने कितनी चोरियाँ की।'' वे जब लिस्ट बनाने लगे तो घबराए कि दरगाह में कोई भी हमारी हामीं नहीं भरेगा। सबने मिलकर कसम खाई कि अब हम चोरी नहीं करेंगे। जब फिर गुरु गोविंद सिंह जी वहाँ गए तो सब चोरों ने मिलकर कहा, ''हमने कसम खा ली है। अब हम चोरी नहीं करेंगे। आपने हमारी हामीं भरनी है।''

इसी तरह हमारे गुरु महाराज कृपाल ने हमारे ऊपर दया करके डायरी रखने का मौका दिया। डायरी एक किस्म का रोजनामचा है। यह जिंदगी सुधारने का बहुत उत्तम तरीका है।

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि॥
राम नामु अंतरि उरि धारि॥

अगर हम 'नाम' को अपने अंदर प्रगट कर लेते हैं तो यह देश और अगला देश दोनों सुधार सकते हैं।

पूरे गुर की पूरी दीखिआ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ॥

पूरे गुरु की दीक्षा पूरा 'नाम' होता है। जो लोग सच्चे दिल और भरोसे के साथ इस तरफ लग जाते हैं, वे खुद ही अंदर परख लेते हैं। सन्त 'नाम' देते हुए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते।

मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ॥

अगर सतगुरु 'नाम' देकर चोला छोड़ जाए फिर भी वह सेवक के लिए सदा जिन्दा है। सेवक को गुरु के बताए हुए 'नाम' की कमाई तन-मन से करनी चाहिए। अगर हमारे मन में कोई शक है तो गुरु के उत्तराधिकारी से पूछ सकते हैं। अगर हमारे अंदर कोई रुकावट है तो हम उसे बता सकते हैं। वह हमेशा ही मदद करने के लिए तैयार होता है। गुरु के संसार से चले जाने पर उनका उत्तराधिकारी नए शिष्य बना सकता है।

सचु वापारु करहु वापारी॥
दरगह निबहै खेप तुमारी॥

अगर आप व्यापारी हैं तो सच्चा व्यापार, 'शब्द-नाम' की कमाई करें। यही दरगाह में साथ जाएगा। मैं बताया करता हूँ कि 'नाम' को प्राप्त करना इस तरह है जैसे हम दूसरे मुल्क में जाने के लिए वीजा प्राप्त करते हैं। अगर मोहर थोड़ी सी भी ठीक न लगी हो तो वे मंजूर नहीं करते। इसी तरह 'नाम' सतगुरु की मोहर है। पूरे गुरु के शिष्य को *सच्चखंड* तक कोई नहीं रोक सकता।

एका टेक रखहु मन माहि॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि॥

आप कहते हैं, ''जो सेवक गुरु पर भरोसा, गुरु से प्यार, गुरु का आसरा रखते हैं, उनका इस संसार में आने-जाने का चक्कर खत्म हो जाता है।''

तिस ते दूरि कहा को जाइ॥
उबरै राखनहारु धिआइ॥

अगर जीव यह कहे कि मैंने तो गुरु को छोड़ दिया है; यह उसके मन का भ्रम है। वह गुरु से कितनी दूर जाएगा? गुरु जब 'नाम' देता है तो शब्द-रूप होकर शिष्य के अंदर बैठ जाता है। गुरु अंदर बैठकर ही उसका ख्याल रखता है।

हजूर कहा करते थे, ''गुरु सेवक की डोर ढीली जरूर कर देते हैं, लेकिन हाथ से नहीं छोड़ते।''

निरभउ जपै सगल भउ मिटै॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै॥

आप कहते हैं, ''प्रभु की भक्ति करने के लिए किसी से नहीं डरना चाहिए। निर्भय होकर भक्ति करेंगे तो हम निर्भय होकर प्रभु के साथ जुड़ जाएंगे। प्रभु की भक्ति करके ही यमों से छूट पाएंगे।''

जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख॥
नामु जपत मनि होवत सूख॥

जिसने परमात्मा का आसरा ले लिया जो परमात्मा की भक्ति करता है, वह दुनिया में रहते हुए भी दुनिया की मैलों में नहीं फँसता। उस आत्मा में दुनिया के सुखों-दुःखों का मुकाबला करने की शक्ति आ जाती है। कबीर साहब कहते हैं :

देह धरी का दण्ड, सब काहूँ को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से, अज्ञानी भोगे रोय॥

चिंता जाइ मिटै अहंकारु॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु॥

'नाम' की कमाई करने से यह चिंता दूर हो जाती है कि क्या होने वाला है, क्या होगा? अंदर का अहंकार खत्म हो जाता है। आप कहते हैं, ''ऐसे मालिक के भक्त की कोई बराबरी नहीं कर सकता। उसे कोई कुछ नहीं कह सकता।''

सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा॥
नानक ता के कारज पूरा॥

सन्त हमें 'नाम' देकर बेखबर नहीं होते। 'नाम' की कमाई करने वाले के सिर के ऊपर पूरा गुरु सूरमा बहादुर होता है। वह पर्दे के पीछे हर काम करता है। मेरे पास ऐसे कई वाकये मौजूद हैं, जब प्रेमी आकर बताते हैं कि उसको 'नाम' नहीं मिला था, उसने आपके दर्शन भी नहीं किए थे, फिर भी आपने उसकी संभाल की।

मैं हरनाम सिंह की कहानी बताया करता हूँ कि उसने चलती हुई कार में ही हजूर के दर्शन किए थे। अंत समय में हजूर ने मेरे खेतों में उसकी संभाल की थी।

मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि॥

गुरु का आदेश सेवक के फायदे के लिए होता है। गुरु की दृष्टि में अमृत होता है। गुरु चाहे तो दृष्टि से ही दुनिया का उद्धार कर सकता है। हजरत बाहु कहते हैं :

इक निगाह जे मुर्शिद तक्के, लख करोड़ां तारे हूं।
लख निगाह जे आलम तक्के, किसे ना कडी चाड़े हूं॥

भाई नंदलाल ने गुरु गोविंद सिंह जी से यही कहा :

तेरी इक नज़र है, मेरी जिंदगी का सवाल है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी कांगड़ा की तरफ गए। वहाँ एक भगवे कपड़ों वाले साधु के साथ आपकी बहुत देर बातचीत हुई। आपके एक सेवक के पूछने पर आपने उसे बताया, ''यह इतनी कमाई वाला साधु है; अगर यह किसी के साथ आँख मिलाए तो उसे *सच्चखंड* ले जा सकता है। लेकिन यह ऐसी मौज नहीं बरता रहा।'' ऐसी कमाई वाले महात्मा भी इस संसार में आते हैं।

चरन कमल जा के अनूप॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप॥

गुरु के चरण बहुत सुंदर हैं। उनके स्वरूप की महिमा बयान नहीं की जा सकती। गुरु नानकदेव जी गुरु की महिमा इस तरह बयान करते हैं :

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा, पूर्ण कर्म होवे प्रभ मेरा।

स्वामी जी महाराज गुरु की महिमा इस तरह बयान करते हैं:

मेरे गुरु दा कोई स्वरूप देखे, हो जाए दूर परन्दरी।

मैंने भी हजूर से यही कहा था :

तैनूं पास बिठा के हर वेले, मैं तकदी रवां।

हजूर मुझे अपने बराबर ही बिठाते थे। मैं बड़ा उतावला होता था कि मैं भी सामने बैठकर अपने प्यारे के दर्शन करूँ।

धंनु सेवा सेवकु परवानु॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु॥

आप कहते हैं, ''वह अंतरयामी गुरु आपके अंदर बैठा है।

उसे इन्सान मत समझो। धन्य है वह सेवक, जिसकी सेवा को वह परवान करता है। दिल में ऐसा ख्याल मत रखो कि हम जो थोड़ी बहुत सेवा करते हैं, 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं या उसके नाम पर दान करते हैं, शायद वह नहीं जानता। वह आपके साँस साँस का लेखा जोखा रखता है। वह अंतरयामी है।''

जिसु मनि बसै सु होत निहालु॥
ता कै निकटि न आवत कालु॥

उठते-बैठते, सोते-जागते जिसके मन में वह बस जाता है, काल उसके पास नहीं आ सकता। उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अमर भए अमरा पदु पाइआ॥
साधसंगि नानक हरि धिआइआ॥

गुरु, परमात्मा और जीव के बीच एक बिचौलिया होता है। गुरु एक पुल की तरह है जो हमें रास्ता पार करवाता है। परमात्मा अमर है, गुरु भी अमर है। उसका घर अनामी धाम भी अमर है। गुरु नानक साहब कहते हैं :

सतगुरु मेरा सदा सदा, ना आए ना जाए।
वो अविनाशी पुरुष है, हर जेहा रहा समाए॥

हम साधुओं से मिले। उन्होंने दया की। हम भी उस अमर देश में पहुँच गए।

गुरु अर्जुनदेव जी ने इस अष्टपदी में परमात्मा की महिमा बताई है। परमात्मा से मिलने का फायदा बताया है कि वह अमर है एक है और सबकी पालना करता है।

❖ ❖ ❖

परमात्मा ही परमात्मा

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु॥

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस अष्टपदी में सतगुरु की महिमा बयान करते हैं। सतगुरु शिष्य को क्या वस्तु देता है, उस वस्तु से शिष्य को क्या फायदा होता है।

हम बुरी तरह से अज्ञान के अंधेरे में फँसे हुए हैं। सतगुरु हमें नाम-रूपी अंजन* देते हैं; जिससे हमारा अज्ञानरूपी अंधेरा दूर हो जाता है। हम जानते हैं, जब किसी की आँखें कमजोर हो जाती हैं तो डाक्टर उसे दवाई देते हैं। उस दवाई को लगाने से आँखों का धुंधलापन दूर हो जाता है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते है, '' इस नाम-रूपी अंजन को लगाने से अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। हमें साफ नजर आने लग जाता है कि परमात्मा ने किस तरह अंदर इन्तजाम किया हुआ है।''

हममें हिम्मत नहीं थी कि सन्तों के दरबार में पहुँच जाते। उनसे सच रूपी अंजन, 'नाम' प्राप्त कर लेते। उस परमात्मा की दया हुई तो हमारा मिलाप सन्तों से हुआ।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा॥
नामु प्रभू का लागा मीठा॥

आप कहते हैं, ''जब हम सन्त महात्माओं की सोहबत-

*सुरमा

संगत में गए, उन्होंने अपनी तवज्जो दी, हम जिस परमात्मा को बाहर ढूँढते थे, उसे अपने अंदर देखा। उस वक्त यह 'नाम' इतना प्यारा, इतना मीठा लगा कि उस मिठास को चखकर दुनिया की सब लज्जतें फीकी लगने लगी।''

सगल समिग्री एकसु घट माहि॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि॥

आप कहते हैं, ''सन्तों के पास जाने से हमारा पर्दा खुला, मालिक के साथ मिलाप हुआ। हमें पता लगा कि सब जीवों का एक ही परमात्मा है। सब जीवों को परमात्मा के पास ही जाना है।'' महात्मा पीपा कहते हैं :

जो ब्रहमंडे सोही पिंडे, जो खोजे सो पावे।

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु॥
देही महि इस का बिस्रामु॥

सब ख़ज़ानों का मालिक और शान्ति का बादशाह प्रभु का 'नाम' है। यह 'नाम' हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी में नहीं लिखा जाता। यह 'नाम' हमारी देह वजूद में है। सन्त हमें इसी 'नाम' के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।

सुंन समाधि अनहत तह नाद॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद॥

जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर दसवेंद्वार सुन्न स्थान में पहुँच जाते हैं तो वहाँ सार शब्द आ रहा है, जो अचरज है। जिसे देखकर आत्मा बेशुमार खुश हो जाती है। जिसकी महिमा बयान नहीं की जा सकती।

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए॥
नानक तिसु जन सोझी पाए॥

आप कहते हैं, ''हम परमात्मा को ग्रन्थ, पोथियाँ पढ़कर या अपनी हिम्मत से नहीं देख सकते। जिस पर परमात्मा दया करता है, जिसको दिखाना चाहता है, वही देख सकता है। उसी को यह सूझ देता है।''

सो अंतरि सो बाहरि अनंत॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत॥

जब हम परमात्मा को अपने अंदर देख लेते हैं, तब हमें पता लगता है कि वह परमात्मा बेअन्त है, हर घट के अंदर बैठा है।

धरनि माहि आकास पइआल॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल॥

परमात्मा धरती के जीवों को रोजी-रोटी देता है, उनकी देखभाल करता है। आकाश पाताल के जीवों की पालना और रक्षा करता है। परमात्मा पूर्ण है, सबकी प्रतिपालना करता है।

बनि तिनि परबति है पारब्रहमु॥
जैसी आगिआ तैसा करमु॥

वनों, पर्वतों, पहाड़ों सब जगह **परमात्मा ही परमात्मा** है।

पउण पाणी बैसंतर माहि॥
चारि कुंट दह दिसे समाहि॥

आप कहते हैं, ''पवन में परमात्मा है। पानी में परमात्मा है। आग में भी परमात्मा है। चारों कोनों और दसों दिशाओं में **परमात्मा ही परमात्मा** है।''

तिस ते भिंन नही को ठाउ॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ॥

सब जगह वह परिपूर्ण परमात्मा है। हमें यह समझ तभी आती है, जब हम पर पूर्ण गुरु की कृपा हो जाती है।

बेद पुरान सिंम्रिति महि देखु॥
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु॥

आप कहते हैं, ''वेदों-पुराणों में परमात्मा की महिमा है। सूरज, चन्द्रमा और सितारों में भी उसी का नूर चमक रहा है।''

बाणी प्रभ की सभु को बोलै॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै॥

वह अंदर बैठा सबको अपनी तरफ बुला रहा है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''वह परमात्मा नहीं डोलता जो उसकी भक्ति करते हैं वे भी नहीं डोलते।''

सरब कला करि खेलै खेल॥
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल॥

परमात्मा सर्वकला समर्थ है अपना खेल करके दिखाता है। वह मूल्य से खरीदा नहीं जा सकता। महात्मा कहते हैं :

जे कर ओ रीझदा न्हातयाँ धोत्याँ, ते डड्डू मछियाँ ओनूं बुला लैन्दे।
भोले लोग बेचारे ते रह जान्दे, जे कर चतुर ही ओनूं भरमा लैन्दे।
गरीब बेचारे रह जान्दे, जे कर अमीर ही ओनूं पा लैन्दे॥

आप कहते हैं, ''वह न नहाने से मिलता है, न पढ़-पढ़ाई से मिलता है, न चतुराई से मिलता है। उसे सिर्फ प्रेम के बंधन से ही प्राप्त किया जा सकता है।''

सरब जोति महि जा की जोति॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति॥

हर ज्योति में उसकी ज्योति है। हर प्राणी में उसकी ज्योति है।

गुर परसादि भरम का नासु॥
नानक तिन महि एहु बिसासु॥

आप कहते हैं, ''गुरु की कृपा से, गुरु के दिए हुए 'नाम' की कमाई करने से हमारे भ्रम का नाश हो गया है। हमारे दिल में विश्वास आ गया है कि परमात्मा सब जीवों का दाता है। हमारी आत्मा को जब भी सुख-शान्ति मिलेगी, परमात्मा के पास पहुँचकर ही मिलेगी।''

भाई रे गुरु बिन ज्ञान ना होए, पूछो ब्रह्मे नारदे वेद व्यासे कोय।

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम॥
संत जना कै हिरदै सभि धरम॥

आप कहते हैं, ''सन्त हर जीव के अंदर परमात्मा को देखते हैं। उनके दिल में सब धर्मों के लिए आदर होता है।''

सन्त-महात्मा किसी मजहब, सोसायटी की निन्दा नहीं करते। वे किसी रीति-रिवाज, कर्मकांड में नहीं उलझते और न ही अपने सेवकों को रीति-रिवाजों, कर्मकांडो में उलझाते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''ये रीति-रिवाज इस तरह हैं जैसे किसी औरत का पति परदेस गया हो, वह हार-शृंगार करती हो। दुनिया उस औरत को बदमाश कहेगी कि यह हार-शृंगार करके किसको दिखाती है?''

चिर परदेस शृंगार बनाए, मनमुख अंध ऐसे कर्म कमाए।
हल्त ना शोभा पल्त ना ढोई, अहला जन्म गवावणँया॥

सन्त-महात्मा जब भी आते हैं, वे 'शब्द-नाम' की कमाई का होका देते हैं। हर जाति, हर मुल्क के लोग उनके सेवक होते हैं। वे सबके साथ प्यार करते हैं। जब सन्त-महात्मा चले जाते हैं तो उनके अनुयायी उनकी तालीम इकट्ठी करके महात्मा

के उपदेश का प्रचार नहीं करते बल्कि रूहानियत को मजहब के रंग में रंग देते हैं। एक दूसरे से नफरत करते हैं।

संत जना सुनहि सुभ बचन॥
सरब बिआपी राम संगि रचन॥

आप कहते हैं, ''सन्त-महात्मा अनमोल वचन बोलते हैं। वे सर्वव्यापी परमात्मा में रचे होते हैं। अपने सेवकों को यही बताते हैं कि हर एक के साथ प्यार से पेश आओ। मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठो। वह रमता-राम आपके अंदर है।''

जिनि जाता तिस की इह रहत॥
सति बचन साधू सभि कहत॥

आप कहते हैं, ''जिन्होंने परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लिया उन्हें साधुओं की कद्र है। साधु अपनी आँखों देखी बात कहते हैं।''

जो जो होइ सोई सुखु मानै॥
करन करावनहारु प्रभु जानै॥

महात्मा, परमात्मा के बराबर नहीं बनते। परमात्मा के प्यारे बच्चे बनते हैं। परमात्मा उनको जो भी रूखा-सूखा, सुख-दुःख देता है वे उसको परमात्मा का भाणां समझते हैं। वे परमात्मा के खिलाफ कुछ भी नहीं करते।

अंतरि बसे बाहरि भी ओही॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही॥

आप कहते हैं, ''जो परमात्मा अंदर बसता है वही बाहर दिख रहा है। उसने सारी दुनिया को अपने दर्शनों से मोहित किया हुआ है। महात्मा उस परमात्मा को हर जगह देखते हैं।''

आपि सति कीआ सभु सति॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति॥

परमात्मा सत्य है। उसने जो कुछ किया है वह सब सत्य है। हम जो कुछ भी इन आँखों से देख रहे हैं, इस सबकी उत्पत्ति परमात्मा ने ही की है।

तिसु भावै ता करे बिसथारु॥
तिसु भावै ता एकंकारु॥

अगर परमात्मा को अच्छा लगता है तो वह इस दुनिया का विस्तार कर लेता है। जब उसकी मौज होती है तो वह अकेला रह जाता है।

अनिक कला लखी नह जाइ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥

कोई उसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगा सकता। कोई यह नहीं कह सकता, वह कितनी कला का मालिक है! आप कहते हैं, ''वह भरपूर है, कुल मालिक है, सर्वकला समर्थ है। परमात्मा के आगे जाति-पाति, औरत-मर्द का सवाल नहीं। उसे जो अच्छा लगता है उसे अपनी भक्ति में लगा लेता है।''

कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि॥
आपे आपि आप भरपूरि॥

किसको नजदीक, किसको दूर कहें? वह सबके अंदर बैठा है। जिस तरह धरती के अंदर पानी है; जो लोग ट्यूबवेल लगा लेते हैं, कुआँ बना लेते हैं, वे लोग उस पानी से फायदा उठा लेते हैं। परमात्मा हर जगह है लेकिन जो उस परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लेता है, उसे परमात्मा पर यकीन आ जाता है।

अंतरगति जिसु आपि जनाए॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा जिससे मिलना चाहता है, उसे अंदर से ही समझा कर महात्मा के पास भेज देता है।''

सरब भूत आपि वरतारा॥
सरब नैन आपि पेखनहारा॥

परमात्मा सबका मालिक है। वह सब आँखों के अंदर बैठकर हर जगह देख रहा है। आँखों के पीछे भी उसी का नूर है।

सगल समग्री जा का तना॥
आपन जसु आप ही सुना॥

उसने सब तन पैदा किए। वह आप ही अपना यश करता है, आप ही सुनता है। उसकी शक्ति जीभ पर बैठकर बोलती है। उसकी शक्ति से ही कान के अंदर आवाज सुनती है।

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ॥
आगिआकारी कीनी माइआ॥

आप कहते हैं, ''आना-जाना, जीना-मरना उसने एक खेल बना लिया। इस खेल को करने के लिए माया को अपना आज्ञाकारी बना लिया कि किस तरह पैदा करना है और किस तरह विनाश करना है।''

सभ कै मधि अलिपतो रहै॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै॥

वह बड़ी युक्ति से सबके अंदर समाया हुआ है। जो कुछ कहना है वह आप ही अंदर से कह रहा होता है।

आगिआ आवै आगिआ जाइ॥
नानक जा भावै ता लए समाइ॥

जीव उसकी आज्ञा में आता और उसकी आज्ञा में ही चला जाता है। अगर उसे अच्छा लगता है तो वह जीव को अपने में समा लेता है।

इस ते होइ सु नाही बुरा॥
ओरै कहहु किनै कछु करा॥

परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छा करता है। परमात्मा कभी बुरा नहीं करता। वह हर किसी का फायदा ही करता है।

आपि भला करतूति अति नीकी॥
आपे जानै अपने जी की॥

परमात्मा अच्छा है। वह अपने जीव के बारे में जानता है कि इसे किस चीज की जरूरत है। अगर हमारे अंदर परमात्मा से मिलने की जबरदस्त इच्छा है तो वह हमें महात्मा की सोहबत-संगत में लाता है। अगर हमारे अंदर इच्छा नहीं, तो चाहे हम महात्मा के पास रहने लग जाएं तो भी हमारे अंदर 'नाम' लेने की इच्छा पैदा नहीं होगी।

आपि साचु धारी सभ साचु॥
ओति पोति आपन संगि राचु॥

ता की गति मिति कही न जाइ॥
दूसर होइ त सोझी पाइ॥

परमात्मा की महिमा बयान नहीं की जा सकती। वह अपने आप ही समर्थ है। कोई उसके बराबर नहीं। उसका कोई भाई

बंधु, रिश्तेदार नहीं। उसके आगे फरियाद ही करनी पड़ती है, क्योंकि वह कुल मालिक है, सब पर दयालु है।

तिस का कीआ सभु परवानु ॥
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा का किया हुआ सब परवान है। हमें इस बात की जानकारी गुरुओं की कृपा से हुई।''

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥

जो परमात्मा की जानकारी प्राप्त करके उससे मिलाप कर लेता है, उसके जन्म-मरण का दुःख हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। उसको सुख ही सुख प्राप्त हो जाता है।

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥

जिसके अंदर परमात्मा प्रगट है, वही इन्सान इस संसार में धनवंत, कुलवंत और पतिवंत है; वह जीते जी मुक्त है। उसका इस संसार में आना मुबारक है। हम उसे धन्य कहते हैं।

धन धन सतगुरु जिन नाम अराधया आप तरया,
जिन्हा डिठा तिन्हा ले छुड़ाए।
धन धन कुल धन धन जननी,
जिन गुरु जणया माये ॥

धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥

ऐसा महात्मा धन्य है, जिसके आने से संसार तर जाता है। महात्मा थोड़े से जीवों के लिए नहीं आते। महात्मा चाहे कितने

जीवों को अपने साथ ले जाए, परमात्मा उनसे यह नहीं पूछता कि इतने जीवों को साथ क्यों लाए हो?

जन आवन का इहै सुआउ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ॥

आप कहते हैं, ''मालिक के प्यारों के पास जाने का यही फायदा है कि उनकी सोहबत-संगत में रहकर हम भूले-भटकों को 'नाम' याद आ जाता है। जिस तरह लोहा काठ की संगत करके तर जाता है, उसी तरह हम भी मालिक के प्यारों की सोहबत-संगत में जाकर तर जाते हैं।''

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु॥

महात्मा आप मुक्त होता है। जो भी उनकी संगत में आते हैं, वे उनसे 'शब्द-नाम' की कमाई करवाकर उनको भी मुक्त कर देते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि हम ऐसे मालिक के प्यारों को सदा ही नमस्कार करते हैं; उनका संसार में आना धन्य है। वे अपने 'नाम' की कणी बख़्शकर हमें तार देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी का कुल तर जाता है। जो अच्छी कमाई वाले हैं उनके कई कुल तर जाते हैं। गुरमुख के एक सौ एक कुल तर जाते हैं। परम सन्त मालिक के प्यारे अपने कुल, अपनी संगत को तार देते हैं।''

❖ ❖ ❖

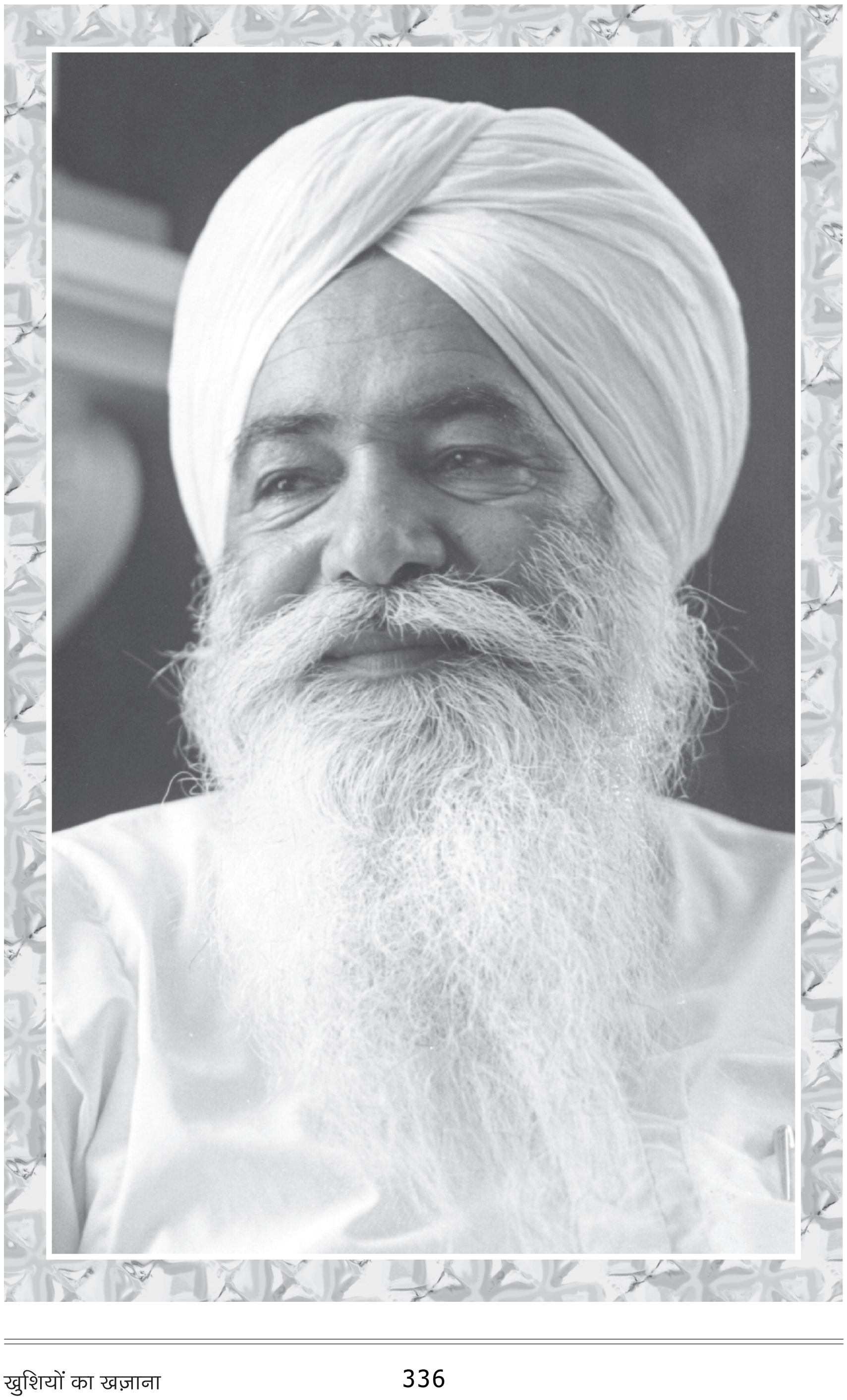

सुखमनी

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ॥
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ॥

एक शिष्य ने गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के पास आकर विनती की, ''आपने पूरा प्रभु किस तरह प्राप्त किया, पूरा 'नाम' किससे प्राप्त किया?''

हम जानते हैं कि मेहनत के बिना इन्सान दुनिया के किसी भी काम में कामयाब नहीं हो सकता। अगर इन्सान नेक इरादे श्रद्धा, प्यार और लगन से किसी भी काम में लग जाए, तो वक्त लगता है, लेकिन कामयाब जरूर होता है।

चींटी एक छोटा सा जानवर है। दीवार पर चढ़ती है, गिर जाती है। फिर चढ़ती है, लेकिन हिम्मत नहीं हारती। आखिर वह दीवार पर चढ़ ही जाती है। हम सारा दिन हाय-हाय करते हैं और कहते हैं, ''मन नहीं टिकता, सुरत ऊपर नहीं चढ़ती।'' ऐसा इसलिए है कि हम भजन के चोर हैं। भजन नहीं करते, मेहनत नहीं करते।

जितने भी महात्मा इस संसार मंडल में आए, हर महात्मा ने कई-कई साल मेहनत की। रातों को जागे। भजन-अभ्यास किया। तभी परमात्मा के पास पहुँचे। इतिहास से यह भी पता लगता है कि महात्माओं में अपने गुरु के प्रति कितनी श्रद्धा, कितना भरोसा था। उन्होंने अपने गुरु का हुक्म मानने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानियाँ भी दी।

कबीर साहब परम सन्त थे, धुरधाम से आए थे। लेकिन यहाँ आकर उन्होंने बड़ी मेहनत की, रातों को जागे। आप अपनी बानी में लिखते हैं :

सुखिया सब संसार है, खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए॥

इसी तरह स्वामी महाराज ने छोटी आयु में अंधेरी कोठरी में बैठकर सतरह साल अभ्यास किया। बाबा जयमल सिंह जी ने आर्मी में रहते हुए मोर्चों में बैठकर अपना अभ्यास जारी रखा। महाराज सावन सिंह जी कई-कई दिन तक अंदर से बाहर नहीं निकले। रातें जागे, मेहनत की। महाराज कृपाल सिंह जी रात को रावी नदी में खड़े होकर अभ्यास करते रहे। गुरु नानक साहब ने ग्यारह साल बड़ी कठिन तपस्या की।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैंने सतरह अठारह साल तक 'दो शब्द' का अभ्यास किया। जमीन के अंदर बैठकर बड़ी कठिन तपस्या की। भूख-प्यास को सहन किया। जो भी देखता, कहता, इस पर भूत-प्रेत का साया है, यह पागल है। जब हजूर कृपाल ने दया की 'दो-शब्द' से ऊपर की मंजिल का भेद दिया, तब मैं 16 पी.एस. में जमीन के अंदर एक जगह बनाकर पाँच-छह साल तक अभ्यास करता रहा। मैंने अपने पास एक ही सेवक रखा हुआ था, उससे कह रखा था, ''मुझे जब भूख लगेगी, मैं खाना खा लूँगा। तुम अपने वक्त पर खाना खा लिया करो।''

सन्त-महात्मा महान आत्माएं होती हैं। मालिक के हुक्म से संसार में आती हैं। उनके मेहनत करने का भाव; दुनिया जान सके कि बिना मेहनत के कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। देह हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए मिली है। हम स्थूल शरीर में बैठे हैं।

यहाँ स्थूल मन, स्थूल इन्द्रियाँ हैं। ये हमें अंदर नहीं जाने देती। यहाँ माया प्रगट है, ब्रह्म गुप्त है। सँहसदल कमल के ऊपर माया और ब्रह्म बराबर है। इसी तरह त्रिकुटी के अंदर ब्रह्म प्रगट है माया गुप्त है। मन ब्रह्म की अंश है। जब आत्मा इससे ऊपर चली जाती है, वहाँ माया का नामोनिशान नहीं।

आमतौर पर योगी लोग ब्रह्म तक ही पहुँचे। उन्होंने वहाँ के कर्ता को ही कुल मालिक करके बयान किया है। बाबा बिशनदास ने मुझे भी ब्रह्म तक का ही भेद दिया था। पहले वह यह कहते थे, ''यही कुल मालिक है।'' बाद में जब उनको पता चला तो उन्होंने कहा, ''इससे ऊपर भी कुछ है।''

गुरु अर्जुनदेव जी उस शिष्य को जवाब देते हैं, ''हमने पूरे प्रभु की आराधना की है। पूरा 'नाम' प्राप्त किया है। हम पूरे प्रभु के गुण गाते हैं।'' महात्मा जब पूरे प्रभु, पूरे 'नाम' का जिक्र करते हैं तो उस समय ख्याल आता है कोई अधूरा प्रभु, अधूरा गुरु और अधूरा 'नाम' भी है।

पूरा परमात्मा *सच्चखंड* अनामी धाम में बैठा है। परमात्मा की मौज हुई तो उसने *सच्चखंड,* भँवरगुफा और दसवाँ द्वार रच दिया। इसी तरह नीचे त्रिकुटी, सँहसदल कमल और यह दुनिया रच दी। सूक्ष्म मंडल रचकर उनमें देवी-देवता आबाद कर दिए। इन मंडलों का मालिक काल को बनाकर इनका इन्तजाम भी काल के हवाले कर दिया। गुरु नानक साहब कहते हैं :

खंड पाताल द्वीप सब लोया, काले वस आप प्रभ किया।
तिहाँ गुणा ते रहे नरारा, सो गुरमुख शोभा पायेन्दा॥

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''यह मन तोप के आगे खड़ा होने के लिए तो तैयार हो जाता है, लेकिन भजन पर बैठने के लिए तैयार नहीं होता। हमें मन की बात नहीं माननी

चाहिए। अभ्यास को प्रेम-प्यार से करना चाहिए। परमात्मा की भक्ति अमोलक दात है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की नाशक है।''

जो लोग परमात्मा की भक्ति सच्चे दिल से करते हैं, उन्हें परमात्मा जरूर मिलता है। हम भक्ति की दात, 'नाम' की दात महात्मा के पास जाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। 'नाम' तवज्जो होती है। महात्मा अपना कमाया हुआ 'नाम' देते हैं, उस 'नाम' के पीछे महात्मा की ताकत काम करती है।

पूरे गुर का सुनि उपदेसु॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु॥

आप कहते हैं, ''हम पूरे गुरुओं का उपदेश सुनकर परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर सकते हैं।''

सासि सासि सिमरहु गोबिंद॥
मन अंतर की उतरै चिंद॥

आप कहते हैं, ''साँस ऊपर जाए, साँस नीचे आए, सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते, किसी से बात करते हुए भी सिमरन ही सिमरन होना चाहिए।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे :

हथ कार वन्नी, दिल यार वन्नी।

अगर हमें सिमरन करने की आदत हो जाए, तो हम भीड़-भड़क्के में भी बड़ी आसानी से सिमरन कर सकते हैं।

आस अनित तिआगहु तरंग॥
संत जना की धूरि मन मंग॥

आप कहते हैं, ''हमारे दिल में परमात्मा से मिलने की

आशा और तड़प होनी चाहिए। हमें अपने मन से दुनिया की तरंग इस तरह निकाल देनी चाहिए, जिस तरह झाड़ू से कूड़ा बाहर निकाल देते हैं। सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। अगर हमें परमात्मा से कुछ माँगना है तो सन्तों की धूल ही माँगनी चाहिए।'' गुरु साहब कहते हैंः

साध की धूल करो स्नान, साध पर जाइए कुरबान।

आपु छोडि बेनती करहु॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु॥

आप कहते हैं, ''हमारे और परमात्मा के बीच अगर कोई रुकावट है तो वह हौमें - अहंकार की है। हमें अपने अंदर से अहंकार को निकालकर 'नाम' की कमाई करनी चाहिए। अगर हम इस संसार-समुद्र से तरना चाहते हैं तो सन्त-महात्माओं की संगत से ही तर सकते हैं।''

जिस तरह कोई आदमी किसी अनजान शहर या मुल्क में जाता है, वह जगह-जगह रास्ता पूछता है। जब तक वह मंजिल पर नहीं पहुँच जाता, उसके दिल में डर लगा रहता है। अगर कोई जानकार उसके साथ हो तो उसे जगह जगह पूछताछ करने की जरूरत नहीं पड़ती। वह अपनी कार दौड़ाता जाता है। उसके दिल में कोई डर नहीं रहता।

हम रूहानियत में अंदर के रास्ते से वाकिफ नहीं हैं। हम नहीं जानते, कौन से रास्ते से जाना है। अगर हम उस महान सतगुरु को अपने साथ ले लें, वह उन मंडलों का जानकार है, हमें हर खतरे से बचाकर ले जाएगा।

हरि धन के भरि लेहु भंडार॥
नानक गुर पूरे नमसकार॥

आप कहते हैं, ''हम जो रोजाना भजन-अभ्यास करते हैं, साँस साँस के साथ 'नाम' जपते हैं; यह लेखे में है। हमारा सतगुरु इस भंडार को संभाल कर रखता है। गुरु जब 'नाम' देता है 'शब्द-रूप' होकर सेवक के साथ हो जाता है। हम पूरे गुरु को नमस्कार करते हैं।''

खेम कुसल सहज आनंद॥
साधसंगि भजु परमानंद॥

आप कहते हैं, ''गुरु हमें हर खतरे से बचाकर प्यार के साथ अपने घर ले जाएगा। वहाँ ख़ुशी और आनन्द ही आनन्द है।'' कबीर साहब कहते हैं :

कबीरा संगत साध की, साहिब आवे याद।
लेखे में सोई घड़ी, बाकी के दिन बाद॥

नरक निवारि उधारहु जीउ॥
गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ॥

आप कहते हैं, ''नाम जपने का यह फायदा है कि हम अपने ऊपर तरस खाकर अपने आपको नर्कों से बचा रहे हैं।''

चिति चितवहु नाराइण एक॥
एक रूप जा के रंग अनेक॥

आप कहते हैं, ''हमें हर समय उठते-बैठते, सोते-जागते परमात्मा के गुण गाने चाहिए। हम जो कुछ भी इन आँखों से देख रहे हैं यह उसके रंग हैं, उसकी लीला है।''

गोपाल दामोदर दीन दइआल॥
दुख भंजन पूरन किरपाल॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा हमेशा दया करता है, दुःखों को

दूर करता है। अपने घर में जगह देता है। सब पर कृपाल है।''

सिमरि सिमरि नामु बारं बार॥
नानक जीअ का इहै अधार॥

आप कहते हैं, ''आप यह मत सोचो कि आपने ज्यादा सिमरन कर लिया है! जन्म-मरण से बचाने वाली दवाई 'शब्द-नाम' है। आप बारम्बार मन के साथ संघर्ष करो, सिमरन करो।''

उतम सलोक साध के बचन॥
अमुलीक लाल एहि रतन॥

आप कहते हैं, ''सन्तों-महात्माओं के वचन अमोलक होते हैं, उत्तम होते हैं। जो आत्माएं उनके कहे अनुसार चलती हैं, वे अपने जीवन का उद्धार कर लेती हैं।''

परथाए साखी महापुरुष बोलदे, साँझी सगल जहाने।

सुनत कमावत होत उधार॥
आपि तरै लोकह निसतार॥

आप कहते हैं, ''जो उनके वचन सुनता है, उसका अपना उद्धार तो होता ही है, वह दुनिया का भी उद्धार कर देता है।''

सफल जीवनु सफलु ता का संगु॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु॥

महात्मा के अंदर परमात्मा का रंग लगा होता है। वह चौबीस घंटे मालिक के गुण गाता है। ऐसे महात्मा का जीवन सफल है। अगर हम ऐसे महात्मा की संगत करते हैं, वह लेखे में है। गुरु नानक साहब कहते हैं :

जाँ दिन भेंटा साध संग, उहाँ दिन बलिहारी।

जै जै सबदु अनाहदु वाजै॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै॥

प्रगटे गुपाल महांत कै माथे॥
नानक उधरे तिन कै साथे॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा महात्मा के माथे के अंदर प्रगट है। हम उसकी संगत करके ही तर सकते हैं।''

सरनि जोगु सुनि सरनी आए॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए॥

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज उस शिष्य से कह रहे हैं, ''जो परमात्मा की शरण में आने के योग्य होते हैं, परमात्मा खुद उनके मिलने का इंतजाम करता है। उन्हें कमाई वाले महात्मा की शरण में ले जाता है।''

मिटि गए बैर भए सभ रेन॥
अंम्रित नामु साधसंगि लैन॥

आप कहते हैं, ''महात्मा की सोहबत में आने का यह फायदा है कि हमारे अंदर 'नाम' प्रगट हो जाता है। हम किसी की निन्दा नहीं करते, किसी से दुश्मनी नहीं रखते, क्योंकि परमात्मा सबके अंदर है। हम अपने आपको नीचा और सबको ऊँचा समझते हैं।

सुप्रसंन भए गुरदेव॥
पूरन होई सेवक की सेव॥

जो सेवक अपने अंदर नम्रता धारण कर लेते हैं, सबको परमात्मा के बच्चे समझते हैं। उनपर गुरुदेव प्रसन्न होते हैं। उनके लिए दरवाजा खोलते हैं। उनकी ही सेवा परवान है।

आल जंजाल बिकार ते रहते॥
राम नाम सुनि रसना कहते॥

ऐसे मालिक के प्यारे दुनिया के जंजाल से बचे रहते हैं। जब भी जुबान खोलते हैं, मालिक की महिमा ही बयान करते हैं। जिस तरह पपीहा स्वाति बूँद के लिए ही मुँह खोलता है।

करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी॥
नानक निबही खेप हमारी॥

आप कहते हैं, ''सबके साथ प्यार करना, सबको परमात्मा का बच्चा समझना, हमारे बस में नहीं था। यह तो परमात्मा ने कृपा की, जो हमारी उम्र निभ गई।''

किसी शहर में एक महात्मा रहता था। वहाँ की एक औरत उसे हमेशा ही ताना मारती। कहती, ''बाबा! मुँह पर दाढ़ी है या झाड़ी है?'' वह महात्मा चुप रहता। जब उस महात्मा का अन्त समय आया, उसने अपनी चिता तैयार कर ली और अपने एक शिष्य को उस औरत के पास भेजा कि जाकर उसे बुला लाओ।

महात्मा ने उस औरत से कहा, ''बेटी! तू आज पूछ यह दाढ़ी है या झाड़ी है? इस समय मेरे जाने की तैयारी है, चिता भी तैयार है। मैं यह दाढ़ी साबुत लेकर जा रहा हूँ।'' औरत ने कहा, ''आप यह बात पहले कह देते।'' महात्मा ने जवाब दिया, ''मन अंदर बैठा है। यह कब धोखा दे जाए।''

प्रभ की उसतति करहु संत मीत॥
सावधान एकागर चीत॥

गुरु साहब उपदेश करते हैं, ''प्यारेयो! सोते हुए, जागते हुए परमात्मा के गीत गाओ, भजन करो। अपने मन को सावधान

रखो कि जब आप भजन पर बैठो, आपका मन आपको बाजारों मे सैर न करवाता फिरे।''

मैं आपको हमेशा ही कहा करता हूँ, ''मन को शान्त करो। शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। दुनिया के जो संकल्प हमारे अंदर उठ रहे हैं, वे अशान्ति पैदा कर रहे हैं। शान्त मन से सिमरन करो।''

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान॥

इस बानी का नाम 'सुखमनी' इसलिए है कि यह मन को सुख देती है। जो इसे मणि की तरह समझता है, यह उसके अंदर प्रकाश कर देती है। सुखमनी में उन कर्मों का जिक्र है, जो हमारे और परमात्मा के बीच रुकावट हैं।

सरब इछा ता की पूरन होइ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ॥

'शब्द-नाम' की कमाई करने वाले की सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। दुनिया में वही इन्सान प्रधान है, जिसके अंदर परमात्मा प्रगट हो जाता है। दुनिया उसे प्यार से याद करती है।

सभ ते ऊच पाए असथानु॥
बहुरि न होवै आवन जानु॥

परमात्मा जिसे एक बार अपने पास बुला लेता है, फिर उसे वापिस इस दुःखी दुनिया में नहीं भेजता। वह सबसे ऊँचे, अनामी धाम में चला जाता है।

हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ॥
नानक जिसहि परापति होइ॥

अगर महात्मा दुनिया से कोई लाभ कमाकर ले जाता है तो वह 'नाम' की कमाई है। वह जानता है कि साथ जाने वाली वस्तु 'नाम' ही है। लेकिन यह लाभ वही कमाता है जिसको परमात्मा प्राप्त हो जाता है।

खेम सांति रिधि नव निधि॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि॥

आप कहते हैं, ''महात्मा ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ नहीं दिखाते, भविष्य वाणियाँ नहीं करते। अगर वे चाहें तो उन्हें ऐसी चीजें सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।''

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु॥
गिआन स्रेसट ऊतम इसनानु॥

महात्मा को हर तरह की विद्या का ज्ञान होता है। वह दुनिया में अपने आपको अनजान व्यक्ति जैसा साबित करते हैं। वे करामात नहीं दिखाते। महात्मा के लिए किसी सेवक के साथ किसी भी भाषा में बात कर लेना मुश्किल नहीं। वे अंदर आत्मा, परमात्मा के साथ ऐसे बात करते हैं जैसे हम बाहर बात करते हैं। हजरत बाहु कहते हैं :

ना कोई पढ़न पढ़ावन औथे, ना कोई मसले किस्से हू।

चारि पदारथ कमल प्रगास॥
सभ कै मधि सगल ते उदास॥

जैसे कमल हमेशा खिला रहता है। 'नाम' की कमाई करने वाले महात्मा के पास चार पदार्थ हमेशा रहते हैं। वे दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों में नहीं फँसते। जैसे राही का ध्यान अपनी मंजिल की तरफ होता है, वैसे महात्मा इस दुनिया में रहते हुए अपने आपको परमात्मा के चरणों में लगाए रखते हैं।

सुंदरु चतुरु तत का बेता॥
समदरसी एक द्रिसटेता॥

आप कहते हैं, ''महात्मा देखने में सुंदर, समदर्शी और समझदार होते हैं। परमात्मा को जानने वाले होते हैं। वह अपने आपको परमात्मा का पुत्र ही समझते हैं।''

इह फल तिसु जन कै मुखि भने॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने॥

महात्मा अपने गुरु का वचन मानकर 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। अपने गुरु के प्रति श्रद्धा रखते हैं। अगर श्रद्धा प्रेम न हो तो आगे रास्ता नहीं चलता, क्योंकि सतगुरु अंदर बैठा है। वह दरवाजा नहीं खोलता।

इहु निधानु जपै मनि कोइ॥
सभ जुग महि ता की गति होइ॥

सतयुग, त्रेता, द्वापर और आज कलयुग है। एक युग के पीछे दूसरा युग चक्कर लगाता है। हर युग में 'नाम' में ही मुक्ति है। 'नाम' का खज़ाना परमात्मा ने अपने भक्तों को सौंपा होता है। 'नाम' की युक्ति सिर्फ उनको ही मिलती है जिन पर परमात्मा दया-मेहर करता है। वे ही 'नाम' जपते हैं।

गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी॥
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी॥

आप कहते हैं, ''गोविंद-गोविंद कहने से गोविंद नहीं मिलता। गोविंद का मतलब उस शब्द को सुनना है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं :

गोविंद गोविंद कहिए दिन-राति, गुण गोविंद शब्द सुणावणया।

इसे धुर की बाणी, सच्ची बाणी कहकर बयान किया गया है। सब वेद-शास्त्र 'शब्द-नाम' की महिमा करते हैं, जो *सच्चखंड* से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है।

सगल मतांत केवल हरि नाम॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम॥

किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देख लो। हर महात्मा की बानी के अंदर 'शब्द-नाम' और सतसंग का होका है।

सौ स्याणयां इको मत, मूर्खां आपो आपणी।

कोटि अप्राध साधसंगि मिटै॥
संत क्रिपा ते जम ते छुटै॥

आप कहते हैं, ''हमने कितने भी बुरे कर्म क्यों न किए हों, हमें डरना नहीं चाहिए। महात्मा की संगत में आ जाना चाहिए। उसके बाद बुरे कर्म और पाप नहीं करने चाहिए। जहाँ हैं, वहीं रुक जाना चाहिए।''

महात्मा हमें यमों के हवाले नहीं होने देते। अगर महात्मा के पास जाकर भी हमें यमों के हवाले होना है या सतगुरु मौत के समय हमारी संभाल नहीं करता तो ऐसे गुरु को दूर से ही सलाम।

मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि 'नाम' लेने के बाद भी अगर हमारे अंदर काम, क्रोध है, हम बुरे कर्म करते हैं तो काल सतगुरु को दिखाता है कि ''देख! तूने इसे 'नाम' दिया है यह क्या कर रहा है।'' सतगुरु के अंदर बहुत विश्वास होता है। वह कहता है, ''नहीं यह समझ जाएगा। आगे फिर नहीं करेगा।''

जब फिर महात्मा की सोहबत-संगत में जाते हैं कसमें उठा लेते हैं कि अब बुरे कर्म नहीं करेंगे। लेकिन जब दुनिया का

सामना करना पड़ता है, फिर वैसे ही बन जाते हैं। सतगुरु की दया दृष्टि हमारी आत्मा को साफ करती है लेकिन हम फिर उस पर मैल लगा लेते हैं। उनकी दया दृष्टि हमारी मैल उतारने पर ही खर्च होती रहती है। हमें भी चाहिए, थोड़ी बहुत हिम्मत करें! काम, क्रोध से बचकर कामयाब हों।

जा कै मसतकि करम प्रभि पाए॥
साध सरणि नानक ते आए॥

गुरु साहब बार बार यही होका देते हैं कि परमात्मा जिसके मस्तक में यह लेख लिख देता है कि इसे पूरा साधु मिलेगा, वही आत्मा साधु की सोहबत-संगत में जा सकती है। उसके लिए दूर और नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता।

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति॥

जो श्रद्धा, प्यार और प्रेम से 'शब्द-नाम' की कमाई करता है परमात्मा उसके हृदय में बसने लग जाता है। दिल से दिल को राह होती है। आप जिसे याद करते हो, वह भी आपको जरूर याद करता है।

जनम मरन ता का दूखु निवारै॥
दुर्लभ देह ततकाल उधारै॥

आप कहते हैं, ''वह जन्म-मरण के दुःख को खत्म कर देता है। दुर्लभ इन्सानी जामे का उद्धार कर देता है।'' मुसलमानों में राबिया बसरी एक बड़ी मशहूर महात्मा हुई है। एक दिन उसकी आँख नहीं खुली। वह अभ्यास में नहीं बैठ सकी। उसके सेवक, जो सुबह तीन बजे उठते थे, उन्हें अनुभव हुआ कि हमारी

महात्मा चोला छोड़ गई है। वे दौड़कर उसके पास आए और कहने लगे, ''हमें ऐसा अनुभव हुआ है कि आप चोला छोड़ गई हैं।'' राबिया बसरी ने इकबाल किया, ''हाँ! आपका अनुभव ठीक है। मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं अभ्यास में नहीं बैठ सकी।'' आप जिसकी याद में बैठते हैं वह भी आपके पास बैठा होता है।

निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी॥
एकु नामु मन माहि समानी॥

आप कहते हैं, ''महात्मा की बानी के अंदर अमृत होता है। उनकी सच्ची शोभा है। वे निर्मल हैं, पवित्र हैं।''

दूख रोग बिनसे भै भरम॥
साध नाम निरमल ता के करम॥

गुरु साहब कहते हैं, ''वही साधु हैं जिनके कर्म निर्मल हैं। जिन्होंने अपने अंदर 'नाम' प्रगट कर लिया है। अपनी आत्मा को *सच्चखंड* पहुँचा दिया है। उनके दुःख, रोग, भ्रम सब दूर हो गए हैं।''

मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि सन्तों का एक पैर इस संसार में और दूसरा *सच्चखंड* में होता है। वे आँख खोलते हैं तो दुनिया में और आँख बंद करते हैं तो मालिक के पास होते हैं।

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी॥

सुखमनी के अंदर यह गुण है कि यह बानी सुखों को देने वाली है, मणि की तरह अंदर प्रकाश करती है।

गुरु अर्जुनदेव जी ने इस बानी में, जहाँ सिमरन का विषय लिया है वहाँ सिमरन पर पूरा जोर दिया है। जहाँ गुरु प्यार लिया है, वहाँ गुरु पर पूरा भरोसा दिखाया है। जहाँ साधु की महिमा है वहाँ साधु महिमा का गुणगान किया है। जहाँ हमारे और परमात्मा के बीच 'निन्दा' रुकावट है, वहाँ निन्दा से हटने के लिए बहुत जोर दिया है। आपने तो यहाँ तक कह दिया :

साध का निन्दक कैसे तरे, सर पर जाणों नर्की पड़े।

आपने इस बानी में यह बताया है कि मुक्ति 'नाम' में है। 'नाम' पूरे गुरु से मिलता है। परमात्मा सन्तों को 'नाम' का भंडारी बनाकर भेजता है। परमात्मा जिन जीवों का संसार में आना-जाना खत्म करना चाहता है वही जीव महात्मा की शरण में आ सकते हैं। इस बानी में महात्मा ने हमें जो कुछ बताया है हम उस पर अमल करें, 'शब्द-नाम' की कमाई करें।

यह बानी गुरु ग्रन्थ साहब में से ली गई है। मैं काफी समय से आपके फायदे के लिए इस महत्त्वपूर्ण बानी पर बोल रहा हूँ ताकि आप इस बानी को पढ़कर अपना जीवन सफल बना सकें।

मैं आशा करता हूँ कि प्रेमी इस बानी को ग्रन्थ के रूप में छपवाकर आपको भेंट करेंगे। मुझे खुशी होगी। मैं अपने गुरुदेव कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिनकी दया-मेहर से यह काम पूर्ण हो सका।

❖ ❖ ❖